

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182847

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—23—44—69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY, U.

Call No. H 820.9
D99A Accession No. H 206.

Author द्विवेदी, राम अपध

Title अंग्रेजी भाषा और साहित्य

This book should be returned on or before the date
last marked below. 1960

अंग्रेजी भाषा और साहित्य

अंग्रेजी भाषा और साहित्य

लेखक

डा० राम अवध द्विवेदी, एम० ए०, डी० लिट्

प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग

उत्तर प्रदेश

प्रथम संस्करण

१९६०

मूल्य ।

साढ़े तीन रुपया

मुद्रक

पं० पृथ्वीनाथ भार्गव

भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, बाराणसी

प्रकाशकीय

अंग्रेजी आज संसार की अत्यन्त समुन्नत भाषा है। ज्ञान-विज्ञान की ऐसी कोई शाखा नहीं जिसका साहित्य इस भाषा में उपलब्ध न हो। भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के बाद से यहाँ भी इसका प्रचलन बढ़ता गया और राजभाषा के रूप में तथा शिक्षा के माध्यम के रूप में शीघ्र ही इसका प्राधान्य स्थापित हो गया। ब्रिटिश सत्ता समाप्त हो जाने के बाद अब यहाँ राजनीतिक दृष्टि से तो अंग्रेजी का वह स्थान नहीं रह गया है जो १०-१५ वर्ष पूर्व तक था, किन्तु शिक्षा एवं विज्ञान, दर्शन, अर्थशास्त्र आदि विविध विषयों के अत्युपयोगी साहित्य की दृष्टि से अंग्रेजी का मूल्य हमारे लिए तनिक भी कम नहीं हुआ है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति एवं उसके वाङ्मय को विविध विषयों की पुस्तकों में समलकृत करने के लिए यह आवश्यक है कि हमारे लेखक और विद्वान्, विचारक और शिक्षक इस सम्पन्न और समृद्ध भाषा के साहित्य से समुचित सम्पर्क बनाये रखें। इसी दृष्टि से उत्तर प्रदेश प्रशासन ने यह छोटी-सी पुस्तक लिखवाने का निश्चय किया, जो अब हिन्दी-समिति की प्रकाशन-योजना के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही है।

हिन्दी-समिति-ग्रन्थमाला का यह ४१ वाँ पुष्प है। इसके रचयिता डा० राम अवध द्विवेदी अनुभवी एवं अध्ययनशील विद्वान् हैं जो पिछले २७-२८ वर्षों में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अंग्रेजी का अध्यापन कार्य करते रहे हैं। आप हिन्दी साहित्य तथा अंग्रेजी साहित्य, दोनों के विशेषज्ञ हैं। दोनों में आपने बहुमूल्य लेख और कई पुस्तकें भी लिखी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में आपने अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य के क्रमिक विकास का दिग्दर्शन कराया है। इसके पढ़ने

से विदित हो जायगा कि अंग्रेजी में किस किस-विषय के प्रमुख लेखक कौन-कौन हुए हैं तथा हैं और उसमें विविध विषयों का क्या-क्या साहित्य उपलब्ध है । आशा है, यह पुस्तक हिन्दी के पाठकों, लेखकों, अनुवादकों आदि सभी के लिए समान रूप से उपयोगी प्रमाणित होगी ।

भगवतीशरण सिंह

सचिव, हिन्दी समिति

प्रस्तावना

अंग्रेजों की जातीय भाषा का नाम अंग्रेजी है। अंग्रेज अपने देश में और विदेशों में इसी भाषा में बोलते और लिखते हैं। न केवल ब्रिटेन के निवासी, अपितु अधिकांश अमेरिकन तथा कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिणी अफ्रीका आदि ब्रिटिश उपनिवेशों में रहनेवाले लोग भी विचार-विनिमय के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं। पाश्चात्य भाषाओं में अंग्रेजी बोलनेवालों की संख्या सबसे अधिक है। इसे लगभग २० करोड़ व्यक्ति व्यवहार में लाते हैं, जबकि रूसी भाषा केवल १५ करोड़ और जर्मन भाषा केवल ८ करोड़ लोग बोलते हैं। स्पैनिश और फ्रेंच बोलनेवालों की संख्या और भी कम है। १८ वीं शताब्दी तक यूरोप में फ्रेंच भाषा को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया जाता था। राजनीतिक तथा व्यापारिक प्रयोजनों के लिए सभी देशों में इसका उपयोग होता था और वही सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम का कार्य भी करती थी। १९ वीं शताब्दी में अंग्रेजी का महत्त्व अपेक्षाकृत अधिक हो गया और वह दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। दोनों महासमरों में अंग्रेज और अमरीकी सेनाओं के दीर्घकाल तक यूरोपीय महाद्वीप पर निवास करने के कारण अंग्रेजी का प्रचलन द्रुतगति से बढ़ा और आज परिस्थिति यह है कि द्वितीय भाषा के रूप में वह रूस तक में अधिकाधिक लोगों द्वारा अपनायी जा रही है।

मातृभाषा के अतिरिक्त द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी का प्रचार अत्यन्त विस्तृत है। चीन, भारत तथा एशिया के अनेक इतर देशों में शिक्षा, व्यापार तथा राजनीति के क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा को प्रमुख स्थान दिया जाता है। इसी भाँति मिस्र और अफ्रीका के कतिपय देशों में भी बड़ी संख्या में लोग अंग्रेजी सीखते हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि इन सभी देशों में अंग्रेजी का ज्ञान उच्चतर सम्यता का लक्षण माना जाता है तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं राजनीतिक कार्यों के लिए अंग्रेजी का सम्यक् ज्ञान न केवल वांछनीय, वरन् आवश्यक समझा जाता है।

अंग्रेजी भाषा का अंग्रेजी संस्कृति और सभ्यता से निकटतम सम्बन्ध है। अंग्रेज जाति के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास के साथ ही साथ अंग्रेजी भाषा और साहित्य का विकास भी हुआ है। सच तो यह है कि यह दोनों विकासक्रम समानान्तर ही नहीं, वरन् एक-दूसरे से सम्बद्ध होकर अग्रसर हुए हैं। जातीय जीवन की विभिन्न अवस्थाएँ क्रमशः भाषा में परिलक्षित हुई हैं और जिन उद्देश्यों और भावनाओं ने अंग्रेज जाति को निरन्तर प्रभावित और प्रोत्साहित किया है वे सभी अंग्रेजी भाषा और साहित्य में अन्तर्निहित और निबद्ध हैं। अतएव अंग्रेजों के सांस्कृतिक जीवन को समझने के लिए उनकी भाषा का ज्ञान परमावश्यक है। अंग्रेजी भाषा के विशिष्ट स्वभाव और उसकी विशेषताओं के ज्ञान से अंग्रेज जाति की सांस्कृतिक परम्परा और उसकी विचार-प्रणाली के समझने में हमें बड़ी सहायता मिलती है।

अंग्रेजी भाषा के विस्तृत प्रसार के अनेक कारण हैं। अंग्रेजों ने एक विशाल भूभाग पर अपना राजनीतिक तथा व्यापारिक आधिपत्य कई शताब्दियों से जमा रखा है और जहाँ-जहाँ उन्होंने जाकर निवास किया वहाँ उनकी भाषा का प्रचलन होने लगा। अमेरिका, कनाडा और आस्ट्रेलिया आदि में अंग्रेज बस गये, नये राज्य स्थापित किये और अंग्रेजी सरकारी भाषा के रूप में व्यवहृत होने लगी। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जिससे लोग इसे अन्य यूरोपीय भाषाओं की अपेक्षा अधिक सरलता से सीख सकते हैं। उसमें शब्दों के ग्रहण करने की स्वाभाविक क्षमता है, इसलिए उसका रूप सार्वभौम हो गया है। आनेवाले अध्यायों में हम देखेंगे कि अंग्रेजी ने केल्टिक, लैटिन, ट्यूटानिक, फ्रेंच शब्द प्रभूत संख्या में ग्रहण किये हैं। इसके अतिरिक्त अमेरिका, अफ्रीका और एशिया के अनेक देशों से आनेवाले शब्द उसमें आत्मसात् हो गये हैं। ज्ञान और विज्ञान की कोई ऐसी शाखा नहीं है जिससे अंग्रेजी भाषा को शब्द न मिले हों। इस भाँति उसकी शब्दावली में प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक परिचित शब्दराशि मिल जाती है। अंग्रेजी का व्याकरण प्राचीन भाषाओं और जर्मन इत्यादि नवीन भाषाओं की तुलना में कहीं सरल है। नियमों की संख्या सीमित है और उनका प्रयोग सरलता से किया जा सकता है। विशेषण तथा क्रिया-विशेषण के रूप प्रायः स्थिर हैं और संज्ञा तथा क्रिया के रूप भी अन्य भाषाओं

की अपेक्षा कम परिवर्तित होते हैं। अंग्रेजी में लिंग-भेद निश्चित है और प्राकृतिक भेद से ही निर्धारित होता है। यह सच है कि अंग्रेजी सीखने में कुछ बाधाएँ भी सामने आती हैं, जैसे अनिश्चित वर्ण-विन्यास और उच्चारण में निश्चित तारतम्य का अभाव। तब भी अंग्रेजी सीखना किसी अन्य यूरोपीय भाषा के सीखने से अधिक सरल है।

भारतवर्ष में अंग्रेजों का आगमन १८ वीं शताब्दी में हुआ और १९ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अंग्रेजी शिक्षा का आरम्भ हुआ। उसी शती के मध्य के आसपास अंग्रेजी को राज्य भाषा के रूप में स्वीकार किया गया और इस प्रकार उसके अध्ययन और अध्यापन ने विशेष प्रगति की। प्रायः सौ वर्षों तक इस देश में अंग्रेजी का आधिपत्य बना रहा और फलतः भारतीय भाषाओं का महत्त्व नगण्य था तथा उनकी सन्तोषजनक उन्नति नहीं हुई। हिन्दी की उन्नति तथा मान्यता के लिए निरन्तर आन्दोलन होने पर भी स्वतन्त्रता के पूर्व उसका पद गौण था और प्रधान पद पर अंग्रेजी आरुढ़ थी। भारतीय संविधान में हिन्दी को ही भारत की राष्ट्रभाषा और राज्य-भाषा माना गया है। किन्तु वह अंग्रेजी का स्थान धीरे-धीरे लेगी। आज भी राज्य का अधिकांश कार्य अंग्रेजी में होता है, सामान्यतः अंग्रेजी ही उच्चशिक्षा का माध्यम है, तथा शिष्ट-वर्ग और सम्पन्न-वर्ग अंग्रेजी में ही लिखना-बोलना पसन्द करता है। बंगाल और दक्षिण भारत में एक अल्प-संख्यक समुदाय ऐसा है जो सदा के लिए अंग्रेजी को राज्य भाषा के पद पर आसीन देखना चाहता है। ये सभी बातें यह सिद्ध करती हैं कि स्वतंत्र भारत में भी अंग्रेजी भाषा अपना विशेष स्थान रखती है, यद्यपि अब हम उसको पूर्ववत् अखिल भारतवर्षीय राज्यभाषा के रूप में मान्यता प्रदान करने में असमर्थ हैं।

विषय-सूची

अध्याय	पृष्ठ संख्या
प्रस्तावना	... — ७ —
प्रथम खंड—अंग्रेजी भाषा	
१. भारोपीय-भाषा-परिवार	... १
२. ओल्ड इंग्लिश अथवा पुरानी अंग्रेजी	... ९
३. मध्यम अंग्रेजी	... २३
४. आधुनिक अंग्रेजी का अभ्युत्थान	... ३२
द्वितीय खंड—अंग्रेजी साहित्य	
१. चासर के पूर्व का अंग्रेजी साहित्य	... ५१
२. चासर तथा १५वीं शताब्दी में उसके अनुयायी कवि	... ५९
३. सन् १५५० और १५७९ के बीच का अंग्रेजी साहित्य	... ६४
४. एलिजाबेथ के राज्यकाल में साहित्य का चरम उत्कर्ष	... ७०
५. एलिजाबेथ की मृत्यु से राजत्व की पुनः स्थापना तक	... ८३
६. स्टुअर्ट वंश का पुनःस्थापन—सन् १६६० से १७०० तक का साहित्य	... ९९
७. अठारहवीं शताब्दी का अंग्रेजी साहित्य	... १०७
८. स्वच्छन्दतावाद का युग और उसका साहित्य	... १२५
९. विक्टोरिया के युग का अंग्रेजी साहित्य	... १३९
१०. आधुनिक अंग्रेजी साहित्य	... १५६
उपसंहार	... १७८
अनुक्रमणिका	... १८१

प्रथम खंड
अंग्रेजी भाषा

प्रथम अध्याय

भारोपीय-भाषा परिवार

अंग्रेजी मूलतः भारोपीय-परिवार की भाषा है। अतः इस परिवार की भाषाओं के सम्बन्ध में कुछ जानकारी आवश्यक है। एशिया और यूरोप की कतिपय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है कि उनके स्वरूप और उनकी शब्दावली में व्यापक साम्य है। पिछले दो सौ वर्षों में विद्वानों ने संस्कृत भाषा का जो गम्भीर अध्ययन किया है उससे भाषाओं की समानता और भी सुस्पष्ट होकर सामने आयी है। अब यह माना जाता है कि ये सभी एशियाई तथा यूरोपीय भाषाएँ एक ही मूल भाषा से निकली हैं। अनुमानतः ईसा से २६००-२७०० वर्ष पूर्व इस मूल भाषा का अस्तित्व रहा होगा, किन्तु आज वह लुप्त हो गयी है। हम केवल उसकी कल्पना और उसकी सामान्य विशेषताओं की ओर संकेत मात्र कर सकते हैं। इसी मूल आर्य भाषा से निकलकर भारोपीय-परिवार की सभी भाषाओं ने काल और स्थान के परिवर्तन के साथ अपना-अपना पृथक् अस्तित्व ग्रहण किया। अपने आदि स्थान से जातियाँ और समुदाय पूर्व, पश्चिम और दक्षिण की ओर फैले तथा क्रमशः उनकी बोलियों में अन्तर उत्पन्न हुआ। उस मूल भाषा के बोलने-वाले लोगों के निवास-स्थान के बारे में गहरा मतभेद है। सन् १८५० तक अधिकांश लोग यह मानते थे कि यह आदिम निवास-स्थान कहीं एशिया में था, किन्तु दीर्घकालीन अनुसंधान और अध्ययन के उपरान्त विद्वान् अब यह मानने लगे हैं कि आर्य जातियों का यह आदिम निवास-स्थान वर्तमान लिथुयेनिया से लगाकर रूस के घास के मैदानों तक फैला हुआ था। ज्ञातव्य है कि लिथुयेनिया की भाषा ही हमारी कल्पित आदि भाषा के सबसे निकट मानी जाती है और लिथुयेनियन भाषा तथा संस्कृत भाषा में भी आश्चर्यजनक समानता दिखाई पड़ती है। भारोपीय परिवार की भाषाओं का निकट पारस्परिक सम्बन्ध शब्दों की निम्नलिखित तालिका से प्रगट होता है,—

प्राचीन अंग्रेजी	गोथिक	लैटिन	ग्रीक	संस्कृत
एम्	इम	सम्	इमि	अस्मि
आर्ट	इज	एस्	ई	असि
इज	इस्ट	एस्ट	एस्टि	अस्ति
आर	सिजम	समुस	एस्मन	स्मस्
आर्	सिजुप	एस्टिस	एस्ते	स्थ
आर्	सिद	सन्ट	एइसी	सन्ति

निम्नलिखित शब्दों में समानता प्रत्यक्ष है—

संस्कृत	ग्रीक	लैटिन	प्राचीन आयरिश	अंग्रेजी	गोथिक
भ्राता	फ्रातेर	फ्रातेर्	ब्राथिर	ब्रादर	
दुहितृ	युगोतर्	—	—	डाटर	
पिता	पितेर	पतेर्		फादर	फदर

भारोपीय भाषाओं का विस्तार एक विशेष क्षेत्र में हुआ है। अतः विभिन्न देशों में उसके व्यवहृत रूप में कुछ अन्तर होता स्वाभाविक है। विद्वानों ने इन विभिन्नताओं पर विचार करने के उपरान्त यह निश्चय किया है कि अन्तर केवल प्रत्यक्ष है, वास्तविक नहीं। अनेक ऐसे नियम ढूँढ़ निकाले गये हैं जिनके आधार पर बाहरी भेद सरलता से समझा जा सकता है। सर्वप्रथम भारोपीय भाषाओं को दो विभागों में बाँटा गया है जिनमें से एक को केंटुम-वर्ग और दूसरे को शतम्-वर्ग कहते हैं। विद्वानों का मत है कि “ग्रीक, लैटिन आदि कुछ भाषाओं में प्राचीन मूल भाषा के चवर्ग ने कवर्ग का रूप धारण कर लिया है और संस्कृत, ईरानी आदि में वही चवर्ग, ‘घर्षकऊष्म’ बन गया है अर्थात् कुछ भाषाओं में जहाँ कवर्ग का कंठ्य वर्ग देख पड़ता है वहीं उसी शब्द में दूसरी भाषाओं में ऊष्म वर्ग पाया जाता है, जैसे लैटिन में केंटुम, आक्ट्रो डिक्टओ, गेनुस रूप पाये जाते हैं, पर उन्हीं के संस्कृत प्रतिशब्द शतम्, अष्टौ, दिष्टिः, जनः आदि में ऊष्म वर्ग देख सकते हैं।”

जैकाब ग्रिम ने सन् १८२२ ई० में जिस नियम का प्रतिपादन किया और आगे चलकर जिसके क्षेत्र को कार्ल वर्नर ने अधिक विस्तृत किया उससे भारोपीय भाषाओं में दिखाई पड़नेवाला भेद बहुत कुछ मिट जाता है। ग्रिम-

सिद्धान्त मुख्यतः द्यूटानिक वर्ग को ध्यान में रखकर निर्धारित किया गया था। इन द्यूटानिक भाषाओं और संस्कृत, लैटिन प्रभृति अन्य भारोपीय भाषाओं में कतिपय व्यंजनों के उच्चारण में भेद देखा जाता है और इसी भेद को समझाने के लिए ग्रिम महोदय ने अपने प्रसिद्ध नियम को प्रस्तुत किया। ग्रिम सिद्धान्त के अनुसार संस्कृत, ग्रीक, लैटिन इत्यादि के पी, टी, के द्यूटानिक भाषाओं में बदलकर क्रमशः एफ, पी, एच्, हो जाते हैं। इसी तरह कुछ अन्य व्यंजनों में भी परिवर्तन होता है। जो बातें ग्रिम नियम के अपवाद के रूप में दिखाई पड़ती थीं, उनको नियमानुकूल सिद्ध करने के लिए वर्नर ने अपना मत प्रकट किया। लैटिन का कैन्टुम अंग्रेजी का हन्डेड कैसे हो जाता है? प्रारम्भिक क का ह में बदल जाना ग्रिम नियम के अनुकूल था, किन्तु टी का डी, में बदलना अपवाद प्रतीत होता था। इस प्रकार के परिवर्तनों को स्वराघात की विशेषताओं के आधार पर वर्नर ने नियमानुकूल सिद्ध किया। इस भाँति ग्रिम और वर्नर के अनुसंधानों से भारोपीय परिवार की एकता की धारणा अधिक पुष्ट हुई।

भारोपीय परिवार में निम्नलिखित ९ भाषाओं की गणना की जाती है—

(१) भारतीय शाखा—पश्चिमोत्तर से आर्यों ने भारतवर्ष में प्रवेश किया और वहाँ बस गये। ईसा से प्रायः दो हजार वर्ष पूर्व उनके धर्मग्रंथ वेद का रूप सुस्थिर हो चुका था, यद्यपि कुछ मंत्र बाद के रचित भी हो सकते हैं। भारोपीय भाषाओं में वेदों से कोई अधिक प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। चारो वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् इत्यादि संस्कृत के उस प्राचीन रूप में लिखे गये हैं जिसे वैदिक संस्कृत कहते हैं। इसी भाषा का रूप आगे चलकर बदला और पाणिनि ने उसका सुनिश्चित और क्रमबद्ध व्याकरण तैयार किया। नवीन संस्कृत भाषा में समय के साथ प्रभूत मात्रा में सुन्दर साहित्य की रचना हुई। इसीके लोक-प्रचलित रूप अर्थात् प्राकृतों से भारत की विभिन्न आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ है।

(२) ईरानी शाखा—इन भाषाओं और भारतीय भाषाओं में पर्याप्त साम्य है, क्योंकि अपने मूल निवास-स्थान से दोनों जातियाँ साथ-साथ आयीं

और दीर्घकाल तक साथ रही थीं। साथ ही साथ इन भाषाओं पर सेमिटिक भाषाओं का भी गहरा प्रभाव पड़ा है। अतः उनका प्रारम्भिक रूप निश्चय करना कठिन हो गया है। इस शाखा की तीन प्रमुख भाषाएँ हैं —

- (१) पूर्वी-ईरानी अथवा अवस्ता जिसमें ईरानियों का प्रसिद्ध धर्मग्रंथ लिखा गया है।
- (२) पश्चिमी-ईरानी अर्थात् प्राचीन फ़ारसी।
- (३) मध्य-ईरानी अर्थात् पहलवी जिसका विकास पूर्वी तथा पश्चिमी-ईरानी के बहुत बाद में हुआ। प्रसिद्ध महाकाव्य शाहनामा इसी भाषा में लिखा गया है। इनके अतिरिक्त अन्य कई भाषाओं की परिगणना इसी वर्ग के अन्तर्गत होती है। इनमें बलोची, पस्तो और कुर्दिस्तान की लोक-भाषाएँ प्रमुख हैं।

(३) आरमीनियन शाखा—आरमीनियन शाखा का क्षेत्र काकेशस पर्वत के दक्षिण से लगाकर कृष्ण सागर (ब्लैक सी) के पूर्वी सिरे तक माना गया है। कदाचित् ईसा पूर्व आठवीं शती के लगभग आर्य-भाषा-भाषी लोगों ने आकर इस भूभाग पर अधिकार किया और तभी से भारोपीय वर्ग की भाषा यहाँ बोली जाने लगी। इस भाषा के साथ वहाँ के मूल निवासियों की भाषा का और आगे चलकर सेमिटिक भाषाओं का मिश्रण हुआ। ट्यूटानिक भाषाओं की भाँति व्यंजनों में ध्वनि-परिवर्तन भी कभी-कभी देखा जाता है और यह भी सम्मिश्रण का ही प्रमाण है। फलतः आरमीनियन का स्वरूप स्थिर करना कठिन हो जाता है। भ्रमवश बहुत दिनों तक इसे ईरानी शाखा के अन्तर्गत माना जाता था। आरमीनियन भाषा मेसीडोनिया, फ्रीजिया से होती हुई एशिया माइनर तक पहुँची। इस भाषा में पाँचवीं शताब्दी में बाइबिल का अनुवाद हुआ और कुछ अन्य साहित्य भी लिखा गया।

(४) हेलैनिक शाखा—ग्रीक जाति के आगमन के पूर्व ग्रीस और इजियन सागर के द्वीपों के मूल निवासी कई विभिन्न भाषाएँ बोलते थे, जिनका पता प्राचीन शिलालेखों से लगता है। इस प्रदेश में उत्तर से ग्रीक लोगों ने प्रवेश किया और बस गये। शनैः-शनैः उनकी चार प्रमुख भाषाएँ प्रयोग में आने लगीं—(i) आयोनिक, (ii) एवोलिक, (iii) आर्केडियन, (iv) डोरिक। एटिक

भाषा, जो एथेन्स नगर में तथा उसके आसपास बोली जाती थी, आयोनिक वर्ग की थी और उसका सबसे अधिक महत्त्व था। ईसा पूर्व पाँचवीं तथा चौथी शताब्दी में इसी भाषा में गद्य और पद्य साहित्य का सर्जन हुआ। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में सारे ग्रीस के लिए एक भाषा विकसित हुई, जिसकी मान्यता रोमन साम्राज्य के पूर्वी भागों में मध्ययुग के अन्त तक बनी रही। इस समय ग्रीस में दो प्रकार की भाषाएँ प्रचलित हैं, एक तो बोलचाल की भाषा और दूसरी वह सुसंस्कृत भाषा जो स्कूलों में पढ़ायी जाती है और जिसका सम्बन्ध प्राचीन साहित्यिक ग्रीक भाषा से है।

(५) **एलबैनियन शाखा**—यह भाषा ग्रीस के उत्तर-पश्चिम तथा एड्रियाटिक सागर के पूर्वी तट पर बोली जाती है। बोलनेवालों की संख्या अधिक नहीं है और अत्यधिक मिश्रण के कारण इस भाषा का स्वरूप भी बहुत कुछ अनिश्चित हो गया है।

(६) **इटालिक शाखा**—ईसा पूर्व एक हजार वर्ष या उसके कुछ उपरान्त इटली में कम से कम ५-६ भाषाएँ बोली जाती थीं। इनमें इट्रस्कन को छोड़कर शेष सभी भारोपीय परिवार की भाषाएँ थीं, जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण थी लैटियम अर्थात् रोम की भाषा लैटिन। रोम की राजनीतिक वृद्धि के साथ लैटिन का महत्त्व भी बढ़ता गया और उसके सामने और भाषाएँ फीकी पड़ गयीं। रोमन सैनिक-शक्ति सुदृढ़ हुई और रोमन साम्राज्य का विस्तार यूरोप के एक बहुत बड़े भाग में हुआ। इस सारे साम्राज्य में लैटिन भाषा फैल गयी। यहाँ तक कि सारे यूरोप ने शिक्षित तथा सुसंस्कृत भाषा के रूप में इसे स्वीकार किया। यह थी परिनिष्ठित अथवा साधु भाषा। इसके अतिरिक्त लैटिन का वह विकृत रूप था, जो बोलचाल के काम में लाया जाता था। इसमें उत्तर से आनेवाली बर्बर जातियों की कुगढ़, किन्तु जीवन्त भाषा के अनेक शब्द और मुहावरे मिल गये। लैटिन के इस परिवर्तित लोकप्रचलित रूप को रोमान्स भाषा के नाम से अभिहित करते हैं। रोमान्स भाषा का प्रसार फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल, इटली, रूमानिया इत्यादि देशों में हुआ और आनेवाले युगों में इसने आश्चर्यजनक रीति से साहित्यिक समृद्धि प्राप्त की।

(७) **बाल्टोस्लेविक शाखा**—इसकी दो उपशाखाएँ हैं। (i) बाल्टिक

और (ii) स्लेविक। बाल्टिक वर्ग में तीन भाषाओं का समावेश होता है—प्रश्न, लेटिक तथा लिथुयेनियन। इनमें प्रश्न भाषा तो प्रायः लुप्त हो गयी है, लेटिक लेटविया के २० लाख निवासियों की भाषा है, और लिथुयेनियन भाषा लिथुयेनिया राज्य के लगभग ३० लाख निवासी बोलते हैं। जैसा हम लिख आये हैं, लिथुयेनियन भाषा की यह विशेषता है कि उसमें परिवर्तन सबसे कम हुआ है, अतः वह भारोपीय मूल भाषा के सबसे अधिक निकट है। स्लेविक भाषा के अन्तर्गत भी तीन वर्गों की परिगणना होती है—पूर्वी स्लेविक, पश्चिमी स्लेविक और दक्षिणी स्लेविक। पूर्वी स्लेविक ही रूस की प्रधान भाषा है और यूक्रेनियन सहित इसके बोलनेवालों की संख्या लगभग १० करोड़ है। आधुनिक काल में रूसी भाषा से इसी वर्ग का बोध होता है। पश्चिमी स्लेविक पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया और अन्य समीपवर्ती प्रान्तों में बोली जाती है। इसे प्रायः ५ करोड़ लोग बोलते हैं। दक्षिणी स्लेविक बल्गेरिया में तथा उसके आसपास बोली जाती है। स्लेविक भाषाएँ यद्यपि विस्तृत भूखण्ड में बोली जाती हैं तथापि उनके गठन और उनकी शब्दावली में पर्याप्त साम्य दिखाई पड़ता है।

(८) ट्यूटानिक शाखा—इस वर्ग की भाषाओं का विकास एक आदिम ट्यूटानिक भाषा से हुआ है, जो अब लुप्त हो गयी है और जिसके स्वरूप की हम कल्पनामात्र कर सकते हैं। उस प्रारम्भिक भाषा से तीन विभिन्न ट्यूटानिक भाषाओं का उद्भव हुआ। इनके नाम हैं—(१) पूर्वी-ट्यूटानिक, (२) उत्तरी-ट्यूटानिक और (३) पश्चिमी-ट्यूटानिक। पूर्वी-ट्यूटानिक से उन गोथिक भाषाओं का बोध होता है जिनका प्रसार जर्मनी के पूर्वी भाग से लेकर ब्लैक सागर के पश्चिमी तट तक तीसरी और चौथी शताब्दी में हुआ। गोथ जाति की अनेक उपशाखाएँ थीं, किन्तु उन सबके बारे में यह कहा जा सकता है कि वे अधिक सम्य नहीं, किन्तु अत्यन्त पराक्रमी थीं। उन्होंने इटली, स्पेन आदि को आक्रान्त किया। उनकी भाषा दीर्घजीवी न हो सकी, किन्तु उसने बोलचाल की भाषा में लैटिन से मिलकर रोमान्स भाषाओं की सृष्टि में योग दिया। गोथिक भाषा सबसे अधिक दिन क्रीमिया में जीवित रही। उत्तरी-गोथिक का प्रचलन डेनमार्क, स्कैन्डिनेविया, आइसलैण्ड इत्यादि में था। डैनिश और स्वेडिश इसकी पूर्वी शाखा के अन्तर्गत आती हैं तथा नार्वेजियन और आइसलैण्डिक पश्चिमी शाखा

के अन्तर्गत। इन भाषाओं को नार्स भाषाएँ भी कहते हैं और ये अपने मध्य-कालीन वीर गाथाओं के उत्कृष्ट और प्रचुर भाण्डार के लिए सुविख्यात हैं। पश्चिमी-ट्यूटानिक के दो प्रमुख भेद हैं—हाई जर्मन और लो जर्मन। हाई जर्मन में ही लूथर ने बाइबिल का अनुवाद किया और उसीका विकसित रूप जर्मनी की राज्य भाषा बना। लो जर्मन हमारे लिए विशेष महत्त्व रखती है, क्योंकि अंग्रेजी भाषा उसी से निकली है। ग्रिम और वर्नर के सिद्धान्त, जिनका उल्लेख हम ऊपर कर आये हैं, लो जर्मन के लिए विशेष लागू होते हैं, अर्थात् व्यंजनों का ध्वनि-परिवर्तन लो जर्मन में उन्हीं नियमों के अनुसार होता है। लो जर्मन की चार उपशाखाएँ मानी जाती हैं—प्राचीन सैक्सन, प्राचीन लो फ्रान्कोनियन, प्राचीन फ्रीजियन और प्राचीन अंग्रेजी। प्राचीन सैक्सन से नवीन लो जर्मन का विकास हुआ है। प्राचीन फ्रैंकोनियन तथा प्राचीन फ्रीजियन हालैंड की डच भाषाओं में मिल गयी हैं। फ्रीजियन और प्राचीन अंग्रेजी में निश्चित साम्य होने के कारण उनकी एक अलग शाखा बन जाती है।

(९) केल्टिक शाखा—ईसा के जन्मकाल के आसपास केल्टिक भाषा सारे पश्चिमी यूरोप में फैली हुई थी। इटली, स्पेन, फ्रांस और ब्रिटेन आदि में उसका प्रचलन था। तत्पश्चात् इटालिक और ट्यूटानिक भाषाएँ इसकी प्रतिद्वन्द्वी बन गयी और इसका क्षेत्र संकुचित होने लगा। आज परिस्थिति यह है कि केल्टिक भाषा बहुत कम लोग बोलते हैं। कुछ अल्पसंख्यक जन फ्रांस में इसका प्रयोग करते हैं तथा स्काटलैंड और आयरलैंड में इसको काम में लाया जाता है तथा कभी-कभी प्राचीन राष्ट्रभाषा के रूप में इसे मान्यता प्रदान की जाती है। यह केल्टिक की गैलिक शाखा है। इसके अतिरिक्त वेल्स और कार्निश भाषाएँ, जो इंग्लैंड के कतिपय भागों में बोली जाती हैं, एक दूसरी शाखा के अन्तर्गत आती हैं। केल्टिक भाषाओं की रक्षा के लिए आयरलैंड, स्काटलैंड, वेल्स इत्यादि में प्रयत्न किया जा रहा है, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अंग्रेजी के बढ़ते हुए प्रचलन के आगे उनका बचना कठिन है। प्राचीन केल्टिक भाषा की अपनी निजी विशेषता है और उसके प्राचीन लोक-साहित्य से अंग्रेजी साहित्य को बहुत कुछ प्राप्त हुआ है।

भारोपीय परिवार की इन नौ प्रसिद्ध शाखाओं के अतिरिक्त वर्तमान

शताब्दी में हत्ती और तोखारीय नाम की दो अन्य शाखाओं का पता लगा है। सन् १९०७ में पुरातत्त्ववेत्ताओं ने बोगाजकुई नामक स्थान पर, जो हत्ती राज्य की राजधानी थी, खोदाई की। उनको लगभग १० हजार मिट्टी की पट्टिकाओं पर कीलाक्षरों में लिखे हुए लेख प्राप्त हुए। इन लेखों से हत्ती जाति के प्राचीन इतिहास का पता लगता है। उसीके लगभग तोखारीय भाषा में लिखे हुए प्राचीन लेख भी उपलब्ध हुए। यह तोखारीय भाषा भारोपीय परिवार की एवं केंटुम वर्ग की है और इसका सम्बन्ध भारत की प्राचीन भाषाओं से सिद्ध होता है।

उपर्युक्त वर्णन से पता चलता है कि भारोपीय परिवार की भाषाएँ पूर्व में सिंधु नदी की घाटी से लेकर पश्चिम में आइसलैण्ड और आयरलैण्ड तक दीर्घकाल से फैली हुई थीं और आज भी अपने आधुनिक रूप में विद्यमान हैं। जैसा हम कह आये हैं, अंग्रेजी भाषा का समावेश भारोपीय परिवार की ट्यूटानिक शाखा के अन्तर्गत होता है। यही उसका मूल रूप था, यद्यपि अनेक प्रकार के मिश्रण तथा परिवर्तन के उपरान्त ही उसका आधुनिक रूप प्रकट हुआ है।

द्वितीय अध्याय

ओल्ड इंग्लिश अथवा पुरानी अंग्रेजी

अंग्रेजी भाषा का उद्भव

ट्यूटन लोगों के आने के पूर्व बोली जानेवाली भाषाएँ—इंग्लैण्ड में पूर्व और उत्तर पाषाण-काल में रहनेवाले लोगों की भाषा का ठीक-ठीक पता नहीं लगता। पूर्व पाषाणकाल में नाटे कद की एक मानव जाति इस भूभाग में रहती थी। इंग्लैण्ड उस समय तक यूरोपीय महाद्वीप से मिला हुआ था। ये प्राचीनतम निवासी मछली मारकर और जानवरों का शिकार करके अपना भरणपोषण करते थे। ये पत्थर के औजार बनाते थे और पत्थर तथा हड्डी के टुकड़ों पर चित्र बनाया करते थे। इनकी बोलचाल की भाषा का अब तक भी पता नहीं। उत्तर पाषाणकाल में रहनेवाले लोग भूमध्यसागरीय क्षेत्र से आये थे। यह लोग अपने रहने के लिए झोपड़ी अथवा मचान बनाया करते थे। इस जाति के अवशेष आज भी स्काटलैण्ड के कुछ हिस्सों में मिलते हैं, किन्तु उनकी भाषा अब ब्रिटेन से पूर्णतया लुप्त हो गयी है। उत्तरी स्पेन के एक कोने में 'बास्क' जाति के लोग रहते हैं जिनको उस प्राचीन भूमध्यसागरीय मानव जाति का प्रतिनिधि माना जाता है, जो उत्तर पाषाणकाल में इंग्लैण्ड में आकर बस गयी थी। इस प्रकार बास्क लोगों की भाषा से हमें उत्तर पाषाणकाल के निवासियों की भाषा का कुछ-कुछ पता लग सकता है।

केल्टिक जाति के लोगों ने इंग्लैण्ड में धातुयुग में प्रवेश किया। जैसा हम ऊपर बता आये हैं, केल्टिक भाषा भारोपीय परिवार की भाषा है और इसके दो भेद हैं—(१) स्काटलैण्ड में बोली जानेवाली गैलिक, (२) वेल्स और कार्नवाल में बोली जानेवाली ब्रिटानिक। केल्ट लोग अपेक्षाकृत सम्य थे। इन लोगों ने अपनी बस्तियाँ बनायीं और उनकी भाषा का स्वरूप बहुत कुछ स्थिर था। आनेवाले युगों में ब्रिटेन में बहुत-सी भाषाएँ आयीं और विकसित हुईं

किन्तु तब भी केल्टिक भाषा अभी तक मरी नहीं है। अपना पृथक् अस्तित्व बनाये रखने के अतिरिक्त इसने अंग्रेजी भाषा को आंशिक रूप में प्रभावित किया है। केल्टिक जाति पर रोमन लोगों ने विजय प्राप्त की। जूलियस सीजर ने ईसा पूर्व ५५ और ५४ में इंग्लैण्ड पर दो आक्रमण किये, किन्तु उन्होंने वहाँ रोमन राज्य की स्थापना नहीं की। यह कार्य प्रायः १०० वर्ष बाद सम्राट् क्लाडियस की सेनाओं ने किया। केल्ट लोगों ने रोमन सेनाओं का घोर विरोध किया, किन्तु अन्त में परास्त हुए। लगभग तीन सौ वर्षों तक इंग्लैण्ड रोमन साम्राज्य का एक प्रान्त बना रहा। केल्ट लोग हटकर सुदूर उत्तर तथा वेल्स में चले गये और वहाँ से निरन्तर विरोध करते रहे, किन्तु साल्वे और टाइन नदियों के दक्षिण के विशाल भूभाग में रोमन सत्ता अधुण बनी रही। रोमन लोगों ने अनेक सुन्दर और प्रशस्त राजमार्ग बनाये और इस प्रकार देश के विभिन्न भागों में आवागमन की सुविधा प्रदान की। उन्होंने नगर बसाये तथा सुन्दर भवनों और प्रासादों का निर्माण किया। रोमन वेश-भूषा तथा रहन-सहन का प्रचलन बढ़ा। रोम की राज्यभाषा लैटिन इंग्लैण्ड में प्रयोग में आने लगी। रोमन लोग तथा अन्य उच्च वर्ग के सभी लोग लैटिन भाषा का प्रयोग करते थे, किन्तु जन-साधारण ने इस भाषा को नहीं अपनाया। जनता केल्टिक भाषा का ही प्रयोग करती रही और इसलिए देश की भाषा पर लैटिन का विस्तृत प्रभाव नहीं पड़ा। अंग्रेजी शब्दावली में लैटिन भाषा के शब्द विद्यमान हैं, किन्तु उनकी संख्या उतनी अधिक नहीं है जितनी ३०० वर्षों के रोमन शासन के उपरान्त वह होती, यदि सर्वसाधारण ने लैटिन भाषा को अपनाया होता। लगभग सन् ४१० ई० तक रोमन लोग इंग्लैण्ड को छोड़कर हट गये और उसके उपरान्त ट्यूटन जातियों का आगमन हुआ। इसके बाद ही अंग्रेजी भाषा का वास्तविक प्रारम्भ हुआ।

ट्यूटन जातियों के इंग्लैण्ड में आने का इतिहास अत्यन्त रोचक है, यद्यपि अधिक बातें निश्चित ढंग से ज्ञात नहीं हैं। अधिकांश सूचना बीड लिखित 'एक्लेजियस्टिकल हिस्ट्री आफ दी इंग्लिश पीपुल' से प्राप्त होती है। सन् ४४९ ई० से लगाकर प्रायः ५०० वर्ष तक ट्यूटन जातियों के लोग इंग्लैण्ड में आकर बसते रहे। सर्वप्रथम इन्होंने दक्षिण पश्चिमी इंग्लैण्ड में अपनी बस्तियाँ बनायीं,

किन्तु वे निरन्तर फैलते रहे, यहाँ तक कि सुदूर उत्तर पश्चिम को छोड़कर सारा देश उनके अधिकार में आ गया। ये ट्यूटन जातियाँ डेनमार्क और जर्मनी से आयी थीं। मुख्यतः तीन-चार जातियों के लोग थे—(१) जूट, (२) ऐंगिल्स, (३) सैक्सन, (४) फ्रिजियन। जूट लोग डेनमार्क के उत्तरी भाग में रहते थे और ऐंगिल्स दक्षिणी भाग में। सैक्सन जाति एल्ब और एल्म नदियों की घाटियों में निवास करती थी। यह क्षेत्र ऐंगिल जाति के निवासस्थान से दक्षिण पश्चिम की ओर था। फ्रिजियन लोग समुद्र तट पर वीसर और राइन नदियों के तट पर रहते थे। इन सभी ट्यूटन जातियों के लोग पुष्ट और पराक्रमी थे तथा युद्ध के लिए सदा उद्यत रहते थे। सर्वप्रथम केल्ट नेता बोर्रिजर्न द्वारा आमंत्रित होकर जूट जाति के सैनिक उत्तर से हमला करनेवाले पिक्ट और स्काट आक्रमणकारियों के विरुद्ध सहायता करने के लिए आये। सन् ४१० ई० तक रोमन इंग्लैण्ड से चले गये थे और केल्ट अपने देश की रक्षा करने में असमर्थ थे। विवश होकर उन्होंने पहले रोम से सहायता माँगी, किन्तु रोम अपनी कठिनाइयों में फँसा हुआ था, अतएव उनकी रक्षा न कर सका। तदुपरान्त केल्ट नेताओं ने जूट सेनाओं को देश में बुलाया। इन्होंने पिक्ट और स्काट आक्रमणकारियों से रक्षा अवश्य की, किन्तु स्वयं अधिकार प्राप्त करने के इच्छुक बन गये। इसके थोड़े दिन बाद ही अन्य जातियों के लोग आये। प्राचीन इतिहासकारों ने लिखा है कि कुछ सैक्सन सन् ४७७ ई० में आकर दक्षिणी समुद्र तट पर उतरकर ससेक्स में बस गये। सन् ४९५ ई० में कुछ और सैक्सन आकर पश्चिम की ओर वेसेक्स में आकर बस गये। आगामी शताब्दी के मध्य के लगभग ऐंगिल जाति के लोगों ने पूर्वी समुद्रतट पर अधिकार प्राप्त किया और सन् ५४७ ई० में हम्बर नदी के उत्तर की ओर राज्य स्थापित किया। जैसा कि एसेक्स और मिडिलसेक्स नामों से विदित है, टेम्स नदी के उत्तरी भूभाग पर भी सैक्सन लोगों का अधिकार था। क्लुग महोदय ने ट्यूटन जातियों के आगमन और आधिपत्य के सम्बन्ध में संक्षेप में इस प्रकार लिखा है “जूट लोगों ने केन्ट आइल आफ वाईट और हैम्पशायर के निकटवर्ती भागों में अपना निवास-स्थान बनाया। सैक्सन लोगों ने टेम्स नदी के तट तथा उसके दक्षिण के समस्त भूभाग पर अधिकार किया। इंग्लैण्ड का बाकी हिस्सा ऐंगिल जाति के कब्जे में आया।”

इंग्लैण्ड में अपने आगमन के उपरान्त ट्यूटन जातियों ने केल्ट जाति के प्राचीन निवासियों को दबाने की चेष्टा की। कुछ केल्ट लोगों ने भागकर स्काटलैण्ड और वेल्स में आश्रय लिया। किन्तु अधिकतर वे सैक्सन लोगों का अधिकार मानकर उनके आधिपत्य में जीवनयापन करने लगे। वैसे तो सैक्सन एक जाति का नाम था, किन्तु सामान्य रीति से उससे इंग्लैण्ड में आनेवाली सभी जातियों का बोध होता है। इन सैक्सन लोगों ने रोमन सभ्यता को निर्मूल करने का भरसक प्रयत्न किया। शहर और इमारतों को नष्ट किया और स्वयं खेती और पशुपालन को ही जीविका का मुख्य आधार बनाया। ये लोग कुटुम्बों और कबीलों में बँटे हुए थे, जिनका शासन सदस्यों के बहुमत से होता था। एक उच्च वर्ग, दूसरा निम्न वर्ग था। कई समुदाय मिलकर राज्य स्थापित करते थे। सात प्रमुख राज्य थे जिनको मिलाकर सैक्सन सप्तमण्डल बना था। ये राज्य थे—(१) नार्थम्ब्रिया, (२) मर्सिया, (३) ईस्ट एंग्लिया, (४) केंट, (५) एसेक्स, (६) ससेक्स, (७) वेसेक्स। सातवीं शताब्दी में सबसे प्रमुख राज्य नार्थम्ब्रिया था और आठवीं शताब्दी में मर्सिया। ९वीं शताब्दी में वेसेक्स की शक्ति बढ़ गयी और उसके दो महान् शासक हुए, एजवर्ट और आल्फ्रेड, जिन्होंने एक विशाल क्षेत्र पर अपने राज्य का विस्तार किया।

कुछ दिनों तक नवागत ट्यूटन जातियों को सामान्यतया सैक्सन और उनके राज्य को सैक्सोनी कहते थे, किन्तु बाद को क्रमशः एंग्ली और एंग्लिया नाम प्रचलित हुए। इंग्लिश (Englic) नाम एंगिल लोगों की भाषा के अर्थ में नवीं शताब्दी में सर्वत्र स्वीकृत हो चुका था। इस समय तक इंग्लैण्ड नाम प्रचलित नहीं हुआ था। एंग्लालैण्ड (Engla-land) नाम सर्वप्रथम १०वीं शती में व्यवहृत हुआ और इस प्रकार इंग्लिश भाषा का नाम पहले प्रगट हुआ और इंग्लैण्ड देश का नाम बाद को। अतः हम देखते हैं कि इंग्लिश भाषा में ट्यूटन जाति की वे सभी बोलियाँ जो देश में बोली जा रही थीं, घुल-मिलकर एक हो गयीं। यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इस भाषा का सम्बन्ध जर्मनी की अन्य ट्यूटनिक भाषाओं से कुछ-न-कुछ बना हुआ था। उदाहरण के लिए ग्रिम का नियम इस पर लागू होता था और स्वराघात अधिकांश शब्दों के अग्रिम भाग पर पड़ता था। इसके अतिरिक्त क्रिया और विशेषण के रूपों में भी साम्य मिलता है।

अंग्रेजी भाषा का जन्म ट्यूटन जातियों के इंग्लैण्ड में प्रवेश के साथ हुआ और तब से वह निरन्तर विकसित होती चली आयी है। विकास की यह शृंखला न कभी टूटती है और न कभी आँख से ओझल होती है। तब भी अंग्रेजी भाषा के इतिहास को तीन सुनिश्चित अवस्थाओं में विभाजित किया जा सकता है। ये तीनों अवस्थाएँ, क्रमशः हैं—(१) ओल्ड इंग्लिश अर्थात् प्राचीन अंग्रेजी, (२) मिडिल इंग्लिश अर्थात् मध्यकालीन अंग्रेजी और (३) माडर्न इंग्लिश अर्थात् आधुनिक अंग्रेजी। पुरानी अंग्रेजी का युग सन् ४५० ई० से सन् १०५० ई० तक माना जाता है और तत्पश्चात् सन् १५०० ई० तक मध्यम अंग्रेजी का काल था। सन् १५०० ई० के बाद आधुनिक अंग्रेजी का आविर्भाव हुआ जिसका विकासक्रम अबाधगति से अब भी चल रहा है। इन तीनों कालों की भाषा के रूप में विशेष अन्तर विभक्तियों के प्रयोग और उनके परित्याग के कारण उत्पन्न हुआ है, अन्यथा अनेक प्रकार से वे एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं। प्राचीन अंग्रेजी विभक्ति-बहुला थी। मध्यकालीन अंग्रेजी में विभक्तियों का लोप होने लगा, तब भी उनका पूर्ण रूपेण परित्याग नहीं किया गया। आधुनिक अंग्रेजी में विभक्तियों के स्थान पर सम्बन्ध सूचक शब्दों से काम लिया जाता है और शब्द का विशिष्ट अर्थ वाक्य में उसके स्थान से प्रकट होता है। स्वीट महोदय ने पुरानी अंग्रेजी काल को “फुल इनफ्लेक्शन्स” अर्थात् सम्पूर्ण विभक्तियों का काल, माध्यमिक अंग्रेजी काल को “लेवेल्ड इनफ्लेक्शन्स” अर्थात् समीकृत विभक्तियों का काल तथा आधुनिक अंग्रेजी काल को “लास्ट इनफ्लेक्शन्स” अर्थात् लुप्त विभक्तियों का काल कहा है।

पुरानी अंग्रेजी की विशेषताएँ

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, यूरोपीय महाद्वीप से आनेवाली तीनों प्रधान ट्यूटन जातियों, (जूट, एंगिल और सैक्सन) की अपनी-अपनी बोलियाँ थीं। नार्थम्ब्रियन एंगिल्स की भाषा थी और जूट लोग मर्सियन का प्रयोग करते थे। इन सबसे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण भाषा थी वेस्ट सैक्सन लोगों की। यद्यपि पुरानी अंग्रेजी के अन्तर्गत इन सभी बोलियों का समावेश होता है तथापि सामान्यतः वेस्ट सैक्सन भाषा की ही व्याख्या प्रधान रूप से की जाती है, क्योंकि उसीके लिखित नमूने सबसे अधिक बचे हैं।

(अ) पुरानी अंग्रेजी को आज हमारे लिए पढ़ना और समझना सुगम नहीं है क्योंकि समय के साथ भाषा में अनेक परिवर्तन हो गये हैं। पुरानी और नयी अंग्रेजी के वर्ण-विन्यास, उच्चारण और व्याकरण सभी में भेद होने के कारण ही उसका सरलतापूर्वक समझना सम्भव नहीं है। उसके लिए विशेष अध्ययन अपेक्षित है। उच्चारण भेद मुख्यतः 'ए' और 'ओ' आदि स्वरों के कारण उत्पन्न हुआ है। पुरानी अंग्रेजी का ए बहुत से शब्दों में ओ में परिवर्तित हो गया है। जैसे—

पुरानी अंग्रेजी

Stan

Halig

gen

ban

Rap

नयी अंग्रेजी

Stone

holy

go

bone

Rope

अन्य स्वरों में भी परिवर्तन हुए हैं जैसे—पुरानी अंग्रेजी का fot बदलकर foot हो गया है और ccne बदलकर keen हो गया है।

पुरानी और नयी अंग्रेजी का भेद बहुत कुछ वर्ण-विन्यास में अन्तर के कारण भी है। पुरानी अंग्रेजी के कतिपय वर्ण अथवा कतिपय ध्वनियाँ अब लुप्त हो गयी हैं। अतः आधुनिक पाठकों के लिए बिना उनके ज्ञान के पुरानी अंग्रेजी पढ़ना सम्भव नहीं। उदाहरणार्थ पुरानी अंग्रेजी में Th को व्यक्त करने के लिए P और d को काम में लाते थे यथा wip = with, da = then। इन ध्वनियों का प्रयोग आधुनिक अंग्रेजी में नहीं होता। इसी भाँति hat में a की ध्वनि का बोध ae में संयुक्त वर्ग से होता था और sh की ध्वनि sc द्वारा प्रगट की जाती थी जैसे—Sceap, Sheep। K की ध्वनि का संकेत c से होता था जैसे cynn—kin और nacod—naked. अक्षर विन्यास में इस भेद के कारण पुरानी अंग्रेजी का लिखित रूप आज हमारे लिए अपरिचित प्रतीत होता है।

(आ) पुरानी अंग्रेजी ने बहुत अल्प संख्या में लैटिन शब्दों को ग्रहण किया था और केल्टिक शब्द भी उसमें बहुत कम प्रविष्ट हो सके थे। इसके

विपरीत आधुनिक अंग्रेजी में लैटिन, फ्रेंच, इटैलियन तथा अनेक अन्य भाषाओं के शब्द गृहीत हुए हैं। इसलिए उसमें रूप वैविध्य आ गया है। पुरानी और नवीन अंग्रेजी का यह प्रमुख अन्तर है। पुरानी अंग्रेजी के प्रायः सभी शब्द टचूटन भाषाओं से लिये गये थे। जब नार्मन लोगों के आगमन के साथ फ्रेंच भाषा का प्रचलन बढ़ा, तब बहुत-से पुराने शब्दों के स्थान पर नवीन फ्रेंच तथा लैटिन भाषा के शब्द इस्तेमाल होने लगे। यही कारण था कि पुरानी अंग्रेजी के बहुत-से शब्दों का धीरे-धीरे लोप हो गया। फिर भी कुछ न कुछ शब्द बच गये और आज आधुनिक भाषा में उनका विशेष स्थान है क्योंकि उनके द्वारा दैनिक आवश्यकता और अनुभव के अनेक पदार्थों का बोध होता है।

- (ई) व्याकरण के नियमों की विभिन्नता उच्चारण भेद की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण अन्तर प्रस्तुत करती है। पुरानी अंग्रेजी और आधुनिक अंग्रेजी में तात्त्विक भेद यह है कि पुरानी अंग्रेजी विभक्तिमूलक अतएव संश्लेषणात्मक थी, किन्तु आधुनिक अंग्रेजी में सामान्यतः विभक्तियों का अभाव है और सम्बन्ध सूचक शब्दों, सहायक क्रियाओं इत्यादि से अर्थ स्पष्ट किया जाता है। आधुनिक अंग्रेजी संश्लेषणात्मक नहीं, अपितु विश्लेषणात्मक है। इसीलिए इसका व्याकरण सरल हो गया है। आधुनिक जर्मन और आधुनिक अंग्रेजी की तुलना से अन्तर स्पष्ट हो जाता है। पुरानी अंग्रेजी में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण सभी में विभक्तियों द्वारा वचन, लिंग आदि से उत्पन्न भेद व्यक्त किये जाते थे। क्रिया में कालभेद का संकेत भी इसी तरह मिलता था। संज्ञा दो प्रकार की होती थी, स्वरान्त और व्यंजनान्त। 'स्ट्रांग' संज्ञा का मूलरूप स्वरान्त होता था और 'वीक' संज्ञा के मूल शब्द के अन्त में व्यंजन रहता था। एकवचन और बहुवचन में स्ट्रांग और वीक संज्ञाओं में से प्रत्येक के अलग-अलग रूप चलते थे। पुरानी अंग्रेजी में केवल चार कारक मान्य थे—नामिनेटिव, जेनिटिव, डेटिव, ऐक्यूजेटिव अर्थात् कर्ता, सम्बन्ध, सम्प्रदान तथा कर्म। नीचे संज्ञा के विभिन्न रूपों के उदाहरण दिये जाते हैं।

Sing. N.	Stan	gief-u	hunt-a
G	Stan-es	gief-e	hunt-an
D	Stan-e	gief-e	hunt-an
A	Stan	gief-e	hunt-an
Plur. N.	Stan-as	gief-a	hunt-an
G	Stan-a	gief-a	hunt-an
D	Stan-um	gief-um	hunt-ena
A	Stan-as	gief-a	hunt-an

आधुनिक अंग्रेजी में पुलिग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक का भेद बहुत कुछ स्वाभाविक एवं प्राकृतिक अन्तर पर आधृत है, किन्तु पुरानी अंग्रेजी में लिङ्ग-भेद का कोई स्वीकृत आधार न था। इस प्रकार का भेद परम्परा से रूढ़ हो गया था। उदाहरणार्थ (mona) मोना अर्थात् चन्द्रमा पुलिग था और (Sunne) सने अर्थात् सूर्य स्त्रीलिङ्ग था। इसी भाँति (Wimann-woman) पुलिग शब्द माना जाता था, स्त्रीलिङ्ग नहीं।

विशेषण के दो प्रकार के रूप चलते थे (१) स्ट्रॉङ्ग, (२) वीक। स्ट्रॉङ्ग रूप उन विशेषणों का चलता था जिनके पहले कोई (डेफिनिट् आरटिक्ल अथवा पोजेसिव) शब्द नहीं होता था। विशेषणों के पहले जब आरटिक्ल इत्यादि होते थे तब उनका वीक रूप चलता था। उदाहरण —

Strong declension

Weak declension

	Masc.	Fem.	Neut.	Masc.	Fem.	Neut.
Sing. N.	gōd	gōd	gōd	gōd-a	gōd-e	gōd-e
G.	gōd-es	gōd-re	gōd-es	gōd-an	gōd-en	gōd-an
D.	gōdum	gōd-re	gōd-um	gōd-an	gōd-an	gōd-an
A.	gōd-ne	gōd-e	gōd	gōd-an	gōd-an	gōd-e
I.	gōd-e		gōd-e	All Genders		
Plur. N.	gōd-e	gōd-a	gōd	gōd-an		
G.	gōdra	gōdra	gōdra	gōd-ena or gōd-ra		
D.	gōdum	gōdum	gōdum	gōd-um		
A.	gōd-e	gōd-e	gōd.	gōd-an		

पुरानी अंग्रेजी में डेफिनिट आरटिकल का रूप निम्न प्रकार चलता था ।

	Masc.	Fem	Neut	All genders
Sing. N.	Sē	Sēo	doet	Plur. da
G.	does	doere	does	dara
D.	doem	doere	doem	doem
A.	done	da	doet	da
I.	doen		d	don

पुरानी अंग्रेजी में पर्सनल सर्वनाम के रूप एकवचन, द्विवचन और बहु-वचन अलग-अलग निम्नलिखित प्रकार से थे—

Sing. N.	ie	du	hē (he)	hīo (she)	hil (it)
G.	mīn	dīn	his	hiere	his
D.	mē	dē	him	hiere	hīm
A.	mi (mece)	de (dec)	hine	hie	hit
Dual. N.	wit (we two)	git (ye two)			
G.	Uncer	incer			
D.	unc	ine			
A.	unc	ine		hie	
Plur. N.	wē	gē		hiera	
G.	ūser (ūre)	ēower		him	
D.	ūs	ēow		hīc	
A.	ūs (ūsic)	ēow (ewie)			

क्रिया की रूप-साधना पुरानी अंग्रेजी में इतनी विस्तृत है कि विस्तार-भय से केवल थोड़ी-सी सामान्य बातें लिखी जा सकती हैं। क्रियाओं के दो भेद थे—स्ट्रांग क्रियाएँ और वीक क्रियाएँ। स्ट्रांग क्रियाओं में काल-भेद के साथ शब्द के मूल स्वर-वर्णों में परिवर्तन हो जाता था। अब इन्हें कभी-कभी Irregular क्रियाएँ कहते हैं, जैसे sing, sang, sung। वीक क्रियाओं को अब regular क्रिया कहते हैं। पुरानी अंग्रेजी में भूतकाल और पास्ट पारटिसिपल में मूल क्रियारूप में ed, od अथवा d जोड़कर शब्द के परिवर्तित

रूप बनाये जाते थे। किन्तु मूल स्वर वर्णों में परिवर्तन नहीं होता था। पुरानी अंग्रेजी में प्रायः ३०० से अधिक स्ट्रॉंग क्रियाएँ थीं जिनको सात भागों में विभाजित करते थे। प्रत्येक वर्ग में रूप-साधना का एक सामान्य नियम था। क्रियाओं के रूप अलग चलते थे। चार रूप माने जाते थे—इनफिनिटिव, प्रिटेरियट एकवचन (first and third person), प्रिटेरिट बहुवचन और पास्ट पारटिसिपल।

पुरानी अंग्रेजी में मूल शब्दरूपों की संख्या सीमित थी, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इसके बोलने अथवा लिखनेवाले विभिन्न प्रकार के भावों को प्रकट करने में असमर्थ थे। वास्तव में मूल शब्दों के कम होते हुए भी भाषा में आश्चर्यजनक लोच और अभिव्यक्ति की क्षमता थी। पुरानी अंग्रेजी को भाव-प्रकाशन में समर्थ बनाने के लिए कई साधनों से काम लिया जाता था। संयुक्त शब्दों और समस्त पदों के बनाने की प्रवृत्ति बलवती थी। दो शब्दों को मिलाकर एक नवीन शब्द तैयार हो जाता था, जिसका अर्थ आप-से-आप स्पष्ट होता था। कभी-कभी प्रचलित भाषा में इस प्रकार के यौगिक शब्दों का नवीन अर्थ भी हुआ करता था। इसी प्रकार उपसर्गों और प्रत्ययों के प्रचुर प्रयोग से पुरानी अंग्रेजी की शब्दावली समृद्ध बन गयी थी। एक ही शब्दमूल से उपसर्गों और प्रत्ययों को जोड़कर अनगिनत शब्द बन जाते थे जिनमें पर्याप्त अर्थ भेद होता था। कुछ प्रमुख प्रत्यय निम्नलिखित थे :—

-ig, -ful, -tea, -lice, -nes, and -ung, sum and, wisdom, and, etc, -had, sclpe.

नीचे लिखे बारह उपसर्गों को लगाकर असंख्य शब्द बनते थे। इनका प्रयोग खासकर क्रियाओं के साथ होता था।

a, be-, for-, force-, ge-, mis-, -of- offer, on, to-, un-, under-, wip-.

उपर्युक्त साधनों द्वारा पुरानी अंग्रेजी-शब्दावली में काफी वृद्धि हो जाती थी, अतः उसमें पर्यायवाची शब्दों की कमी न थी और गद्य तथा पद्य में भाव स्पष्ट एवं रोचक ढंग से व्यक्त किये जाते थे।

पुरानी अंग्रेजी पर पड़नेवाले बाह्य-प्रभाव

ऊपर जिस ट्यूटन भाषा की चर्चा हम कर आये हैं, वह नार्मनों के इंग्लैण्ड

में आगमन के पूर्व प्रायः ६०० वर्षों तक देश की प्रधान भाषा के रूप में व्यवहृत तथा विकसित होती रही। प्रमुखता ट्यूटन बोलियों की ही थी, किन्तु उनके साथ केल्टिक भाषा लैटिन, तथा स्कैन्डेनेवियन भाषा का कम अथवा अधिक सम्मिश्रण लगातार होता रहा। इनमें केल्टिक भाषा का प्रभाव सीमित था। ट्यूटन जातियों ने आकर पूर्वी तथा दक्षिण पूर्वी भागों पर सर्वप्रथम अधिकार प्राप्त किया और तदनन्तर पश्चिम की ओर बढ़े। उनके आक्रमण के कारण केल्टिक निवासी या तो विनष्ट हो गये अथवा उन्होंने पश्चिम की ओर भाग कर आश्रय लिया। अतएव केल्टिक प्रभाव कार्नवाल, वेल्स और स्काटलैण्ड इत्यादि में ही सर्वाधिक परिलक्षित होता है। केल्टिक प्रभाव के चिह्न अधिकांश स्थानों के नाम तथा नदियों, पहाड़ों इत्यादि के नामों में दिखाई पड़ते हैं। डेवान-शायर, कार्नवाल, केन्ट, विन्चेस्टर, सैलिसबरी, एक्सेटर, ग्लास्टर, ओरेस्टर, लिचूफील्ड आदि नाम केल्टिक प्रभाव के द्योतक हैं। कदाचित् लन्दन नाम की व्युत्पत्ति भी इसी केल्टिक मूल से हुई है। अनेक नदियों के नाम जिनमें टेम्स भी सम्मिलित है, केल्टिक भाषा से निकले हैं और इसी भाँति बहुत-से पहाड़ों और घाटियों के नाम भी, विशेषकर ऐसे नाम जिनमें कोम्ब 'Combe' लगा हुआ है। इन नामों के सिवा केवल थोड़े से और केल्टिक शब्द पुरानी अंग्रेजी में प्रविष्ट हुए। इनमें अधिकांश दैनिक जीवन के बोले जानेवाले घरेलू शब्द थे।

केल्टिक प्रभाव की अपेक्षा लैटिन प्रभाव अधिक विस्तृत तथा दीर्घकालीन था। इस प्रभाव के तीन विभिन्न स्रोत थे और इसके तीन विभिन्न काल माने जाते हैं जिनको क्रमशः जीरो काल, प्रथम काल तथा द्वितीय काल कहते हैं। जीरो काल में पड़नेवाला लैटिन प्रभाव ट्यूटन जातियों के ब्रिटेन में आगमन के पूर्व ही पड़ चुका था। ट्यूटन जाति के लोग रोमन साम्राज्य तथा उसकी व्यवस्था के अन्तर्गत आते थे। रोमन सभ्यता का उन पर कुछ-न-कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा था। इसलिए अनेक लैटिन शब्द उनकी भाषा में सम्मिलित हो गये थे। जब वे ब्रिटेन में आये तो इन शब्दों को अपने साथ लाये। इनमें से अधिकांश युद्ध तथा घरेलू कार्यों से सम्बन्ध रखते थे और इस प्रकार के प्रायः ५० शब्दों की तालिका विद्वानों ने तैयार की है। लैटिन प्रभाव के प्रथम काल के शब्द वे हैं जिनका समावेश केल्टिक भाषा के माध्यम से हुआ। हम ऊपर

कह चुके हैं कि ब्रिटेन में रोमन सत्ता के अन्त के साथ-साथ वहाँ लैटिन का प्रचलन भी समाप्त हो गया, किन्तु केल्टिक भाषा में अनेक लटिन शब्द समाविष्ट हो गये थे और उनको पुरानी अंग्रेजी में ग्रहण किया गया। ऐसे थोड़े से ही शब्दों का पता चलता है। पुरानी अंग्रेजी पर लैटिन का सबसे अधिक प्रभाव द्वितीय काल में पड़ा जिसका प्रारम्भ सेंट आगस्टाइन तथा उनके अनुयायियों के धर्म-प्रचारार्थ देश में आने के साथ हुआ। सातवीं और आठवीं शताब्दी में ईसाई धर्म का विस्तार ब्रिटेन में द्रुत गति से हुआ। नवीं और दसवीं शताब्दी में डेनिश आक्रमण-कारियों के आतंक से ईसाई धर्म और चर्च को बड़ा धक्का पहुँचा। अन्त में किंग आल्फ्रेड तथा कुछ प्रमुख ईसाई पादरियों के प्रयत्न से देश में ईसाई धर्म का पुनरुत्थान हुआ। इन सभी परिस्थितियों में लैटिन शब्द अधिकाधिक संख्या में व्यवहृत होते रहे और पुरानी अंग्रेजी के अंग बन गये। प्रायः ४५० ऐसे शब्दों का पता हमें लगता है जो इस काल में लैटिन से पुरानी अंग्रेजी को प्राप्त हुए। इनमें सबसे बड़ा अनुपात ऐसे शब्दों का है जो ईसाई धर्म और गिरजाघरों से सम्बन्धित हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इस काल में लैटिन से शब्दों के लेने की परम्परा बन गयी जो मध्ययुग के बाद नवजागरण के काल में और भी बलवती हुई।

स्कैण्डिनेवियन प्रभाव—ब्रिटिश द्वीपों के इतिहास में आठवीं शताब्दी के मध्य से लगाकर ११वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक के काल को 'वाइकिंग युग' कहते हैं। वाइकिंग लोग उत्तर की ओर से, अर्थात् स्कैण्डिनेविया और डेनमार्क से आये थे। ये लोग भी ट्यूटन जाति के थे और किसी समय जर्मन प्रान्तों में ऐंगिल्स, जूट और सैक्सन प्रभृति के पुरखों के साथ निवास करते थे। वहाँ से हटकर वे उत्तर की ओर चले गये, जहाँ उन्होंने उत्तर सागर और बाल्टिक सागर के आसपास स्वेडेन, नार्वे, डेनमार्क प्रभृति राज्य स्थापित किये। उनकी राज्यसत्ता का विस्तार क्रमशः रूस, आइसलैण्ड, ग्रीनलैण्ड इत्यादि में हुआ। डेन लोगों ने नारमैडी में अपना राज्य स्थापित किया जहाँ से आगे चलकर उन्होंने इंग्लैण्ड में प्रवेश किया और अपना राज्य स्थापित किया। इंग्लैण्ड पर इन स्कैण्डिनेवियन जातियों के हमले लगभग ८वीं शताब्दी के मध्य से होने लगे। बहुत दिनों तक वे केवल लूटमार के लिए हमले करते थे। सम्पन्न निवासियों

तथा मठों में संचित धनराशि को लूटना ही उनका अभिप्राय था। यह क्रम प्रायः ८५० ई० तक चलता रहा। तदुपरान्त नार्वे और डेनमार्क से वाइकिंग लोग नार्वे के विशाल बेड़े लेकर देश में राज्य स्थापित करने के उद्देश्य से आये। ८५० ई० में ३५० नार्वे का बेड़ा बनाकर बहुसंख्यक सैनिकों ने आक्रमण किया। इसके बाद निरन्तर इस प्रकार के आक्रमण होते रहे। आक्रमणकारी उत्तर-पूर्व से आकर धीरे-धीरे पश्चिम-दक्षिण की ओर बढ़े। अन्त में उनकी मुठभेड़ वेस्ट सैक्सनों के महान् सम्राट् किंग आल्फ्रेड (८७१-९०१) से हुई। आल्फ्रेड की शुरु में तो पराजय हुई, किन्तु ८७८ ई० में उन्होंने डेन लोगों के नेता गुथरम और उसकी सेनाओं को बुरी तरह से परास्त किया। सन्धि हुई और एक सीमा-रेखा खींच दी गयी जिसके आगे पश्चिम की ओर डेन लोग नहीं बढ़ सकते थे। अन्य राज्यों से भी डेन लोगों की लड़ाई हुई, किन्तु धीरे-धीरे दोनों जातियों के लोग एक दूसरे से मिलने लगे। सन् ८७८ और १०४२ ई० के बीच के वर्षों में उत्तर से ही अक्सर हमले होते रहे और अन्त में डेन राजा किंग कैनूट ने देश पर अपना आधिपत्य स्थापित किया, किन्तु साथ ही साथ दोनों जातियों का मिश्रण चलता रहा और उनका पारस्परिक सम्बन्ध विकसित होता गया। डेन लोगों ने नगर और वस्तियाँ बसायीं। ब्रिटेन में कम से कम १५०० से भी अधिक ऐसे नाम हैं जो स्कैण्डिनेवियन भाषा से लिये गये हैं। डेन लोगों का क्षेत्र उत्तर-पूर्व की ओर था, किन्तु स्कैण्डिनेवियन जातियों का प्रभाव अन्यत्र भी पड़ा।

ब्रिटिश द्वीपों में रहनेवाली ट्यूटन जातियों के साथ-साथ नवागत डेन-नार्वे लोगों के बस जाने का परिणाम यह हुआ कि दोनों की भाषाओं का सम्मिश्रण होने लगा। एक साथ रहने का यह स्वाभाविक फल था। इसके अतिरिक्त विवाह-सम्बन्ध से दोनों वर्गों के लोग अधिकाधिक निकट आने लगे। वैसे भी दोनों भाषाओं में कुछ साम्य पहले से ही था, विशेषकर एंग्लियन और नार्वे भाषा में। दोनों भाषाओं के पारस्परिक सम्बन्ध तथा उनके सम्मिश्रण की प्रक्रिया का पता शब्दों के ध्वनि-परिवर्तन तथा अर्थ-परिवर्तन से लगता है। नार्वे भाषा में क, ड आदि अपेक्षाकृत कठोर ध्वनियों का बाहुल्य था। परिवर्तित होकर इन्हीं ध्वनियों ने तालव्य एवं मृदु रूप धारण किया। उदाहरणार्थ,

पुरानी नार्स भाषा की Sk ध्वनि बदलकर Se(sh) हो गयी। अतएव स्काई का सम्बन्ध नार्स से और शिप का सम्बन्ध पुरानी अंग्रेजी से अधिक निकट है। शब्दों के अर्थ से भी उनका वर्गीकरण किया जा सकता है। एक ही वस्तु के कभी-कभी दो नाम मिलते हैं, एक पुरानी अंग्रेजी से प्राप्त और दूसरा पुरानी नार्स भाषा से। धातुओं के इस प्रकार के दोहरे नाम थे। प्रचलित नाम पुरानी अंग्रेजी से लिये गये थे, किन्तु कम व्यवहार में आनेवाले पारिभाषिक नाम नार्स भाषा से गृहीत हुए थे। स्कैण्डिनेवियन प्रभाव सबसे अधिक स्थानों के नाम में परिलक्षित होता है। By, thorpe, waite, toft आदि से अन्त होनेवाले कई सौ नाम स्कैण्डिनेवियन भाषा से आये हैं। ये नाम अधिकांश यार्कशायर, लिंकन-शायर तथा अन्य भागों में मिलते हैं जो 'डेनला' के अन्तर्गत थे। स्थान-नामों के अलावा अंग्रेजी में स्थायी रूप से ग्रहण किये जानेवाले स्कैण्डिनेवियन मूल के शब्दों की संख्या बहुत अधिक नहीं है। इन शब्दों में बहुत से ऐसे हैं जिनका सीधा सम्बन्ध समुद्र यात्रा, नौका इत्यादि से है। व्याकरण और भाषा की रचना पर स्कैण्डिनेवियन प्रभाव अत्यन्त अल्प और सीमित था।

तृतीय अध्याय

मिडिल इंग्लिश या मध्यम अंग्रेजी

पुरानी अंग्रेजी का क्रमशः विकास हो रहा था और यह विकास-क्रम चलता रहता यदि सन् १०६६ ई० में अंग्रेजों की पराजय नार्मन आक्रमणकारियों द्वारा हेस्टिंग्स के रणक्षेत्र में न हुई होती। नार्मन लोग उत्तर से आकर फ्रांस के उस भाग में बस गये थे जो ब्रिटिश चैनल के दूसरी ओर है। सन् ९१२ ई० में इन लोगों के नेता रोलो ने अत्यधिक शक्ति संचित कर ली और फ्रांस के राजा के साथ एक सन्धि द्वारा नार्मन सत्ता को सुव्यवस्थित बना दिया। तदुपरान्त प्रायः दो सौ वर्षों तक नारमण्डी में प्रभूत शक्ति और प्रभाववाले अनेक ड्यूक हुए। सन् १००२ में एथेलरेड नामक अंग्रेज राजा का विवाह नारमैण्डी में हुआ और कुछ दिनों के बाद वह डेनिश आक्रमणकारियों के भय से भागकर नारमैण्डी में निवास करने लगा। उसकी मृत्यु के उपरान्त सन् १०४२ ई० में उसका पुत्र एडवर्ड, जिसकी शिक्षा-दीक्षा फ्रांस में हुई थी, इंग्लैण्ड का राजा बना। यह प्रायः २४ वर्ष तक राज्य करता रहा, किन्तु इसके कोई पुत्र न था और १०६६ ई० में इसकी मृत्यु के बाद उत्तराधिकार का प्रश्न सामने आया। वेस्ट सेक्स के नेता हेरोल्ड ने सिंहासन प्राप्त करने की चेष्टा की, किन्तु नारमैण्डी के ड्यूक विलियम ने इंग्लैण्ड का राज्य अपने लिए प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। अतः सुसज्जित और बहुसंख्यक सैनिकों के साथ उसने इंग्लैण्ड पर हमला किया और हेस्टिंग्स के मैदान में घमासान युद्ध हुआ। हेरोल्ड युद्ध में मारा गया और तत्पश्चात् अंग्रेजी सेना ने पलायन किया। सन् १०६६ में क्रिसमस के दिन विलियम सिंहासनारूढ़ हुआ और उसके अधिकार को प्रायः समस्त देश ने स्वीकार किया।

फ्रेंच भाषा का प्रभाव

नार्मन, फ्रांस से आये थे और आगमन के पूर्व लगभग सौ या डेढ़ सौ वर्षों तक उनका सांस्कृतिक विकास होता आया था। वह फ्रांसीसियों से घुल-मिल

गये थे, फ्रेंच भाषा लिखते और बोलते थे और उनकी रहन-सहन भी फ्रांसीसियों के समान हो गयी थी। अतएव इंग्लैण्ड में उनके आने के साथ ही साथ फ्रांसीसी सभ्यता और फ्रेंच भाषा का प्रभाव बढ़ा और अंग्रेजी भाषा का विकास-क्रम बहुत कुछ अवरुद्ध हो गया, क्योंकि वह विदेशियों की भाषा से अभिभूत हो गयी।

हेस्टिंग्स के रणक्षेत्र में विजय प्राप्त करने के बाद तथा उसके उपरान्त सिंहासनारूढ़ होने के साथ ही साथ देश में नार्मन आक्रमणकारियों का विरोध समाप्त नहीं हो गया। प्रायः ४-५ वर्षों तक विलियम को विरोधी अंग्रेज सामन्तों का सामना करना पड़ा। कुछ सामन्त तो हेस्टिंग्स के युद्ध में मारे गये थे और बाकी धीरे-धीरे परास्त किये गये। इस प्रकार सैक्सन भूमिपतियों की सत्ता बहुत कुछ निर्मूल हो गयी और उनके स्थान पर नवीन फ्रांसीसी सामन्तों ने अधिकार स्थापित किया। यही लोग नार्मन राजाओं के मित्र और सहायक थे और राजदरबार में उन्हींका मान था। धार्मिक संस्थाओं में भी फ्रांसीसियों का महत्त्व बढ़ने लगा। जिस प्रकार फ्रेंच अलों ने अंग्रेजी अलों को पदच्युत कर दिया उसी प्रकार अंग्रेज बिशप और एबट धीरे-धीरे हटने लगे और उनका स्थान फ्रांसीसी पादरी लेने लगे। मठों में भी फ्रांसीसी प्रभाव लगभग डेढ़ सौ वर्षों तक बढ़ता रहा। सन् १०६६ और सन् १२०४ के अन्तर्गत इंग्लैण्ड और नार्मैण्डी का सम्पर्क घनिष्ठ बना रहा। बहुत दिनों तक दोनों ही राज्य एक ही सम्राट् द्वारा शासित थे तथा अंग्रेज राजा अपना बहुत-सा समय नार्मैण्डी में व्यतीत करते थे। सामन्तों और सैनिकों का आना-जाना निरन्तर चलता रहा और विवाह द्वारा दोनों जाति के लोग आपस में मिलने लगे। फलतः लगभग डेढ़ सौ वर्ष के इस काल में इंग्लैण्ड में न केवल फ्रांसीसियों का राजनीतिक आधिपत्य अक्षुण्ण बना रहा, अपितु समाज के उच्चतर स्तर में उन्हींका निश्चित आधिपत्य था। देश के प्राचीन रहनेवाले दबे हुए थे और राजनीति तथा समाज में उनका कोई विशिष्ट स्थान न था।

अतः यह स्वाभाविक था कि राज्यकार्य और उच्च-वर्गों में विचारों के पारस्परिक आदान-प्रदान के लिए फ्रांसीसी भाषा का ही अधिकाधिक प्रयोग हो। फ्रांस से आनेवाले अथवा फ्रांसीसी जाति के लोग ही फ्रेंच भाषा नहीं बोलते थे, वरन् ऐसे अंग्रेज भी जो उच्च पद पाने की महत्त्वाकांक्षा रखते थे, उसे सीखते

और व्यवहृत करते थे। अंग्रेजी किसानों, मजदूरों और आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से अन्य निम्न वर्गों की भाषा रह गयी। उच्च वर्ग के लोग आवश्यकता पड़ने पर इसे सीखते थे, किन्तु सामान्य रीति से इसके प्रति तटस्थ और निरपेक्ष थे।

हेस्टिंग्स के महायुद्ध के बाद प्रायः डेढ़ सौ वर्षों तक नार्मन और अंग्रेज जातियों में निकटतम सम्पर्क बना रहा और उनकी भाषाएँ देश में व्यवहृत होती रहीं। सामान्य स्थिति तो यही थी कि फ्रांसीसी और उच्च वर्ग के अंग्रेज फ्रेंच भाषा पढ़ते और लिखते थे। राजदरबार में भी फ्रेंच को ही प्रश्रय मिलता था। विलियम की पुत्री एडेला और हेनरी प्रथम की रानियाँ फ्रेंच साहित्य को विशेष प्रोत्साहन प्रदान करती थीं। फलतः इंग्लैण्ड में पर्याप्त साहित्य की रचना फ्रेंच भाषा में इस काल में हुई। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि उच्च वर्ग के लोग अंग्रेजी बिल्कुल जानते ही न थे। प्रसिद्ध विद्वान् इमर्सन ने इस बात पर विशेष बल दिया है कि नार्मन शासकों एवं सामन्तों ने अंग्रेजी भाषा सीखने का यथेष्ट प्रयत्न किया। विलियम स्वयं अंग्रेजी सीखने का इच्छुक था। अनेक सामन्त, पादरी इत्यादि काम चलाने के लिए कुछ-न-कुछ अंग्रेजी सीख लेते थे। इसी प्रकार मध्य वर्ग और निम्न वर्ग के लोग अधिकांश अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग करते थे किन्तु मध्य वर्ग में बहुत से लोग ऐसे थे जो अपना कार्य फ्रेंच अथवा लैटिन भाषा में सम्पन्न करते थे। ऐसे लोगों में दफ्तरों में कार्य करनेवाले लेखक विशेष उल्लेखनीय हैं। अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाएँ विभिन्न वर्गों द्वारा प्रयुक्त होने पर एक दूसरे के पूरक के रूप में काम करती थीं, उनमें विरोध अथवा संघर्ष का पता नहीं चलता। सामान्यतः अंग्रेजी फ्रेंच प्रभाव से दबी हुई थी और उसका अपना विकास भी बंद-सा हो गया था। जिन नवीन प्रभावों और परिस्थितियों में फ्रेंच की अपेक्षा पुनः अंग्रेजी को अधिक महत्त्व प्रदान किया गया उनका उल्लेख हम आगे करेंगे।

राजनीतिक कारणों से लगभग १५० वर्षों तक इंग्लैण्ड और नारमैण्डी में तथा फ्रेंच और अंग्रेजी भाषाओं में जो घनिष्ठ सम्बन्ध बना हुआ था वह सन् १२०४ ई० में नष्ट हो गया। इंग्लैण्ड के राजा जान नारमैण्डी के ड्यूक भी थे। फ्रांस के शासक फिलिप ने उनको ड्यूक की हैसियत से अपने दरबार में हाज़िर

होने के लिए बाध्य किया। जान इसके लिए तैयार न हुए अतः फ्रांसीसी दबाव के कारण उन्हें नामैंण्डी का परित्याग करना पड़ा। इस प्रकार राजनीतिक दृष्टि से अंग्रेजों की हानि हुई, किन्तु फ्रांसीसी प्रभाव से दबी हुई अंग्रेजी भाषा के लिए यह घटना अत्यन्त शुभ थी। उसके उपरान्त इंग्लैण्ड में राष्ट्रीय भावना का प्रादुर्भाव हुआ और शनैः-शनैः अंग्रेजी भाषा का महत्त्व बढ़ने तथा फ्रेंच भाषा का महत्त्व घटने लगा। सामान्यतः तेरहवीं शताब्दी में फ्रेंच भाषा का प्रचलन कम तो अवश्य हुआ, किन्तु तब भी उच्च वर्गों में बना रहा। इंग्लैण्ड के राजा हेनरी तृतीय (१२१६-१२७२) के राज्यकाल में फ्रांसीसियों और फ्रेंच भाषा को विशेष प्रश्रय मिला। हेनरी का विवाह फ्रांस में हुआ था और उसकी रानी इलीयानार के कारण बहुत-से फ्रांसीसी इंग्लैण्ड में न केवल आये, वरन् उन्होंने उच्च पद भी प्राप्त किये। दूसरी बात यह थी कि उस समय सारे यूरोप में फ्रेंच सम्य एवं सुसंस्कृत जनों की सामान्य भाषा थी। इसलिए तेरहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड के समृद्ध और सुरुचि सम्पन्न लोग फ्रेंच भाषा सीखते थे; तब भी राष्ट्रीय भावना बलवती हो रही थी और अंग्रेजी का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। राजा हेनरी से कुछ लोगों ने यह शिकायत की कि गिरजाघरों में कतिपय पादरी लोग जनभाषा में अपने उपदेश नहीं देते थे और इस प्रकार जनता की क्षति होती थी। ऐसी शिकायतें अंग्रेजी के बढ़ते हुए महत्त्व को सूचित करती हैं। फ्रेंच भाषा अब विदेशी हो गयी थी और तृतीय हेनरी तथा उसकी रानी द्वारा फ्रांसीसियों के प्रति प्रदर्शित अनुग्रह से अंग्रेज जनता में क्षोभ उत्पन्न हो रहा था। अतएव जन-साधारण में अपनी भाषा के प्रति अनुराग और फ्रांसीसी भाषा के प्रति तटस्थ भावना बढ़ रही थी। उच्च वर्ग में फ्रेंच का ही प्राधान्य था, किन्तु उसमें भी अंग्रेजी सीखने की प्रवृत्ति बढ़ रही थी। कुछ पादरियों और सामन्तों ने फ्रेंच के घटते हुए प्रभाव को रोकने का प्रयत्न किया, किन्तु उनका प्रयास निष्फल रहा।

अंग्रेजी के प्रसार में वृद्धि

चौदहवीं शताब्दी में निश्चित रूप से अंग्रेजी ने फ्रेंच की अपेक्षा अधिक महत्त्व प्राप्त किया और वह देश की प्रमुख भाषा के रूप में स्वीकृत होने लगी।

अन्य कारणों के अतिरिक्त दो बातें ऐसी घटित हुईं जिनसे अंग्रेजी की प्रगति को विशेष बल मिला। इनमें पहला कारण था इंग्लैण्ड और फ्रांस के बीच होने-वाला सौ वर्ष का युद्ध (१३३७-१४५३)। इस युद्ध में कभी अंग्रेजों को और कभी फ्रांसीसियों को विजय प्राप्त हुई और बीच-बीच में वर्षों तक अस्थायी सन्धि के कारण युद्ध बन्द रहा। किन्तु सामान्यतः इस दीर्घकालीन युद्ध के युग में फ्रांसीसियों और अंग्रेजों का पारस्परिक वैमनस्य बना रहा, फलतः फ्रेंच भाषा इंग्लैण्ड में शत्रु जाति की भाषा मानकर तिरस्कृत होने लगी। इसके साथ ही साथ अंग्रेजी के प्रचार और प्रसार का वर्द्धन स्वाभाविक था।

अंग्रेजी के नवोत्थान का दूसरा कारण था चौदहवीं शताब्दी में मध्यम वर्ग का अभ्युदय। सन् १३४८ में इंग्लैण्ड के दक्षिण-पश्चिमी भाग में एक भीषण महामारी फैलने लगी, जिसको उसकी भयंकरता के कारण इंग्लैण्ड के इतिहास में 'ब्लैक डेथ' कहते हैं। दो वर्षों के भीतर यह महामारी प्रायः समस्त देश में फैल गयी और जनता का लगभग ४० प्रतिशत इससे हत हुआ। मरनेवालों में अधिकांश किसान, भेड़ पालनेवाले और मजदूर थे। नतीजा यह हुआ कि देश में मजदूरों की कमी हुई और सन् १३८१ ई० में मजदूरों ने अधिक वेतन के लिए आन्दोलन किया। दिन पर दिन मजदूरों की अवस्था सुधरने लगी और इस प्रकार एक महत्त्वपूर्ण मध्यम वर्ग की सृष्टि हुई। इसी काल में छोटे धंधों का भी विकास हुआ और व्यापारियों तथा अन्य व्यवसायियों ने इस अपेक्षाकृत समृद्धि के काल में अपने-अपने संघ बना लिये। मध्यम वर्ग के निर्माण और विस्तार में इससे भी सहायता मिली।

उपर्युक्त कारणों से चौदहवीं शताब्दी में अंग्रेजी ने आश्चर्यजनक प्रगति की। जैसे बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में अंग्रेजी बोलने और लिखनेवाले हेय दृष्टि से देखे जाते थे वैसे ही अब फ्रेंच भाषा व्यवहार में लानेवालों को लोग तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगे। सन् १३६२ ई० में 'स्टैट्यूट आफ प्लीडिंग', नामक विधान पारित किया गया जिसने कचहरियों में अंग्रेजी का व्यवहार संभव कर दिया। इसके पूर्व वहाँ का कारोबार लैटिन अथवा फ्रेंच भाषा में होता था। इन भाषाओं को जनता नहीं समझती थी, अतः उसको अत्यधिक कठिनाई होती थी और कभी-कभी उचित न्याय भी नहीं मिल पाता था। चौदहवीं

शताब्दी में पाठशालाओं में अंग्रेजी पठन-पाठन का प्रचलन तेजी से बढ़ने लगा और आक्सफोर्ड के कुछ प्रसिद्ध अध्यापकों ने लैटिन के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा की शिक्षा प्रदान करना भी प्रारम्भ कर दिया ।

पन्द्रहवीं शताब्दी के बहुत-से ऐसे लेख मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि लिखने और बोलने दोनों में अंग्रेजी ने अपने प्रतिस्पर्धी फ्रेंच भाषा को महत्त्व और व्यवहार में बहुत पीछे छोड़ दिया । अब शुद्ध और परिष्कृत फ्रेंच बोलनेवालों की संख्या बहुत कम रह गयी थी, और अंग्रेजी भाषा का निरन्तर परिष्कार हो रहा था । अंग्रेजी अधिकाधिक लेखों में प्रयुक्त हो रही थी । १५वीं शताब्दी के अंग्रेजी पत्रों के कई संग्रह उपलब्ध हैं । अभिप्राय यह है कि १५वीं शताब्दी में अंग्रेजी भाषा ने फ्रेंच और लैटिन अपनी दोनों प्रतिद्वन्द्वी भाषाओं पर वरीयता प्राप्त कर ली ।

अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन

बारहवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी तक के लगभग ४०० वर्षों के दीर्घकाल में अंग्रेजी भाषा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए । इस नवीन विकास का प्रभाव आज की प्रचलित अंग्रेजी भाषा में भी देखा जा सकता है । इस युग की अंग्रेजी को 'मध्यम अंग्रेजी' कहते हैं, क्योंकि यह प्राचीन अंग्रेजी और आज की परिनिष्ठित अंग्रेजी के बीच की कड़ी है । परिवर्तन दो प्रकार से हुआ—(१) व्याकरण में, (२) शब्द-समुदाय में । हम इन दोनों प्रकार के परिवर्तनों के सम्बन्ध में मोटी-मोटी बातें नीचे लिख रहे हैं ।

(क) व्याकरण में सबसे बड़ा परिवर्तन क्रमशः विभक्तियों के लोप से उत्पन्न हुआ । एक ओर उच्चारण में परिवर्तन के कारण शब्दों के रूप बदल रहे थे और दूसरी ओर भाषा में एक नयी प्रवृत्ति यह आ रही थी कि शब्दों का अर्थ वाक्य में उनके स्थान द्वारा तथा सम्बन्ध-सूचक शब्दों की सहायता से निर्धारित किया जाय । हम देख चुके हैं कि पुरानी अंग्रेजी विभक्ति-बहुला संश्लिष्ट भाषा थी, जिसमें शब्द-रूपों के परिवर्तन और नवीन विभक्तियों द्वारा अर्थ व्यक्त किया जाता था । मध्यम अंग्रेजी अधिक विश्लेषणात्मक थी और धीरे-धीरे विभक्तियों के हट जाने से

शब्द-रूपों में भी परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा। पुरानी अंग्रेजी में संज्ञा का एकवचन और बहुवचन विभिन्न विभक्तियों द्वारा प्रगट किया जाता था, किन्तु मध्यम अंग्रेजी en, es, s और अन्त में चलकर केवल s से बहुवचन का बोध होने लगा। विशेषणों का केवल एक रूप रह गया। कर्त्ता कारक एकवचन और कर्त्ता कारक बहुवचन के रूप और इसी भाँति सर्वनाम के रूप भी विभक्तियों के हट जाने से बहुत कुछ सरल और एकाकार हो गये।

- (ख) क्रिया में इस काल में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। पुरानी अंग्रेजी की अधिकांश क्रियाएँ 'स्ट्रांग' थीं अर्थात् विविध अवस्थाओं में इनका रूप बदलता रहता था, किन्तु मध्यम अंग्रेजी में इस प्रकार की क्रियाएँ व्यवहार में न आने के कारण भाषा से शनैः-शनैः लुप्त होने लगीं और उनके स्थान पर 'वीक' क्रियाएँ अर्थात् ऐसी क्रियाएँ जिनमें केवल d और ed जोड़कर कालभेद लक्षित किया जाता है, व्यवहार में अधिकाधिक आने लगीं। 'स्ट्रांग' क्रियाओं के लोप की प्रक्रिया आधुनिक काल तक चली आयी है और फलतः आज की अंग्रेजी भाषा में केवल ६८ स्ट्रांग क्रियाएँ बची हुई हैं।
- (ग) पुरानी अंग्रेजी में लिंग-भेद व्याकरण के नियमों पर आधारित था, किन्तु मध्यम अंग्रेजी में यह विशेषता बदलने लगी और शब्दों का लिंग स्वाभाविक और वास्तविक लिंग-भेद के अनुसार निर्धारित होने लगा। इससे भाषा में सरलता आ गयी।
- (घ) ऊपर जिन व्याकरण से सम्बन्धित परिवर्तनों का उल्लेख किया गया है उनसे कहीं विस्तृत और गम्भीर था अंग्रेजी के शब्द-समूह पर फ्रेंच का नवीन प्रभाव। विद्वानों का मत है कि नार्मन विजय से लेकर पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त तक अंग्रेजी भाषा में लगभग १० हजार फ्रेंच शब्दों का समावेश हुआ। हेस्टिंग्स के युद्ध के बाद बहुत दिनों तक अंग्रेजी में फ्रेंच शब्दों का आगमन केवल शनैः-शनैः होता रहा। अतः सन् १२५० ई० के पूर्व अनुमानतः केवल ९०० फ्रेंच शब्द गृहीत हुए। इनमें अधिकांश वे शब्द थे, जिनको विजित ऐंग्लो सैक्सन वर्ग ने व्यवहार में

नार्मन लोगों से सीखा । १२५० ई० के बाद दोनों जातियों का सम्पर्क अधिक घनिष्ठ होने लगा और अनेक कारणों से फ्रेंच बोलनेवाले उच्च वर्ग के लोग अंग्रेजी की ओर अधिकाधिक उन्मुख हुए और उसे सीखने लगे । फलतः डेढ़ सौ वर्ष तक अर्थात् १४ वीं शताब्दी के अन्त तक फ्रान्सीसी शब्दों का अंग्रेजी में परिवहन तीव्र वेग से चलता रहा । उसके बाद यह वेग कम होने लगा ।

ग्रहण किये जानेवाले शब्दों में प्रचुर वैविध्य था । फिर भी जीवन के कतिपय व्यापारों और विभागों से अपेक्षाकृत अधिक शब्द लिये गये । इनमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण थे शासन-व्यवस्था और न्याय से सम्बन्ध रखनेवाले शब्द । इनके सिवा धर्म और व्यापार से सम्बन्धित शब्द भी बड़ी संख्या में ग्रहण किये गये । सेना और युद्ध से सम्बन्धित शब्दों का भी लिया गया और इसी भाँति कला, साहित्य, और सुसंस्कृत जीवन से सम्बन्ध रखनेवाले बहुसंख्यक शब्द फ्रेंच से अंग्रेजी में लिये गये । नतीजा यह हुआ कि एक ही अर्थ अथवा अभिप्राय को व्यक्त करनेवाले भाषा में लैटिन, फ्रेंच और सैक्सन मूल से उत्पन्न दो या तीन शब्द मौजूद थे । यह उल्लेखनीय है कि मध्य युग में फ्रेंच के अतिरिक्त लैटिन का भी विशेष महत्त्व था, यद्यपि वह केवल विद्वानों और पादरियों की भाषा बनी रही और जन साधारण ने उसे नहीं अपनाया । आज की अंग्रेजी भाषा में एक ही अर्थ के द्योतक अनेक पर्यायवाची मिलते हैं, जिनमें सैक्सन मूल का शब्द लघु और सरल आकार का होता है । लैटिन से उत्पन्न शब्द अपेक्षाकृत बड़े और ध्वनि की दृष्टि से अधिक समृद्ध होते हैं ।

- (ङ) मध्यकालीन अंग्रेजी में पुरानी अंग्रेजी की कतिपय विशिष्ट प्रवृत्तियों का ह्रास हुआ । उदाहरणार्थ, पुरानी अंग्रेजी में उपसर्ग और विभक्तियों के अबाध प्रयोग द्वारा शब्द निर्माण निरन्तर होता रहता था । मध्यम अंग्रेजी में इन उपसर्गों, प्रत्ययों, और विभक्तियों का महत्त्व घट गया, क्योंकि भाषा में शब्दों की कमी नहीं थी । अतएव नवीन शब्दों के निर्माण की आवश्यकता भी कम पड़ती थी । पुराने उपसर्ग लुप्त हो गये और लैटिन से लिये हुए कुछ नवीन उपसर्ग प्रचलित हुए । हम कह

आये हैं कि पुरानी अंग्रेजी में शब्दों को जोड़कर नवीन संयुक्त शब्द आसानी से बना दिये जाते थे। मध्यम अंग्रेजी में यह प्रवृत्ति भी क्षीण होती हुई दिखाई देती है।

- (च) मध्यकालीन अंग्रेजी की अनेक जन-बोलियाँ थीं। इन लोक-भाषाओं का विस्तृत उल्लेख यहाँ सम्भव नहीं है। इतना ही बताना पर्याप्त होगा कि इनमें चार प्रमुख बोलियाँ थीं। उत्तरी भाषा जो हम्बर नदी के उत्तरवाले सारे प्रदेश में बोली जाती थी। हम्बर और टेम्स के बीच में पूर्वीय-मध्यदेशीय और पश्चिमी-मध्यदेशीय भाषाएँ बोली जाती थीं। टेम्स नदी के दक्षिण की ओर बोली जानेवाली दक्षिणी बोली कही जा सकती है। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण थी पूर्वीय-मध्यदेशीय भाषा। इसी-से आधुनिक परिनिष्ठित अंग्रेजी की उत्पत्ति हुई।

चतुर्थ अध्याय

आधुनिक अंग्रेजी का अभ्युत्थान तथा नवजागरण के युग में उसका विकास

जैसा कि हम बता आये हैं, चौदहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में अनेक लोक-भाषाएँ प्रचलित थीं जिनमें से चार भाषाओं का हमने विशेष रूप से उल्लेख किया है। इन चार भाषाओं में मध्य-पूर्व की भाषा सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण थी। केन्द्रीय होने के कारण उसीके माध्यम से देश के विभिन्न भागों के निवासी व्यवहार में विचारों के आदान-प्रदान का काम चलाते थे। इस प्रदेश में निवासियों की संख्या भी अपेक्षाकृत अधिक थी और लोग अधिक सम्य तथा समृद्ध भी थे। इसी प्रदेश में कैम्ब्रिज एवं आक्सफोर्ड के विश्वविद्यालय भी स्थित थे जिनसे विद्या और सम्यता का प्रसार हो रहा था। सबसे बड़ी बात यह थी कि इसी भूभाग के अन्तर्गत देश की राजधानी लन्दन का नगर बसा हुआ था। देश का प्रमुख राजनीतिक और व्यापारिक केन्द्र होने के कारण सभी प्रान्तों से लोग आते थे और उनके आपस में मिलने के कारण लन्दन की अपनी भाषा बन गयी थी, जिसका कुछ न कुछ प्रचार अन्यत्र भी हो रहा था। इन सभी कारणों के फलस्वरूप चौदहवीं शताब्दी में मध्य-पूर्वीय बोली से आधुनिक परिनिष्ठित अंग्रेजी विकसित हुई और १५वीं शताब्दी में इसने निश्चित रूप ग्रहण किया। सन् १४५० के लगभग देश में प्रायः सर्वत्र यह भाषा लिखने के काम में आने लगी। सन् १४७६ में इंग्लैण्ड में पहला मुद्रणालय स्थापित हुआ और कैक्सटन ने जो किताबें छापीं उनमें से अधिकांश इसी परिनिष्ठित नवीन भाषा में लिखी गयी थीं। इस प्रकार हम देखते हैं कि १५ वीं शताब्दी के अन्त तक भाषा का स्पष्ट और सुनिश्चित रूप सामने आ गया था।

नवीन काल का प्रारंभ

आधुनिक अंग्रेजी के प्रारम्भिक विकासकाल में इंग्लैण्ड में नवजागरण का प्रभाव प्रगट हुआ और इस प्रकार लगभग सन् १५०० ई० के आसपास

एक नवीन काल का प्रारम्भ हुआ, जो अंग्रेजी भाषा के इतिहास में कई प्रकार से अपना विशेष महत्त्व रखता है। नवजागरण के काल का विस्तार प्रायः १५० वर्षों तक माना जाता है और इस अवधि में भाषा का रूप स्थिर हुआ तथा वह समृद्ध बनी। इस समृद्धि के अनेक कारण थे। सर्वप्रथम छापेखाने का प्रभाव अत्यन्त विस्तृत और स्थायी सिद्ध हुआ। छपी हुई पुस्तकें कम दाम में जन-साधारण के लिए उपलब्ध हुईं। साथ-ही-साथ शिक्षा का प्रचार भी द्रुतगति से हुआ जिससे इन पुस्तकों के पढ़नेवालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। सन् १६५० के पूर्व ही जनता का एक तिहाई भाग साक्षर हो चुका था। इसी नवजागरण के काल में अनेक राजपथों का निर्माण हुआ और यातायात के साधन बढ़े। फलतः देश के कोने-कोने से लोग एक दूसरी जगह आ-जा सकते थे और विशेषकर वे लन्दन नगर में एकत्र होने लगे। जनता की सामाजिक चेतना भी अब बढ़ने लगी। प्रत्येक वर्ग का निजी आचरण था और विभिन्न वर्गों का पारस्परिक सम्बन्ध निर्धारित और सुनिश्चित था।

इस युग में भाषा के क्षेत्र में दो विशेष प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। व्याकरण अब बहुत कुछ सुदृढ़ आधार पर खड़ा था। भाषा के रूप को सुस्थिर और स्पष्ट बनाने के लिए यह आवश्यक था। आधुनिक अंग्रेजी भाषा अब सर्वप्रथम निखर कर जनता के सामने आने में सचेष्ट थी। अतः यदि व्याकरण के नियम अनिश्चित होते तो इस अभीष्ट की सिद्धि कदापि नहीं होती। इसके विपरीत भाषा का शब्द-समूह नवीन शब्दों को ग्रहण करने के लिए अत्यन्त तत्पर था। इस १५० वर्षों के काल में बहुसंख्यक शब्द विभिन्न स्रोतों से आकर अंग्रेजी भाषा में प्रविष्ट हुए।

यद्यपि अब आधुनिक अंग्रेजी जन-साधारण की भाषा बनकर सामने आ रही थी तथापि उसको इस युग में अपने अस्तित्व के लिए घोर संघर्ष करना पड़ा। नवजागरण के काल में ग्रीक और लैटिन भाषाओं तथा उनमें लिखित साहित्य के प्रति यूरोप में नवीन एवं प्रबल आकर्षण प्रगट हुआ। १५ वीं शताब्दी से लेकर १७ वीं शताब्दी पर्यन्त क्लासिकी ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन विशिष्ट शिक्षा केन्द्रों में चलता रहा। लैटिन एक प्रकार से सारे यूरोप की

भाषा थी और उसमें प्रभूत साहित्य विद्यमान था, अतः विद्वान् अध्यापक, पादरी इत्यादि इसीको श्रेष्ठ मानते थे और अंग्रेजी को हेय । किन्तु अंग्रेजी जनसाधारण की जीवित भाषा थी, अतः इसके भी अनेक समर्थक थे । युग के कुछ विशिष्ट विद्वानों ने इसका समर्थन किया । इन विद्वानों में ईलियट, विल्सन, चीक, ऐश्चम्, मुल्कास्टर प्रभृति प्रमुख थे । मुल्कास्टर ने लिखा है—
 “I love Rome but London better, I favour Etalic but England more, I honour Latin but I worthip the English.”
 इसके अतिरिक्त अनेक विद्वानों ने प्राचीन ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद किया । उनका अभिप्राय था कि अंग्रेजी के माध्यम से जनता प्राचीन साहित्य के अमूल्य ज्ञान भाण्डार से परिचित हो जाये । इन अनूदित ग्रन्थों से आर्थिक लाभ भी होता था, क्योंकि छपने पर जनता उन्हें खरीदती थी । प्रोटेस्टेन्ट धर्म के प्रचार से भी अंग्रेजी को सहायता मिली । जब विक्लिफ ने परम्परा को छोड़कर अंग्रेजी में धर्मोपदेश देना शुरू किया तब निश्चय ही इससे अंग्रेजी को बहुत शक्ति मिली । इस प्रकार अंग्रेजी और प्राचीन भाषाओं के संघर्ष में अंग्रेजी का पक्ष किसी प्रकार भी कमजोर नहीं था ।

वर्णविन्यास तथा उच्चारण की समस्या

नवजागरण के युग में एक बहुत बड़ी समस्या शब्दों के वर्ण-विन्यास तथा उच्चारण की थी । मध्य-युग से अंग्रेजी के शब्द उच्चारण के अनुसार ही लिखे जाते थे, अतः लिपिकों की रुचि और योग्यता के अनुसार उनमें बहुत वैविध्य रहता था । नामन लेखक शब्दों को भिन्न-भिन्न प्रकार से लिखते थे क्योंकि शब्दों का उच्चारण अभी स्थिर नहीं हुआ था । एक ही शब्द देश के विभिन्न भागों से आनेवाले लोग अलग-अलग ढंग से बोलते थे । सन् १५००—१६५० के बीच में शब्दों के वर्ण-विन्यास और उच्चारण में निश्चित एकरूपता लाने का प्रयत्न बराबर होता रहा और इस प्रयास में बहुत कुछ सफलता भी मिली । जहाँ तक वर्ण-विन्यास का प्रश्न था, उसका क्या आदर्श हो, इस प्रश्न पर काफी मतभेद था । अनेक विद्वान् शब्दों को उच्चारण के अनुसार लिखना चाहते थे और उन्होंने इस मत का समर्थन किया । किन्तु सन् १५८२ई० में रिचाड

मुल्कास्टर ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'एलिमेन्टेयर' (Elementaire) में दूसरे पक्ष का प्रतिपादन किया। उसका मत था कि वर्ण-विन्यास सुशिक्षित और सुरुचिसम्पन्न जनों के व्यवहार के अनुरूप होना चाहिए। प्रचलन और परम्परा के आधार पर ही हम उसे स्थिर कर सकते हैं, उच्चारण के आधार पर नहीं। लेखक ने अपनी पुस्तक के अन्त में लगभग ७००० शब्दों की एक सूची दी जिससे शब्दों का वर्ण-विन्यास निर्धारित करने में दूसरों को सहायता मिली। १७ वीं शताब्दी में भी रिचार्ड मुल्कास्टर के ही मत का अनुसरण किया गया तथा शब्दों के वर्ण-विन्यास के निर्धारण का काम चलता रहा। उच्चारण में भी सुव्यवस्था लाने की कोशिश हुई। राजधानी में रहनेवाले लोगों का उच्चारण धीरे-धीरे सर्वत्र ग्रहण होने लगा और पाठशालाओं में अध्यापकों ने उच्चारण के सुधार की ओर ध्यान दिया। वैसे भी जैसे-जैसे लिखने में शब्दों का रूप स्थिर होने लगा, साथ ही साथ उनके उच्चारण में भी एकरूपता आने लगी। तब भी यह कहना कि इस युग में उच्चारण की समस्या हल हो गयी, यथार्थ न होगा।

शब्द-समूह का विस्तार

भाषा के उच्चारण और वर्ण-विन्यास में सुधार द्वारा भाषा के परिष्कार का कार्य तो चलता ही रहा, साथ ही साथ इस युग में अंग्रेजी के शब्द-समूह को समृद्ध बनाने का अथक प्रयत्न भी हुआ। प्राचीन लैटिन और ग्रीक साहित्य के नवोत्थान के कारण इस बात का अनुभव होने लगा कि अंग्रेजी में प्राचीन भाषाओं की तुलना में शब्दों की कमी थी, विशेषकर ऐसे शब्दों की जो सूक्ष्म और सुन्दर भावों की अभिव्यक्ति कर सकें। राष्ट्रीय भावना का उदय हो रहा था। अतः अंग्रेजी विद्वानों ने राष्ट्रभाषा की इस कमी की पूर्ति करने का निश्चय कर लिया। विभिन्न भाषाओं से अंग्रेजी में शब्द आने लगे। सबसे अधिक शब्द लैटिन से आये और उसके बाद फ्रेञ्च और ग्रीक से। इटैलियन भाषा से भी शब्द लिये गये, विशेषकर ऐसे शब्द लिये गये जो नवीन अभिप्रायों और भावनाओं को प्रगट करते थे। नवजागरण के काल में ज्ञान की पिपासा बढ़ गयी थी और देश जागरूक हो उठा था। इसलिए नवीन शब्दों की आवश्यकता महसूस हुई और भाषा में अनेक स्रोतों से वे प्रविष्ट हुए।

शुरू में कुछ विद्वानों ने, जिनमें विल्सन प्रमुख थे, दूसरी भाषा से लिये हुए शब्दों का विरोध किया और उनको 'इंक-हार्न टर्म्स' की संज्ञा प्रदान की। विल्सन का कहना यह था कि ऐसे शब्द सर्वसाधारण के लिए सुगम नहीं होते और विद्वान् लोग केवल पाण्डित्य-प्रदर्शन के लिए इनका व्यवहार करते हैं। दूसरी ओर कुछ ऐसे लोग भी थे जो अन्य भाषाओं से लिये हुए शब्दों का स्वागत करते थे। जैसा आगे चलकर बेन जानसन और ड्राइडेन ने बताया, सुन्दर गद्य-शैली के निर्माण के लिए दोनों ही प्रकार के शब्द अर्थात् प्रचलित और नवीन उपयोगी होते हैं। बेन जानसन का कथन है कि एकाध अपरिचित शब्दों के प्रयोग से शैली में वैसे ही सुन्दरता आ जाती है जैसे घास के मैदान में यत्र-तत्र फूल खिले रहने से।

अंग्रेजी भाषा के इतिहास में इस काल का विशेष महत्त्व है, क्योंकि इस समय ग्रहण किये हुए शब्द पर्याप्त संख्या में भाषा की स्थायी सम्पत्ति बन गये। हम यह नहीं कह सकते कि सभी नवगृहीत शब्द आज भी व्यवहार में जीवित हैं। कुछ शब्दों का भाषा से निकल जाना स्वाभाविक था, किन्तु जीवित रहनेवाले शब्दों की संख्या पर्याप्त है। यहाँ हम थोड़े से उदाहरण मात्र दे सकते हैं।

संज्ञा—Anachronism, allurement, allusion, atmosphere, autograph, capsule, denunciation, dexterity, disability, disrespect, emanation, excrescence, excursion, expectation, halo, inclemency, jurisprudence.

विशेषण — Agile, appropriate, conspicuous, dexterous, expensive, external, habitual, hereditary, impersonal, insane, jocular, malignant.

क्रिया — Adapt, alienate, assassinate, benefit, consolidate, disregard, emancipate, eradicate, erupt, excavate, exert, exist, exhilarate, extinguish, harass, meditate.

इस प्रकार के शब्दों की संख्या इतनी बड़ी है कि उनकी परिगणना यहाँ सम्भव

नहीं। कुछ शब्द तो सीधे ग्रीक और लैटिन से लिये गये और कुछ फ्रेञ्च के माध्यम से आये। कुछ शब्दों में काट-छाँट करके उनका अंग्रेजी रूप बना दिया गया और कुछ ऐसे भी थे जिनके रूप में बहुत कम परिवर्तन किया गया। लैटिन, ग्रीक और फ्रेञ्च के अतिरिक्त यूरोप की अन्य भाषाओं से भी शब्द लिये गये, मुख्यतः इटैलियन और स्पैनिश भाषा से। नव-जागरण के युग में बहुत से अंग्रेज फ्रान्स, इटली, और स्पेन घूमने जाते थे और वहाँ कुछ दिन निवास भी करते थे। लैटिने पर विदेशी वेश-भूषा और विदेशी भाषा अपने साथ लाते थे और बोल-चाल में विदेशी शब्दों का प्रयोग करते थे। कभी-कभी इनका व्यवहार हास्यास्पद होता था और समकालीन साहित्य में इनका काफी मखौल उड़ाया गया है। इस प्रकार भाषा विकृत तो अवश्य हुई, किन्तु उसको बहुत से नवीन शब्द भी प्राप्त हुए। उदाहरणार्थ—algebra, argosy, balcony, cameo, capricio, cupola, design, granite, grotto, piazza, portico, stanza, stucco, trill, violin, volcano इत्यादि शब्द इटैलियन भाषा से लिये गये तथा alligator, anchovy, apricot, armada, armadillo, banana, bastinado bilbo, bravado, brocade. इत्यादि शब्द अंग्रेजी में स्पैनिश भाषा से आये।

इस काल में अनुमानतः लगभग १०,००० नये शब्दों का आगमन अंग्रेजी भाषा में हुआ। इनमें से प्रायः ५००० से अधिक स्थायी रूप से उसकी शब्द-राशि में सम्मिलित हो गये हैं। अधिकांश शब्द विद्वान् लेखकों द्वारा भाषा में समाविष्ट हुए। उदाहरण के लिए ईलियट और टामस मूर ऐसे लेखकों ने भाषा को बहुसंख्यक नवीन शब्द प्रदान किये। ये शब्द मुख्यतः लैटिन से लिये गये थे। दूसरी ओर ऐसे विद्वान् थे जो बाहर से आये हुए शब्दों को संशय और तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखते थे और उनको अधिक प्रयोग में लानेवालों की भर्त्सना करते थे। ऐसे विद्वानों में आक्सफोर्ड का पंडित चीक अग्रगण्य था। कतिपय कवियों और लेखकों ने इंग्लैण्ड की पुरानी भाषा को ही विशेष महत्त्व दिया। चासर और उसके अनुयायियों की भाषा को व्यवहार में लाने का प्रयास फिर से किया गया। महाकवि स्पेन्सर ने विशेष रूप से विशुद्ध

अंग्रेजी शब्दों को अपने काव्य में व्यवहृत किया। उसने अपनी रचनाओं में अनेक ऐसे शब्दों को पुनर्जीवित किया जो चासर के उपरान्त मृतप्राय हो चुके थे। शेक्सपियर का भाषा की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्व है। उसकी शब्द-योजना जितनी विशद और समृद्ध है, उतनी किसी अन्य लेखक अथवा कवि की नहीं। उसने देशज शब्दों को तो लिया ही, साथ ही साथ लैटिन, फ्रेञ्च इत्यादि से आनेवाले शब्दों को भी स्वीकार किया। उसकी दृष्टि सम्यक् एवं संतुलित थी। अतः उसने अपने कई नाटकों में 'कृत्रिम' भाषा और 'विशुद्ध' भाषा बोलनेवाले पात्रों की हँसी उड़ायी है। 'लक्स लेबर्स लास्ट' नामक नाटक में उसने विभिन्न प्रकार के अनगढ़ और कृत्रिम भाषारूपों का काफी मजाक किया है। इस समय अंग्रेजी भाषा में नवीन शब्दों की बाढ़-सी आ गयी थी। अतः उनमें से कुछ क्लिष्ट शब्दों को समझने में जनसाधारण को कठिनाई होती थी। अतएव १५८२ में रिचार्ड मुल्कास्टर ने प्रस्ताव रखा कि कठिन शब्दों का कोश बनाया जाय। १७ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इस प्रकार के कई शब्द-कोश तैयार किये गये, यद्यपि अंग्रेजी के प्रथम प्रामाणिक कोश तैयार करने का श्रेय १८ वीं शताब्दी में डा० जानसन को मिला।

जिस काल की विवेचना हम कर रहे हैं उसमें शब्दों के उच्चारण में भी काफी परिवर्तन हुआ। पुरानी अंग्रेजी और मध्यकालिक अंग्रेजी के बीच स्वर-ध्वनियों का अधिक अन्तर नहीं दिखाई देता। सबसे बड़ा अन्तर है, कतिपय शब्दों में 'ए' का 'ओ' में बदल जाना जैसे stane बदल कर stone हो गया। नवजागरण के युग में व्यंजन-ध्वनियाँ तो अधिक नहीं बदलीं, किन्तु स्वर-ध्वनियों में गम्भीर परिवर्तन हुआ और फलतः आज के अंग्रेजी उच्चारण और १६ वीं शताब्दी के अंग्रेजी उच्चारण में कोई तात्त्विक भेद नहीं है। व्याकरण की कुछ मोटी-मोटी विशेषताएँ जो इस काल में स्थिर हुईं यहाँ उल्लेखनीय हैं। संज्ञा में पुरानी विभक्तियाँ प्रायः सभी लुप्त हो गयीं और बहुवचन तथा पोजेसिव केस अन्त में s जोड़कर बनाने की प्रथा सर्वमान्य हो गयी। Oxen, children, brethren आदि केवल थोड़े से शब्द रह गये जिनमें en जोड़कर बहुवचन बनता है। सर्वनाम में पर्सनल प्रोनाउन के वर्तमान रूप स्वीकृत हो गये और thou और you का वर्तमान भेद मान लिया गया।

विशेषण का अब कर्ता, वचन, लिंग इत्यादि के अनुसार विभिन्न रूप न बनकर एक ही सामान्य रूप काम में आने लगा तथा कम्परेटिव और सुपरलेटिव डिग्री का भेद निश्चित रूप से माना जाने लगा। क्रिया के *telleth*, *goeth* ऐसे रूप बदलकर *tells*, *goes* हो गये।

शेक्सपियर द्वारा क्रियाओं के प्रयोग में कुछ विशेषताएँ हैं जो धीरे-धीरे किसी अंश में बदल गयीं, किन्तु यह अन्तर न तो मौलिक है और न महत्वपूर्ण। इसी प्रकार बहुत से मुहावरे भाषा में प्रचलित हुए और उनमें से बहुतों का प्रचलन अब भी बना हुआ है। भाषा में व्यवहार की दृष्टि से शेक्सपियर की रचनाओं का विशेष महत्त्व है और उनमें प्रयुक्त मुहावरे तथा वाक्यांश अंग्रेजी भाषा में घुल-मिल गये हैं।

सन् १५०० और १६५० के बीच में अंग्रेजी भाषा में अभूतपूर्व प्रगति हुई। वह अनेक प्रकार से समृद्ध बन गयी और उसका आधुनिक रूप स्पष्ट होकर सामने आया।

नव-क्लासिकी युग में भाषा का नियमन (सन् १६५०-१८००)

सन् १६५० से सन् १८०० के युग को नवक्लासिकी युग कहते हैं। १७ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अंग्रेजी विचार और साहित्यिक सिद्धान्तों में आमूल परिवर्तन होने लगा। पूर्ववर्ती काल में भावना और कल्पना का प्राधान्य था और प्रत्येक व्यक्ति अपने चिन्तन और अनुभूति में स्वतंत्र था। १६५० के लगभग दर्शन में बुद्धिवाद तथा वैज्ञानिक विचारपद्धति का बीजारोपण हुआ और आगे चलकर प्रायः १५० वर्षों तक इन्हीं का प्राधान्य बना रहा। साहित्य में प्राचीन क्लासिकी सिद्धान्तों का महत्त्व बढ़ा। ये सिद्धान्त प्राचीन आचार्यों के लेखों से सीधे प्राप्त किये गये। किन्तु उससे भी अधिक समसामयिक फ्रान्सीसी आचार्यों ने प्राचीन सिद्धान्तों का जो नवक्लासिकी रूप प्रस्तुत किया था उसको स्वीकार किया गया। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि इस युग में तर्क और निश्चित सिद्धान्तों के आधार पर भाषा और साहित्य का नियमन किया गया। नवीन प्रवृत्तियाँ प्रथम ५० वर्षों में प्रस्फुटित होती रहीं और १८ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अपने पूर्ण विकसित अवस्था पर पहुँचीं।

तत्पश्चात् आगामी ५० वर्षों में वे ह्रासोन्मुख रहीं। इन परिवर्तनों के होते हुए भी डेढ़ सौ वर्षों के जिस काल का विवेचन हम कर रहे हैं उसकी सामान्य प्रवृत्तियाँ आदि से अन्त तक बनी रहीं।

भाषा के क्षेत्र में इस काल में व्याकरण और अर्थ की अनिश्चितताओं को हटाकर सर्वत्र नियम और स्थिर सिद्धान्तों को स्थापित करने का पूरा प्रयत्न हुआ। संक्षेप में भाषा के सम्बन्ध में विद्वानों का ध्यान तीन बातों की ओर गया—(१) भाषा को नियमों पर आधारित करना और उसके व्यवहार को शुद्ध और नियमित बनाना; (२) उसकी त्रुटियों को हटाकर भाषा को परिष्कृत करना और उसमें नवीन सुधारों का समावेश करना; (३) उसके इस सुधरे हुए रूप को स्थायित्व प्रदान करना। अंग्रेजों के सामने अब इटैलियन और फ्रेञ्च भाषा का आदर्श उपस्थित था। ये दोनों भाषाएँ नियमों द्वारा नियंत्रित थीं। उनमें अनिश्चितता का अंश नगण्य रह गया था। लैटिन भाषा भी नियमों से बँधी हुई थी। इन भाषाओं की तुलना में अंग्रेजी भाषा के प्रयोग में अत्यधिक व्यक्ति-स्वातंत्र्य था। प्रत्येक व्यक्ति भाषा को अपनी रुचि के अनुसार लिखने की चेष्टा करता था और इसलिए कभी-कभी ठीक ठीक अर्थ समझना कठिन हो जाता था। ड्राइडेन और कई परवर्ती लेखकों ने इस बात की शिकायत की है। इन त्रुटियों को हटाने के लिए १८ वीं शताब्दी में अंग्रेजी व्याकरण और अंग्रेजी शब्दकोश तैयार करने का काम हाथ में लिया गया और बार-बार यह माँग की गयी कि इंग्लैण्ड में एक एकेडेमी स्थापित की जाय जो समय-समय पर भाषा के प्रश्नों पर विचार करके उसका रूप विकृत होने से बचाये। इस विकृति की ओर ड्राइडेन, स्विफ्ट, डा० जानसन प्रभृति लेखकों ने अनेक बार ध्यान आकृष्ट किया है। स्विफ्ट का यह मत था कि अच्छी अंग्रेजी एलिज़ाबेथ युग के लेखकों ने लिखी थी और तदुपरान्त भाषा का रूप बिगड़ने लगा। स्विफ्ट ने समकालीन भाषा के कई दोषों की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। सबसे अधिक आपत्ति उसे मोनोसिलेबल्स अर्थात् छोटे आकार के शब्दों के प्रचुर प्रयोग पर थी। इसी भाँति स्विफ्ट और अन्य लेखकों ने भाषा के बदलते हुए रूप के कारण चिन्ता प्रगट की है। उनका मत था कि यदि भाषा निरन्तर बदलती रही तो एक युग की कृतियाँ लोग दूसरे युग में नहीं समझ पायेंगे।

इटली में १५८२ में 'एकेडेमीया डीला क्रस्का' की स्थापना हो चुकी थी और १७ वीं शताब्दी में उसकी ओर से इटैलियन भाषा का एक बृहत् कोश प्रकाशित हुआ। सन् १६३५ ई० में कार्डिनल रिशालो ने फ्रेञ्च एकेडेमी स्थापित की जिसका एक प्रधान उद्देश्य था फ्रेञ्च भाषा को परिष्कृत बनाना। इन उदाहरणों से प्रेरित होकर इवलिन, ड्राइडेन, रासकामन प्रभृति लेखकों ने इंग्लैण्ड में भी एकेडेमी स्थापित करने की माँग की, जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं। सन् १६६२ ई० में रायल सोसायटी की स्थापना हुई। यद्यपि यह सोसायटी विज्ञान की उन्नति के लिए खोली गयी थी तथापि सन् १६६४ ई० में इसकी एक शाखा भाषा सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने के लिए संगठित की गयी। १८ वीं शताब्दी में एकेडेमी खोलने के प्रस्ताव के प्रमुख प्रवर्तक थे डीन स्विफ्ट जो अंग्रेजी भाषा के सुधारने के लिए अत्यन्त इच्छुक थे। उन्होंने सन् १७१२ ई० में अर्ल आफ आक्सफोर्ड को एक महत्त्वपूर्ण पत्र लिखा जिसमें उन्होंने एकेडेमी की व्यवस्था करने के लिए विशेष अनुरोध किया। जोरदार शब्दों में उन्होंने अंग्रेजी भाषा के दोषों की ओर ध्यान दिलाते हुए फ्रेञ्च एकेडेमी और उसके कार्य का उल्लेख किया। १८ वीं शताब्दी में अन्य लोगों ने भी एकेडेमी की उपयोगिता के सम्बन्ध में लिखा, किन्तु कुछ लोग इस प्रस्ताव के विरोधी भी थे। डा० जानसन ने अपने शब्दकोष की भूमिका में लिखा है कि भाषा के रूप को हम सदा के लिए बाँध नहीं सकते क्योंकि प्रगति के साथ उसका रूप बदलता रहता है। अनेक बार डा० जानसन ने एकेडेमी खोलने के प्रस्ताव का खण्डन किया और फलतः उनके बाद इस प्रकार की माँग करना लोगों ने बन्द कर दिया।

हम ऊपर कह आये हैं कि इटली और फ्रान्स में भाषा को सुधारने और उसका रूप स्थिर करने का काम एकेडेमी द्वारा सम्पादित हुआ। इन्हीं संस्थाओं ने कोष तैयार किये और शब्दों के उच्चारण और अर्थ निश्चित किये। इंग्लैण्ड में यही काम अकेले डा० जानसन ने किया। सात वर्ष के अथक परिश्रम के उपरान्त सन् १७५५ में डा० जानसन की **ए डिक्शननरी आफ इंग्लिश लैंग्वेज** नामक पुस्तक दो खंडों में प्रकाशित हुई। अंग्रेजी भाषा का यह प्रथम शब्द-कोष माना जाता है। निर्दोष न होते हुए भी यह एक महान् कृति है।

इसमें अंग्रेजी के जितने अधिक शब्दों का समावेश हुआ था उतना किसी पूर्ववर्ती पुस्तक में नहीं। शब्दों का वर्ण-विन्यास, उच्चारण, और प्रयोग दिया गया है। उदाहरण के लिए कई हजार उद्धरण भी प्रस्तुत किये गये हैं। जानसन ने त्रुटिपूर्ण शब्दों, मुहावरों इत्यादि का जोरदार खण्डन करके भाषा को सुधारने का पूर्ण प्रयत्न किया। इतना महान् कार्य करने का अपने युग में डा० जानसन के अतिरिक्त अन्य कोई विद्वान् अधिकारी नहीं था। वे अपने समय के वरिष्ठ विद्वान् थे और उनकी महत्ता प्रायः सभी स्वीकार करते थे। शब्दकोष के प्रकाशित होने पर डा० जानसन की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। लार्ड चेस्टरफील्ड, शेरिडन, गैरिक, इत्यादि ने प्रशंसात्मक लेख प्रकाशित किये। गैरिक ने एक पद्य में लिखा कि डा० जानसन ने अकेले ही ४० फ्रान्सीसियों को परास्त कर दिया, क्योंकि जो काम फ्रेञ्च एकेडेमी के ४० सदस्यों ने किया वह उन्होंने अकेले सम्पन्न किया।

अंग्रेजी में शब्दकोश तैयार हो जाने के बाद सबसे बड़ी समस्या थी, व्याकरण के नियमों का निश्चित करना। सन् १७६० के उपरान्त १८ वीं शताब्दी में व्याकरण की कई प्रसिद्ध पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इनमें लाउथ और मरे की पुस्तकें विशेष उल्लेखनीय हैं। अभी तक यह धारणा थी कि अंग्रेजी व्याकरण और लैटिन व्याकरण में कोई (तात्त्विक) भेद नहीं है, किन्तु इन नवीन वैयाकरणों ने अंग्रेजी व्याकरण का नये सिरे से निर्माण किया। उनका ध्यान विशेषकर तीन बातों की ओर गया। सर्वप्रथम उन्होंने भाषा के नियंत्रण के लिए निश्चित नियमों को ढूँढ़ निकाला। इन नियमों को उन्होंने क्रम से अपनी पुस्तकों में प्रस्तुत किया। फिर इन लोगों ने उन समस्याओं की ओर ध्यान दिया जिनके सम्बन्ध में मतभेद था। सम्यक् विवेचन के उपरान्त उन्होंने अपने मत का सप्रमाण उल्लेख किया। अन्त में उन्होंने व्याकरण और मुहावरों की गलतियों की ओर संकेत किया। वैयाकरणों के प्रयत्नों के फलस्वरूप १८ वीं शताब्दी में भाषा का नियमन हुआ और क्या ठीक है और क्या त्रुटिपूर्ण है, इसका पता लगाना सरल हो गया। वैयाकरणों के अतिरिक्त उन विद्वानों का उल्लेख भी यहाँ आवश्यक है जिन्होंने रीटारिक अर्थात् वक्तृताशास्त्र पर पुस्तकें लिखीं। टामस शेरिडन, कैम्पबेल इत्यादि ने महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे

जिनमें प्रवचन-विद्या की शिक्षा के लिए व्याख्या और उदाहरणों के साथ नियम प्रस्तुत किये गये। इन पुस्तकों में भाषा, शैली, अलंकार तथा मुहावरों का विवेचन किया गया। अतः भाषा के रूप निर्धारण में इनसे भी सहायता मिली। वैयाकरणों और वक्तृताशास्त्र पर लिखनेवाले विद्वानों ने सदा विवादग्रस्त प्रश्नों का हल तर्क तथा लैटिन उदाहरणों के आधार पर किया।

सन् १७७६ में प्रवचनशास्त्र पर जार्ज कैम्पबेल की सुविख्यात पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें शब्दों के व्यवहार को विशेष महत्त्व दिया गया है। इस समय यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ था कि भाषा के लिए व्याकरण के नियम अधिक महत्त्व रखते हैं अथवा उसके लिए व्यवहार अधिक महत्त्वपूर्ण है। कैम्पबेल की स्थापना थी कि व्याकरण के नियमों से अधिक महत्त्वपूर्ण प्रयोग हैं। उसका कथन है "Language is purely a species of fashion अर्थात् भाषा प्रचलन का एक रूप है। व्यवहार के लिए आवश्यक है कि वह समकालीन हो, राष्ट्रीय आधार पर हो, और सज्जनों के समाज में मान्य हो। इस प्रकार के व्यवहार में आनेवाले शब्दों और मुहावरों का स्थान व्याकरण के नियमों से कहीं ऊँचा है। यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि कैम्पबेल ने जिस मत का प्रतिपादन किया आगे चलकर उसको अधिकाधिक स्वीकृति मिली और आज भी अंग्रेजी भाषा में व्यवहार को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है।

नवक्लासिकी युग में अंग्रेजी भाषा नियंत्रित हुई और उसका रूप निर्धारित किया गया। इसी में इस युग की सबसे बड़ी सफलता है। वैयाकरणों ने भाषा सम्बन्धी नियमों की संहिता तैयार की और उचित प्रयोगों और अनुचित प्रयोगों में भेद किया। कहना न होगा कि ऐसा करने में वे कभी-कभी आवश्यकता से अधिक आगे बढ़ गये। उन्होंने यह मान लिया कि भाषा का रूप निश्चित नियमों से बँधा हुआ तथा अपरिवर्तनशील है। भाषा में शब्दों और मुहावरों के व्यवहार से जिस स्वतंत्रता का समावेश होता है उसकी ओर उनका ध्यान नहीं गया। जार्ज कैम्पबेल इत्यादि कतिपय लेखकों ने प्रयोग में आनेवाले मुहावरों और वाक्यांशों पर बल दिया किन्तु वैयाकरणों के मन में नियमों के प्रति मोह बना रहा। वे यह बात भूल गये कि समय के साथ-साथ भाषा विकसित होती रहती है। इस युग में अंग्रेजी शब्दकोश में विशेष वृद्धि हुई। बहुत से शब्द फ्रान्स

से आये । इन विदेशी शब्दों की ऐसी बाढ़-सी आ गयी कि स्विफ्ट तथा कुछ और लेखकों ने भाषा को उनसे बचाने की बात बार बार दुहरायी । वैयाकरणों ने तथा शब्दों पर विचार करनेवाले विद्वानों ने अच्छे और बुरे शब्दों में भेद किया । कुछ ऐसे शब्द माने गये जिनका प्रयोग साधु भाषा में वांछनीय था और कुछ अन्य प्रयोग के लिए अनुपयुक्त घोषित किये गये । यदि यह विभेद सामान्य रूप से मान लिया गया होता तो अंग्रेजी भाषा बहुत कुछ कृत्रिम बन गयी होती । १८ वीं शताब्दी में ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार होने लगा और व्यापार के लिए उसका सम्पर्क दूरस्थ देशों से हो गया । अंग्रेजी भाषा में ग्राहिका शक्ति पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है और इसलिए अनेक देशों के शब्द भाषा में शामिल किये गये । एक विद्वान् ने निम्नलिखित तालिका इस युग में भारत से लिये जानेवाले शब्दों की दी है । इससे कहीं बड़ी सूची तैयार की जा सकती है —

bandana, Bangle, Bengal, Brahman, bungalow, calico. Cashmere, cheroot, China, chintz, coolie, cot, curry, dinghy, juggernaut, jungle, Jute, loot, mandarin, nirvana, pariah, polo, punch, pundit, rajah, sipoy, thug, toddy, tom-tom and verandah.

इस प्रकार हम देखते हैं कि जिस काल का विवेचन हम कर रहे हैं उसमें भाषा का केवल नियमन ही नहीं हुआ वरन् वह अधिक समृद्ध भी बनी । भाषा के विस्तार का जो क्रम इस युग में प्रारम्भ हुआ, उसका पूरा प्रभाव १९ वीं शताब्दी और २० वीं शताब्दी में देखा जा सकता है ।

वर्तमान युग में अंग्रेजी का विकास

१८ वीं शताब्दी के अन्त तक व्याकरण के नियमों तथा शब्दकोश द्वारा अंग्रेजी भाषा का स्वरूप बहुत कुछ निर्धारित हो चुका था । भाषा में प्रचलन और व्यवहार के महत्त्व की ओर भी लोगों का ध्यान आकृष्ट हो चुका था । अतः पिछले डेढ़ सौ वर्षों में अंग्रेजी के ढाँचे में कोई तात्त्विक परिवर्तन नहीं हुआ है । किन्तु अब भाषा अत्यधिक समृद्ध बन गयी है । राष्ट्रीय और

सामाजिक जीवन से भाषा का सीधा सम्बन्ध है। जब जीवन में विकास होता है तब भाषा आप से आप विकसित होती है। १९ वीं शताब्दी तथा वर्तमान शताब्दी का पूर्वार्ध इंग्लैण्ड के लिए चतुर्दिक विकास एवं प्रगति का काल रहा है। राजनीति और व्यापार में १९ वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड की सत्ता भली-भाँति स्थापित हो गयी थी। ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार हुआ तथा व्यापार द्वारा उपनिवेशों से अपार धनराशि आने लगी। इंग्लैण्ड ने जितने युद्धों में भाग लिया सबमें सफलता प्राप्त हुई। शासन-व्यवस्था तथा शिक्षा में क्रमशः सुधार होता गया और सामाजिक सुव्यवस्था के लिए अनेक नियम पारित किये गये। यह प्रगति २० वीं शताब्दी में बहुत दिनों तक चलती रही। २० वीं शताब्दी में होनेवाले दोनों महासमरों में इंग्लैण्ड ने भाग लिया और अनेक कठिनाइयों के होते हुए भी विजय अन्त में उसी के पक्ष की हुई। इन दोनों महायुद्धों के काल में इंग्लैण्ड-निवासियों का सम्पर्क विदेशों से बहुत बढ़ गया और उन लोगों ने बहुत-सी नयी बातें सुनी और सीखीं। पिछले डेढ़ सौ वर्षों में ज्ञान-विज्ञान ने प्रत्येक दिशा में अभूतपूर्व उन्नति की है और उसके विकास के साथ-ही-साथ भाषा को बहुसंख्यक नवीन शब्द प्राप्त हुए हैं। वैसे भी आवागमन के साधनों और सुविधाओं के कारण इंग्लैण्ड निवासियों का दूर-दूर जाना और बाहर से विदेशियों का देश में आना बहुत सरल हो गया है। अतएव अंग्रेजी भाषा ने अब सार्वभौम रूप ग्रहण कर लिया है। कनाडा, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका, आदि में अंग्रेज जाति के लोग बसे हुए हैं। यद्यपि वहाँ प्रयुक्त होनेवाली अंग्रेजी इंग्लैण्ड की परिनिष्ठित अंग्रेजी से कुछ भिन्न है तथापि उन देशों से नये शब्द और मुहावरे अंग्रेजी में आते रहते हैं। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है अमेरिका का प्रभाव। अमेरिकी भाषा अंग्रेजी का ही एक रूप है, किन्तु परिस्थितिवश उसमें बड़ी संख्या में नवीन शब्दों और मुहावरों का समावेश हुआ है। इनमें से कतिपय शब्द और मुहावरे अंग्रेजी भाषा में आत्मसात् हो रहे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि अनेक कारणों से पिछले डेढ़ सौ वर्षों में अंग्रेजी शब्दराशि की आश्चर्यपूर्ण वृद्धि हुई है। आज अंग्रेजी में विभिन्न प्रकार के विचारों और तथ्यों का सफलतापूर्वक व्यक्त करना पहले की अपेक्षा अधिक सरल हो गया है। हम नीचे संक्षेप में बतायेंगे

कि किन महत्त्वपूर्ण स्रोतों से अनेक शब्द आकर आज की अंग्रेजी में समाविष्ट हुए हैं।

अंग्रेजी भाषा को सबसे महत्त्वपूर्ण देन है विज्ञान की। विज्ञान ने सर्वतोमुखी प्रगति की है और उसके प्रत्येक विभाग से भाषा में नवीन शब्द आये हैं। भैषज्य विज्ञान और जीव-विज्ञान से अंग्रेजी भाषा को अनेक शब्द मिले हैं। उनके प्राविधिक शब्दों में से बहुत-से ऐसे हैं जो रोज की भाषा में घुल-मिल गये हैं। उदाहरणार्थ अनेक रोगों के नाम तथा अनेक औषधियों के नाम जनता रोज बोलचाल के काम में लाती है। इनमें से नमूने के लिए निमोनिया, डिफ्थीरिया, एपेन्डिसाइटिस, ऐस्पीरीन, पेनीसीलीन, स्ट्रेप्टोमाइसीन, बाइटिक्स, इत्यादि का उल्लेख कर सकते हैं। ऐसे ही चिकित्सा और शल्य-शास्त्र से सम्बन्धित अनेक शब्द ग्रहण किये गये हैं। जैसे एन्टीटाक्सीन, एनीस्थीसिया, स्टेरिलाइज इत्यादि। भोजन-विज्ञान के शब्द तो रोज लोगों की जवान पर रहते हैं। हम प्रोटीन्स, कार्बोहाइड्रेट्स, विटामिन्स की नित्य चर्चा करते हैं। भौतिक शास्त्र, रसायनशास्त्र और मनोविज्ञान आदि से भी प्रचलित-भाषा में शब्द आये हैं। रिलेटिविटी, केलारी, डेंसिटी आदि शब्द सुपरिचित हैं। विज्ञान से आनेवाले शब्दों की संख्या इतनी अधिक है कि हम सब प्रकार के उदाहरण यहाँ नहीं दे सकते। यहाँ सामान्य रीति से यही कहना पर्याप्त होगा कि वैज्ञानिक अनुसन्धानों ने भाषा को एक नयी शक्ति प्रदान की है। विज्ञान ने इस सीधी देन के अतिरिक्त भाषा को उन नवीन साधनों और उपकरणों के द्वारा भी प्रभावित किया है जिनका सीधा सम्बन्ध आधुनिक विज्ञान से है। हवाई जहाज, मोटर कार, रेडियो और सिनेमा से सम्बन्ध रखनेवाले अनगिनत नवीन शब्द आज भाषा में घुल-मिल गये हैं। इन सभी का सम्बन्ध हमारे दैनिक जीवन से है। अतः इनके विशेष शब्दों का भाषा में आ जाना स्वाभाविक है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित सूची दे रहे हैं—

पार्क, स्पार्क, आटोमोबाइल, रील, न्यूज रील, फिल्म, सीनैरियो, डाक्युमेन्टरी, फ्रीक्वेंसी, ब्राडकास्ट, एटमासफियरिक्स, रिसेप्शन, वाल्व, जेटप्लेन, फाइटर, बाम्बर, ऐरोड्रोम आदि।

वर्तमान शताब्दी के दोनों महायुद्धों से अंग्रेजी भाषा को अनेक शब्द मिले

हैं। लड़ाई के नये साधनों और नये तरीकों के नाम भाषा में प्रविष्ट हुए हैं। जैसे—टैंक, गैस-मास्क, डग-आउट, नोमैन्सलैण्ड इत्यादि प्रथम महासमर में ही प्रचलित हो चले थे। दूसरे महायुद्ध में फिफथकालम, शाक टैक्टिक्स, ड्राइ-अर्थ-पालिसी इत्यादि ऐसे शब्द प्रचलित हुए। युद्ध में बहुत-से स्लैंग अर्थात् बोलचाल के विशेष शब्द और मुहावरे प्रगट हुए और इंग्लैण्ड में व्यवहृत होने लगे। समर-क्षेत्र में विभिन्न प्रान्तों और देशों के मिलनेवाले सिपाहियों की बातचीत में भी ऐसे मुहावरों की सृष्टि हुई है। स्लैंग केवल लड़ाई से उत्पन्न नहीं होते वरन् वर्ग-विशेष और समुदाय-विशेष के लोग अपने वार्तालाप में उनका व्यवहार करते हैं। पहले तो ऐसे शब्दों का क्षेत्र सीमित रहता है पर धीरे धीरे वे सामान्य भाषा में मिलने लगते हैं। उदाहरण के लिए जहाज के काम करनेवालों, हवाई जहाज के सैनिकों, विद्यार्थियों, मजदूरों इत्यादि के अलग अलग स्लैंग होते हैं जिनमें से कुछ न कुछ शब्द भाषा में समय समय पर समाविष्ट होते जाते हैं। पिछले डेढ़ सौ वर्षों में अंग्रेजी भाषा ने बहुत से स्लैंग शब्दों को आत्मसात् किया है।

अंग्रेजी भाषा के शब्दों में वृद्धि अन्य तरीकों से भी हुई है। बहुत-से नये शब्द गढ़े गये हैं, जैसे कोडक, डिक्टाफोन, लीनोटाइप इत्यादि। नये शब्दों के बनाने के जो ढंग पुरानी अंग्रेजी और मध्यकालीन अंग्रेजी में प्रचलित थे उनका भी प्रयोग आज नवीन शब्दों के गढ़ने में होता है। सार्थक संयुक्त शब्दों को बनाकर तथा शब्दों में उपसर्गों और विभक्तियों को जोड़कर पर्याप्त संख्या में नवीन शब्दों का सर्जन वर्तमान काल में हुआ है। लिपस्टिक, फिगर-प्रिन्ट, न्यूज़ प्रिन्ट इत्यादि संयुक्त शब्दों के नये नमूने हैं। ट्रान्सलिटेरेट, ट्रान्सफार्मर, पोस्ट इम्प्रेसनिस्ट्स, पोस्ट प्रैनडियल, प्रीस्कूल, प्री-नैटल, काउन्टर-एटैक आदि शब्द उपसर्ग जोड़कर बनाये गये हैं। प्राफिटीयर, रैकेटियर, क्रिस्टैन्डम्, फ़िल्मडम, गैंग्स्टर आदि प्रत्यय जोड़कर बनाये हुए शब्दों के उदाहरण हैं। कुछ ऐसे शब्द भी हैं जो स्थान-विशेष अथवा पुरुष-विशेष के नाम से निकले हैं। जैसे बाइकाट, सैन्डवीस, टैन्टेलाइज़ इत्यादि। ऐसा मानते हैं कि अंग्रेजी भाषा में लगभग पाँच सौ शब्द ऐसे हैं जो व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से निकले हैं। इसी भाँति पत्रकारी के क्षेत्र में नित्य नये-नये शब्द बनते रहते हैं। पत्रकार प्रभाव

उत्पन्न करना चाहता है और उसे इतना अवकाश नहीं कि वह परिष्कृत शब्दों की खोज करता फिरे। अतः वह अपने मतलब के लिए नये-नये शब्द गढ़ा करता है और इस प्रकार धीरे-धीरे भाषा का शब्द-कोश बढ़ता है। पत्रकारों के सभी शब्द साधु भाषा अथवा परिनिष्ठित भाषा में प्रवेश नहीं कर पाते। किन्तु उनमें कुछ ऐसे अवश्य होते हैं जो समय के साथ सामान्य भाषा में व्यवहृत होने लगते हैं।

ऊपर लिखे हुए साधनों से अंग्रेजी भाषा का वर्तमान काल में असीम विस्तार हुआ है और वह अत्यधिक समृद्ध बन गयी है। इस तेजी से होने-वाले विस्तार को कतिपय विद्वान् अच्छा नहीं मानते क्योंकि उनके मत से इस प्रकार भाषा का रूप विकृत और भ्रष्ट होता जा रहा है। वे भाषा का विशुद्ध रूप सबसे अच्छा मानते हैं। दूसरी ओर अन्य विद्वान् भाषा सम्बन्धी उदार नीति के समर्थक हैं। अंग्रेजी भाषा में ग्रहण करने की अपार क्षमता है। इसी में उसकी शक्ति का रहस्य छिपा हुआ है। एक विद्वान् ने लिखा है कि जैसे आदमी के लिए खाना और हजम करना आवश्यक है वैसे ही भाषाओं के लिए भी। अधिकांश लोग इसी उदार नीति में विश्वास रखते हैं और इसीलिए अंग्रेजी भाषा का विकास अबाध गति से हो रहा है। अवांछनीय तत्त्व धीरे-धीरे अपने आप हट जाते हैं अथवा बदल जाते हैं और भाषा का रूप विकृत नहीं होने पाता।

द्वितीय खंड
अंग्रेजी साहित्य

प्रथम अध्याय

चासर के पूर्व का अंग्रेजी साहित्य

प्रथम खंड में हमने पुरानी अंग्रेजी और उसके बाद आनेवाली मध्यम अंग्रेजी का विवेचन किया है। ये दोनों भापाएँ और उनमें लिखा हुआ साहित्य काल-क्रम में चासर के पूर्व आते हैं। चासर को हम आधुनिक अंग्रेजी कविता का प्रवर्तक मानते हैं, यद्यपि उसके समय तक मध्यकाल का पूर्णतः अन्त नहीं हुआ था। ऐतिहासिक दृष्टि से चासर की यह विशेष महानता है कि वह दो युगों का प्रतिनिधित्व करता है, यद्यपि उसमें आधुनिकता के अंश अपेक्षाकृत अधिक हैं। चासर के पूर्व का साहित्य दो भागों में विभाजित होता है—(१) पुरानी अंग्रेजी का साहित्य, (२) मध्यम अंग्रेजी में लिखा जानेवाला साहित्य। हम क्रमशः इन दोनों के बारे में संक्षेप में लिखेंगे।

पुरानी अंग्रेजी का साहित्य

पुरानी अंग्रेजी का साहित्य ट्यूटन जाति का अपना साहित्य है। यह पद्य और गद्य दोनों में लिखा गया है और उसमें लिखी हुई कविता की दो विभिन्न शाखाएँ हैं। पुरानी अंग्रेजी की सबसे महत्त्वपूर्ण कविता वह है जिसका ईसाई धर्म से सीधा सम्बन्ध नहीं है। यह मुख्यतः वीर गाथाओं के रूप में लिखी गयी है और इसमें शौर्य-वर्णन के साथ-साथ विषाद का गहरा पुट मिलता है। अधिकतर यह काव्य उस समय की घटनाओं और पात्रों से सम्बन्धित है जब ट्यूटन जाति के लोग यूरोपीय महाद्वीप पर निवास करते तथा साहसपूर्ण कार्यों में अपना समय व्यतीत करते थे। निम्नलिखित रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं—

(क) **बोउल्फ** अंग्रेजी साहित्य का प्राचीनतम महाकाव्य है। कथानक के तीन विभिन्न केन्द्र हैं, किन्तु ये तीनों ही सी लैण्ड, स्वेडन आदि में स्थित हैं। पात्र भी इंग्लैण्ड के बाहर के हैं। अतः ऐसी धारणा है कि यह काव्य सर्व-प्रथम गीतों के रूप में महाद्वीप पर लिखा गया था। बाद को किसी अज्ञात

कवि ने इंग्लैण्ड में इसे महाकाव्य का रूप दिया । तीन हजार से अधिक पंक्तियों में लिखा हुआ यह महाकाव्य दो खण्डों में विभाजित है तथा प्रथम खण्ड के दो पृथक् सर्ग हैं । पहले सर्ग में बीउल्फ ग्रेन्डेल नामक राक्षस का वध करके हाथगर नामक राजा के राजमहल को निरापद बना देता है । ग्रेन्डेल एक बार हाथगर के तीस साथियों को उठा ले गया था और समय-समय पर उसके अनुयायियों का वध किया करता था । बारह वर्ष तक यही दशा रही । तत्पश्चात् बीउल्फ ने ग्रेन्डेल को परास्त किया । दूसरे सर्ग में बीउल्फ ग्रेन्डेल की माता का वध करता है । अपने पुत्र की हत्या का बदला चुकाने के लिए उसने हाथगर के एक साथी का वध किया था । काव्य के दूसरे भाग में पचास वर्ष के बाद होनेवाली घटनाओं का वर्णन है । बीउल्फ अब एक वृद्ध राजा के रूप में सामने आता है । अपने राज्य में आतंक उत्पन्न करनेवाले एक भयावह जीव से लड़ने में उसका अन्त होता है । **बीउल्फ** में सभी महाकाव्यों की भाँति सामयिक जीवन का चित्रण हुआ है । उसकी एक दूसरी विशेषता यह है कि उसमें आदि से अन्त तक नियति को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है । भाषा और छन्द की भी अपनी निजी विशेषताएँ हैं ।

(ख) **बीउल्फ** अपने विस्तार, साहित्यिक वैशिष्ट्य, तथा सामाजिक चित्रण के कारण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काव्य है । एक दूसरे प्रकार की रचनाएँ कदाचित् **बीउल्फ** के काल में तथा उससे भी पहले लिखी हुई उल्लेखनीय हैं । **विडसिथ** और **डेवर** नामक दो ऐसी कविताएँ उपलब्ध हैं जिनमें भ्रमण करनेवाले चारणों द्वारा अपने आश्रयदाताओं तथा अन्य वीर पात्रों का शौर्य वर्णित है । कवि अपने विभिन्न नायकों से सम्बन्धित युद्धों तथा साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन ओजपूर्ण भाषा में करता है । इन वीरों का यश प्रसारित करना ही उसका परम उद्देश्य है । **विडसिथ** का कवि अपने जीवन में सफलता प्राप्त करता है, किन्तु **डेवर** का रचयिता असफल रहता है । अतः उसकी कृति में विषाद का अंश विद्यमान है ।

(ग) हम ऊपर कह चुके हैं कि प्रायः सदैव पुरानी अंग्रेजी कविता में नियति पर बल दिया गया है और उसके साथ ही दुःख-प्रदर्शन भी हुआ है । विशेष-

कर कुछ ऐसी दुखान्त रचनाएँ हैं जिनमें विषाद का स्वर अत्यन्त गहरा हो गया है। इस प्रकार की कृतियों में **दी वान्डरर**, **दी सी फेयरर**, और **दी रुइन्ड बर्ग** नाम की कविताएँ प्रसिद्ध हैं। **दी वान्डरर** में नाट्य तत्त्व विद्यमान है और उसे हम मध्यकालीन ट्रैजेडी के रूप में देख सकते हैं। **दी सी फेयरर** में सारी कथा एक पात्र के मुख से कहलायी गयी है। **दी रुइन्ड बर्ग** में कथा के सन्दर्भ में एक उजड़े हुए नगर पर पश्चात्ताप प्रगट किया गया है।

- (घ) प्राचीन ट्यूटन जातियों के वैयक्तिक और सामूहिक जीवन में युद्ध का स्थान अत्यन्त प्रमुख था। तब भी उनका युद्ध-काव्य बहुत कम उपलब्ध है। ऐसा प्रतीत होता है कि ईसाई साधुओं ने इन काव्यों को जानबूझकर लिपि-बद्ध नहीं किया और उनकी मौखिक परम्परा समय के साथ लुप्त हो गयी। इस प्रकार की जो दो रचनाएँ मिलती हैं वे हैं **बैटिल आफ ब्रुनान वर्ह** तथा **बैटिल आफ मैल्डान**। ये दोनों ही सुन्दर रचनाएँ हैं। पहले में गीततत्त्व प्रमुख है और दूसरे में ओज और प्रसाद गुण जो उसे अधिक आकर्षक बनाते हैं। दोनों ही देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत हैं।
- (ङ) ऊपर जिन रचनाओं का उल्लेख किया गया है उनका मूल उद्देश्य पार्थिव तथा ऐहिक था। इनके अतिरिक्त प्रचुर परिमाण में ईसाई धार्मिक काव्यों की रचना हुई। धार्मिक कवियों में सबसे अधिक यशस्वी हुए हैं **कैक्सडमन** तथा **किनेउल्फ**। **कैक्सडमन** को वृद्धावस्था में काव्य रचना की दैवी प्रेरणा मिली और तत्पश्चात् उसने चमत्कारपूर्ण काव्य लिखा। उसकी रचनाएँ बाइबिल और ईसा मसीह के जीवन से सम्बन्धित हैं। **कैक्सडमन** ने सातवीं शताब्दी में काव्य-रचना की और कभी-कभी उसे अंग्रेजी का प्रथम कवि कहते हैं। **किनेउल्फ** ८वीं शताब्दी में नार्थम्ब्रिया में रहता था। अपनी युवावस्था में वह चिन्तामुक्त जीवन व्यतीत करता था। उमर ढलने पर वह काव्य की ओर उन्मुख हुआ तथा उसके द्वारा अनेक आकर्षक धार्मिक रचनाओं की सृष्टि हुई।
- (च) पुरानी अंग्रेजी में लिखी हुई अन्योक्तियों तथा पहेलियों के उदाहरण भी प्राप्य हैं। लैटिन अन्योक्तियों के आधार पर ही इनकी रचना हुई

थी । किन्तु अंग्रेजी अन्योक्तियाँ अपेक्षाकृत स्वाभाविक और सरल हैं । विभिन्न प्राणियों तथा प्राकृतिक उपकरणों को लेकर छोटे छोटे मुक्तक लिखे गये हैं जिनका पूरा अर्थ समझने के लिए शब्दों के दुहरे अर्थ पर ध्यान देना पड़ता है ।

पुरानी अंग्रेजी के गद्य का आविर्भाव ७वीं शताब्दी में हुआ, किन्तु उसका पूर्ण विकास नवीं शताब्दी में **आल्फ्रेड दी ग्रेट** के प्रोत्साहन से हुआ । आल्फ्रेड ने ज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए स्वयं लैटिन भाषा सीखी और **बीड**, **बोस्थीयस** आदि की प्रसिद्ध रचनाओं का अंग्रेजी में अनुवाद किया । आल्फ्रेड के पहले अनेक क्लानिकल्स अर्थात् इतिहास-ग्रन्थ लिखे जा चुके थे । जब हम इन ग्रन्थों की शैली से आल्फ्रेड की शैली की तुलना करते हैं तब स्पष्ट हो जाता है कि सर्व-प्रथम आल्फ्रेड के लेखों में ही साहित्यिक गद्य का विकास हुआ । लैटिन गद्य का ध्यान रखकर ही आल्फ्रेड ने अंग्रेजी गद्य का निर्माण किया । इससे भी उत्कृष्ट गद्य दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी में लिखित **एल्फ्रीक** तथा **उल्फस्टन** नामक बेनेडिक्टाइन साधुओं के धार्मिक प्रवचनों में मिलता है । प्राचीन अंग्रेजी गद्य का प्रारम्भ कविता की अपेक्षा कुछ देर से हुआ, किन्तु चार सौ वर्षों के काल में इसने पर्याप्त उन्नति कर ली ।

मध्यम अंग्रेजी का साहित्य

मध्यम अंग्रेजी भाषा के समान ही मध्यम अंग्रेजी साहित्य की भी कई अवस्थाएँ परिलक्षित होती हैं । सन् १०६६ से सन् १२५० तक एक दो रचनाओं को छोड़कर सभी धर्म तथा ईसाई मत से सम्बन्ध रखती थीं । इनमें से कुछ रचनाएँ तो लैटिन से अनुवाद मात्र थीं, किन्तु अन्य कृतियाँ मौलिक थीं । १२५० से १३५० ई० के बीच में धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त साहसपूर्ण कार्यों से सम्बन्ध रखनेवाली रचनाओं का प्रादुर्भाव हुआ । १३५० के उपरान्त मध्यम अंग्रेजी अपनी परिपक्वता को प्राप्त हुई और उसमें महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हुईं । चासर के अतिरिक्त **लैंगलैंड**, **विबिलफ** प्रभृति प्रतिभासम्पन्न लेखकों ने अपनी कृतियों का सर्जन किया ।

मध्यम अंग्रेजी साहित्य की सामान्य विशेषता यह है कि इसने फ्रेंच साहित्य

के आदर्शों को ग्रहण किया तथा उसी का अनुसरण किया। इसलिए पुरानी-अंग्रेजी साहित्य की अपेक्षा यह कहीं अधिक सुस्पष्ट एवं परिमार्जित है। विषय, भाषा, शैली अर्थात् सम्पूर्ण रचना विन्यास में सौष्ठव तथा परिष्कार मिलता है। बिना इस बात को ध्यान में रखे हुए चासर तथा उसके परवर्ती कवियों की रचनाओं का सम्यक् मूल्यांकन सम्भव नहीं।

मध्यम अंग्रेजी साहित्य के अतिरिक्त उसका समकालीन ऐंग्लो नार्मन साहित्य था जो फ्रेंच भाषा में इंग्लैण्ड में लिखा गया था। इस प्रकार के साहित्य का न तो कोई मौलिक वैशिष्ट्य था और न अधिक महत्त्व। अधिकांश लेखकों ने क्रानिकलस लिखे जिनमें वास्तविक तथ्यों के साथ कल्पित घटनाओं का मिश्रण था। इस प्रकार के पद्यबद्ध क्रानिकल ग्रन्थों की परम्परा १२वीं शताब्दी के बाद विच्छिन्न हो गयी। द्वितीय हेनरी (११५४-८९) के राज्यकाल में इनका सर्वाधिक प्रचलन था। इस प्रकार के लेखकों में ज्योफ्रे आफ मन्मथ विशेष उल्लेखनीय हैं। उनके ग्रन्थ हिस्टोरिया रोगम ब्रिटैनिन में प्रारम्भिक काल से लेकर आल्फ्रेड के काल तक का इतिहास दिया गया है। ज्योफ्रे आफ मन्मथ की सबल कल्पना ने पुस्तक को अत्यधिक रोचक बना दिया है, यद्यपि विशुद्ध ऐतिहासिक दृष्टि से पुस्तक का महत्त्व संदिग्ध है। ज्योफ्रे आफ मन्मथ के बारे में सबसे बड़ी बात यह है कि उसने किंग आर्थर से सम्बन्धित कथाओं का सूत्रपात किया। उसकी रचना के द्वारा ही केल्टिक प्रभाव, जिसमें चमत्कारपूर्ण कल्पना का आधिक्य रहता है, लोकप्रिय बना। आगे चलकर इस परम्परा से सम्बन्धित रोमान्स का इंग्लैण्ड और फ्रान्स में विशेष प्रचार हुआ।

ज्योफ्रे आफ मन्मथ का मूल ग्रन्थ लैटिन में है और उसी प्रकार मध्यम अंग्रेजी युग में अनेक अन्य रचनाएँ लैटिन भाषा में हुईं। इंग्लैण्ड में फ्रेंच भाषा में लिखी जानेवाली पुस्तकों का उल्लेख हम पहले ही कर आये हैं। उनके अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा में पुस्तकें लिखी गयीं। भाषा के विवेचन में हम बता आये हैं कि इस काल में अंग्रेजी एक ओर तो फ्रेंच और लैटिन की अपेक्षा अल्प महत्त्व रखती थी और दूसरी ओर नवीन प्रभाव के कारण उसका स्वरूप बदल रहा था। ऐसी दशा में उसमें उच्चकोटि का साहित्य लिखे जाने की आशा नहीं की जा सकती थी; तब भी बहुत-से धार्मिक ग्रन्थ लिखे गये क्योंकि जनबोली

होने के कारण प्रचार कार्य के लिए अंग्रेजी उपयोगी मानी गयी। इन धार्मिक ग्रन्थों में प्रमुख थे—(अ) **दी पोयमा मोरेल** जो उपदेशात्मक ग्रन्थ है। इसकी विशेषता छन्द-रचना में है, न कि इसकी विषय-वस्तु में, (आ) **आर-मुलम** में बाइबिल के अंशों का छन्दबद्ध अंग्रेजी अनुवाद हैं। उसमें भी रचना-शैली का विशेष महत्त्व है। **प्रियरे ए नोट्रेडेम** ईश्वर-प्रार्थना का ग्रन्थ है। इसी तरह के कई अन्य ग्रन्थ रोचक और प्रभावोत्पादक हैं।

उपर्युक्त धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त सन् १०६६—१३५० ई० के अन्तर्गत ऐहिक साहित्य का भी सम्यक् अभ्युदय हुआ। सन् १२५० के बाद विशेष रूप से रोमान्स साहित्य की लोकप्रियता बढ़ने लगी। भाषा भी धीरे-धीरे सक्षम हो चली थी और अब विशेषकर १३वीं और १४वीं शताब्दी में, साहित्य-सर्जन सम्भव था। रोमान्स कथाओं में से कुछ उल्लेखनीय हैं। **लेयमन** ने बेस की लिखी हुई फ्रेंच पुस्तक **बूट** का अंग्रेजी अनुवाद किया। इस में आर्थर सम्बन्धी कतिपय रोमान्स कथाओं का संग्रह है और यह ज्योफ्रे आफ मन्मथ के वृत्तान्त पर आधारित है। दो अन्य रोमान्स प्रसिद्ध हैं, **हेवलक्** जिसमें साहसपूर्ण कार्यों का कथा रूप में वर्णन किया गया है एवं **हार्थ** जिसमें प्रमुख विषय प्रेम है, यद्यपि सभी रोमान्स कृतियों की भाँति साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन उसमें भी मिलता है। सन् १२२० में **दी आउल एन्ड दी नाइटिंगेल** नामक प्रसिद्ध रूपक-काव्य लिखा गया। उसमें आउल अर्थात् उल्लू वयस्क जनों की बुद्धि का प्रतीक है तथा नाइटिंगेल अर्थात् बुलबुल युवावस्था की चिन्तारहित मनोवृत्ति का द्योतक है। दोनों में होनेवाला वार्तालाप व्यंग और लाक्षणिक कथनों से भरा पड़ा है। इन कृतियों के अतिरिक्त इस युग में बहुत-से प्रगीत मुक्तक लिखे गये। प्रेम, शौर्य आदि विषयों पर लिखे हुए ये मुक्तक फ्रेंच मुक्तकों का अनुसरण करते हैं। मुक्तक काव्य का सबसे प्रसिद्ध प्रणेता था **लारेन्स मिनट** जिसके प्रणय और देशप्रेम के गान लन्दन-निवासियों में बहुत अधिक प्रचलित हुए।

१३५० से १४०० तक का अंग्रेजी साहित्य

इन पचास वर्षों में अंग्रेजी साहित्य ने आश्चर्यपूर्ण उन्नति की। इस उत्कर्ष के सम्भवतः दो कारण थे। भाषा का स्वरूप अब बहुत कुछ निर्धारित हो चुका

था और उसमें साहित्यिक उपयोग के लिए पर्याप्त सफाई और शक्ति आ गयी थी। दूसरी बात यह थी कि तृतीय हेनरी ने फ्रान्स में जो विजय प्राप्त की थी उससे सारे देश में देश-प्रेम और आत्म-विश्वास की लहर फैल गयी थी, जिसने साहित्यिक सर्जन को प्रेरणा प्रदान की।

इस काल में गद्य साहित्य की कोई विशेष उन्नति नहीं हुई, किन्तु कुछ महत्वपूर्ण लेखन-कार्य अवश्य हुआ। बहुत से लेखकों ने लैटिन ग्रन्थों के अनुवाद प्रस्तुत किये और धर्म-प्रचार के निमित्त परचे तथा पुस्तिकाएँ लिखी गयीं। इस समय के गद्य के प्रसंग में सबसे अधिक उल्लेखनीय हैं **बाल्टर हिल्टन** और **जान विक्लिफ** (१३२४-८४)। हिल्टन ने अपनी पुस्तक 'दी स्केल आफ पर-फेक्शन' में उत्कृष्ट गद्य का नमूना प्रस्तुत किया। विक्लिफ ने अन्य गद्य लेखों के अतिरिक्त **न्यू टेस्टामेन्ट** का अंग्रेजी अनुवाद तैयार किया। वह इंग्लैण्ड में प्रोटेस्टेन्ट मत का सर्वप्रथम महान् नेता होने के नाते भी महत्व रखता है।

इस काल में कविता का कहीं अधिक विकास हुआ। भाषा इस समय तक चार लोक-बोलियों में विभक्त थी। उत्तरी, दक्षिणी, मध्यपूर्वी और मध्य पश्चिमी। उत्तरी लोक-भाषा में अधिकांश कविता रूपकों में लिखी गयी तथा अनुप्रास-प्रधान थी। विषय या तो रोमान्स से सम्बन्धित थे अथवा नैतिक उपदेश का उद्देश्य उसमें निहित था। इस प्रकार के काव्यों में सर्वोपरि थे **सर गवीन एण्ड दी ग्रीन नाइट** तथा **दी पर्ल**। **सर गवीन एण्ड दी ग्रीन नाइट** का कथानक अत्यन्त रोचक है। ग्रीन नाइट एक भयंकर राक्षस था जिसने किंग आर्थर के सामन्तों को चुनौती दी। हर गवीन ने उसका सामना किया और अपने पौरुष एवं शुद्ध चरित्र के कारण अन्त में सफल रहे। **दी पर्ल** कदाचित् उसी अज्ञात कवि द्वारा प्रणीत है जिसने **सर गवीन एण्ड दी ग्रीन नाइट** की रचना की। यह एक सुन्दर रूपक है जो कवि ने अपनी अल्प वयस्का कन्या के देहावसान के उपरान्त लिखा था। इसमें रोचक दृश्य प्रस्तुत किये गये हैं और काव्यात्मक सौंदर्य का पर्याप्त समावेश हुआ है।

चासर की रचनाओं के अतिरिक्त इन पचास वर्षों का सबसे प्रसिद्ध काव्य है **विलियम लैंग लैण्ड का पियर्स प्लाउमैन**। इस विस्तृत रचना के तीन विभिन्न पाठ हैं जिनमें पहला पाठ सबसे अधिक विचारणीय है। शेष दोनों

पाठों में नवीन अंश जोड़कर विस्तार की वृद्धि हुई है। मई में एक दिन प्रातःकाल कवि मेलबर्न हिल के पास एक नदी के किनारे सो जाता है और स्वप्न में उसे तत्कालीन जीवन का एक विराट चित्र दिखाई देता है। सभी पेशे के लोग तथा सामाजिक जीवन के सभी स्तर के प्रतिनिधि प्रगट होकर रोचक दृश्य उपस्थित करते हैं। इसी बीच पियर्स दी प्लाउमैन उपस्थित होकर सबको परिश्रम करने का उपदेश देता है। सत्य तक पहुँचने और सन्तोष प्राप्त करने का यही एक मार्ग है। कविता के इस ढाँचे में दो अन्य खण्ड जोड़ दिये गये हैं जो मोरेलिटी नाटकों के सदृश हैं। इस काव्य में कलात्मक सौन्दर्य की न्यूनता होते हुए भी समसामयिक जीवन के विराट चित्रण के कारण इसका महत्त्व बढ़ गया है। **पियर्स प्लाउमैन** पुरानी परिपाटी पर अनुप्रास प्रधान शैली में विरचित है। यह एक रूपक है जिसमें धार्मिक और नैतिक उपदेश निहित हैं। धार्मिक उत्साह से यह ओतप्रोत है, किन्तु कला की दृष्टि से इसका स्थान बहुत ऊँचा नहीं है।

पियर्स प्लाउमैन पश्चिमी लोक-भाषा में लिखा गया है। सन् १३८३-८४ में **जान गोवर** ने लन्दन की बोली में प्रायः ४००० पंक्तियों का विशाल काव्य **कनफेसियो एमेन्टिस** लिखा। इस ग्रन्थ में अनेक कथाओं का संग्रह है और इस बात में चासर के **कैन्टरबरी टेल्स** से इसकी समानता है। किन्तु चासर के सफल काव्य की तुलना में साहित्यिक गुणों का इसमें अभाव है।

द्वितीय अध्याय

चासर तथा १५वीं शताब्दी में उसके अनुयायी कवि

ज्योफ्रे चासर

ज्योफ्रे चासर का जन्म सन् १३४० के लगभग हुआ था और उसका देहावसान सन् १४०० में हुआ। अतः समय के विचार से वह मध्ययुग के अन्त का कवि था। स्मरणीय है कि १४वीं शताब्दी में ही दान्ते की मृत्यु हुई और पेट्रार्क तथा बोक्कैकियो ने साहित्य रचना की। चासर की कविता में कुछ मध्ययुग की विशेषताएँ विद्यमान हैं, किन्तु उसे आधुनिकयुग का प्रथम अंग्रेजी महाकवि कहना अधिक समीचीन है। उसकी दृष्टि स्पष्ट है और तथ्यों के निरीक्षण और प्रकाशन की शैली आधुनिक है। एंग्लो सैक्सन कविता की परम्परा को त्यागकर उसने फ्रेंच काव्य की निर्माणपद्धति अपनायी। इसलिए उसकी कविता और फ्रेंच कविता में बहुत कुछ साम्य है। साथ ही साथ वह इटैलियन कविता से भी प्रभावित हुआ था।

अपने जीवनकाल में चासर को अनुभव एकत्र करने का पर्याप्त अवसर मिला। सत्रह साल की अवस्था में उसने एक सम्पन्न और प्रभावशाली व्यक्ति की नौकरी की। उसके बाद उसने रणक्षेत्र में सैनिक के रूप में विदेशों में राजदूत की हैसियत से और फिर स्वदेश में सरकारी नौकर की हैसियत से कार्य किया। अपने जीवन-काल में उसे राजाश्रय प्राप्त हुआ तथा कतिपय धनीमानी जनों की कृपा उस पर सदैव बनी रही।

चासर का रचना-काल तीन विभिन्न भागों में विभाजित किया जाता है। प्रारम्भिक अवस्था में वह फ्रांसीसी काव्यादर्शों से प्रभावित था तथा मध्य-युगीन रूपक शैली और रोमान्स का पूर्ण परित्याग नहीं कर पाया था। इस काल की प्रमुख रचनाएँ हैं—

(१) बोक आफ ब्लॉंचे दी डची जान आफ गान्ट की प्रथम पत्नी की मृत्यु पर लिखा गया था। (२) पार्लमेन्ट आफ फाउल्स रूपक शैली में

लिखा गया है। विभिन्न प्रकार के पक्षी सेन्ट बैलेन्टाइन्स डे पर एकत्र होकर प्रेम और परिणय की व्यवस्था करते हैं। हाउस आफ फेम एक विस्तृत रूपक है जिसमें यश के अनिश्चित स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। लीजेन्ड आफ गुड बीमेन अपूर्ण है।

द्वितीय अवस्था में चासर की कविता पर इटैलियन प्रभाव पड़ा। दान्ते के लिए उसके मन में अपार श्रद्धा थी और पेट्रार्क की कविता का वह प्रेमी था। बोर्कैकियो का प्रभाव उस पर सबसे अधिक पड़ा। इस काल की प्रमुख रचनाएँ हैं :—(१) ट्रायलस एण्ड क्रैसीडे प्रसिद्ध प्रेम काव्य है। शेक्सपियर के पहले इसकी तुलना करनेवाला दूसरा प्रेमकाव्य नहीं लिखा गया। (२) नाइट्स टेल

प्रतिभा प्रौढ़ होने पर चासर ने दी कैंटरबरी टेल्स का प्रणयन किया। लगभग तीस विभिन्न स्तरों और व्यवसायों के व्यक्ति एक सराय में एकत्र हैं। सराय का मालिक उनकी देखरेख में लगा हुआ है और साथ-ही-साथ उनसे मैत्रीपूर्ण वार्तालाप में भी संलग्न है। ये यात्री कैंटरबरी में टामस बेकेट की समाधि पर पूजा करने के लिए जा रहे हैं और राह में एक रात इस सराय में व्यतीत करते हैं। पात्रों की कल्पना अत्यन्त सफल हुई है। प्रत्येक पात्र समाज के एक खण्ड का प्रतिनिधि है और साथ ही साथ उसमें व्यक्तिगत विशेषताएँ भी हैं। यात्री आपस में वार्तालाप करते हैं जो अत्यन्त रोचक ही नहीं है, वरन् एक नाटकीय व्यवस्था भी उपस्थित करता है। आपस में यह निश्चय होता है कि प्रत्येक पात्र एक कहानी कहे और इस निश्चय के अनुसार कही हुई कहानियों के संग्रह को कैंटरबरी टेल्स कहते हैं। यह ग्रंथ उच्च कोटि की प्रतिभा का द्योतक है और अंग्रेजी काव्य के अमर ग्रन्थों में परिगणित होता है।

चासर ने अंग्रेजी कविता में क्रान्ति उत्पन्न कर दी। उसके पूर्व अधिकांश कविता 'आक्टोसिलैबिक' थी अर्थात् प्रत्येक पंक्ति में आठ स्वराक्षर होते थे। चासर ने फ्रांस और इटली के कवियों का अनुसरण करके अपनी काव्य-रचना के लिए 'डेकासिलैबिक' अर्थात् दस स्वराक्षरोंवाली पंक्ति का प्रयोग किया। यही 'डेकासिलैबिक' पंक्ति आगे चलकर नाटक और कविता में अधिकांश कवियों द्वारा प्रयुक्त हुई। कैंटरबरी टेल्स का एक विशेष महत्त्व यह है कि

इससे चासर के सूक्ष्म निरीक्षण का पता लगता है । अपने समकालीन जीवन को चासर ने निकट से देखा था और उसका अंकन कैंटरबरी टेल्स में हुआ है । चासर में हास्य और व्यंग की अपार क्षमता थी, किन्तु उसके कथनों में कटुता नहीं आने पायी है । चासर महान् कवि था । शेक्सपियर और स्पेन्सर के पूर्व चासर के जोड़ का दूसरा अंग्रेजी कवि नहीं हुआ ।

चासर की मृत्यु के बाद

चासर की मृत्यु के उपरान्त लगभग सौ वर्षों तक इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड में चासर का ही अनुकरण होता रहा तथा सचमुच मौलिक रचनाओं का अभाव था । प्रचुर परिमाण में ऐसी कविताएँ उपलब्ध हैं जो बहुत दिनों तक चासर द्वारा प्रणीत मानी जाती थीं । किन्तु विद्वानों की खोज ने यह सिद्ध कर दिया है कि इनमें से अधिकांश कृतियाँ चासर की नहीं, वरन् अन्य कवियों की हैं । इस अनिश्चित सामग्री के अतिरिक्त वे ज्ञात कवियों की रचनाएँ हैं जो चासर के ढंग पर लिखी गयी हैं, किन्तु जिनका स्तर चासर की कविता की अपेक्षा कहीं नीचा है । यहाँ हम केवल थोड़े से ऐसे कवियों का उल्लेख कर सकते हैं । (१) **टामस हाक्लीव** (१३७०-१४५०) की प्रमुख रचना **रेजिमेन्ट आफ प्रिन्सेज** कतिपय लैटिन ग्रन्थों के आधार पर लिखी गयी है, किन्तु गोअर और चासर का प्रभाव इस पर स्पष्ट है । हाक्लीव का धार्मिक काव्य उच्च कोटि का है, किन्तु नैतिक शिक्षा और वाद-विवाद के उद्देश्य के कारण यह नीरस हो गया है । (२) **जान लिडगेट** (१३७०-१४५१) ने बहुसंख्यक काव्य ग्रन्थों की रचना की और अपने युग में रोचक काव्य प्रणयन के लिए प्रसिद्ध था । इसके काव्य का मूल स्वर धार्मिक नहीं वरन् ऐहिक है, यद्यपि वह स्वयं बेनीडिक्टाइन साधु था । कला की दृष्टि से उसकी रचनाएँ बहुत उत्कृष्ट नहीं हैं, तब भी १५वीं शताब्दी के मान्य कवियों में इसकी गणना है । (३) **जान स्केल्टन** (१४६०-१५२९) की प्रमुख रचनाएँ हैं—**दी बाउज़ आफ कोर्ट दी बोक आफ कोलीन क्लाउट दी गारलैण्ड आफ लौरेल**, **ह्वार्ड कम ई नाट टु कोर्ट** इन ग्रन्थों में साहित्यिक सौन्दर्य का प्रायः अभाव है, केवल व्यंग और हास्य के लिए हम उन्हें पढ़ सकते हैं, यद्यपि अधिकतर व्यंग्य तीखा हो गया है और हास्य भद्दा ।

पन्द्रहवीं शताब्दी में चासर के अनुयायियों द्वारा स्काटलैण्ड में लिखी हुई कविता कहीं अधिक वैशिष्ट्यपूर्ण एवं आकर्षक है। कतिपय स्काट कवियों का उल्लेख यहाँ आवश्यक है (१) राबर्ट हेनरीसन (१४२५-१५०६) ने टेस्टामेन्ट आफ क्रैसीड नामक प्रेमाख्यान लिखा जिसमें उसने चासर की कथा को आगे बढ़ाया। (२) स्काटलैण्ड में चासर के अनुयायियों में सबसे महत्त्वपूर्ण था विलियम डनबर (१४६३-१५३०)। डनबर प्रायः दस कविताओं का प्रणेता होने के कारण प्रसिद्ध है। यही नहीं कि उसने अनेक कविताओं की रचना की, वरन् उसके काव्य में सौष्ठव तथा प्रौढ़ता पर्याप्त मात्रा में मिलती है। उसने गम्भीर विचार नहीं व्यक्त किये हैं, किन्तु आकर्षक कल्पना और छन्दविन्यास के कारण उसका काव्य अपने समय में अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हुआ। उसकी सबसे अधिक प्रसिद्ध रचनाएँ हैं थिसिल एण्ड दी रोज जिसमें स्काटलैण्ड के राजा चतुर्थ हेनरी और इंग्लैण्ड की कुमारी मारगरेट ट्यूडर के विवाह की ओर लाक्षणिक ढंग से संकेत किया गया है तथा डान्स आफ दी डेडली सिनिस। (३) गैविन डगलस (१४७५-१५२२) ने चासर के ढंग की कविताएँ लिखीं, किन्तु उसका सबसे महत्त्वपूर्ण काव्य था एनिड का स्काटलैण्ड की भाषा में अनुवाद।

ऊपर हमने जिन कवियों के बारे में लिखा है उनकी रचनाएँ लिखित रूप में प्रचलित थीं। इनके अतिरिक्त मौखिक रूप से जनता में प्रचलित बैलड साहित्य था। बैलड में प्रवाह और सादगी होती है तथा शौर्य-वर्णन द्वारा इसे रोचक और उत्साहवर्द्धक बनाया जाता है। इस प्रकार के गेय लोक साहित्य का सबसे सुन्दर उदाहरण है चेवी चेज़ नामक सुविख्यात बैलड जिसे अपने समय में लोग बड़ी रुचि से गाते और सुनते थे। बाद के युगों में अनेक विद्वानों ने इसकी प्रशंसा की। एक अन्य प्रसिद्ध बैलड का नाम, जो १५वीं और १६वीं शताब्दी में प्रचलित था, है दी नट ब्राउन मेड। इसका छन्द चेमी चेवी की अपेक्षा अधिक जटिल है।

नाटक

यूरोप के अन्य देशों की तरह इंग्लैण्ड में भी नाटक का जन्म पन्द्रहवीं शताब्दी के बहुत पहले गिरजाघरों में हो चुका था। पादरियों ने मध्य युग में

कई शताब्दियों तक नाटकों और नाट्य अभिनय का विरोध किया, किन्तु यूरोप के कई देशों में १०वीं और ११वीं शताब्दी में गिरजाघरों में ही नाटक का पुनर्जन्म हुआ। धर्म ग्रन्थ उस समय लैटिन भाषा में लिखे हुए थे। जनता को ईसा मसीह के उपदेश बोधगम्य बनाने के लिए अभिनय का सहारा लिया गया। कुछ दिनों के बाद नाट्य अभिनय गिरजाघरों से हटकर गाँवों और कस्बों की सड़कों पर होने लगा। विषय बाइबिल और सन्तो के जीवन-चरित्र से लिये जाते थे और छोटे-छोटे नाटकों में पूरा कथानक विभक्त रहता था। इन नाटकों को मिस्ट्री और मिरैकल नाटक कहते थे। अभिनय के चार प्रमुख केन्द्र थे—यार्क, चेस्टर, कवेन्ट्री और वेकफील्ड। अंग्रेजी नाटकों का विकास होता रहा और आगे चलकर वे मोरेलिटी नाटकों में परिवर्तित हो गये। इस प्रकार के नाट्य साहित्य का चरम उद्देश्य था नैतिक और धार्मिक सिद्धान्तों की स्थापना। अमूर्त गुणों, भावों, आदर्शों आदि को ही पात्र बनाकर इन नाटकों का कथानक आगे बढ़ता था। इनमें मानवीय आकर्षण कम था, किन्तु नाट्य तत्त्व की कमी न थी। १५वीं शताब्दी में मिरैकल और मारल नाटक दोनों ही प्रचलित थे।

गद्य साहित्य

१५वीं शताब्दी में गद्य साहित्य का संतोषप्रद विकास नहीं हुआ, क्योंकि अधिकांश सुशिक्षित लोग लैटिन भाषा का ही प्रयोग करते थे। इस शताब्दी की इनी-गिनी गद्य कृतियाँ ही महत्त्व रखती हैं। पैस्टन लेटर्स नामक प्रसिद्ध संग्रह अपने युग पर प्रकाश डालता है। विलियम कैक्सटन (१४२२-१४९१) ने १४७४ में सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में छापाखाना स्थापित किया। वह धार्मिक ग्रन्थ छापने लगा। सन् १४८४ में उसने टामस मेलोरी का मारटी डी आर्थर नामक सुविख्यात ग्रन्थ प्रकाशित किया जिसमें रोमांस कथाओं का संग्रह है। शैली में सफाई की कमी होते हुए भी मेलोरी का गद्य काव्यात्मक तत्त्वों से समन्वित है।

तृतीय अध्याय

सन् १५५० और १५७९ के बीच का अंग्रेजी साहित्य

यूरोपीय महाद्वीप के कतिपय देशों में नवजागरण १५वीं शताब्दी में प्रस्फुटित और विकसित हुआ। कुस्तुन्तुनिया पर तुर्क लोगों की विजय सन् १४५३ में हुई। तदुपरान्त वहाँ के विद्वान् हस्तलिखित ग्रन्थ लेकर समस्त यूरोप में फैलने लगे। सबसे अधिक प्रश्रय उन्हें इटली में मिला। अतएव इटली को ही नवजागरण का केन्द्र मानना उचित होगा। सच तो यह है कि सन् १४५३ के पूर्व प्रायः ५० वर्षों से हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज इटली में तत्परतापूर्वक हो रही थी तथा होरेस, क्विंटिलियन इत्यादि की कृतियाँ १४५३ के पहले ही उपलब्ध हो गयी थीं। इटली के ह्यूमैनिस्ट अर्थात् मानववादी विद्वानों ने प्रायः सौ वर्षों तक निरन्तर प्राचीन ग्रीक और लैटिन ग्रन्थों की खोज की। उनकी प्रतिलिपियाँ तैयार कराने के उपरान्त उनको सम्पादित किया तथा उनका विवेचन प्रस्तुत किया। इस प्रकार नवजागरण की भूमिका तैयार हुई और मानव जिज्ञासा पुनः उद्बुद्ध हो उठी। मध्ययुग में इने गिने विषयों का अध्ययन होता था—जैसे धर्म, तर्क और न्याय तथा एक विशेष प्रकार का दर्शन। अब ज्ञान की असीम पिपासा जाग्रत हो उठी और अध्ययन का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत हो गया। ग्रीस और रोम के प्राचीन साहित्य का अध्ययन होने लगा तथा प्राचीन कला में लोगों की अभिरुचि बढ़ी। सौंदर्य-भावना की तीव्रता के साथ ही साथ नवीन साहित्य और कला का निर्माण हुआ। नवजागरण का आन्दोलन यूरोपीय इतिहास में विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि आगे आनेवाली क्रान्तियों का उत्स इसमें मिलता है।

इंग्लैण्ड में नवजागरण का प्रभाव

इंग्लैण्ड में नवजागरण का प्रभाव देर से पहुँचा। १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अंग्रेज ह्यूमैनिस्ट विद्वानों ने इसको स्थापित किया, किन्तु इसका पूर्ण विकास महारानी एलिजाबेथ के राजत्वकाल में सन् १५७९ के बाद ही हुआ।

इस विलम्ब के कई कारण हैं। अंग्रेजी गद्य का स्वरूप अभी अनिश्चित था और १६वीं शताब्दी में इसका रूप-निर्धारण हुआ। रिफारमेशन अर्थात् ईसाई धर्म के सुधार का जो प्रबल आन्दोलन सन् १५२० के उपरान्त चला उसका भी प्रभाव नवजागरण के विरुद्ध पड़ा। वैसे भी अंग्रेज जाति सम्भवतः नवीन मूल्यों और सिद्धान्तों को धीरे-धीरे ही स्वीकार करती है।

नवजागरण के लिए वातावरण तैयार करने में कैक्सटन के छापेखाने ने बहुत बड़ा काम किया। चासर, गोवर, लिडगेट की काव्य-रचनाएँ तथा **मारटी डी आर्थर** सदृश गद्य कृतियाँ सर्वसाधारण को उपलब्ध हो गयीं और इस प्रकार साहित्यिक लोकरुचि का निर्माण हुआ। जिस समय में इटैलियन काव्यादर्श देश में तेजी से प्रविष्ट हो रहा था उस समय अंग्रेज कवियों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करने से अंग्रेजी कविता का सन्तुलन नष्ट होने से बचा। स्पेन्सर की कविता में इन दोनों प्रभावों का सम्यक् मिश्रण मिलता है। नव-जागरण के आविर्भाव का सबसे बड़ा श्रेय अंग्रेज ह्यूमैनिस्ट अर्थात् मानववादी विद्वानों को मिलना चाहिए। इनमें प्रधान थे विलियम ग्रासिन (१४४६-१५१९), टामस लिनेकर (१४६०-१५१४), जान कोलेट (१४६७-१५१९)। इन प्रसिद्ध विद्वानों ने इटली की यात्रा की थी तथा पडुआ, फरारा, पलारेन्स प्रभृति अध्ययन-अध्यापन के केन्द्रों में कुछ समय व्यतीत किया था। अपने देश में लौटकर ज्ञान का नया प्रकाश, जो उन्होंने प्राप्त किया था, विकीर्ण किया। इन्हीं के समकक्ष रखे जाने योग्य कतिपय अन्य प्रतिष्ठित अध्यापक थे जो आक्स-फोर्ड और कैम्ब्रिज में पढ़ाते थे और जिन्होंने भाषा में स्वरूप निर्धारण का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इन विशिष्ट अध्यापकों में ईलियट, चीक, विल्सन आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

गद्य में उन्नति

इस काल में अंग्रेजी गद्य में पर्याप्त उन्नति हुई, यद्यपि वह अभी अपना नवीन एवं आधुनिक रूप ग्रहण कर रहा था। उसे रिफारमेशन से विशेष सहायता मिली। प्रोटेस्टैण्ट पादरियों ने धर्म-प्रचारार्थ अंग्रेजी भाषा को अपनाया और उसमें धर्म-ग्रन्थों का अनुवाद प्रस्तुत किया। **विलियम टिन्डेल** ने सन्

१५२५ ई० में बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद किया जो इंग्लैण्ड तथा अन्य देशों में भी विशेष लोकप्रिय बना। टिन्डेल ने जिन शब्दों का प्रयोग अपने अनुवाद में किया था उनमें से अधिकांश का प्रचलन आज की अंग्रेजी भाषा में बना हुआ है। उन्होंने मुख्यतः द्यूटानिक शब्दों का ही प्रयोग किया और इस बात का उल्लेख गर्वपूर्वक किया है। सन् १५३५ में कोवरडेल ने बाइबिल का एक और अनुवाद प्रकाशित किया। सन् १६११ ई० में जब बाइबिल का आथराइज्ड वर्शन अर्थात् आधिकारिक संस्करण तैयार किया गया तब इन दोनों अनुवादों से विशेष सहायता ली गयी। कहना नहीं होगा कि अंग्रेजी बाइबिल की भाषा ने समस्त अंग्रेजी भाषा को गहराई तक प्रभावित किया है। इसी भाँति अंग्रेजों की सामान्य प्रार्थना पुस्तक *इंग्लिश बुक आफ कामन प्रेयर* जो कैनमर नामक पादरी द्वारा १५४९-१५५२ तक तैयार की गयी थी, निरन्तर अंग्रेजी भाषा को प्रभावित करती रही है। धार्मिक साहित्य में अंग्रेजी शब्दों के साथ साथ लैटिन शब्दों का भी प्रयोग होता था, अतः कभी-कभी एक ही भाव को व्यक्त करनेवाले सैक्सन और लैटिन मूल से उत्पन्न अलग-अलग पर्यायवाची मिलते हैं।

धार्मिक विवाद से सम्बन्धित प्रभूत साहित्य इस काल में लिखा गया। हम इस सम्बन्ध में केवल *विलियम टिन्डेल* तथा *टामस मूर* का उल्लेख करेंगे। टिन्डेल ने प्रोटेस्टैण्ट धर्म का समर्थन किया और टामस मूर ने कैथालिक धर्म का। टामस मूर का जगद् विख्यात ग्रन्थ *यूटोपिया* लैटिन में लिखा गया था, किन्तु उनके धार्मिक लेख अंग्रेजी में लिखे गये। स्काटलैण्ड में *लिनडसे*, *बुकानन* तथा *नाक्स* आदि प्रसिद्ध विद्वान् पादरियों ने अपने धर्मोपदेश तथा धर्म-ग्रन्थों के प्रणयन के लिए अंग्रेजी भाषा का आश्रय लिया और इस प्रकार उसकी लोक-प्रियता को बढ़ाया। १५३५-१५३९ के बीच में हेनरी सप्तम ने अनेक प्राचीन मठों का अन्त कर दिया, अतः उनमें संगृहीत प्राचीन ग्रन्थों के अवलोकन की सुविधा सर्वसाधारण को मिली। पुरातत्त्ववेत्ताओं ने इन प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के आधार पर अनेक शोध ग्रन्थ लिखे। ऐसे विद्वानों में सर्वप्रमुख थे *जान लीलैण्ड*। इतिहास में अभिरुचि बढ़ी और कई क्रानिक्ल्स लिखे गये। इनमें सबसे प्रसिद्ध था *हालिनशेड का क्रानिक्ल* जिसका उपयोग शेक्सपियर ने अपने ऐतिहासिक नाटकों के लिखने में किया।

कविता की स्थिति

रिफारमेशन से अंग्रेजी गद्य को प्रेरणा मिली, किन्तु ईसाई धर्म के नेता कविता को संशय की दृष्टि से देखते थे। अतः उनसे उसे प्रोत्साहन न मिला। शताब्दी के मध्य अथवा उसके बाद तक कविता में चासर की परम्परा जीवित रही। इस परम्परा में कोई उच्च कोटि का कवि नहीं हुआ। स्टीफेन हाच्च, जो किसी अंश में चासर से प्रभावित थे, रोमान्स और रूपक प्रणाली की कविता लिखने में संलग्न थे। स्केल्टन ने यथार्थ निरूपण और व्यंग की परिपाटी अपनायी। इन कवियों की रचनाओं में पर्याप्त साहित्यिक सौंदर्य नहीं मिलता, किन्तु ऐसे काल में जब इटैलियन कविता लोगों को आकर्षित कर रही थी, चासर का प्राचीन विशुद्ध अंग्रेजी आदर्श सामने रखकर इन्होंने अपने देश के काव्य को कोरे अनुकरण से बचाया। हेनरी अष्टम के राज्यकाल में टामस वायट (१५०३-४२), अर्ल आफ सरे (१५१७-४७) ने नवीन प्रकार की कविता लिखी जिसका स्तर अपेक्षाकृत उच्च था और जिसका स्वर चासर के अनुयायियों की कविता से भिन्न था। ये दोनों ही कवि प्रतिभा-सम्पन्न थे तथा फ्रांस और इटली में इन्होंने वर्षों तक निवास किया था। इटली की कविता के प्रेमी इन कवियों ने अपने देश में नवीन काव्यरूप तथा शैली प्रचलित करने का श्रेयस्कर कार्य किया। टामस वायट ने सानेट अर्थात् चतुर्दशपदी का सर्वप्रथम अंग्रेजी में प्रयोग किया। इटली में पेट्रार्क ने प्रेम विषयक अनेक सानेट लिखे थे, उन्हीं का अनुकरण करके वायट ने अपने सानेटों का प्रणयन किया। उन्होंने अन्य प्रकार के छोटे और बड़े प्रगीत मुक्तकों की रचना भी की और कुछ व्यंगात्मक काव्य भी लिखे। वायट की कविता में तीव्र अनुभूति, उत्साह, और कल्पना के कारण नवीन चमत्कार उत्पन्न हो गया है। अर्ल आफ सरे की कविताओं में वायट की कविता की अपेक्षा शक्ति कम और सौंदर्य अधिक है। उन्होंने सानेट को नवीन रूप दिया जो पेट्रार्क के इटैलियन सानेट से भिन्न था। यही रूप आगे चलकर शेक्सपियर ने अपनाया। सरे ने सर्वप्रथम अंग्रेजी में ब्लैक वर्स अर्थात् अनुकान्त काव्य का समावेश किया। इस प्रारम्भिक ब्लैक वर्स में कोई वैशिष्ट्य नहीं है, किन्तु आगे चलकर मार्लो ने इसका सुधार किया तथा शेक्सपियर ने अपने

नाटक और मिल्टन ने अपने महाकाव्य इसी अनुकान्त छन्द में लिखे । अतः इसका विशेष महत्त्व है। सन् १५५७ में टाटेल का **मिसलेनी** नामक संग्रह प्रकाशित हुआ और वायट और सरे की रचनाओं से लोग इसी के माध्यम द्वारा परिचित हुए । सन् १५५८ में महारानी एलिजाबेथ सिंहासनारूढ़ हुई । अगले २० वर्षों में अंग्रेजी कविता की विशेष उन्नति नहीं हुई । इस काल का उल्लेखनीय कवि था **टामस सैकविली** (१५३६-१६०८) जिसने अपने ग्रन्थ **मिरर फार मैजिस्ट्रेट** (१५६३) में अंग्रेजी इतिहास के कतिपय प्रमुख व्यक्तियों को आधार बनाकर कथाएँ लिखकर उन्हें संगृहीत किया ।

नाटकों का विकास

इस काल में उच्चकोटि के नाटक नहीं लिखे गये जिनकी तुलना हम शेक्स-पियर तथा उनके समसामयिक लेखकों की रचनाओं से कर सकें, किन्तु तब भी नाट्य साहित्य का विकास हुआ और आगे आनेवाले युग के लिए आवश्यक साधन संचित किये गये । सन् १५५० तक इंग्लैण्ड में नाटकों की केवल देशीय परम्परा चली आ रही थी । मिरेकल नाटक, जिनके बारे में हम लिख चुके हैं, विशेष स्थानों पर अब भी अभिनीत होते थे, यद्यपि उनका प्रचलन कुछ कम होने लगा था । मोरेलिटि नाटकों के महत्त्व में वृद्धि हुई । नैतिक शिक्षा का उद्देश्य अब भी बना हुआ था, किन्तु रूपक प्रणाली के स्थान पर यथार्थ का समावेश दिन पर दिन अधिक होने लगा । प्रोटेस्टैण्ट पादरियों ने धर्म-प्रचारार्थ इन नाटकों का उपयोग किया । नाटकों के विकास की अगली कड़ी में इन्टरल्यूड आते हैं जो केवल मनोरंजन के लिए लिखे जाते थे और जिनका सम्बन्ध न तो नैतिक प्रशिक्षण से था और न धर्म-प्रचार से । **जान हेउड** (१४९७-१५८०) ने कई इन्टरल्यूड नाटकों की रचना की जिनमें कुछ अत्यन्त रोचक हैं । सन् १५५० के उपरान्त लैटिन में लिखे हुए प्राचीन नाटकों के नमूने अंग्रेजों के सामने आये और इनसे प्रभावित होकर नाटक लिखे जाने लगे । वास्तव में इस समय प्राचीन देशी प्रभाव और इस नवीन क्लासिकी प्रभाव का सम्मिश्रण हुआ जिसके कारण नये ढंग के नाटक लिखे जाने लगे । कामेडी अर्थात् सुखान्त नाटकों के इस प्रकार के सबसे पुराने उदाहरण हैं । **उडाल** विरचित **रैल्फ र्वायस्टर**

ड्वायस्टर (१५३३) तथा गैमर गर्टन्सनिड्ल जिसका अभिनय सर्वप्रथम १५६६ में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हुआ। दोनों ही नाटक प्लेटस और टेरेंस के नाटकों से प्रभावित हैं। गैमर गर्टन्सनिड्ल में देशी प्रभाव की ही प्रधानता है। सेनेका के दुःखान्त नाटकों को ध्यान में रखकर गारबुडक नामक प्रथम अंग्रेजी दुःखान्त नाटक लिखा गया। इस युग में और भी अनेक रचनाएँ हुईं जिनमें कुछ ऐसी हैं जो दुःखद-सुखद घटनाओं को साथ मिलाकर लिखी गयी हैं। ऐसे नाटकों में डैमन एण्ड पीथियस विशेष उल्लेखनीय है। कुछ अन्य नाटकों के नाम हैं कैम बाइसीस, प्रोमस एण्ड कसेन्ड्रा। सन् १५७६ ई० में प्रथम अंग्रेजी रंगशाला की स्थापना लन्दन नगर की सीमा के बाहर सोरडिच नामक स्थान पर हुई। इसके पूर्व अभिनेतागण भ्रमण करते थे और किसी आश्रयदाता के संरक्षण में अपना कार्य करते थे। राज्य दरबार के संरक्षण के अभाव में इनका अस्तित्व सदैव खतरे में रहता था क्योंकि लार्ड मेयर तथा लन्दन महापालिका के अधिकांश सदस्य उनके विरुद्ध रहते थे और उनके कार्य में किसी न किसी बहाने से बाधा उत्पन्न करते थे।

चतुर्थ अध्याय

एलिजाबेथ के राज्यकाल में साहित्य का चरम उत्कर्ष

(१५७९-१६०३)

सन् १५७९ से पूर्व नवजागरण का प्रभाव इंग्लैण्ड में प्रगट हो चुका था, किन्तु उसका प्रतिफलन १५७९ के उपरान्त ही हुआ। सन् १५७९ में स्पेन्सर द्वारा **दी शेफर्ड्स कैलेण्डर** नामक सुन्दर काव्य लिखा गया और उसके बाद ही आश्चर्यजनक रीति से अंग्रेजी गद्य, पद्य और नाट्य साहित्य में अप्रत्याशित उन्नति हुई। यह समृद्धि रानी एलिजाबेथ की मृत्यु पर्यन्त बनी रही और उसके बाद भी कुछ वर्षों तक परिलक्षित हुई। हम इस अध्याय में सन् १५७९ ई० और १६०३ ई० के बीच में विकसित होनेवाले अंग्रेजी साहित्य का संक्षिप्त वर्णन करेंगे।

प्रगति के कतिपय कारण

इस नवीन एवं अभूतपूर्व प्रगति के अनेक कारण थे। प्राचीन एवं विदेशी साहित्य के सम्पर्क से अंग्रेज जाति की साहित्यिक भावना तीव्र हो उठी। सर्वप्रथम अनुवादों का आश्रय लिया गया। जिस काल का विवेचन हम पिछले अध्याय में कर आये हैं उसमें बड़ी संख्या में प्राचीन साहित्य तथा फ्रेंच और इटैलियन साहित्य का अनुवाद अंग्रेजी में हुआ और इस प्रकार जनता के सामने नवीन आदर्श प्रस्तुत हुए। साथ ही साथ महारानी एलिजाबेथ के शासन काल में अंग्रेजों का आत्म-विश्वास जाग उठा और देश-प्रेम की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने उच्चकोटि के साहित्य-सर्जन का दृढ़ संकल्प किया। उनके लिए यह बात असह्य थी कि साहित्य के क्षेत्र में उनका देश इटली, फ्रांस अथवा स्पेन से पीछे रहे। अंग्रेजी नाविकों ने अनेक साहसपूर्ण कार्य करके इंग्लैण्ड का सम्मान वर्द्धन किया था। सन् १५८८ ई० में इंग्लैण्ड ने स्पेन के जहाजी बेड़े को परास्त करके उसकी सामुद्रिक वरीयता नष्ट कर दी। शासन सुव्यवस्थित हो गया

था तथा देश में शान्ति और समृद्धि के लक्षण सब कहीं दिखाई पड़ते थे । जनता की श्रद्धा और स्नेह की भावना महारानी एलिजाबेथ के व्यक्तित्व में केन्द्रित थी । इस प्रकार यह काम साहित्य-निर्माण के लिए अत्यन्त उपयुक्त था । अंग्रेजों ने विदेशी साहित्य का उदाहरण सामने रखकर अपने साहित्य का निर्माण किया । विशेषकर इटैलियन साहित्य का आदर्श उनके सामने था । तब भी उन्होंने कोरा अनुकरण नहीं किया, वरन् विदेशी साहित्य की विशेषताओं को आत्मसात् करके मौलिक नव-निर्माण किया । सन् १५७९ के बाद अंग्रेजी कविता का आश्चर्यपूर्ण वैभव देखने में आया । शत-शत कण्ठों से फूटकर कविता बहने लगी और सारा देश काव्य और संगीत की ध्वनि से गूँज उठा । केवल प्रमुख कवियों का उल्लेख यहाँ सम्भव है ।

सर फिलिप सिडनी (१५५४-१५९६) अपने युग के प्रमुख विद्वान्, दरबारी एवं योद्धा थे । गद्य और पद्य लिखने में उनकी दक्षता समान रूप से स्वीकार की जाती थी । कविता में उनका चतुर्दशपदियों का संग्रह **एस्ट्राफेल एण्ड स्टैला** सुविख्यात है । प्रणय सम्बन्धी ये रचनाएँ कुमारी पेनी लोप को लक्ष्य बनाकर लिखी गयी हैं ।

एडमण्ड स्पेन्सर की कृतियाँ

सर फिलिप सिडनी के परम मित्र **एडमण्ड स्पेन्सर** (१५५२-१५६९) ने प्रचुर मात्रा में उत्तम काव्य का निर्माण करके अंग्रेजी साहित्य का गौरव बढ़ाया । चासर का वह प्रशंसक था और उससे उसने प्रेरणा प्राप्त की किन्तु उसके काव्य में विभिन्न उपकरणों का संचय हुआ है । मध्ययुगीन रोमानी और रूपक-प्रधान शैली के साथ उसने अपने समसामयिक राजनीतिक और आर्थिक तथ्यों का सम्बन्ध जोड़ा तथा प्राचीन क्लासिकी शैली में भी काव्य-रचना की । कथावस्तु को प्रधानता देते हुए उसने सुन्दर चित्र अंकित किये और अपनी कविता को मधुर संगीत से आप्लावित किया । आज स्पेन्सर की कविता पुरानी और दुरुह प्रतीत होती है, किन्तु न केवल अपने युग में विद्वानों और दरबारियों में उसका प्रचलन था, वरन् परवर्ती युगों में अनेक कवियों ने उससे प्रेरणा प्राप्त की तथा उससे बहुत कुछ सीखा । स्पेन्सर का प्रधान

उद्देश्य अपनी कविता द्वारा महारानी एलिजाबेथ को प्रसन्न करना था और इसमें वह बहुत कुछ सफल भी हुआ।

स्पेन्सर की पहली प्रसिद्ध रचना **शेफर्ड्स कैलेन्डर** सन् १५७९ई० में प्रकाशित हुई। थियोक्रिटस, वीयन आदि प्राचीन कवियों की परम्परा में लिखा हुआ यह काव्य बारह इकलाज में विभाजित है। प्रत्येक इकलाज वर्ष के एक महीने से सम्बन्धित है। शैली प्राचीन होने के कारण आज कदाचित् पूरी कविता रोचक न प्रतीत हो, किन्तु कुछ भाग जैसे 'अप्रैल का अंश' अत्यन्त आकर्षक है। **शेफर्ड्स कैलेन्डर** और **फेयरी क्वीन** के बीचवाले काल में स्पेन्सर ने विभिन्न प्रकार की काव्य रचना की। **हिम्स इन आनर आफ लव एन्ड व्यूटी** में प्रेम विषयक मुक्तक संगृहीत हैं। **मदर ह्यू बर्ट्स टेल** में व्यंग की प्रधानता है, **एस्ट्राफैल** सर फिलिप सिडनी के देहावसान पर लिखा हुआ विषाद काव्य है। **कौलिन स्लाउट कम होम अगेन** में स्पेन्सर ने रूपक शैली में महारानी एलिजाबेथ के दरबार का वर्णन किया है।

स्पेन्सर की प्रधान रचना **फेयरी क्वीन** का प्रकाशन सन् १५९० ई० में प्रारम्भ हुआ। इस विशाल काव्य में मध्ययुग और नवजागरण काल की सभी विशेषताएँ एकत्र मिलती हैं। किंग आर्थर की रोमान्स कथाओं से सहायता ली गयी है तथा रूपक शैली का उपयोग किया गया है। इसके साथ ही साथ प्रधान पात्र समकालीन जीवन से लिये गये हैं और फेयरी क्वीन के रूप में महारानी एलिजाबेथ प्रतिष्ठित हुई हैं। राजनीतिक और सामाजिक परिस्थिति पर भी इस रचना से प्रकाश पड़ता है। नवजागरण की कलात्मक प्रवृत्ति अनेक स्थलों पर लक्षित हुई है और सारा काव्य रंगीन चित्रों से भरा पड़ा है। यह चित्र कभी-कभी शृंखलाबद्ध रूप में तथा गतिशील होकर सामने आते हैं। स्पेन्सर ने नव पंक्तियोंवाले एक नवीन छन्द की व्यवस्था की जो उसके नाम से प्रचलित है तथा जो काव्य-माधुर्य के प्रकाशन में अत्यन्त समर्थ सिद्ध हुआ। स्पेन्सर की गणना अंग्रेजी के महाकवियों में होती है। उसका काव्य साहित्य की अमर विभूति है।

सेमुअल डेनिसल (१५६२-१६१९) ने कई ऐतिहासिक काव्यों की रचना की। उनका दृष्टिकोण ऐतिहासिक था, अतः उनका ध्यान तथ्यों के

निरूपण की ओर अधिक और काव्यात्मक सौन्दर्य की ओर कम गया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं सिविल वार्स दी कम्पलेन्ट आफ रोजामण्ड (१५९२) एपिसिल टू दी काउन्टेस आफ कम्वरलैण्ड (१५९९), मुसोफिलस कान्टेनिंग ए जेनरल डीफेन्स आफ लर्निङ्ग (१५९९)।

मिकेल ड्रेटन (१५६३-१६३१) डेनिअल की अपेक्षा अधिक प्रतिभा-सम्पन्न थे और उनके काव्य में कल्पना और माधुर्य का समुचित समावेश हुआ है। उन्होंने भी कई ऐतिहासिक काव्य लिखे हैं। डेनिअल की भाँति ही ड्रेटन भी देश प्रेम से प्रेरित थे। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं। आइडिया, दी शेफर्ड्स गारलैण्ड (१५९३), आइडियाज मिरर (१५९४), मारटिमेरिया-डोस (१५९६) दी बैरन्स वार्स (१६१३), इग्लैण्ड्स हीरोइकल एपीसील्स (१५९७), पाली आलबियन (१५९८)।

इनके अतिरिक्त अनेक कवियों ने सुन्दर और मधुर मुक्तकों की रचना की। ऐसे कवियों में टामस कैम्पियन का नाम उल्लेखनीय है। कैम्पियन के छन्द काव्यात्मक होने के अतिरिक्त गेय भी हैं। क्रिस्टोफर मारली अपनी नाट्य रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं, किन्तु उनकी विस्तृत काव्य रचना हीरो एण्ड लोएण्डर अत्यन्त रोचक है। वैसे ही शेक्सपियर विरचित वीनस एण्ड एडानीस (१५९३), तथा दी रेप आफ लुक्रीस विशेष महत्त्व रखनेवाली कविताएँ हैं। सन् १५९० के बाद प्रायः आठ वर्षों तक अंग्रेजी में सानेट लिखने की रीति विशेष प्रचलित हुई। सर फिलिप सिडनी के संग्रह स्ट्राफ़ेल् एण्ड स्टेला के प्रकाशन से कवियों को प्रोत्साहन मिला और आगे चलकर चतुर्दशपदियों के लगभग बीस संग्रह प्रकाशित हुए। इनमें सिडनी, स्पेन्सर और शेक्सपियर के सानेट अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। अन्य कवियों की रचनाएँ अधिकांश रूढ़िग्रस्त एवं अनुकरणात्मक हैं।

यद्यपि इस साहित्यिक समृद्धि के युग में सारा वातावरण काव्यमय हो गया था और कविता तथा नाटक की ही प्रमुखता थी तथापि गद्य की कुछ रचनाएँ अपने महत्त्व के कारण यहाँ उल्लेखनीय हैं। जान लिली (१५५४-१६०६) की प्रसिद्ध रचना यूफ्यूज, द एनाटमी आफ विट सन् १५७९ में प्रकाशित हुई। यूफ्यूज एक नवयुवक था जिसका आचरण स्त्रियों के साहचर्य से भ्रष्ट

हो गया है। इस कथा को लेकर लिली ने नैतिक शिक्षा प्रदान करने की चेष्टा की है। सन् १५८० में उसकी दूसरी रचना **यूफ्यूज ऐन्ड हिज इंग्लैण्ड** प्रकाशित हुई। दोनों ही रचनाएँ विषयवस्तु के लिए नहीं वरन् शैली के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। जिस नवीन शैली का आविर्भाव इन पुस्तकों में हुआ उसे यूफ्यूड्ज्म कहते हैं। यह अत्यन्त जटिल एवं कृत्रिम गद्य शब्दों तथा वाक्यांशों के पारस्परिक संतुलन पर आधारित था और इसमें अनुप्रास का प्रचुर प्रयोग हुआ। लिली ने अपने गद्य में उपमा का पग-पग पर उपयोग किया तथा जीवविज्ञान, वनस्पति शास्त्र इत्यादि के संदिग्ध तथ्यों का उन्होंने अनेक बार उल्लेख किया है। सन् १५८० में सर फिलिप सिडनी की रोमान्स कथा **आरकेडिया** प्रकाशित हुई जिसने एक अन्य प्रकार की कृत्रिम शैली को प्रचलित किया। **आरोकेडिया** में एक काल्पनिक जगत् प्रस्तुत किया गया है जिसमें सौन्दर्य-सम्पन्न युवक, युवतियाँ आनन्द-मय जीवन व्यतीत करते हैं। प्रधान कथा का कलेवर छोटा है, किन्तु उसमें अनेक अन्तर कथाएँ सन्निविष्ट हैं; भाषा अत्यधिक आलंकारिक है। सिडनी ने सरल साहित्यिक गद्य में **ऐन एपालाजी फार पोएट्री**, नामक निबन्ध लिखा जो अंग्रेजी में साहित्यिक समालोचना विषयक प्रथम प्रामाणिक लेख है।

लिली और सिडनी के अतिरिक्त **राबर्ट ग्रीन** (१५६०-१५९२) की गद्य रचनाएँ भी महत्त्व रखती हैं। ग्रीन ने कई रोमान्स कथाएँ लिखीं जिनमें **मैमोलिया पैन्डस्टो** आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। अपने जीवन के पिछले दिनों में ग्रीन ने 'कोनी कैचिंग पैम्फलेट्स' लिखे जिनमें चोरों, ठगों आदि के कृत्यों का यथार्थ वर्णन लेखक ने अपने अनुभव से किया है। **टामस लाज** (१५५८-१६२५) ने भी रोमांस कथाएँ लिखीं, जिनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध है 'रोजालिन्ड' जिसको शेक्सपियर ने अपने **ऐज यू लाइक इट** का आधार बनाया। **टामस नैश** (१५७६-१६०१) ने बड़ी संख्या में पुस्तिकाएँ लिखीं जिनमें यथार्थ निरूपण और व्यंग का प्राधान्य है।

नाटकों में कविता के साथ गद्य का भी उपयोग किया गया। कल्पना और भावातिरेक की अभिव्यक्ति सामान्यतः कविता में होती थी और साधारण वार्तालाप एवं वर्णनों के लिए गद्य काम में लाया जाता था। लिली के नाटकों

में गद्य का प्रचुर प्रयोग हुआ है और शेक्सपियर ने भी अपने नाटकों में आवयकता-नुसार गद्यांश लिखे हैं।

नाट्य साहित्य

महारानी एलिजाबेथ के युग के साहित्यिक वैभव का पता सबसे अधिक तत्कालीन नाट्य साहित्य से मिलता है। सन् १५८० के बाद चमत्कारपूर्ण रीति से अंग्रेजी नाटक का विकास हुआ। न केवल इस नाट्य साहित्य में रोचक वैविध्य था, वरन् उसका स्तर अकस्मात् इतना ऊँचा हो गया कि पूर्ववर्ती नाटकों से तुलना करने पर मन आश्चर्य से भर जाता है। दुखान्त नाटक, सुखान्त नाटक, दुखान्त-सुखान्त नाटक, यथार्थ प्रणाली के और काव्यमय रोमानी नाटक, सभी लिखे गये और प्रायः सभी कृतियों में विशेषता है। नाटकों के साथ ही रंगशाला की प्रगति भी हुई। सन् १५७६ में प्रथम नाट्य-गृह स्थापित हुआ और शताब्दी के अन्त तक टेम्स के दोनों किनारों पर कुल मिलाकर आठ रंगशालाएँ अपना कार्य कर रही थीं। ये नाट्य-गृह तीसरे पहर अभिनय प्रस्तुत करते थे और अधिकांश वृत्ताकार होते थे। उनका अधिकांश भाग खुला हुआ रहता था। रंगमंच के तीन भाग होते थे। अगला भाग प्रायः तिकोना होता था और प्रेक्षकों के बीच तक उसका विस्तार रहता था। नाटक का बड़ा अंश इसी भाग पर अभिनीत होता था। इसके पीछे का भाग भी अभिनय के लिए महत्त्वपूर्ण होता था। सबसे पीछे परदे से घिरा हुआ एक छोटा-सा प्रकोष्ठ विशेष अवसरों पर काम में लाया जाता था। रंगमंच के ऊपर कुछ दूर तक गैलरी बनी रहती थी जिसमें संभ्रान्त पुरुषों और महिलाओं के बैठने के लिए स्थान रहता था। कभी-कभी प्रमुख दर्शक तिपाइयों पर रंगमंच के किनारे भी बैठते थे। उस समय न रंगे हुए परदे होते थे और न आज की तरह पट-परिवर्तन होता था। वर्णनों और संकेतों द्वारा दर्शक परिस्थितियों और दृश्यों की कल्पना करता था। ऐसे रंगमंच पर अभिनेता को अपना कौशल दिखाने के लिए पर्याप्त अवसर मिलता था।

एलिजाबेथ कालीन नाट्य साहित्य का चरम उत्कर्ष शेक्सपियर के नाटकों में हुआ, किन्तु इसके पूर्व कतिपय अन्य नाट्य रचयिताओं ने महत्त्वपूर्ण

कृतियाँ प्रदान कीं। शेक्सपियर के इन पूर्ववर्ती नाटककारों में सर्वप्रथम **जान लिली** (१५५४-१६०६) का उल्लेख आवश्यक है। लिली अंग्रेजी के प्रथम सफल कामेडी अर्थात् सुखान्त नाटकों के प्रणेता थे। इनके सुखान्त नाटक प्राचीन कथाओं के आधार पर रूपक-प्रधान शैली में लिखे गये हैं, किन्तु तब भी उनमें अनेक आधुनिक उपकरण मिलते हैं। प्रायः ये सभी नाटक महारानी एलिजाबेथ के सम्मानार्थ लिखे गये थे। उन्हीं के रूप, आचरण, और प्रखर बुद्धि की ओर बार-बार संकेत किया गया है। युफ्युइज्म के बारे में हम लिख आये हैं। उसी कृत्रिम गद्य के माध्यम में इन नाटकों की रचना हुई है। अतः उनमें शब्दों द्वारा प्रभाव उत्पन्न करने की चेष्टा साफ-साफ दिखाई पड़ती है। दरबार का वातावरण सफलतापूर्वक निर्मित हुआ है। शेक्सपियर ने अपने कई नाटकों में लिली का अनुकरण किया। लिली की रचनाएँ निम्न-लिखित हैं। **कैम्पास्पे** (१५८१), **सैफो एण्ड फाओ** (१५८२), **एन्डिमियन** (१५८६), **मिडाज** (१५९०), **गैलेथिया**, **लव्स मेटामारफोसिस**, **दी उमन इन दी मून** और **मदर बाम्बी**।

कई बातों में **पील** (१५५८-९७) की रचनाएँ जान लिली की रचनाओं से मिलती जुलती हैं, यद्यपि उनकी प्रतिभा लिली की अपेक्षा निम्न कोटि की थी। **दी एरेनमेन्ट आफ पेरिस** (१५८१) पैस्टोरल नाटक है तथा **दी लव आफ डेविड एण्ड फेयर 'बेथ सावे'** बाइबिल के आधार पर लिखा गया है। **"एडवर्ड फर्स्ट"** ऐतिहासिक नाटक है तथा **दी ओल्ड वाइव्स टेल** में रोमानी विशेषताओं के दुरुपयोग की हँसी उड़ायी गयी है। **राबर्ट ग्रीन** ने मालों की शैलीगत विशेषताओं को आंशिक रूप में ग्रहण किया, अतएव उनके नाटकों में ब्लैक वर्स का सफल उपयोग हुआ है। मालों की भाँति इनकी शैली ओज और शक्ति से प्रेरित नहीं है, किन्तु सरल प्रवाह और नाद-सौन्दर्य के कारण वह विशेष रुचिकर हो गयी है। ग्रीन के नाटक रोमानी विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका वातावरण मुक्त और अत्यन्त स्वाभाविक है। नारी पात्रों की कल्पना में इस नाटककार को स्तुत्य सफलता मिली है और इसके नाटकों के कतिपय नारी पात्रों को ध्यान में रखकर ही कदाचित् शेक्सपियर ने अपने नाटकों में **रोजालिन्ड**, **वायला**, **इमोजेन प्रभृति** की सृष्टि की।

दुःखान्त नाटकों में सर्वप्रथम आर्डेन आफ फेवरशाम (१५८६) का उल्लेख आवश्यक है। यह पारिवारिक नाटक है जिसमें आर्डेन की पत्नी ऐलिस मोसवी नामक व्यक्ति से अनुचित प्रणय-सम्बन्ध के कारण अपने पति के वध में हाथ बटाती है, किन्तु अन्त में पश्चात्ताप के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। इस नाटक में रोमानी विशेषताओं का प्रायः पूर्ण अभाव है और अपराध तथा हत्या के कारण वातावरण भयावह हो गया है। इस नाटक की शैली प्रौढ़ तथा वस्तुविन्यास सफल है। दुःखान्त नाटकों में रोमानी उपकरणों का समावेश सर्वप्रथम टामस किड के प्रसिद्ध नाटक स्पेनिश ट्रेजडी आफ डान होरेशियो एन्ड बेलीमपेरा में हुआ। यह नाटक सेनेका के दुःखान्त नाटकों की परिपाटी पर लिखा गया है और इसका प्रधान विषय है प्रतिशोध। होरेशियो बेलीमपेरा का प्रेमी है और इसकी हत्या धोखे से होती है। उसका पिता हिरॉनिमो बेलीमपेरा के सहयोग से प्रतिशोध की व्यवस्था करता है और अन्त में अनेक पात्रों की मृत्यु होती है। नाटक लम्बे तथा आवेशपूर्ण कथनों से भरा पड़ा है जो सेनेका के नाटकों की याद दिलाते हैं। किड ने कदाचित् हैमलेट की कथा पर भी एक नाटक लिखा था जिससे सम्भवतः शेक्सपियर परिचित थे। क्रिस्टोफर मार्लो (१५६४-१५९३) के दुःखान्त नाटक किड के नाटकों से अनेक बातों में भिन्न हैं। इनमें हत्या और प्रतिशोध को विषय नहीं बनाया गया है, अपितु असीम शक्तिसम्पन्न किसी व्यक्ति के कार्यों का निरूपण हुआ है। नायक परिस्थितियों से संघर्ष करता है और अन्त में उसकी मृत्यु होती है। टेम्बरलेन में अपार शक्ति और वैभव की आकांक्षा रखनेवाले नायक की कथा है। फास्टस के नायक डाक्टर फास्टस की ज्ञान-पिपासा अपरिमित है। उसको तृप्त करने के लिए वह अपनी आत्मा बेच देता है। दी ज्यू आफ माल्टा का नायक धन-लोलुप है और इसी लिप्सा के कारण उसका अधःपतन होता है। मार्लो की अंग्रेजी नाटक को एक बहुत बड़ी देन यह है कि उसने ब्लैक वर्स को सशक्त और सक्षम माध्यम बनाकर भावी नाटककारों के लिए मार्ग प्रशस्त बनाया। मार्लो का ऐतिहासिक नाटक एडवर्ड सेकेन्ड (१५९४) भी सफल कृति है।

महाकवि शेक्सपियर

अंग्रेजी के मूर्धन्य कवि और नाटककार शेक्सपियर का जन्म अप्रैल सन्

१५६४ ई० में 'स्ट्रेटफोर्ड औन ए वान' नामक ग्राम में हुआ था। उस समय उनके पिता जान शेक्सपियर गाँव के एक सम्पन्न व्यापारी थे और वहाँ की म्युनिस्पल व्यवस्था में उनका सम्मानपूर्ण स्थान था। कुछ दिनों के बाद उनकी यह सम्पन्नता नष्ट हो गयी और वह कसाई का काम करने लगे। शेक्सपियर की शिक्षा वहीं ग्राम पाठशाला में हुई और परिवार की आर्थिक कठिनाई के कारण तेरह वर्ष की उम्र में उन्होंने पढ़ाई छोड़कर अपने पिता के काम में हाथ बटाना शुरू कर दिया। जब वह १८ वर्ष के हो गये तब उनका विवाह ऐन हैथावे से हुआ जिसकी वय उस समय २६ साल की थी। शेक्सपियर अपनी युवावस्था में कुसंगत में पड़कर सर टामस लूसी के सुरक्षित बनखण्ड में चोरी से शिकार करने के अभ्यस्त हो गये। पकड़े जाने पर वे दण्डित हुए और अन्त में सन् १५८५ में उन्हें अपना गाँव छोड़कर लन्दन के लिए प्रस्थान करना पड़ा।

लन्दन पहुँचने पर कुछ दिनों तक छोटे-मोटे काम करने के उपरान्त शेक्सपियर ने नाट्य अभिनय को अपना व्यवसाय बनाया। लेखन-कला की प्रारम्भिक अवस्था में उन्होंने दूसरों के लिखे हुए नाटकों को दोहराकर तथा उनमें आवश्यक परिवर्तन कर उन्हें अभिनय के योग्य बनाने का कार्य किया। जब उन्होंने स्वतंत्र नाटक-रचना का आरम्भ किया उस समय उनकी अवस्था लगभग २७ साल की थी। अगले २० वर्षों में वे निरन्तर रचना करते रहे और फलतः उन्होंने हमारे लिए जो सुन्दर नाटक और कविताएँ छोड़ी हैं उनके आधार पर उनकी कीर्ति सदैव अक्षय रहेगी।

११ वर्ष लन्दन में निवास करने के बाद शेक्सपियर अपने गाँव स्ट्रेटफोर्ड लौटे और वहाँ उन्होंने एक विस्तृत भवन मोल लेकर उसकी मरम्मत करवायी। इसके बाद वे बराबर अपने गाँव लौटते रहे और वहाँ काफी बड़ी सम्पत्ति अर्जित की। अपने साहित्यिक जीवन के अन्त में सन् १६११ के उपरान्त वे अपना अधिकांश समय स्ट्रेटफोर्ड में व्यतीत करने लगे। सन् १६१६ ई० में उनकी मृत्यु हुई।

शेक्सपियर के साहित्यिक जीवन को हम चार भागों में विभक्त कर सकते हैं। उसकी प्रथम अवस्था सन् १५९५ में समाप्त होती है। इन प्रारम्भिक

वर्षों में शेक्सपियर ने कुछ प्राचीन नाटकों को दोहराया और कुछ नवीन नाटक लिखे। हेनरी षष्ठ नामक ऐतिहासिक नाटक को उन्होंने नया रूप दिया और टाइटस एनड्रानिकस में मालो और किड का अनुकरण करते हुए भयंकर परिस्थितियों की अवतारणा की। इसी काल में उन्होंने तीन सुखान्त नाटक लिखे। लव्स लेबर्स लास्ट लिली के नाटकों का अनुकरण करता है, दी कामेडी आफ एरर्स प्लाटस के प्राचीन नाटकों के ढंग पर लिखा गया है तथा दी टू जेटिलमेन आफ वेरोना का सादृश्य ग्रीन के रोमानी सुखान्त नाटकों से है। विकास क्रम में दूसरी अवस्था सन् १५९५ से १६०१ तक बनी रही। इस काल में शेक्सपियर ने आत्मविश्वास संचित कर लिया था और उसकी प्रतिभा प्रौढ़ हो चली थी। साहित्यिक मण्डली में अब उसकी धाक जम गयी थी और इन ६-७ वर्षों में उसने विभिन्न प्रकार के नाटकों की रचना की। उसने ऐतिहासिक नाटक लिखे, रिचार्ड सेकेन्ड, किंग जॉन, हेनरी फोर्थ के दोनों भाग तथा हेनरी फिफ्थ। ए मिड समर नाइट्स ड्रीम, मच एंडो अबाउट नॉथिंग, एज यू लाइक इट, ट्वेलफ्थ नाइट भी इसी काल में लिखे गये। इन सभी सुखान्त नाटकों में शेक्सपियर की काव्य-शक्ति का सुन्दर प्रकाशन हुआ है। दी मेरी वाइवज आफ विन्डसर तथा दी टैमिंग आफ दी श्रू में हास्य और यथार्थ निरूपण की प्रमुखता है। इनके अतिरिक्त अपने दुखान्त नाटक रोमियो एण्ड जूलियट का प्रणयन भी शेक्सपियर ने इसी कालावधि के अन्तर्गत किया। इसके उपरान्त १६०१ से १६०८ तक तीसरा काल दुखान्त नाटकों की रचना के लिए प्रसिद्ध है। जूलियस सीज़र, ऐन्टोनी एण्ड क्लियोपाट्रा और कोरिओलेनस रोमन इतिहास पर आधारित हैं तथा टाइमन आफ एथेन्स का कथानक यूनानी इतिहास से लिया गया है। हैमलेट किंग लियर, मॅकबेथ और ऑथेलो में शेक्सपियर की प्रतिभा का सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन हुआ है तथा संसार में सबसे सफल दुखान्त नाटकों में उनकी परिगणना होती है। आल्स वेल दैट एण्ड्स वेल, मेजर फार मेजर तथा ट्रायल्स एण्ड क्रेसिडा में यद्यपि कथावस्तु का अन्त सुखद होता है तथापि उन नाटकों में दुखद अंश मिले हुए हैं। १६०८ के बाद शेक्सपियर ने चार नाटक लिखे—पेरिक्लिस, सिम्बेलिन ए विन्टर्स टेल और दी टेम्पेस्ट। इन अन्तिम नाटकों में दुखद

और सुखद घटनाओं का ऐसा सम्मिश्रण हुआ है तथा उनका वातावरण ऐसा अनोखा है कि न तो हम उन्हें दुखान्त और न सुखान्त नाटक कह सकते हैं। इसलिए उन्हें रोमान्स अथवा शेक्सपियर के अन्तिम नाटकों की संज्ञा दी जाती है। इन नाटकों के अतिरिक्त शेक्सपियर की काव्य-रचना **विनस एण्ड एडोनिस्** सन् १५९३ और **लूक्रीस** १५९४ में प्रकाशित हुई। उनके अधिकांश सानेट्स सन् १५९३-१५९६ के बीच में लिखे गये थे, यद्यपि उनका प्रथम प्रकाशन १६०९ में हुआ।

शेक्सपियर की रचनाओं की जो तालिका ऊपर दी गयी है उससे विदित है कि महाकवि की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी और अपने जीवन काल में उसने विविध प्रकार के नाटकों का प्रणयन किया। प्रायः सभी सुखान्त नाटक रोमान्स कथाओं के आधार पर लिखे गये हैं और उनकी अपनी सामान्य विशेषताएँ हैं। यद्यपि **दी कामेडी आफ़ एरर्स** में प्लाटस की प्राचीन शैली अपनायी गयी है तथापि अधिकांश अन्य सुखान्त नाटकों में प्रहसन द्वारा कुरूपता को सुधारने का उद्देश्य निहित नहीं है। शेक्सपियर अपने पाठकों और दर्शकों के लिए रोचक कथावस्तु प्रस्तुत करने में ही अपनी कला की सार्थकता मानते थे। नवयुवक और नवयुवतियों के प्रणय सम्बन्ध में पहले तो कठिनाई उत्पन्न होती, फिर वह सुलझ जाती है और अन्त में प्रेमियों का विवाह हो जाता है। यद्यपि कथानक यथार्थ जीवन से बिल्कुल विलग नहीं है, तब भी वह कवित्व और कल्पना के माध्यम से प्रेषित हुआ है। ऐतिहासिक नाटकों में शेक्सपियर ने बीते हुए युगों का सजीव चित्रण किया है और इतिहास के पात्रों को पुनः अनुप्राणित करके प्रस्तुत किया है। इन नाटकों की रचना में शेक्सपियर देश-प्रेम से प्रेरित थे। इतिहास के तथ्यों में उन्होंने आवश्यकतानुसार हेर-फेर किया है, किन्तु उनका प्रयत्न यही रहा कि वे प्राचीन इतिहास का अनुसरण यथासम्भव करें। रोमन इतिहास पर आधारित तीनों नाटक दुखान्त हैं। इनसे तत्कालीन जीवन पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। **रोमियो एण्ड जूलियट** दुखान्त होते हुए भी उत्साह, कवित्व, और स्फूर्ति से परिपूर्ण है। इसके विपरीत **हैमलेट**, **मैकबेथ**, **किंग लियर** तथा **आथेलो** में अवसाद का गहरा पुट है। इन प्रसिद्ध दुखान्त नाटकों में नायक अपने चारित्रिक दोष

तथा नियति के विरोध के कारण अधःपतन और विनाश की ओर अग्रसर होता है। शेक्सपियर के अन्तिम नाटकों में उनका परिपक्व जीवन-दर्शन प्राप्त होता है। अब प्रतिहिंसा के स्थान पर क्षमा को ही श्रेयस्कर सिद्ध माना गया है और वातावरण न तो प्रारम्भिक सुखान्त नाटकों की भाँति आह्लाद-पूर्ण है और न दुःखान्त नाटकों की भाँति अवसादपूर्ण। शेक्सपियर ने जीवन के अनुभव से यह समझ लिया था कि सुख और दुःख दोनों ही मिल जुलकर विद्यमान रहते हैं।

शेक्सपियर के नाटकों को पढ़कर हम उनसे आनन्द प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि वे कवित्वसे ओतप्रोत हैं और घटनाएँ तथा पात्र मानस में उभड़कर सामने आ जाते हैं। तब भी यह स्मरणीय है कि शेक्सपियर के प्रायः सभी नाटक रंगशाला में अभिनय के लिए लिखे गये थे अतः उनकी अनेक विशेषताएँ इसी दृष्टि से देखने पर स्पष्ट होती हैं। हम ऊपर कह आये हैं कि शेक्सपियर के युग में रंगे हुए परदे नहीं थे। अतः स्थान, काल तथा परिस्थिति की ओर संकेत करने के लिए शेक्सपियर ने कवित्वपूर्ण विस्तृत वर्णनों का सहारा लिया है। इसी भाँति स्वगत संभाषणों का समावेश भी रंगमंच की बनावट के कारण ही सम्भव हो सका था। नारी पात्रों का अभिनय बालकों द्वारा किया जाता था तथा उस समय के अंग्रेज दर्शक लड़ाई झगड़े के दृश्य अधिक पसन्द करते थे। इन बातों का प्रभाव भी शेक्सपियर के नाटकों पर पड़ा। कवि, अभिनेता, और दर्शक तीनों के सहयोग से नाटक का सम्पूर्ण प्रभाव प्रगट होता था। कवि दर्शक को कल्पना द्वारा अनेक तथ्यों और प्रभावों को ग्रहण करने के लिए मानो आमंत्रित करता था।

शेक्सपियर के नाटक मूलतः काव्य नाटक हैं। अतः कविता का उनमें विशेष महत्त्व है। कवि की शैली का क्रमिक विकास हुआ। पहले तो काव्य सौन्दर्य को वह अत्यधिक महत्त्व देते थे अतः प्रथम तथा द्वितीय अवस्था की रचनाओं में काव्य-सौन्दर्य तथा कल्पना-विलास का चमत्कार देखने को मिलता है। दूसरी अवस्था की संतुलित शैली में विचारों और भाषा का सुन्दर और यथेष्ट सामंजस्य हुआ। तीसरी अवस्था में शैली कुछ अनगढ़ हो जाती है क्योंकि अब शेक्सपियर का सरोकार मुख्यतः विचारों से था।

शेक्सपियर अंग्रेजी साहित्य की अमर विभूति हैं और संसार के विरले ही साहित्यकार उनके समकक्ष स्थान पा सकते हैं। मनोमुग्धकारी कविता के साथ-साथ उन्होंने संसार को गम्भीर जीवन-दर्शन भेंट किया है। उनके कलापक्ष और भावपक्ष समान रूप से पुष्ट हैं और दोनों के सम्यक् योग से अद्वितीय काव्य की सृष्टि हुई है।

पंचम अध्याय

एलिजाबेथ की मृत्यु से राजत्व की पुनःस्थापना तक

(१६०३-१६६०)

इस काल के प्रारम्भिक वर्षों में अंग्रेजी गद्य एलिजाबेथन युग की परिपाटी पर ही लिखा गया। किन्तु धीरे-धीरे आगे चलकर उसमें अपेक्षाकृत श्रेष्ठता, विचारों का विस्तार और विविध विषयों का समावेश हुआ। इस काल में कविता का ह्रास हुआ क्योंकि इसमें एलिजाबेथन युग के काव्योचित गुणों की नहीं वरन् दोषों और बुराइयों की ही अतिरंजना की गयी। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि इस काल में चिलिंगवर्थ ऐसे नीतिशास्त्री तथा हाब्स ऐसे दार्शनिक द्वारा स्वाभाविक शैली और विचार-शक्ति से समन्वित नवीन प्रकार के गद्य का तथा कुछ गीतिकारों द्वारा उत्तम प्रगीतों का निर्माण हुआ।

गद्य के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य बाइबिल का आधिकारिक अनुवाद **आथराइज्ड वर्शन** था (१६११) और इसका प्रभाव अधिकांश गद्य रचनाओं पर पड़ा। फ्रान्सिस बेकन के साथ चिन्तन और दर्शन की धारा एक नवीन दिशा में मुड़ी। बेकन (१५६१-१६२६) सत्रहवीं शती के प्रारम्भिक वर्षों के महान् गद्य लेखक थे। इनकी अधिकांश कृतियाँ लैटिन भाषा में हैं। सम्भवतः इनका विश्वास था कि अंग्रेजी भाषा में स्थायित्व के तत्त्व नहीं हैं। बेकन इंग्लैण्ड के जागरण-काल के पूर्ण प्रतिनिधि लेखक और सर्वगुण-सम्पन्न व्यक्ति थे। उनके लेखों की ख्याति बहुत अधिक है। उनके निबन्ध संक्षिप्त और सार-गर्भित हैं तथा भाषा चुस्त और शब्दयोजना प्रभावोत्पादक। सभी निबन्धों में लेखक का एक निश्चित उद्देश्य है। शैली विश्लेषणात्मक है, शब्दचित्र आकर्षक हैं। बेकन द्वारा प्रणीत **एडवांसमेन्ट आफ लर्निङ्ग** के अंग्रेजी गद्य और उसके रूप-विधान ने अंग्रेज लेखकों को विशुद्ध साहित्य की प्रेरणा दी। **नोबम आरगेनम** (१६२०) **हिस्टोरिया नेचुरालिस एट इक्सपे-**

रिमेंटालिस (१६२२) आदि प्रमुख पुस्तकें बेकन द्वारा लिखी गयीं। इन पुस्तकों ने वैज्ञानिक अनुसंधानों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया और चार्ल्स द्वितीय के शासन-काल में रायल सोसाइटी की स्थापना के पूर्व ही वहाँ के वैज्ञानिकों ने कुछ अच्छा कार्य भी कर लिया था। इतिहास के क्षेत्र में एलिजाबेथ युग के उत्तरार्द्ध में आर्क बिशप के क्रानिकिल्स के अतिरिक्त कोई महत्त्वपूर्ण रचना नहीं हुई किन्तु जेम्स प्रथम के शासन-काल में कैम्डेन, स्पेलमैन, सेल्डन और स्पीड ने स्टों और ग्रेफ्टन के प्राचीन अनुसंधानों को जारी रखा। बेकन ने हिस्ट्री आफ हेनरी सेवन्थ नामक अपना सुप्रसिद्ध इतिहास लिखा और कवि डैनियल की पुस्तक हिस्ट्री आफ इंग्लैंड टू दि टाइम आफ एडवर्ड थर्ड ऐसी साहित्यिक शैली में लिखी गयी कि जिसके कारण इतिहास लोकप्रिय विषय बन गया। नोलेस की हिस्ट्री आफ दी तुर्क्स (१६०३) और सर वाल्टर राले की हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड इस बात के प्रमाण हैं कि इतिहास प्रथम बार अपने क्षेत्र में कितना आगे बढ़ गया। तूफानी जीवन के सांध्यकाल में कारागृह के एकान्त प्रकोष्ठ में लिखी हुई राले की पुस्तक न केवल ललित गद्यांशों के ही कारण साहित्यिक है वरन् इसमें नैराश्यपूर्ण कर्षण भावना की मार्मिक अभिव्यक्ति भी हुई है। इसी काल में जान सेल्डेन ने टाइटिल्स आफ आनर (१६१४) और हिस्ट्री आफ टाइथिस (१६१८) लिखा।

एलिजाबेथ के शासनकाल में अनेक साहसी व्यक्तियों ने समुद्री यात्राएँ कीं जिनका विशद वर्णन उस काल के साहित्य में मिलता है। यात्रा का वह क्रम इस युग में भी न्यूनाधिक रूप में चलता रहा। १६११ में प्रकाशित टामस कारयेट की पुस्तक क्रुडिटिज में उसकी फ्रांस और इटली के बीच की यात्रा का विवरण है। जार्ज सेन्डी ने पूर्वी देशों में की गयी अपनी यात्रा का वर्णन प्रस्तुत किया। हेनरी बोटन की लेटर्स फ्रॉम इटली एक रुचिकर और पठनीय पुस्तक है। सेमुअल पर्चास की पर्चास हिज पिलग्रिमेज, हैकलाइट्स पोस्ट-ह्यूम्स (१६२५) में समुद्री यात्राओं तथा साहस और वीरता से परिपूर्ण कार्यों का स्पष्ट चित्रण है जिन्हें पढ़ने से उन दिनों की याद आती है जब इंग्लैंड के जहाजी राज्य-विस्तार के लिए विश्व-भ्रमण पर निकलते थे। इस प्रकार के साहित्य से लोगों के व्यक्तिगत जीवन को जानने की जिज्ञासा

और रुचि बढ़ी जिसके कारण आगे चलकर अनेक महापुरुषों के जीवनचरित्र लिखे गये ।

अब अंग्रेजी गद्य के उस स्वरूप का पूर्वाभास हमें मिलता है जो प्रत्यावर्तन काल में पूर्णतया विकसित हुआ । इतिहास लिखने में गद्य शैली का सन्तोषजनक विकास टामस मे के हिस्ट्री आफ दी पार्लिमेन्ट, टामस फुल्लर के चर्च हिस्ट्री आफ ब्रिटेन में हुआ । इस काल में दर्शन और अध्यात्म शास्त्र में गद्य के प्रमुख आचार्य जेरेमी टेलर (१६१३-६७) और टामस हाव्स (१५८८-१६७९) थे । चार्ल्स प्रथम के शासन के अन्तिम काल में टेलर ने होली लिंविंग एण्ड डाइंग (१६५१) और दी ग्रेट इक्वेम्पलर लिखा । राज्य के आंतरिक कलह और युद्ध की हलचल के समय लिखी गयी इन पुस्तकों में आध्यात्मिक विवेचन की अभिव्यक्ति संतोष और सुख देनेवाली थी । टेलर एक प्रभावशाली व्यक्ति और ओजस्वी वक्ता थे । सुन्दर शब्दयोजना से संपृक्त उनकी पुस्तकें अपने विचार-गाम्भीर्य और भक्ति-विषयक व्याख्या के लिए बहुधा पढ़ी जाती हैं । रिचर्ड बैक्सटर द्वारा रचित तथा १६५० ई० में प्रकाशित पुस्तक सेन्ट्स एवरलास्टिंग रेस्ट इतनी लोकप्रिय हुई कि वह इंग्लैण्ड में उस समय घर घर पढ़ी जाती थी । शायद ही कोई घर बचा था जिसमें उसकी एक प्रति न रखी हो ।

हाव्स की श्रेष्ठ रचनाएँ चार्ल्स प्रथम के समय में प्रकाशित हुईं । दूसरा सुप्रसिद्ध गद्य लेखक सर टामस ब्राउन (१६०५-१६८२) था जिसकी पुस्तक रिलिजियो मेडिसी (१६४२) की ख्याति समस्त यूरोप महाद्वीप में फैली । उसकी दूसरी रचनाएँ दी इन्ववायरी इन्टू बलार एरर्स १६४६ में और अर्न बेरियल १६५८ में प्रकाशित हुईं । अन्य कतिपय आनन्द-दायक कृतियों के साथ टामस ब्राउन की ये पुस्तकें अपनी विलक्षणता, कल्पना, शब्द-योजना और विशिष्ट आकर्षण के कारण बहुत ही लोकप्रिय हुईं तथा उनके द्वारा शुष्क अंग्रेजी गद्य में स्फूर्ति एवं नवीनता का समावेश हुआ । इन्हीं की पुस्तकों की श्रेणी में हम राबर्ट बर्टन की एनाटमी आफ मेलैनकली को जिसमें बुद्धि-विलास और वाक्-पटुता का प्रदर्शन है, रख सकते हैं । टामस फुल्लर के होली एण्ड प्रोफेन स्टेट और वर्दीज आफ इंग्लैण्ड में आह्लाद, उच्च

भावना, और कल्पनाशक्ति का अद्भुत मिश्रण है। पुस्तकालयों की स्थापना के कारण इस प्रकार की रचनाओं में बहुत वृद्धि हुई। जेम्स प्रथम के शासन काल में सर टामस बाडले ने आक्सफोर्ड में बाडलियन की तथा सर राबर्ट काटन ने ब्रिटिश संग्रहालय में एक पुस्तकालय की स्थापना की।

अनेक लेखक प्यूरिटन और चर्च सम्बन्धी वाद-विवाद में भाग लेते थे जिनमें विषय की व्याख्या और तर्क-शक्ति के लिए विलियम प्राइन अधिक विख्यात हुए। किन्तु वाद-विवाद में सबसे अधिक कुशल और ओजस्वी व्यक्ति **मिल्टन** ही थे जिनके गद्य में एलिजाबेथन प्रभाव निहित है। ओज, लय, प्रवाह, तर्क और कल्पना से समन्वित इनकी सशक्त गद्य शैली में गंभीर प्रभाव विद्यमान है किन्तु इन उपकरणों के होते हुए भी मिल्टन की गद्य शैली दोषरहित नहीं है। भाषा का प्रवाह और ओज कविता के लिए ही अधिक उपयुक्त होता है। मिल्टन के गद्य में चमत्कार है, शैली में कलात्मकता है किन्तु दुरुहता के कारण स्थायी प्रभाव नहीं है। जहाँ मिल्टन ने सौंदर्य सरल भाषा का प्रयोग किया है वहाँ उनकी शैली अपेक्षाकृत सफल है। इनके गद्य में हास्य का पुट नहीं, वरन् प्रायः सर्वत्र अतिशय गम्भीरता मिलती है। मिल्टन के गद्य में उनका व्यक्तित्व ध्वनित हुआ है और उनकी शैली में वैयक्तिकता का इतना अधिक समावेश है कि उसका अनुकरण अत्यन्त कठिन था। उनकी अनेक पुस्तिकाओं में **एरिओपेजिटिका** सर्वोत्तम है। उसकी गद्य शैली अपेक्षाकृत दोषरहित है तथा प्रस्तुत विचारों में भी गम्भीरता, संतुलन और औदार्य है। मिल्टन के गद्य से सर्वथा भिन्न साहित्य को **आइजाक वाल्टन** ने (१५९३-१६८३) **कम्प्लीट एंग्लर** (१६५३) में प्रस्तुत किया। इसमें सरल शैली में ग्राम्य दृश्य और नदी-झरनों के कलकल नाद का चित्रण है। इस प्रकार हम देखते हैं कि जेम्स और चार्ल्स प्रथम के शासन-काल तक अंग्रेजी गद्य ने अपनी शक्ति यथेष्ट बढ़ा ली थी।

जेम्स प्रथम के शासन-काल की कविता

ऐसा कहा जाता है कि इस पीढ़ी में और इसके आनेवाले काल में कविता का ह्रास हुआ। सर्वांशेन यह कथन सत्य है, किन्तु बिना किसी संशोधन के

इस कथन की पुष्टि संगत नहीं है। हमें स्मरण रखना चाहिए कि शेक्सपियर तथा ड्रेटन और डैनियल ऐसे अनेक एलिजाबेथयुगीन कवियों ने अपनी कुछ श्रेष्ठ कृतियों का निर्माण जेम्स प्रथम के शासनकाल में किया। फिर भी, एलिजाबेथ युग के काव्य-गौरव और महानता को इस काल की कविता नहीं प्राप्त कर सकी, फलतः उसमें ह्रास के लक्षण परिलक्षित हुए। इसका एक विशेष कारण है। एलिजाबेथ युग की कविता के सम्बन्ध में हम इस बात का उल्लेख कर चुके हैं कि काव्य विषयक विविध विधानों और उपकरणों में पारस्परिक विरोध होते हुए भी एक तत्त्व ऐसा था जो सबको एक सूत्र में मिलाये हुए था। वह तत्त्व था इंग्लैण्ड निवासियों का अपने देश के प्रति अटूट प्रेम और अपनी महारानी एलिजाबेथ के प्रति अक्षुण्ण श्रद्धा, जिसके कारण उस समय काव्य-सम्बन्धी विधाओं में कहीं तीव्र भेद नहीं हुआ। वे पारस्परिक सम्बद्ध और एक दूसरे के पूरक होकर कहीं कहीं एक ही कवि में एक साथ विद्यमान हैं। उदाहरणार्थ, प्यूरिटन धर्म और शौर्य तथा वीरता की अभिव्यक्ति स्पेंसर में, कैथोलिक धर्म और शृंगार तथा प्रेम की अभिव्यक्ति कांस्टेबुल में एवं सभी प्रकार की मनोवृत्तियों और भावनाओं का सामंजस्य शेक्सपियर तथा अन्य नाटककारों में।

इंग्लैण्ड में वह समय राष्ट्रीय-चेतना का काल था। एक अदम्य उत्साह, आगे बढ़ने की प्रवृत्ति, सीमा-विस्तार की अभिलाषा, देशभक्ति, राष्ट्रीय जागरण के भाव सबमें विद्यमान थे। इंग्लैण्ड ने प्रथम बार अपनी राष्ट्रीय आत्मा को पहचाना था। किन्तु महारानी की मृत्यु के बाद काव्य की यह एकता धीरे-धीरे क्षीण होने लगी। काव्य के उपकरण और विषयवस्तु तो वही थे किन्तु उनमें संगीत और ऐक्य उत्पन्न करनेवाला तत्त्व समाप्त हो जाने से पृथक्त्व आ गया। राजनीति के क्षेत्र में भी वर्गवाद और कलह का बोलबाला हुआ। राजाओं की सर्व-प्रभुसत्ता और व्यक्ति-स्वातंत्र्य तथा चर्च और प्यूरिटन आदि प्रश्नों को लेकर कलह और संघर्ष इतना अधिक हो गया कि इंग्लैण्ड की राष्ट्रीय एकता पर आघात पहुँचा तथा कवियों ने सम्पूर्ण राष्ट्र की अपेक्षा राष्ट्र के विविध राजनीतिक दलों को अपनी कविता का विषय बनाया। जिस आवेग और उत्साह ने प्रत्येक एलिजाबेथ युगीन क्रियाकलाप को निष्कम्प दीपशिखा की भाँति

सदैव प्रज्वलित रखा उसके क्षीण हो जाने से उस काल की कृतियों के दोष सामने आये और दुर्भाग्यवश उन त्रुटियों और दोषों को इस काल में साहित्यिक विशेषताओं के रूप में देखा जाने लगा। परिणाम यह हुआ कि यूफूज और अर्केंडिया से ग्रहण की हुई भद्दी और बोझिल शैली को ही महत्त्व देकर पद्य में उसकी अवतारणा की गयी जिससे काव्योचित भावनाओं और सहज स्पष्टता का अंग्रेजी कविता में किसी अंश तक हनन हुआ। इसकी प्रतिक्रिया में समीक्षात्मक और क्लासिकी विधानों का उदय होने लगा। पूर्ववर्ती काल में ऐसा उत्साह मंद पड़ने से एक बात और देखने में आयी कि काव्य में मौलिकता का स्थान अनुकरण ने ले लिया। जेम्स के शासन-काल में स्पेंसर के परवर्ती कवियों का एक वर्ग ऐसा आया जिसने उसकी काव्य-परिपाटी का अनुकरण किया। जार्ज विदर (१५८८-१६६७) ने बहुसंख्यक काव्य-रचनाएँ की जिनमें ग्राम्य जीवन और एकान्त स्वच्छन्दता के प्रति कवि के मोह का वर्णन है। **दी शेफर्ड्स हंटिंग** (१६१५) में इसी प्रेम को दो पात्रों के पारस्परिक संवाद के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। **फाइडेलिया** एक प्रेम-विषयक शोक-गीत है। **एव्यु-जेज स्ट्रिप्ट एण्ड ह्विप्ट** (१६१३) में विदर ने जेम्स प्रथम के दरबार पर व्यंग किया है। **गाइल्स फ्लेचर** स्पेंसर को अपना गुरु मानता था और उसके **काइस्ट्स विक्टरी एण्ड ट्रेम्फ** (१६१०) में स्पेंसर की ही प्रणाली का अनुकरण है। गाइल्स फ्लेचर के भाई **फिनियस फ्लेचर** की काव्यकृति **परपल आइलैण्ड** में भी, जो मानव शरीर पर आधृत एक रूपक है, उसी प्रकार का माधुर्य और लालित्य है। **विलियम ब्राउन** ने स्पेंसर का सीधा अनुकरण तो नहीं किया किन्तु उससे प्रभावित अवश्य था। दो भागों में प्रकाशित उसकी **ब्रिटानियाज पैस्टोरल्स** (१६१३-१६१६) तथा **शेफर्ड्स पाइप** के सात ग्राम्य गीतों में ग्रामीण जीवन और प्राकृतिक दृश्य के संश्लिष्ट वर्णन हैं। ग्राम्यदृश्य के प्रति कवियों की रुझान इसी समय से प्रारम्भ हो गयी थी और यह परम्परा मिल्टन, विदर, मारवेल से होती हुई टामसन, ग्रे और कालिन्स तक पहुँचकर कुछ श्रेष्ठ कविताओं का निर्माण कर सकी।

अंग्रेजी कवियों में **जान डान** (१५७३-१६३१) का बड़ा विलक्षण स्थान है। उन्होंने क्लासिकी लेखकों द्वारा निर्धारित नियमों की उपेक्षा कर नये ढंग

से अपनी कविताएँ लिखीं। पचीस वर्ष की उम्र के पहले ही उनकी कुछ श्रेष्ठ रचनाएँ प्रकाश में आ गयी थीं। स्पेंसर के पथ पर चलनेवाले कवियों और सानेट-लेखकों के प्रति डान की प्रतिक्रिया हुई। उन्होंने रुढ़ियों और काव्यगत बंधनों तथा नियमों का बहिष्कार किया। यही कारण है कि एक ओर जहाँ उनकी नवीन उद्भावनाओं के लिए प्रशंसा हुई, दूसरी ओर छन्द-विधान की घोर उपेक्षा के लिए कटु आलोचना भी। डान की कविता में संगीत की अपेक्षा सूक्ष्म अर्थवत्ता का आग्रह स्पष्ट दिखाई पड़ता है। काव्योचित व्यंग्य का पुट भी उनकी रचनाओं में विद्यमान है। **सांग्स एण्ड सानेट्स, एलेजीज और इक्सटेसी** उनकी सुन्दर कृतियों में हैं। यद्यपि डान का प्रेम इन्द्रियजन्य ही है तथापि कभी कभी उसमें विचित्र ओज और शालीनता की भी अभिव्यक्ति हुई है। मृत्यु विषयक विचारों से प्रेम का स्वरूप प्रायः उदात्त हो गया है। उनकी कविताओं में दार्शनिक सिद्धान्तों और विविध्य के कारण क्लिष्टता आ गयी है। लघु कविताओं में डान बहुत सफल हुए हैं। लम्बी कविताओं में **दी एनाटमी आफ दी वर्ल्ड और आफ दी प्रोग्रेस आफ दी सोल** उल्लेखनीय हैं। जेम्स प्रथम के शासन-काल में ये ही प्रमुख कवि थे। कवियों में कुछ नाटककारों के नाम भी रखे जा सकते हैं, विशेष रूप से वेन जानसन का नाम, यदि उसके **अन्डरवुड्स** को इस काल की कविताओं में ही शामिल कर लिया जाय। ये कवि एलिजाबेथ युग और आगे आनेवाले काल के बीच शृंखला का कार्य करते हैं।

चार्ल्स प्रथम के शासन-काल के कवि

इस नाम से अभिहित अधिकांश कवि या तो धार्मिक हैं अथवा शृंगारिक। जैसा हम हेरिक और केशा में देखते हैं, प्रायः उनकी रचनाओं में प्रेम और धर्म दोनों का समन्वय है किन्तु हर्बर्ट की तरह कभी-कभी उन्होंने अपनी रचनाओं में केवल धार्मिक विषय को ही स्थान दिया है और कभी कभी लभलेस और सर्कलिंग की भाँति केवल प्रेम और शृंगार को ही। फिर भी उनकी अपनी वैयक्तिकता है। इन कवियों में **राबर्ट हेरिक** सर्वश्रेष्ठ था। १६४८ में प्रकाशित **दी हेसपेरिडोज** हेरिक की प्रसिद्ध रचना है। इसमें आत्माद, माधुर्य,

प्रवाह और संगीतमयता है। लगता है कि होरेस और टाइबुलस के सम्मिलित काव्य गुणों का समावेश इस रचना में हुआ। एक आश्चर्यजनक आकर्षण और निश्चित उद्देश्य के साथ कला की अभिव्यक्ति हैरिक की कविता में मिलती है। हेसपेरिडोज के साथ ही साथ दो नोबिल नम्बर्स प्रकाशित हुआ जिसमें कवि के आध्यात्मपक्ष का निरूपण है। अपनी स्वतः निर्मित लघु सीमा में ही हैरिक काव्यशक्ति के कारण उन कवियों में सबसे अधिक विख्यात हुआ जो उस काव्य-शिखर के नीचे बैठे माने गये जिस पर मिल्टन अकेला आसीन था।

डान की मृत्यु पर शोक-गीत लिखनेवाले कवियों में टामस केरू प्रमुख था। उसकी कविता में शालीनता और व्यंग्य का पुट मिलता है और उसकी कविताओं ने अनेक पद्यसंकलनों में स्थान पाया है। केरू एक सचेष्ट कवि था। उसकी रचनाओं में जागरूकता और आल्हाद के तत्त्व मिलते हैं। एलेजी आन डान ऐसी गम्भीर कविताओं में भी पाठकों को शोक और निराशा की अपेक्षा एक विशेष प्रकार का आनन्द मिलता है। कल्पना में अपेक्षाकृत सशक्त और काव्य-सर्जन में केरू से कुछ भिन्न रिचर्ड क्रेशा (१५७२-१६२६) था जिसकी पुस्तक स्टेप्स टू दी टेम्पुल (१६४६) में केवल मिल्टन का ही नहीं, वरन् इटैलियन कवि मेरिना का भी प्रभाव दिखाई पड़ता है जो इसीकी तरह विशद् रूप विधान का निरूपण करता था। उनकी कविताओं में दी फ्लेमिंग हार्ट शीर्षक कविता कवि के धार्मिक दृष्टिकोण और कला-शिल्प को व्यक्त करती है। क्रेशा में सामान्यतया सतत स्थिर रहनेवाला काव्यत्व नहीं, किन्तु कभी-कभी कल्पना के उदात्त क्षणों में लिखी गयी रचनाओं में रस निष्पत्ति और संगीतात्मकता देखते ही बनती है। जार्ज हर्बर्ट (१५९३-१६३३) की कविताओं में डान की अपेक्षा सहजगम्यता और प्रवाह अधिक है। उसकी कविता टेम्पुल (१६३१) अपने स्वाभाविक और सहज शब्दचित्र, विचार-चारुता, भक्ति-भावना, बौद्धिक चिन्तन और इंग्लैण्ड की शांत धर्मनिष्ठा की अभिव्यक्ति के कारण बड़ी लोकप्रिय हुई और इसकी लोकप्रियता सदैव अक्षुण्ण रहेगी। डान और हेरिक से प्रभावित हेनरी वान (१६२२-९५) की कविता में रहस्यवाद का पुट है जैसा दी सिट्रीट और आई सा इटरनिटी दी अवर नाइट आदि कविताओं से स्पष्ट है। किन्तु इसकी सभी कविताएँ उच्च स्तर तक नहीं

पहुँची ह । सर जान सर्कलिंग (१६०९-४२) ने कुछ साधारण कोटि के प्रेम विषयक गीत लिखे । यद्यपि रिचर्ड लभलेस (१६१८-५८) की काव्य-प्रतिभा केरू अथवा सर्कलिंग की भाँति नहीं थी, फिर भी उसने स्टोन वाल्स डू नाट ए प्रिजन मेक आदि कुछ ऐसे गीत लिखे हैं जिससे उसका नाम सदैव स्मरण किया जायेगा । ऐंड्रू मार्वेल (१६२१-७८) की कविताएँ कामनवेल्थ और रेस्टो-रेशन के हलचलपूर्ण दिनों की याद दिलाती हैं । वह स्वयं प्यूरिटन धर्मविलम्बी था और चार्ल्स द्वितीय के प्रत्यावर्तन के पश्चात् की उसकी रचनाओं में व्यंग्य, क्रोध और कटुता का मिश्रण अधिक है और इसीलिए ये कविताएँ उसकी पूर्व-वर्ती रचनाओं से सर्वथा भिन्न हैं । इनमें प्रकृति के मधुमय रूपों का वर्णन तथा चिन्तन और शान्त जीवन की अभिव्यक्ति है । इसके अतिरिक्त विलियम हैविग्टन जार्ज विदर, फ्रांसिस व्वारलिस आदि ने भी इस काल में धर्म-प्रधान कविताएँ लिखीं ।

जान मिल्टन

नवजागरण काल के अन्तिम कवि और लेखक जान मिल्टन (१६०८-७५) शेक्सपियर को छोड़कर अंग्रेज कवियों में सर्वश्रेष्ठ हैं । उनका जन्म सन् १६०८ में ब्रेड स्ट्रीट लन्दन में हुआ था । सम्भवतः इन्होंने शेक्सपियर का साक्षात्कार किया था, क्योंकि उसकी मृत्यु के समय इनकी अवस्था आठ वर्ष की थी । इनका साहित्यिक जीवन १६२५ में कैम्ब्रिज प्रवेश से ही माना जा सकता है । उन्नीस वर्ष चार्ल्स प्रथम का राज्याभिषेक भी हुआ था । अपने शारीरिक सौंदर्य, मधुर संवेदनशीलता और नैतिक जीवन के कारण रखे गये उपनाम “लेडी आफ क्राइस्ट्स” के नाम से प्रकाशित लैटिन कविताओं और सम्भाषणों ने इनकी ख्याति को शीघ्र ही आगे बढ़ा दिया । इनकी अंग्रेजी कविताओं में चासर और स्पेंसर की भाँति मौलिक प्रतिभा का निदर्शन हुआ है । यह अपने में सम्पूर्ण थे और अपनी काव्य-रचना के लिए किसी पूर्ववर्ती कवि अथवा लेखक के ऋणी नहीं थे । दो ओड आन दी मार्निंग आफ क्राइस्ट्स नेटिविटी (१६२९) यदि एक ओर अपन काव्यगत सौन्दर्य में एलिजाबेथन युग से सम्बन्ध रखती है तो दूसरी ओर संवेदनशील अभिव्यंजना के कारण कला के लिए एक अभिनव संसार की सृष्टि

करती है—ऐसा संसार जहाँ गीत-काव्य का शिल्प-विधान महान् वैभव और संगीत-माधुर्य से परिप्लावित है। दूसरे वर्ष मधुर नाद और संगीतमयता से संपृक्त **एट ए सालेम म्यूजिक** प्रकाशित हुआ। **आन अटोनिंग दी एज आफ ट्वेंटी** श्री शीर्षक सानेट की प्रत्येक पंक्ति में मिल्टन के महान् शक्तिशाली व्यक्तित्व की मनोरम झाँकी है। १६३२ में मिल्टन ने यूनिवर्सिटी छोड़कर विंडसर के पास हार्टन नामक स्थान में रहना शुरू किया। यहाँ उन्होंने ग्रीक और लैटिन साहित्य का गम्भीर अध्ययन करते हुए पाँच वर्ष व्यतीत किये। किन्तु कविता की सर्वथा उपेक्षा नहीं की गयी। १६३३ में **एल अलेग्रो** और **एल पेनेसेरोसो** लिखे गये। **कोमस** सन् १६३४ ई० में रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया और १६३७ में **लिसिडस** की रचना हुई।

ये रचनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि यद्यपि मिल्टन हृदय से प्युरिटन थे तथापि उनका दृष्टिकोण उस संकीर्ण सीमा में আবদ্ধ नहीं था जिसके अन्तर्गत कला और साहित्य को हेय समझा जाता हो। प्रत्युत इन कृतियों में कोर्ट और चर्च के प्रति बढ़ते हुए विद्रोह का आभास मिलता है। **एल पेनेसेरोसो** में से आनन्दपूर्ण जीवन की अपेक्षा चिन्तनशील जीवन को वरीयता दी गयी है। और **कोमस** नामक रूपक में सहनशीलता, धैर्य आदि गुणों को प्रस्तुत करते हुए दर प्रहार किया गया है। **लिसिडस** में चर्च के पदलोलुप अधिकारियों और पादरियों पर दृढ़ और भयंकर प्रहार है। इसी समय से मिल्टन का झुकाव प्रैस-बिटेरियन धर्म की ओर हो गया था। १६३८ में मिल्टन इटली गये और फ्लोरेंस होते हुए रोम आये। नेपुल्स में वह गृहयुद्ध का दुःखद समाचार सुनकर वापस लौट पड़े।

मिल्टन का गद्य-साहित्य

इटली से वापस आने पर राजनीतिक घटनाओं के दबाव में सहसा उनके जीवन में एक भारी परिवर्तन हुआ और लगभग बीस वर्ष तक (१६४०-१६६०) वह कला और साहित्य के क्षेत्र से एकदम बाहर निकलकर राजनीति के दल-दल में फँसे, फलतः उनकी सम्पूर्ण रचनात्मक शक्ति कविता से गद्य की ओर मुड़ गयी। फिर भी अधिकांश चतुर्दशपदियों (सानेटों) का निर्माण इसी काल में

हुआ। इन सानेटों में कहीं हिब्रू गीतों की शांत गरिमा, कहीं होरेस का क्लासिकी सुनियोजित प्रवाह, कहीं मिल्टन का अपना गम्भीर माधुर्य और लालित्य विद्यमान है। ये सॉनेट शेक्सपियर और स्पेंसर के सॉनेट से कला और शिल्प-विधान में भिन्न हैं।

गृहयुद्ध के पूर्व मिल्टन ने चर्च की शासन-व्यवस्था के विरोध में पाँच ओजस्वी लघु पुस्तिकाएँ लिखीं। दूसरे वर्ष छः और उसी तरह पुस्तिकाएँ प्रकाश में आयीं जिनके विषय प्रेस-अधिकार, शिक्षा, धर्म आदि से सम्बन्धित थे। इंग्लैण्ड की जनता के पक्ष में लिखे गये कुछ लेखों ने, जिनमें भापा का प्रवाह, उत्कृष्ट गद्य शैली, और विषय का मार्मिक विवेचन था, मिल्टन की ख्याति को समस्त महाद्वीप में फैला दिया। उसके दूसरे ही वर्ष मिल्टन की आँखों की ज्योति समाप्त हो गयी, फिर भी इनका कार्य बन्द नहीं हुआ। १६४९ से यह लार्ड प्रोटेक्टर क्रामवेल के लैटिन सेक्रेटरी पद पर कार्य करते रहे।

इसी समय उन्होंने पैराडाइज लास्ट की रचना प्रारम्भ की। किन्तु क्रामवेल की मृत्यु के बाद ही पुनः इन्हें राजनीति में आकर चार्ल्स द्वितीय के प्रत्यावर्तन को रोकने का विफल प्रयत्न करना पड़ा। अन्त में यह बनहिल फील्ड्स पर आकर अब शान्तिप्रिय जीवन व्यतीत करने के लिए स्थायी रूप से रहने लगे। यहीं उन्होंने १६६५ में पैराडाइज लास्ट की रचना समाप्त की जो १६६७ में प्रकाशित हुई।

पैराडाइज लास्ट मिल्टन की सर्वश्रेष्ठ काव्यकृति है। इस महाकाव्य का अनुशीलन करने पर हम देखते हैं कि इसमें 'एल अलेग्रो' का मृदु पदविन्यास नहीं है। पैराडाइज लास्ट का वास्तविक काव्य-सौन्दर्य और उसकी महिमामय गरिमा एक भव्य और विशाल मन्दिर की भाँति है। इसकी शैली समस्त अंग्रेजी कविता के क्षेत्र में सबसे महान् और उदात्त है। मिल्टन की बौद्धिक शक्ति और कल्पना शक्ति में अपूर्व समन्वय मिलता है। इस महाकाव्य की विषय-वस्तु शाश्वत् है। इसमें प्रस्तुत की गयी समस्याएँ सार्वभौम और सार्वकालिक हैं—बुद्धि और हृदय का संघर्ष, प्रकाश और अंधकार का संघर्ष, दैवी और आसुरी प्रवृत्तियों का संघर्ष, जिनकी चर्चा अनेक पुराणों और गाथाओं में मिलती है और जिनके प्रति वर्तमान युग में भी आकर्षण बना हुआ

है। काव्य का कथानक प्रारम्भ में सैटन के व्यक्तित्व और चरित्र के इर्द-गिर्द चक्कर काटता है, किन्तु आगे चलकर वह शिथिल और विवश दिखाया गया है और अन्त में उसका पतन होता है। मिल्टन का सौन्दर्य-प्रेम, उसका गम्भीर विचार, उसकी विलक्षण शब्दयोजना, उसकी उदात्त शैली—सबका सफल निर्वाह इस महान् काव्य में हुआ है। इसकी प्रत्येक पंक्ति में उस महाकवि का व्यक्तित्व बोलता है।

पैराडाइज लास्ट के बाद **पैराडाइज रिगेनड्** और **सैमसन एगोनिस्टिस** एक साथ ही १६७१ में प्रकाशित हुए। **पैराडाइज रिगेनड्** में क्राइस्ट की यात्रा का वर्णन, सैटन द्वारा उन्हें प्रलोभन देना, और अन्त में उनकी विजय का वर्णन है। **सैमसन एगोनिस्टिस** प्राचीन यूनानी प्रणाली पर लिखा हुआ काव्य-नाटक है।

मिल्टन जितने ही महान् और सर्वोच्च कलाकार था, उतना ही प्रेरक उसका चरित्र और व्यक्तित्व भी था। उसकी अलौकिक प्रतिभा ने साहित्य के जिस रूप को भी स्पर्श किया उसी में शक्ति और नवीनता का संचार कर दिया।

इस काल के प्रमुख नाटककार

इस काल के प्रमुख नाटककारों में बेन जानसन, चैपमैन, टामस डेकर, टामस हेउड, जान मास्टेन, बोमंट एण्ड फ्लेचर, जान वेक्स्टर, फिलिप मैसिजर, जान फोर्ड आदि के नाम मुख्यतः लिये जा सकते हैं।

बेन जानसन (१५७३-१६३७) शेक्सपियर के समकालीन थे। अपनी शक्तिशाली व्यक्तित्व और विद्वत्ता के कारण उस समय शेक्सपियर से भी अधिक महत्त्व रखते थे। अपनी रचनाओं और नाट्य दर्शन में यह शेक्सपियर से भिन्न हैं। बेन जानसन का दृष्टिकोण क्लासिकी और नीतिवादी था, फलतः उन्होंने शेक्सपियर के रोमांटिक सुखान्त नाटकों से सर्वथा भिन्न नाटकों की रचना की। उनकी कृतियों में उस समय के लन्दन का यथार्थ चित्रण है। वह विषय-वस्तु, स्थान और काल की अन्विति के समर्थक थे। समाज की प्रचलित बुराइयों और वृत्तियों पर उन्होंने व्यंग कर सुधार करने का प्रयत्न किया। उनका प्रथम नाटक **एन्नीमैन इन हिज ह्यूमर** १५९६ में प्रकाशित हुआ।

इस नाटक का शीर्षक ही स्पष्ट कर देता है कि बेन जानसन विषयवस्तु में शेक्स-पियर से कितने भिन्न थे । शेक्सपियर के नाटकों में समस्त मानव प्रवृत्तियों, मनोभावों और परिस्थितियों की अभिव्यक्ति हुई है जब कि जानसन के नाटकों में मानव स्वभाव के किसी विशेष अंग ही । उनका दूसरा नाटक 'एन्नी मैन आउट आफ हिज ह्यूमर' निकला तथा उसके बाद 'सिंथिआज रेवेल्स' प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने राजदरबारियों पर व्यंग्य किया है । पोयटास्टर में उन्होंने डेकर और मास्टन की खिल्ली उड़ायी । दो-तीन वर्ष बाद उनके तीन प्रमुख सुखान्त नाटक प्रकाश में आये, 'वाल्पोन', 'दी साइलेन्ट वुमेन' और 'दी एल्केमिस्ट' । इनमें कथानक की गठन और कला की दृष्टि से पहला नाटक श्रेष्ठ है । दूसरे में उच्च वर्ग के लोगों की रहन-सहन और उनके तौर-तरीकों का वर्णन है तथा तीसरे में जानसन के गम्भीर और दुरुह पांडित्य का प्रदर्शन हुआ है । इस नाटक का रोचक पात्र सर एपिक्योर मैमन अपने रचयिता के कौशल और नाट्य शक्ति का प्रभूत परिचय देता है । सन् १६११ में जानसन ने 'केटिलाइन और बारथालोम्यू फेअर' नामक नाटकों की रचना की । उसके आठ वर्ष बाद उन्हें राजकवि की उपाधि मिली । उनके 'सैंड शेफर्ड' में कोमल कल्पना की अभिव्यंजना मिलती है । दुखान्त नाटकों की रचना में जानसन को विशेष सफलता नहीं मिली । उनमें जीवन्त पात्रों का अभाव है । सुखान्त नाटकों में वह बहुत सफल रहे । जानसन अपने युग के सबसे मौलिक और प्रतिभा-सम्पन्न नाटककार थे । उनका बौद्धिक स्तर बहुत ऊँचा था । रेस्टोरेशन युग के नाटककारों पर उनका स्पष्ट प्रभाव है । यह एक सफल कवि भी थे । इनके गीतों का संग्रह 'एपीग्राम्स', 'दी फारेस्ट और अंडरवुड्स' में प्रकाशित हुआ । उन्होंने नीति विषयक कुछ व्यंग्य भी लिखे जिनमें 'एपिसिल टु सर एडवर्ड सैक्वाइल' प्रसिद्ध है ।

टामस मिडल्टन (१५७०-१६२७) ने अपने सुखान्त और दुखान्त नाटकों में शहरी जीवन की अच्छाई और बुराई का चित्रण किया । उसने रोमानी नाटकों की भी रचना की । उसकी कृतियों में विशेषतः सामाजिक परिस्थिति का यथार्थ अंकन हुआ है । उसने बहुत से नाटकों की रचना की । कथानक में वैविध्य और भाषा में प्रवाह मिलता है । यह प्रतिभा-सम्पन्न नाटककार

था। **मिकेलमस टर्न** (१६०४), **ए ट्रिंक टु कैच दी ओल्ड वन** (१६०६), **ए चेस्ट मेड इन चीफ साइड** (१६१८), **विमेन बिबियर विमेन** (१६१२) **ए गेम आफ चेस्** (१६२४) आदि उसकी उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। **जार्ज चैप-मैन** (१५५९-१६३४) अपने नाटकों की अपेक्षा होमर के अनुवाद के कारण अधिक विख्यात हैं। वे प्रतिभा-सम्पन्न और प्रभावशाली लेखक थे। उनके ऐतिहासिक दुखान्त नाटकों में तीन अधिक प्रसिद्ध हैं—**बुसी डी' एम्बोइस**, **दी रिर्वेंज आफ बुसी डी' एम्बोइस** और **दी ट्रेजेडी आफ बायरन**। इन सभी के कथानक फ्रान्सीसी इतिहास पर आधृत हैं, यद्यपि इनमें लेखक का अपना रचना-कौशल विद्यमान है। बौद्धिक तत्त्वों से बोझिल ये नाटक पाठकों के लिए सहज ही हृदयगम्य नहीं हैं। इनमें वृहद् संवाद, लम्बी पदावलियाँ, रूपकों की भरमार, वाक्यांशों का सुगुम्फन और कहीं-कहीं अनावश्यक वाग्-विलास है। **टामस डेकर** (१५७०-१६४१) में यथार्थवाद और रोमांटिक संवेदनाओं का समन्वय है। अपनी पुस्तक **दी शू मेकर्स हालीडे** में उसने श्रमिकवर्ग का बड़ा ही हृदयग्राही चित्रण किया है, जिसका नायक साधारण मजदूर से उन्नति करते-करते मेयर हो जाता है। उसका दूसरा प्रसिद्ध नाटक **दी आनेस्ट ह्वोर** है जिसमें करुणा और अन्य संवेदनाओं का अंकन किया गया है। **टामस हेउड** (१५५-१६४१) के **ए वुमन किल्ड विथ काइंडनेस** में मध्यम वर्ग की आशा-निराशा का चित्रण है। **बोमंट और फ्लेचर** ने अनेक नाटकों की रचना की जिनमें **फाइलास्टर**, **दि मैड्स ट्रेजेडी** और **ए किंग एण्ड नो किंग** सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। इनके कथानक सामान्य जन-जीवन से दूर हो गये हैं और चित्रण में भी कहीं-कहीं कृत्रिमता आ गयी है। छंदों में प्रवाह और माधुर्य है तथा सशक्त मनोवेगों की अभिव्यक्ति में जहाँ-तहाँ ओज का अच्छा निर्वाह हुआ है। बोमंट और फ्लेचर दुखान्त नाटकों में शेक्सपियर जैसी स्वाभाविकता और गरिमा लाने में असफल रहे।

सत्रहवीं शती के लगभग प्रथम चालीस वर्षों में कुछ ऐसे दुखान्त नाटक लिखे गये जिनमें यथार्थ जीवन का स्वाभाविक चित्रण नहीं हो पाया। इस प्रकार के नाटक लिखनेवालों में **जान वेब्स्टर** (१५७५-१६२५) अपनी दो नाट्य कृतियों **दी ह्लाइट डेविल** और **दी डचेस आफ मालफी** के कारण अधिक

विख्यात हुए। ये दोनों नाटक अपनी विषय-वस्तु में प्रतिशोध की भावना से ओतप्रोत हैं। प्रतिशोध विषयक कथानक की लोकप्रियता शेक्सपियर के हैमलेट से ही आरम्भ हो गयी थी और इन दशकों में इसका प्रचार अधिक रहा। वेब्सटर के नाटकों में भय और हिंसा का प्राधान्य है और परिणामतः कभी-कभी उसकी नाट्य कृतियाँ केवल भावोद्रेक और सनसनी पैदा करनेवाली लगती हैं, किन्तु उपर्युक्त नाटकों के पढ़ने से यह स्पष्ट है कि उनमें सनसनी के अतिरिक्त कुछ ठोस वस्तु भी है। रंगमंचीय भयानकता और हिंसा के पीछे वेब्सटर ने एक कवि की दृष्टि से जनजीवन में फैली विभीषिका, हिंसा, और दुःख दैन्य को देखा और उन्हें “दर्शन” में परिणत किया। नाटककार की सहानुभूति उन पात्रों की ओर अधिक है जो जीवन-संघर्ष से जूझते हुए दिखाये गये हैं। मानव-हृदय की गहरी अनुभूतियों—सुख-दुख, आशा-निराशा, क्रोध-वैषम्य आदि भावों का मर्मस्पर्शी अंकन वेब्सटर ने किया है जिसके कारण अपने सामयिक नाटककारों में अपेक्षाकृत यह शेक्सपियर के अधिक निकट माने जाते हैं।

साइरिल टूर्नो (१५७५-१६२६) ने **दी रिवेन्जर्स ट्रेजेडी** और **दी एथीस्ट्स ट्रेजेडी** लिखा। इनके कथानक वेब्सटर के कथानकों की अपेक्षा अधिक सनसनी-दार और अनियंत्रित हैं। ‘दी रिवेन्जर्स ट्रेजेडी’ में राज दरबार में व्याप्त भ्रष्टाचार और निर्दयता का वर्णन है। पात्रों में स्वाभाविक गतिशीलता नहीं है। इनके परवर्ती नाटककारों में कुछ पतनोन्मुख परिवर्तन के चिह्न दिखाई पड़ते हैं। कथानक की गठन, छन्द-विधान, भाषा का प्रयोग, वातावरण की अवतारणा आदि सभी बातों में ये परवर्ती नाटककार पिछड़े हुए दिखाई पड़ते हैं। किन्तु यह कथन मैसिन्जर और फोर्ड के सम्बन्ध में अंश रूप में ही सत्य है। **फिलिप मैसिन्जर (१५८४-१६३९)** ने १६२० में **वॉर्जन मार्टियर** की रचना की। उसने २० वर्ष के अपने साहित्यिक जीवन में ३७ नाटकों की रचना की जिनमें उसका सुखान्त नाटक **ए न्यू वे टु पे ओल्ड डेट** अपने पात्र सर गाइल्स ओवर-रीच के कारण सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। उक्त पात्र के द्वारा कृपणता, निर्दयता, और शक्तिशाली बनने की महत्त्वाकांक्षा की अच्छी अभिव्यक्ति हुई है। कटु और तीखे व्यंग्य में मैसिन्जर ने जानसन को भी मात कर दिया है। उसकी भाषा में लोच और प्रवाह है। कथानक में यथार्थ जीवन का निरूपण है। मैसिन्जर

काव्य के नैतिक तत्त्वों में विश्वास करता था। उसके समकालीन **जानफोर्ड** का पहला नाटक **लवर्स मेलोंकली** १६२९ में प्रकाशित हुआ। उसके पाँच साल बाद **पॉर्किन वारबेक** प्रकाश में आया जिसकी गणना शेक्सपियर के बाद सर्वोत्तम ऐतिहासिक नाटकों में की जाती है। उसके अन्य नाटकों में **ब्रोकेन हार्ट** और **'टिज पिटी शी इज ए होर** अधिक विख्यात हैं। उसके नाटकों में अस्वाभाविक भय का वातावरण है किन्तु इसका चित्रण सफलतापूर्वक हुआ है। उसमें हास्य का अभाव है किन्तु बहुत थोड़े लोगों ने उसके समान संव्रस्त और आपद्-ग्रस्त मानव हृदय की अभिव्यंजना की है।

इसके बाद बहुत से नाटककारों ने नाटक लिखे, जिनमें कुछ का नामोल्लेख मात्र कर देना ही ठीक है। जैसे **हेनरी ग्लापथार्म**, **रिचर्ड ब्रोम**, **विलियम राउले**, **टामस रैनडल्फ**, **डेवेनपोर्ट**। इनके नाटकों की भाषा और कथानक प्रायः एक ही तरह के हैं। इनमें **जेम्स शर्ले** (१५९६-१६६६) सर्वश्रेष्ठ और अन्तिम था। **दी ट्रेटर** (१६३१) और **दी कार्डिनल** (१६४१) उसके सर्वोत्कृष्ट दुःखान्त नाटक हैं। तत्कालीन जीवन का प्रभावोत्पादक और यथार्थ चित्रण शर्ले की रचनाओं में हुआ। उसने **दी वेडिंग** (१६२६), **हाइड पार्क** (१६३२), **दी लेडी आफ प्लेजर** (१६३५) आदि सुखान्त नाटकों की भी रचना की। उसके नाटकों में अभिजात वर्ग का रुचिकर वर्णन है। गृहयुद्ध के कारण १६४२ में रंगमंच बन्द कर दिये गये। उसके बाद कुछ अभिनेताओं ने इधर उधर घूम कर अपना अस्तित्व बनाये रखा। १६५६ में **सर विलियम डेवेनेन्ट** ने **सीज आफ रोड्स** का लन्दन रंगमंच पर प्रदर्शन किया। और यहीं से नये प्रकार के नाटकों की रचना प्रारम्भ होती है।

षष्ठ अध्याय

स्टुअर्ट वंश का पुनः स्थापन—सन् १६६० से १७०० तक का साहित्य

लगभग अठारह वर्ष सत्तारूढ़ रहने के उपरान्त प्युरिटन आधिपत्य का अन्त हुआ और स्टुअर्ट राज्यवंश के हाथ में फिर से शासन की बागडोर आयी । प्युरिटन कठोरता से उत्पीड़ित जनता ने चार्ल्स द्वितीय का स्वागत किया और उसे अपनी राजभक्ति अर्पित की । पुनर्जागरण का काल अब समाप्त हो चुका था और अंग्रेजी साहित्य के इतिहास में सन् १६६० से एक नये युग का प्रारम्भ माना जाता है । इस नवीन युग की विशेषताएँ कई कारणों से निर्धारित हुईं । सर्वप्रथम फ्रांसीसी प्रभाव उल्लेखनीय है । इन चालीस वर्षों में जीवन और साहित्य में अंग्रेजों ने फ्रांसीसी आदर्शों को ग्रहण किया । फ्रांसीसी फैशन, फ्रांसीसी दर्शन तथा फ्रांसीसी साहित्यिक सिद्धान्त अपनाये गये । इस युग में तर्क और बुद्धिवाद की प्रमुखता थी । बेकन, डेकार्ट, हाब्स, न्यूटन, लाक सभी के मत तर्क पर ही आधारित थे । इसके अतिरिक्त इसी युग में वैज्ञानिक अनुसंधान की नींव पड़ी तथा रायल सोसायटी आफ साइंस की स्थापना १६६२ ई० में हुई । इस सुविख्यात संस्था के उद्देश्य संकुचित न थे तथा मानव ज्ञान के सम्पूर्ण क्षेत्र को इसने अध्ययन की सीमा के अन्तर्गत समाविष्ट किया । इन नवीन विशेषताओं के लक्षण तत्कालीन साहित्य में देखे जा सकते हैं । सन् १६६० के पूर्ववर्ती तथा परवर्ती साहित्य में गहरा अन्तर है ।

धर्म और इतिहास संबंधी ग्रंथ

प्राचीन परम्परा को जीवित रखनेवाले कतिपय लेखक अब भी विद्यमान थे । मिल्टन के बारे में हम पिछले अध्याय में लिख आये हैं । इस महाकवि की प्रौढ़तम रचनाएँ सन् १६६० के बाद की हैं । एक दूसरे प्युरिटन **जान बनियन** (१६२८-८८) ने भी इसी काल में महत्त्वपूर्ण गद्य ग्रन्थ लिखे ।

इनका **पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस** अत्यन्त लोकप्रिय ग्रन्थ है। इसमें आत्मा किस प्रकार संकटों और कठिनाइयों को झेलती हुई अपनी आध्यात्मिक यात्रा के अन्त तक पहुँचती है, रूपक शैली में व्यक्त किया गया है। भाषा अत्यन्त सरल एवं सजीव है और बाइबिल की शैली की छाप स्पष्ट है। बनियन के अन्य ग्रन्थ थे, **ग्रेस एबार्डिंग** (१६६६), **दी लाइफ एण्ड डेथ आफ मि० बेंडमैन** (१६८०) **दी होली वार** (१६८२)।

प्युरिटन लोगों के अतिरिक्त इस काल में एंग्लिकन पादरी लोगों ने भी धर्म सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे। जब प्युरिटन सत्ता प्रबल थी उस समय इनको दबाया गया, किन्तु अब वे अपने साहित्यिक कार्य के लिए स्वतंत्र थे। इन एंग्लिकन लेखकों में सर्वाधिक प्रतिष्ठित थे **आइज़क बेंरो** (१६३०-७०), **जान टिलाट्सन** (१६३०-९४) **राबर्ट साउथ** (१६३४-१७१६)।

खोज की जिस प्रवृत्ति ने वैज्ञानिक अनुसन्धान के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया उसी से इतिहास-लेखन की प्रवृत्ति को भी बल मिला। इस कालमें अनेक संस्मरण, जीवन-चरित्र, तथा इतिहास लिखे गये। इतिहास ग्रन्थों में सबसे अधिक प्रसिद्ध था **अर्ल आफ क्लैरेंडन** लिखित **दी हिस्ट्री आफ दी रिबेलियन एण्ड सिविल वार्स इन इंग्लैण्ड** (१६०९-७४)। इस ग्रन्थ में रोचक दृश्यों की अवतारणा हुई है। शैली पुराने ढंग की है किन्तु अन्त के अध्यायों में आधुनिकता के चिह्न दिखाई देते हैं। दूसरा प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ था, **बिशप गिलबर्ट बरनेट** (१६४३-१७१५) रचित **हिस्ट्री आफ माई ओन टाइम**। जीवन-चरित्र सम्बन्धी दो ग्रन्थ महत्वपूर्ण थे **दी लाइफ आफ कर्नल हचिन्सन** और **लाइफ आफ विलियम कैवेंडिश ड्यूक आफ न्यूकैसल**। यहाँ इस काल की दो प्रसिद्ध दैनन्दिनियों के बारे में भी लिखना आवश्यक है। **जान एवेलिन** (१६२०-१७०६) की डायरी में अनेक सुन्दर दृश्यों तथा अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन है। **सेमुअल पीप्स** (१६३२-१७०४) की डायरी कहीं अधिक रोचक है। लेखक ने कई वर्षों तक अपने दैनिक अनुभव गुप्त भाषा में अंकित किये, अतः सभी बातें सही और साफ साफ लिखी गयी हैं। बहुत दिनों बाद उस गुप्त भाषा की कुंजी मिली और इस रोचक ग्रन्थ से चार्ल्स द्वितीय के राजत्वकाल के प्रारम्भिक कई वर्षों के सम्बन्ध में हमारे ज्ञान में पर्याप्त

स्टुअर्ट वंश का पुनः स्थापन—सन् १६६० से १७०० तक का साहित्य १०१

वृद्धि हुई। पीप्स नाटक के विशेष प्रेमी थे और उनकी डायरी से पता चलता है कि उस समय नाट्य साहित्य और रंगमंच की क्या अवस्था थी।

इन ४० वर्षों में नवीन आधुनिक गद्य विकसित हुआ। ड्राइडेन इस नवीन गद्य के महत्त्वपूर्ण प्रवर्तक थे। प्राचीन लैटिन गद्य की परिपाटी छोड़कर अब अंग्रेजी गद्य सुसंस्कृत फ्रेंच जनों के वार्तालाप की भाषा को आदर्श मानकर लिखा जाने लगा। इस आधुनिक गद्य में ब्राउन, टेलर और मिल्टन के गद्य के समान विस्तार नहीं था किन्तु नवीन युग के विचारों के सम्यक् प्रकाशन की क्षमता उसमें पर्याप्त मात्रा में विद्यमान थी। उसमें बोलचाल का लहजा तथा सहज प्रवाह था। ऐसे गद्य का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण ड्राइडेन के गद्य लेखों में मिलता है, उसकी बहुसंख्यक भूमिकाओं में तथा उसके प्रसिद्ध आलोचनात्मक निबन्ध *ऐन ऐसे आफ ड्रैमेटिक पोइजी* में। *एब्राहम काउले* के निबन्ध सन् १६६८ में प्रकाशित हुए। इनमें बेकन का नहीं प्रत्युत मान्टन के निबन्धों का अनुकरण किया गया है। *सर विलियम टेम्पुल* ने भी निबन्ध लिखे।

दर्शन के क्षेत्र में इस युग का नेतृत्व पहले हाब्स ने, फिर लॉक ने किया। हाब्स पूर्ववर्ती युग के विचारक थे, किन्तु उनके विचार चार्ल्स द्वितीय के पुनरागमन के बाद भी प्रचलित बने रहे। *जान लॉक* (१६३२-१७०४) की रचनाओं ने अंग्रेजी दार्शनिक चिन्तन को एक नवीन दिशा प्रदान की। उनके तीन ग्रन्थ प्रकाशित हुए—*ऐन ऐसे कनसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग* (१६९०) *सम थाट्स कनसर्निंग एजुकेशन* (१६९३) तथा *बी रोजनेबिलनेस आफ क्रिश्चिएनिटी* (१६९५)। इन ग्रन्थों में प्रतिपादित सिद्धान्त तर्क और व्यावहारिक अनुभव को ही विशेष महत्त्व देते हैं। लॉक ने सहज ज्ञान की प्रक्रिया को छोड़कर मनोवैज्ञानिक तथा व्यावहारिक विचारपद्धति अपनायी।

व्यंग्य काव्य

नवजागरण के युग में उत्कण्ठा और सौन्दर्य-भावना जाग्रत हो उठी थी और वह मधुर काव्य में मुखरित हुई। रेस्टोरेशन अर्थात् पुनःस्थापन का काल बौद्धिकता और तर्क का युग था। अतः उसमें सुन्दर एवं मधुर काव्य बहुत कम लिखा गया। उसके स्थान पर सेटायर अर्थात् व्यंग्य काव्य का प्रचलन अत्यधिक बढ़ा। *सेमुअल बटलर* (१६१२-१६८०) का *हुडिब्रास* तीन खण्डों

में लिखा हुआ व्यंग्य काव्य है। इसमें **डान विवकजोट** की परिपाटी पर प्यूरिटन लोगों पर व्यंग्य किया गया है। इसमें हुडिब्रास के कार्यों का व्यंग्य और प्रहसन के ढंग पर वर्णन किया गया है। **जान ओल्डहम** (१६५३-८२) एक दूसरा व्यंग्य लिखनेवाला कवि था। इसने लैटिन कवियों विशेषकर जूवेनल का अनुकरण करके जेसुइट्स लोगों पर व्यंग्यात्मक कविताएँ लिखीं। किन्तु व्यंग्यात्मक शैली में लिखनेवाला इस युग का सबसे महान् कवि **जान ड्राइडेन** था। वह केवल व्यंग्य लेखक ही नहीं, वरन् वर्णनात्मक काव्य और मुक्तक काव्य का रचयिता भी था। उसके गद्य लेखों का उल्लेख हम कर आये हैं तथा उसके नाटकों के बारे में हम अन्यत्र लिखेंगे। यहाँ यह लिख देना आवश्यक है कि **जान ड्राइडेन** १६६० और १७०० के बीच के काल का प्रमुख तथा प्रतिनिधि साहित्यकार था। उसकी रचनाएँ न केवल वैविध्यपूर्ण हैं, अपितु उनका स्तर भी काफी ऊँचा है। अतएव ड्राइडेन अपने समय में सम्मानित हुआ। उसकी काव्य रचनाओं में निम्नलिखित प्रसिद्ध हैं—**एनस मिरेबिलिस** (१६६६) में लन्दन के विस्तृत अग्निकाण्ड तथा डच युद्ध का वर्णन है। **एबसालम एण्ड एचिटोफेल** (१६८१-८२) तथा **दी मीडल** कतिपय राजनीतिक घटनाओं पर आधारित व्यंग्य काव्य हैं तथा **मैक फ्लैक्नो** (१६८०) में अपने प्रतिद्वन्द्वी कवि और नाटककार टामस शेडवेल को ड्राइडेन ने अपने व्यंग्य का विषय बनाया है। **रिलीजिओ लेसी** (१६८२) में ऐंग्लिकन मत का समर्थन किया गया है तथा **दी हाइण्ड एण्ड दी पैंथर** (१६८७) में रोमन कैथोलिक मत का यशोगान है। इनके अतिरिक्त ड्राइडेन ने कुछ मुक्तक काव्य भी लिखे, जिनमें **एलेक्जण्डर्स फीस्ट** सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

ड्राइडेन का सम्बन्ध राज-दरबार से था, किन्तु हम उसे दरबारी कवि नहीं कह सकते। उस श्रेणी के अन्य कवि थे जो विलासिता में सनी हुई कविताएँ लिखते थे। इन दरबारी कवियों में अग्रगण्य थे **जान विलमाट**, **अर्ल आफ रौचे-स्टर**, **चार्ल्स सैकविल**, **लार्ड बकहर्स्ट**, **अर्ल आफ डारसेट** और **सर चार्ल्स सेडले**।

नाट्यगृहों की पुनः स्थापना

लगभग १८ वर्ष बन्द रहने के बाद स्टुअर्ट राजाओं के प्रत्यावर्तन के साथ ही लन्दन नाट्यगृहों ने अपना कार्य आरम्भ कर दिया, किन्तु यह ज्ञातव्य है कि

स्टुअर्ट वंश का पुनः स्थापन—सन् १६६० से १७०० तक का साहित्य १०३

रेस्टोरेशन का नाट्यगृह कई बातों में चार्ल्स प्रथम कालीन नाट्यगृह से भिन्न था। पहली बात यह है कि महारानी एलिजाबेथ के समय से ही अंग्रेजी नाट्य-शालाएँ जनसाधारण के मनोरंजन के लिए अभिनय प्रस्तुत करती थीं। सन् १६६० के उपरान्त उनकी यह विशेषता नष्ट हो गयी। रेस्टोरेशन काल के नाट्यगृहों में राज-दरबारी और उच्चतम वर्ग के लोग ही दर्शक बनकर एकत्र होते थे। इस युग की विलासिता ने नाट्यशालाओं को भी आक्रान्त किया। सम्पन्न वर्ग के नर-नारी नाटक देखने के बहाने प्रेम और विलासिता में एक दूसरे से होड़ लगाते थे। सन् १६६० के उपरान्त सर्वप्रथम अंग्रेजी रंगमंच पर अभिनेत्रियों ने पदार्पण किया। इनमें कई परम सुन्दरी होने के अतिरिक्त प्रणय व्यापार में अत्यन्त कुशल थीं। इससे भी विलासितापूर्ण वातावरण के निर्माण में सहायता मिली। एक दूसरी नवीनता यह थी कि रेस्टोरेशन के बाद रंगे हुए परदे प्रयोग में लाये गये और एलिजाबेथ कालीन रंगमंच का बाहर निकला हुआ भाग प्रायः हटा दिया गया।

रंगशालाओं के खुलने पर दो तीन-वर्ष तक पुराने नाटकों का अभिनय होता रहा, जैसे शेक्सपियर, बेन जानसन, बोमन्ट और फ्लेचर आदि के नाटकों का। कभी-कभी पुराने नाटकों को बदलकर उन्हें नये ढंग से प्रस्तुत किया गया और कतिपय नये लेखकों ने पुराने ढंग के नाटकों की रचना भी की। किन्तु शीघ्र ही नाटक का नवीन विकास हुआ और नये ढंग के दुखान्त और सुखान्त नाटक लिखे जाने लगे। ड्राइडेन ने अपने 'हीरोइक प्लेज' रंगमंच पर अभिनय के लिए तैयार किये। फ्रांसीसी और स्पैनिश प्रभाव से प्रेरित इन नाटकों का नायक उदात्त होता था। उसका चरित्र अतिरंजित ढंग से अंकित होता था, लम्बे और आवेगपूर्ण भाषणों की बहुलता रहती थी, तथा सम्पूर्ण नाटक कृत्रिमता का आभास देता था। ड्राइडेन ने इस ढंग के कई नाटक लिखे जिनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं **दी कांक्वेस्ट आफ ग्रेनाडा, औरंगजेब आर दी ग्रेट मुगल**। हीरोइक नाटकों में ड्राइडेन ने ब्लैक वर्स को छोड़कर तुकान्त हीरोइक पक्तियों का प्रयोग किया। हीरोइक प्लेज के अतिरिक्त ड्राइडेन ने ट्रेजेडीज़ अर्थात् दुखान्त नाटकों की रचना ब्लैक वर्स में की। इस प्रकार के नाटकों में **आल फार लव** सुविख्यात है। इसमें एन्टनी और क्लियोपाट्रा की कथा सफलतापूर्वक प्रस्तुत की गयी है।

ड्राइडेन के अन्य दुखान्त नाटक थे **डान सीवैस्टीयन** (१६६०) तथा **क्लीओमीन्स दी स्फारटन हीरो** (१६९२)। **टामस आटवे** (१६५२-८५) के दुखान्त नाटक भी प्रसिद्ध हैं। उसका **वेनिस प्रिजर्ब्ड** (१६८२) उन्नीसवीं शताब्दी तक रंगमंच पर अत्यन्त लोकप्रिय था। **नथैनियल ली** (१६५३-९२) के दुखान्त नाटकों के नाम हैं :—**दी राइवल क्वीन्स आर दी डेथ आफ अलेक्जेंडर दी ग्रेट** (१६७७), **थीओडोसिस आर दी फोर्स आफ लव** (१६८१), **दी मैसेकर आफ पेरिस** (१६९०)। **टामस सदर्न** (१६६०-१७४६ ने **फैंटल मैरेज** (१६९४), **ओरोनोको** (१६९६) की रचना की।

रेस्टोरेशन कामेडी नाम कभी व्यापक और कभी सीमित अर्थ में प्रयुक्त होता है। अपने सीमित अर्थ में इससे अभिप्राय होता है उस नवीन प्रकार के सुखान्त नाटकों से जिनकी परम्परा इथरिज से शुरू होकर वानबरो और फरकुहर की नाट्य रचनाओं में समाप्त होती है। अपने विस्तृत अर्थ में इससे उन विभिन्न प्रकार के सुखान्त नाटकों का बोध होता है जो पुनःस्थापन के काल में लिखे गये। ड्राइडेन ने पाँच सुखान्त नाटक लिखे, **वाइल्ड गैलेन्ट**, **ऐन इवॉग्स लव**, **मैरेज ए ला मोड**, **दी एसाइनेशन** तथा **दी स्पेनिश फ्रायर**। इन गद्य नाटकों में समाज का यथार्थ निरूपण हुआ है किन्तु कथोपकथन में उतनी सफाई नहीं आ पायी है जितनी इथरिज अथवा कांग्रीव के नाटकों में मिलती है। **टामस शेडवेल** के नाटक **सलन लवर्स**, **एपसम वेल्स** इत्यादि बेन जानसन के नाटकों का अनुकरण करते हैं। सर चार्ल्स सेड्ले तथा जान क्राउन ने भी सुखान्त नाटक लिखे। परस्पर भिन्न होते हुए भी इन नाटकों में समानता यह है कि वे यथार्थ जीवन को व्यक्त करने की चेष्टा करते हैं और इनमें सामान्यतः गद्य का ही प्रयोग किया गया है।

रेस्टोरेशन कामेडी आफ मैनर्स नाम से अभिहित नाटक इस युग की प्रख्यात कृतियाँ हैं। इनकी रचना को बेन जानसन के नाटकों तथा मोलियर के नाटकों से प्रेरणा मिली। **जार्ज इथरिज** (१६३४-९१) से इन नाटकों का शुभारम्भ हुआ। इनके तीन नाटकों में **दी मैन आफ मोड** सबसे अधिक सफल हुआ है। इसके पात्र शौकीन युवक और युवतियाँ हैं जो आमोद-प्रमोद और प्रणय के अतिरिक्त किसी अन्य बात को महत्त्व नहीं देते। इथरीज की

स्टुअर्ट वंश का पुनः स्थापन—सन् १६६० से १७०० तक का साहित्य १०५

नाट्यगद्य शैली अद्भुत है और कांग्रीव के अतिरिक्त दूसरा कोई इतने चमत्कारपूर्ण कथोपकथन नहीं लिख पाया है ।

विलियम वीकरली (१६४०—१७१६) की कला उतनी सूक्ष्म और आकर्षक नहीं है जितनी इथरिज की । उसका व्यंग्य अधिक स्पष्ट है और कहीं कहीं उसमें अश्लीलता का अंश इतना अधिक आ गया है कि वह खटकने लगता है । उसके नैतिक उद्देश्य के साथ अश्लीलता का समावेश बिल्कुल मेल नहीं खाता । उसके नाटक बेन जानसन तथा मोलियर के नाटकों की याद दिलाते हैं और सच तो यह है कि उनके कई दृश्य मोलियर की रचनाओं से स्पष्टतः प्रेरित हैं । उसके नाटक निम्नलिखित हैं—**लव इन उड** (१६७१), **दी जेन्टिल मन डानसिंग-मास्टर** (१६७२), **दी कण्ट्री वाइफ** (१६७५), **दी प्लेन डीलर** (१६७६) ।

विलियम कांग्रीव (१६७०—१७२९) इस कोटि के सर्वोत्कृष्ट लेखक हैं । उनका प्रथम नाटक **दी ओल्ड बेचलर** (१६९३) अपने सफल कथोपकथन तथा पात्र-कल्पना के कारण रंगमंच पर अत्यन्त सफल हुआ । उनका दूसरा नाटक **दी डबल डीलर** कलात्मक वैशिष्ट्य की दृष्टि से कम सफल है, किन्तु उसके कुछ दृश्य अत्यन्त रोचक हैं । अभिनेयता में कांग्रीव का तीसरा सुखान्त नाटक **लव फार लव** (१६९५) सबसे अधिक सफल सिद्ध हुआ है । उसका अन्तिम सुखान्त नाटक **दी वे आफ दी वर्ल्ड** (१७००) रंगमंच पर असफल रहा और दर्शकों को आकृष्ट न कर सका । शैली एवं कलात्मक सौष्ठव की दृष्टि से यह नाटक अंग्रेजी साहित्य की अनुपम एवं अमर कृतियों में है, तब भी यह आश्चर्य की बात है कि दर्शकों ने इसका स्वागत नहीं किया । कदाचित् क्षोभ के कारण कांग्रीव ने इसके बाद नाटकों का लिखना बन्द कर दिया ।

कांग्रीव के उपरान्त कामेडी आफ मैनर्स का विघटन प्रारम्भ हो गया । उसके अन्तिम दो लेखक **वैन ब्रो** (१६६४—१७२६) और **जार्ज फरकुहर** (१६७८—१७०७) थे । वैनब्रो के नाटकों के नाम हैं—**दी रीलेप्स**, **दी प्रोवोक्ड वाइफ** (१६९७), **दी कानफिडरेसी** (१७०५) । जार्ज फरकुहर की प्रसिद्ध रचनाओं के नाम हैं—**लव ऐंड ए बाटिल** (१६९८), **दी कान्स्टेंट कपल** (१६९९), **दिरिक्टिंग आफिसर** (१७०६), **दी बो स्ट्रैंजमे** (१७०७)

सन् १६९८ में जेरेमी कोलियर नामक पादरी ने अपनी पुस्तिका ए शार्ट व्यू आफ दी इम्मारलिटी एण्ड प्रोफेनसेस आफ दी इंगलिश स्टेज प्रकाशित की जिससे कामेडी आफ मैनर्स की प्रतिष्ठा को विशेष धक्का पहुँचा। विघटन का क्रम पहले ही शुरू हो चुका था और कोलियर का आघात इन नाटकों के लिए घातक सिद्ध हुआ। बाद की आनेवाली शताब्दियों में कामेडी आफ मैनर्स की जो भर्त्सना अनैतिकता और अश्लीलता के लिए हुई है उस पर निस्सन्देह जेरेमी कोलियर के मत की छाप है।

सप्तम अध्याय

१८वीं शताब्दी का अंग्रेजी साहित्य

सन् १७०० में ड्राइडेन की मृत्यु हुई और सन् १७९८ में **लिरिकल बैलड्स** नामक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ जिसकी भूमिका इंग्लैण्ड में रोमान्टिक साहित्य के घोषणापत्र के रूप में सर्व-स्वीकृत है। बीच के प्रायः १०० वर्षों के काल में कुछ न कुछ परिवर्तन निरन्तर होते रहे, तब भी हम इसे सामान्यतः क्लासिसिज्म का युग कह सकते हैं। होरेस, क्विन्टिलियन, एरिस्टाटिल प्रभृति प्राचीन आचार्यों के मत की मान्यता बढ़ गयी। उनसे भी अधिक मान्य थे फ्रान्स के नियोक्लासिक सम्प्रदाय के आचार्य जिन्होंने प्राचीन सिद्धान्तों को नये रूप में प्रस्तुत किया। इन फ्रांसीसी पंडितों में अग्रगण्य थे बोआलो, कारनील, रासीन, ल वसु प्रभृति। १८वीं शताब्दी में विशेषकर उसके पूर्वार्द्ध में दार्शनिक विचारधारा तर्क और बुद्धिवाद का ही समर्थन करती थी और इसका भी प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर पड़ा। डेकार्ट, लॉक, ह्यूम, बर्कले इत्यादि ने इस युग के दार्शनिक चिन्तन को एक नया मोड़ दिया। यह युग गद्य के विकास और महत्त्व का था। गद्य की अपेक्षा कविता का महत्त्व न्यून ही नहीं था वरन् पूरी शताब्दी में उच्च कोटि की काव्य प्रेरणा के वशीभूत होकर लिखने-वाले कवियों का अभाव ही था। गद्य को पत्रकारता के अभ्युदय से विशेष बल मिला। १८वीं शताब्दी की सामाजिक व्यवस्था ने भी साहित्य को प्रभावित किया। पूर्वार्द्ध में उच्च वर्ग के रहन-सहन के प्रतिमानों में तथा उत्तरार्ध में लेसिंग, रूसो आदि की नवीन विचार-सरणी ने अपनी छाप साहित्य पर छोड़ी। सेन्टिमेन्ट अर्थात् भावुकता शुरू से ही विद्यमान थी और जैसे जैसे शताब्दी अग्रसर हुई वैसे वैसे उसका अंश बढ़ता गया। भौतिकवाद, यथार्थवाद तथा क्लासिकी मत का यह प्रतिपक्ष था। पूरे काल को विवेचन की सुविधा के लिए तीन खण्डों में विभक्त किया जाता है—(१) १७००-१७४० पोप का युग अथवा आगस्टन युग, (२) १७४०-१७७० तक डा० जानसन का युग

तथा, (३) १७७०-१७९८ तक स्वच्छन्दतावाद के पूर्वाभास का युग । हम इन तीनों खण्डों का विवेचन अलग-अलग करेंगे ।

आगस्टन युग (१७००-१७४०)

इस काल के प्रारम्भ में महारानी एन द्वारा कविता को विशेष प्रथय मिला । यद्यपि जार्ज प्रथम, जार्ज द्वितीय और उनके मंत्री वालपोल साहित्य के प्रति निरपेक्ष थे, तब भी इन चालीस वर्षों की तुलना रोम के आगस्टन युग से की जाती है जो क्लासिकी मत के उत्थान का काल था तथा जिसमें वर्जिल, होरेस तथा अन्य कवियों को संरक्षण और सहायता प्राप्त हुई । क्लासिकी सिद्धान्तों की स्थापना ड्राइडेन के समय में ही हो चुकी थी, किन्तु सन् १७०० के पूर्व पुनर्जागरण का रोमान्टिक प्रभाव बिल्कुल लुप्त नहीं हो पाया था । अब इस नवीन युग में यद्यपि शेक्सपियर, स्पेंसर आदि की रचनाएँ प्रचलित थीं, तथापि क्लासिकी मत कविता के क्षेत्र में अपने प्रायः विशुद्ध रूप में व्यवहृत हुआ । ड्राइडेन को पोप अपना आचार्य मानते थे और कविता के परिष्कार तथा नियमन का जो क्रम ड्राइडेन ने प्रारम्भ किया था उसे पोप ने चरम सीमा तक पहुँचाया । उदाहरणार्थ वालर और ड्राइडेन के हाथों में 'हीरोइक कपलेट' बहुत कुछ नवीन साँचे में ढाली गयी । इसी को आगे चलकर पोप ने और निखारा, यहाँ तक कि उसकी सुडौलता को आत्यन्तिक सीमा तक पहुँचा दिया ।

ड्राइडेन और पोप के बीच के वर्षों में जिन कवियों ने रचना की उनमें मैथ्यू प्रायर सबसे अधिक प्रसिद्ध थे । इन्होंने ड्राइडेन की कविताओं पर व्यंग्य लिखे, किन्तु उनके प्रभाव से अछूते न बचे । इनकी कविताओं में नैतिक आदर्शों पर आग्रह है तथा सामयिक घटनाओं को लेकर इन्होंने काव्य-रचना की है । एल्मा आर दी प्रोग्रेस आफ दी माइन्ड में कवि ने सांसारिक लिप्सा और अहंकार को भर्त्सना की है । हेनरी एंड एमा में पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध बैलड दी नट ब्राउन मेड को नवीन क्लासिकी रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा वर्स डे सोसायटी में प्रायर की सर्वोत्कृष्ट रचनाएँ संकलित हैं ।

एलेक्जण्डर पोप

पोप (१६८८-१७४४) निःसन्देह १८वीं शती के प्रधान एवं प्रतिनिधि कवि

थे। बाल्यकाल में रुग्ण होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। बीमारी के कारण इनका शरीर विकृत हो गया और कुछ लोगों का मत है कि बाद को लिखे जानेवाले इनके तीखे व्यंग्य शारीरिक विचार से उद्भूत हीनता-भावना से सम्बद्ध हैं। इनकी प्रतिभा का विकास बहुत द्रुतगति से हुआ और सोलह साल की अवस्था में इनके पैस्टोरल्स प्रकाशित हुए। सन् १७११ में **एसे आन क्रिटिडिज्म** प्रकाशित हुआ जिसमें होरेस और बायलों के ढंग पर पोप ने काव्य-सिद्धान्तों पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। किसी विषय का क्रमबद्ध विवेचन नहीं हुआ है, किन्तु स्फुट विचार अत्यन्त आकर्षक ढंग से अभिव्यक्त हुए हैं। सन् १७१२ में सुप्रसिद्ध व्यंग्य काव्य **दी रेप आफ दी लाक** के प्रकाशन के साथ ही पोप की ख्याति और भी अधिक फैली। यह अंग्रेजी में अपने ढंग की अद्वितीय रचना है। एरेबला फर्मर के केश-पाश से एक लट लार्ड पीटर ने चोरी से काट ली। इसी को विषय बनाकर पोप ने महाकाव्य शैली में व्यंग्य और हास्य को मिलाकर इस सुन्दर कविता का निर्माण किया। अगले वर्ष पोप ने **विन्डसर फारेस्ट** नामक सफल वर्णनात्मक काव्य रचा। इसके उपरान्त उन्होंने होमर के महाकाव्य इलियड का अनुवाद हीरोइक कपलेट में किया। १७वीं शताब्दी में इसी महाकाव्य का अनुवाद चैपमेन ने किया था। चैपमेन के अनुवाद में अधिक शक्ति और स्वाभाविकता है, किन्तु पोप की रचना में क्लासिकी सौष्ठव के कारण एक नवीन चमत्कार उत्पन्न हो गया है। **एलायजा टू एबेलार्ड (१७१७) और वसैंसटू दी मेमरी आफ ऐन अनफार्चुनेट लेडी (१७१७)** सफल भावुकतापूर्ण प्रेम-काव्य हैं। जीवन के पिछले वर्षों में पोप का झुकाव व्यंग्य काव्य की ओर अधिक हुआ। **उनसीएड** के चार भाग सन् १७२८ में प्रकाशित हुए। इनमें अपने समकालीन कवियों पर कवि ने तीखा और कठोर प्रहार किया है, विशेषकर शेक्सपियर के नाटकों के सम्पादक टीबाल्ड तथा पोली सिवर पर। पोप की अन्तिम महत्वपूर्ण रचना **दी एसे आन मैन (१७३३-३४)** दार्शनिक काव्य है जिसमें बोलिंगब्रुक और शेफ्ट्सबरी के विचारों का काव्यात्मक प्रतिपादन हुआ है।

अंग्रेज कवियों की श्रेणी में पोप का क्या स्थान है, इस प्रश्न को लेकर विरोधी मत प्रगट किये गये हैं। कुछ लोगों का कथन है कि पोप कवि थे ही

नहीं। इसके प्रत्युत्तर में कहा गया है कि यदि पोप कवि नहीं थे तो और कौन कवि था, अर्थात् पोप बेजोड़ हैं। कुछ विद्वानों ने इन्हें गद्य और बुद्धिवाद के युग का प्रतिनिधि कवि माना है। सच तो यह है कि पोप में तीव्र प्रेरणा तथा सहज अनुभूति की कमी थी। उन्होंने न तो किसी नवीन जीवन-दर्शन की व्याख्या की और न किसी नैतिक प्रतिमान की स्थापना। उनका भावपक्ष सबल नहीं है, इसमें तो तनिक भी सन्देह नहीं। पोप की महानता के दूसरे ही कारण हैं। उनका कलापक्ष अत्यन्त उत्कृष्ट है और उनके हाथों कविता चरम सीमा तक परिमार्जित हुई। हीरोइक कपलेट को उन्होंने इतना साफ, सुनियोजित तथा परिष्कृत बना दिया कि उसके आगे इस दिशा में उसका विकास असम्भव हो गया। क्लासिकी काव्य-सौष्ठव का जितना अच्छा उदाहरण पोप की रचनाओं में मिलता है उतना किसी अन्य अंग्रेजी कवि की रचनाओं में नहीं। अतः यह कहना समीचीन है कि पोप अपने ढंग के अनूठे कवि थे, यद्यपि उन्हें महाकवि कहने में आपत्ति हो सकती है।

पोप के अतिरिक्त इन चालीस वर्षों में सेमुअल गाथं, एडिसन स्विफ्ट, जान गे इत्यादि ने भी काव्य-रचना की। किन्तु पोप की सफलता और महानता के समक्ष इन कवियों को हम विशेष गौरव नहीं दे सकते तथा उनका उल्लेख मात्र पर्याप्त है।

इस काल में पत्रकारता और गद्य लेखन का प्रचलन बढ़ा। अतः गद्य साहित्य का विशेष महत्त्व है। विभिन्न प्रकार की सूचना प्रसारित करने के लिए गद्य का आश्रय लिया गया। तर्क और बुद्धिवाद के विकास के कारण गद्य की लोकप्रियता का बढ़ना स्वाभाविक था। पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी बढ़ा और इस युग के जितने प्रमुख गद्य लेखक थे प्रायः सभी का सम्बन्ध किसी न किसी पत्रिका से था। **डैनियल डेफो** (१६६०-१७३१) मुख्यतः साहित्यकार नहीं थे किन्तु अपने व्यवसाय के साथ-साथ उन्होंने महत्त्वपूर्ण रचनाएँ कीं और साहित्य को समृद्ध बनाया। उनकी प्रारम्भिक रचनाओं के नाम हैं—**दीट्रू बार्न इंग्लिशमैन** (१७०१), **दी शार्टेस्ट बे विथ दी डिसेन्ट्स** (१७०२) किन्तु डेफो की सर्वाधिक ख्याति उन संस्मरणों एवं कथाओं के कारण है जिनमें सबसे अधिक प्रसिद्धि **राबिन्सन क्रूसो** को मिली है। काल्पनिक यात्राओं तथा उनके

सूक्ष्म एवं यथार्थ वर्णन में डेफो की विशेष अभिरुचि थी। **राबिन्सन क्रूसो** में छोटे-छोटे तथ्यों तथा दैनिक जीवन के कार्यों के वर्णन द्वारा लेखक ने एक काल्पनिक कथा को वास्तविक अनुभव का ऐसा रूप दे दिया है कि बहुत से पाठक यह सोचने लगते हैं कि पुस्तक में वर्णित घटनाएँ सत्य हैं। डेफो की गद्य शैली में अलंकरण का अभाव है, किन्तु अपनी सहज सरलता के कारण यह वर्णनों के लिए अत्यन्त उपयुक्त है। कई वर्षों तक डेफो का सम्बन्ध **रिव्यू** नामक पत्रिका से था।

अपनी प्रथम रचना **दी क्रिश्चियन हीरो** में **रिचर्ड स्टील** (१६७२-१७२९) ने जीवन के उन आदर्शों की विवेचना की जिनका मूल स्रोत **बाइबिल** में है। यह भावुक और नैतिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और अपने समस्त जीवन में इन्होंने लोगों को मनोरंजन प्रदान करने के साथ ही साथ उनके नैतिक अभ्युत्थान के लिए प्रयास किया। इस दोहरे उद्देश्य को ध्यान में रखकर रिचर्ड स्टील ने **आइजक बिकरस्टाफ** के नाम से १८०९ में **टैटलर** नामक पत्र की स्थापना की। इस पत्र का सीधा सम्बन्ध उन क्लबों और काफीगृहों से था जो १८वीं शताब्दी में लन्दन के सामाजिक जीवन की विशेषता थे।

कुछ दिनों के उपरान्त रिचर्ड स्टील और **जोसेफ एडिसन** (१६७२-१७१९) का सहयोग हुआ। इन दोनों लेखकों ने मिलकर अपने युग के सामाजिक जीवन को संयत और परिष्कृत बनाने के लिए परिश्रम किया और इनकी रचनाओं का मूल्यांकन इसी दृष्टि से होना चाहिए। एडिसन में स्टील की भावुकता नहीं वरन् जीवन के व्यापारों को वे निरपेक्ष दृष्टि से देखने की क्षमता रखते थे। जीवन में व्याप्त असंगतियों का इन्होंने ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया और मीठे व्यंग और हास्य द्वारा उन्हें मिटाने का प्रयत्न किया। एडिसन पहले तो **टैटलर** के लिए लेख लिखते रहे, किन्तु सन् १७११ में उस पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया और उन्होंने स्वयं **स्पेक्टेटर** नामक पत्र निकाला। इसी पत्र में उनकी सफल रचनाएँ प्रकाशित हुईं। उन्होंने **सर राजर डी कावरली** का चरित्र अंकित किया तथा उनके अन्य सहयोगियों का भी चित्रण किया। सर राजर डी कावरली में सहृदयता, मानवता, तथा वैषम्य का अभूतपूर्व मिश्रण है, इसलिए उनका चरित्र अत्यन्त स्मरणीय बन गया है। एडिसन की शैली स्पष्ट एवं रोचक है।

जनाथन स्विफ्ट (१६६७-१७४५) अपने युग के गद्य लेखकों में विशेष महत्त्व रखते हैं। भाषा के खण्ड में हम लिख आये हैं कि अपने युग की प्रचलित अंग्रेजी भाषा को सुधारने के लिए उन्होंने अनेक सुझाव जनता के सामने रखे। गद्य शैली की दृष्टि से इनकी गणना अत्यन्त सफल लेखकों में है। सरल और सशक्त शैली में तथ्यों और विचारों को व्यक्त करने में इनको अनुपम सफलता मिली। यहाँ तक कि वर्तमान शताब्दी के कुछ अग्रगण्य लेखकों ने इनकी शैली का अनुकरण किया है। इनका व्यंग अत्यन्त तीखा था। एडिसन की भाँति वे दोषों का उद्घाटन केवल उनको सुधारने के उद्देश्य से नहीं करते थे, प्रत्युत छिद्रान्वेषण, व्यंग और भर्त्सना को ही ये अन्तिम उद्देश्य मानते थे। एडिसन का व्यंग्य सुधार की आशा और आकांक्षा से प्रेरित था। किन्तु स्विफ्ट के सामने इस प्रकार की आशा न थी। इनके प्रसिद्ध ग्रन्थों में **दी बैटिल आफ बुक्स** (१६९७) प्राचीन और नवीन पाण्डित्य के सापेक्ष महत्त्व से सम्बन्धित है। **दी टेल आफ ए टब** (१७०४) में धार्मिक भ्रष्टाचार पर व्यंग्य है। **गुलीवर्स ट्रैवल्स** (१७२६) में तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था पर कठोर प्रहार किया गया है।

इस काल के अन्य उल्लेखनीय गद्य लेखक हैं **आरबुथनाट** (१६६७-१७३५), **शॉपट्स बरी** (१६७१-१७१३), **बॉलिंग ब्रुक** (१६७८-१७५१) इत्यादि। इन लोगों ने दर्शन तथा अन्य विषयों पर ग्रन्थ लिखे।

आगस्टन युग में नाटक की कोई विशेष उन्नति नहीं हुई और न उच्च कोटि की कृतियों की सृष्टि ही हुई। कतिपय लेखकों ने फ्रांसीसी नमूने पर दुखान्त नाटक लिखे। इस प्रकार की रचनाओं में एडिसन का **केटो** (१७१३) अपने काल में अत्यन्त प्रभावोत्पादक सिद्ध हुआ। ये रचनाएँ अनुकरणात्मक थीं तथा कार्नील, रासीन इत्यादि के नाटकों के आधार पर लिखी गयी थीं। एक दूसरे प्रकार के दुखान्त नाटक भी लिखे गये जिन्हें पारिवारिक नाटक अथवा 'डोमेस्टिक ड्रामा' कहते हैं। मध्यवर्ग की पारिवारिक घटनाओं को लेकर लिखे हुए इन नाटकों में नैतिकता और भावना का बाहुल्य रहता था। इस प्रकार की रचनाओं में **लिल्लो** (१६९३-१७३९) के नाटक **लन्दन मर्चेन्ट आर दी हिस्ट्री आफ जार्ज बार्नवेल** (१७३१) सुविख्यात है। सुखान्त नाटकों ने

इथरिज और कांग्रीव की परम्परा को छोड़कर अब एक नया मार्ग ग्रहण किया और भावुकता प्रधान सेण्टीमेंटल कामेडी लिखी जाने लगी। कोली सीबर और रिचर्ड स्टील ने इस प्रकार के सफल नाटक लिखे। इस काल में शेक्सपियर के नाटकों का अभिनय प्रसिद्ध अभिनेता और अभिनेत्रियों द्वारा हुआ जिनमें गैरिक का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

डा० जानसन का युग १७४०-१७७०

पोप के बाद आनेवाले तीस वर्षों के काल के प्रतिनिधि साहित्यकार डा० सेमुअल जानसन थे। अपनी विद्या और व्यक्तित्व से इन्होंने अपने समकालीन साहित्यिक जगत् को प्रभावित किया। अतः इनको अन्य लेखक और कवि अग्रगण्य मानते थे। जिस काल का नेतृत्व डा० जानसन ने किया उसका विवेचन सरल नहीं है क्योंकि उस समय विभिन्न और परस्पर विरोधी शक्तियाँ क्रिया-शील हुईं। पोप के युग का क्लासिकी अथवा नियो-क्लासिकी प्रभाव अब भी सशक्त बना हुआ था किन्तु साथ ही साथ सेन्टिमेंट अर्थात् भावुकता बल पकड़ रही थी। एक ओर तो व्यंग्यात्मक काव्य हीरोइक कपलेट में लिखा जा रहा था और दूसरी ओर प्रकृति और ग्राम्य जीवन से सम्बन्धित कविताओं का प्रणयन हो रहा था। कविता में गहरे अवसाद का प्रकाशन हुआ तथा लोक भाषाओं में लिखित प्राचीन साहित्य की ओर लोगों की अभिरुचि जाग्रत हुई। गद्य में पत्रकारता का विकास होता रहा तथा कथा-साहित्य ने अप्रत्याशित उन्नति की। उपन्यासों की लोकप्रियता के कारण नाट्य-रचना और नाट्य अभिनय को धक्का पहुँचा, यद्यपि गोल्डस्मिथ, शेरीडन प्रभृति कुछ अच्छे नाटककार इस युग में हुए।

डा० जानसन (१७०९-१७८४) के व्यक्तित्व की महानता का उल्लेख हम कर चुके हैं। जेम्स बासवेल द्वारा लिखित उनका जीवन-चरित अत्यन्त रोचक ग्रन्थ है। इसमें डा० जानसन की स्वभावगत विशेषताओं का वर्णन अत्यन्त आकर्षक ढंग से किया गया है। साहित्य को डा० जानसन ने अपनी जीविका बनाया था। अतः अपने जीवन-काल में उनको सभी प्रकार की रचनाएँ करनी पड़ीं। उनकी कविता में व्यंग्य की प्रधानता है। व्यंग्यात्मक कविताओं

के इनके दो संग्रह उपलब्ध हैं तथा उनका दुःखान्त नाटक **आइरिन फ्रेंच दुःखान्त** नाटकों की परिपाटी पर लिखा गया है। **रेसिलास** (१७५९) में कथा और व्यंग्य का मिश्रण है। डा० जानसन ने बहुसंख्यक निबन्ध **रैम्बलर** और **आइडलर** नामक पत्रों में, जिनसे इनका घनिष्ठ सम्बन्ध था, प्रकाशित किये। ये निबन्ध विविध विषयों पर लिखे गये हैं किन्तु इनमें सबसे महत्वपूर्ण निबन्ध साहित्यिक विषयों पर हैं। आलोचनात्मक निबन्धों से डा० जानसन के दृष्टि-कोण का पता चलता है। वह परम्परा के अनुयायी तथा क्लासिकी मत के समर्थक थे। किन्तु शेक्सपियर सम्बन्धी लेखों से उनके विचार-स्वातंत्र्य का पता चलता है। आलोचक की हैसियत से डा० जानसन का स्थान बहुत ऊँचा है। उनकी शेक्सपियर के नाटकों की भूमिका, मौलिकता और स्वतंत्र चिन्तन से ओतप्रोत है तथा **लाइव्स आफ् दी पोयट्स** (१७७९-८१) में उन्होंने जीवन-चरित और आलोचना का अपूर्व सम्मिश्रण प्रस्तुत किया है। पोप, ड्राइडेन आदि के जीवन चरित सहानुभूति के साथ लिखे गये हैं अतएव अत्यन्त सफल हुए हैं। ये तथा कुछ अन्य कवियों के जीवन चरित डा० जानसन की हठधर्मिता और संकीर्णता के प्रमाण उपस्थित करते हैं। डा० जानसन अंग्रेजी के सर्वप्रथम शब्दकोष-निर्माता थे। उन्होंने अकेले वह काम सम्पादित किया जिसे फ्रांस और इटली में बड़ी-बड़ी संस्थाओं ने सम्पन्न किया था।

ओलिवर गोल्डस्मिथ (१७३०-७४) की दो प्रसिद्ध कविताएँ **ट्रैवलर** (१७६४), **दी डेजरटेड विलेज** (१७७०) आज भी चाव से पढ़ी जाती हैं। यद्यपि इन रचनाओं में हीरोइक कपलेट का प्रयोग किया गया है तथापि इनका स्वर विशुद्ध क्लासिकी कविता के स्वर से भिन्न है। **दी ट्रैवलर** में यूरोपीय महाद्वीप के विभिन्न देशों की यात्रा का वर्णन है तथा **दी डेजरटेड विलेज** में व्यावसायिक जीवन की प्रगति के कारण उजड़े हुए अपने गाँव का सुन्दर और भावुकतापूर्ण चित्रण कवि ने किया है। गोल्डस्मिथ गद्य के उत्कृष्ट लेखक थे और अपने जीविकोपार्जन के लिए उन्होंने अनेक ग्रन्थ लिखे। उनका उपन्यास **दी विकार आफ् बेकफील्ड** अपनी पात्र-कल्पना तथा सरल जीवन के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। इनके निबन्धों में भी शैली और विषय-विवेचन का आकर्षण है।

जेम्स टाम्सन (१७००-१७८४) की रचनाओं में एक नवीन प्रकार की

कविता का सूत्रपात हुआ। उन्होंने पोप के युग में लिखना प्रारम्भ किया और उनका प्रसिद्ध काव्य **दी सीजन्स** १७२२ और १७३० के बीच लिखा गया था, तब भी उसकी परम्परा डा० जानसन के काल में विकसित हुई। **दी सीजन्स** अंग्रेजी का महत्त्वपूर्ण प्रकृति-काव्य है जिसमें प्राकृतिक दृश्यों की एक अटूट शृंखला मिलती है। चित्रमयता इस रचना की प्रमुख विशेषता है। शैली की दृष्टि से भी **दी सीजन्स** में नवीनता है क्योंकि टामसन ने हीरोइक कपलेट को छोड़कर मिल्टन की उदात्त शैली तथा ब्लैक वर्स में काव्य-रचना की। उनका दूसरा काव्य **दी कंसिल आफ इन्डोलेंस** (१७४८) शैली और छंद-योजना में स्पेंसर से प्रभावित है। टामसन को हम क्लासिकी मत के प्रति विद्रोही नहीं कह सकते, किन्तु यह तो स्पष्ट है कि उनकी प्रतिभा अत्यन्त मौलिक थी और अपने युग के प्रभावों के वशीभूत न होकर उन्होंने अभिनव काव्य-सर्जन किया जिसका सम्बन्ध कविता के भावी विकास से है। टामसन का अनुकरण अन्य कवियों ने किया। **जान डायर** (१६९९-१७५८) रचित **ग्रांगर हिल** (१७२६) विलियम शैन्सटन रचित **दी स्कूल मिस्ट्रेस** (१७४२) इत्यादि भी नवीन प्रकार की रचनाएँ हैं जिनका सम्बन्ध ग्राम्य जीवन से है।

एडवर्ड यंग (१६८३-१७६५) के अवसाद-काव्य ने भी अंग्रेजी कविता को एक नवीन दिशा प्रदान की। उनका काव्य **नाइट थाट्स** (१७४२-१७४५) ब्लैक वर्स में लिखी हुई विस्तृत रचना है। इसमें मृत्यु और कब्रिस्तानों में लगाये जानेवाले वृक्षों इत्यादि को लेकर नैराश्य-भावना की अभिव्यक्ति हुई है। इस कविता की ख्याति इंग्लैण्ड से बाहर फैली। कई अंग्रेज कवियों ने इसका अनुकरण करके नैराश्यपूर्ण रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

विलियम कालिन्स (१७२१-५९) की थोड़ी-सी ही रचनाएँ उपलब्ध हैं किन्तु उनके आधार पर यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि उनकी काव्य-प्रतिभा उच्च कोटि की थी। अनेक प्रभावों को ग्रहण करके इस कवि ने उत्तम काव्य का सर्जन किया। प्रकृति से इनको प्रेम था तथा इनकी कल्पना मध्यकालीन वातावरण में रमती थी। इन्होंने अपनी कविता में उत्तम मूर्त विधान प्रस्तुत किया है और इनकी शैली मिल्टन से प्रभावित है। इनकी प्रसिद्ध रचना **ओड टु इवनिंग** अपने ढंग की अनुपम कृति है।

टामस ग्रे (१७१६-७१) की भी काव्य-रचना मात्रा में अल्प किन्तु गुण में महत्त्वपूर्ण है। ग्रे ग्रीक के अच्छे पंडित थे और उनकी विद्वत्ता की छाप उनकी कविता पर दृष्टव्य है। **दी प्रोग्रेस आफ पोइजी** और '**दी बांड**' नामक ओड पिन्डार की प्राचीन कविता का अनुकरण करते हैं। **ऐन एलेजी रिटन इन ए कन्ट्री चर्चयाड** अंग्रेजी की सर्वाधिक प्रसिद्ध कविताओं में परिगणित होती है। इसमें जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में गम्भीर विचार प्रभावोत्पादक रीति से व्यक्त किये गये हैं। अवसादपूर्ण कल्पना ग्रे की भी विशेषता है और उनकी शैली में प्राचीन यूनानी कवियों के अतिरिक्त मिल्टन का प्रभाव भी परिलक्षित हुआ है।

सन् १७६० और ७५ के बीच में कई प्राचीन रचनाओं का पुनरुद्धार हुआ जिसका फल यह था कि प्राचीन साहित्य में जनता की अभिरुचि बढ़ी। बीते युगों पर चिन्तन के साथ अवसाद का अंश भी मिला हुआ था। इन रचनाओं ने भविष्य में आनेवाली स्वच्छन्दतावादी कविता के लिए भूमिका तैयार की। **मैकफरसन** का **ओसियन** काव्य गैलिक लोक भाषा में लिखा गया है और अब यह माना जाता है कि यह प्राचीन काव्य नहीं वरन् नवीन रचना है। फिर भी इसमें प्राचीन कविता का इतना सफल अनुकरण हुआ है कि इसका प्रभाव न केवल इंग्लैण्ड में वरन् यूरोप के कई अन्य देशों की कविता पर पड़ा। इस कोटि की अन्य रचनाएँ हैं **परसी की रेलिक्स**, **चैटरटन** की कविताएँ इत्यादि।

डा० जानसन के युग में गद्य का विकास अबाधगति से चलता रहा। डा० जानसन के सिवा गोल्डस्मिथ का उल्लेख हम ऊपर कर आये हैं। उनके अतिरिक्त अनेक अन्य लेखकों ने पत्र-पत्रिकाओं में निबन्ध लिखे तथा ग्रन्थों की रचना की। इंग्लैण्ड की व्यापारिक प्रगति, समाचार पत्रों का प्रचलन, तथा इंग्लैण्ड का अन्य देशों से निकटतर सम्पर्क, इन सभी कारणों से गद्य साहित्य को प्रोत्साहन मिला।

उपन्यास-लेखन का प्रारंभ

इसी काल में उपन्यास-लेखन वास्तव में प्रारम्भ हुआ। डेफो की कथाओं में गम्भीरता तथा मनोभावों के विश्लेषण का अभाव था। लगभग दस वर्ष

के भीतर चार बड़े उपन्यासकारों ने विभिन्न प्रकार की रचनाओं द्वारा अंग्रेजी उपन्यास की परम्परा सुदृढ़ रीति से स्थापित की। इस समय अंग्रेजी नाट्य साहित्य अवनति की दशा में था अतः मध्यवर्ग के लोगों ने उपन्यास का स्वागत किया जिससे घर बैठे उनका मनोरंजन होता था। **सैमुअल रिचर्डसन** (१६८९-१७६१) ने तीन प्रसिद्ध उपन्यासों की रचना की। **पामेला** (१७४१) में एक युवती ने अपने सम्मान की रक्षा किस प्रकार की, इसका वर्णन है। उसको नौकर रखनेवाले नवयुवक ने पहले तो उसके साथ दुर्व्यवहार करने का प्रयत्न किया, किन्तु अन्त में उसके चारित्रिक बल से प्रभावित होकर उसके साथ विवाह कर लिया। **क्लैरिसा हारलो** (१७४७-४८) अत्यन्त विस्तृत उपन्यास है जिसमें एक सच्चरित्र युवती क्लैरिसा के अनुभवों का उल्लेख है। ये दोनों उपन्यास पत्रों के रूप में लिखे गये हैं। तीसरा उपन्यास **दी हिस्ट्री आफ चार्ल्स ग्रैन्डीसन** (१७५४) है। यह कथा एक नवयुवक के अनुभवों पर आधारित है। रिचर्डसन के उपन्यास भावना-प्रधान तथा विश्लेषणात्मक हैं। मनो-वैज्ञानिक आधार पर लिखी हुई इन कथाओं का स्वागत न केवल इंग्लैण्ड वरन् फ्रांस और जर्मनी में भी हुआ।

हेनरी फील्डिंग (१७०७-५४) दूसरे सफल उपन्यासकार थे। इनकी शैली और निर्माण-पद्धति रिचर्डसन से भिन्न थी। इनकी रचनाओं में जीवन का यथार्थ निरूपण हुआ है और कथा अत्यन्त रोचक ढंग से कही गयी है। **दी हिस्ट्री आफ जोसेफ एन्ड्रयूज** (१७४२) में पारसन एडम्स नामक पादरी का चरित्रांकन अत्यन्त सफलतापूर्वक किया गया है। **टाम जोन्स** (१७४९) एक विशाल ग्रंथ है जिसमें जीवन का यथार्थ एवं विशद चित्रण हुआ है। वस्तु-विन्यास तथा निर्माण-सौष्ठव के लिए यह उपन्यास अत्यन्त प्रशंसित है। फील्डिंग का प्रभाव परवर्ती उपन्यासकारों ने ग्रहण किया और सर वाल्टर स्काट उपन्यास रचना में इनको अपना गुरु मानते थे।

टोबीयस स्मालेट (१७२१-७१) इस काल के तीसरे महत्त्वपूर्ण उपन्यास-कार थे। इनकी पुस्तक **राडेरिक रैन्डम** (१७४८) सामुद्रिक जीवन और यात्रा से सम्बन्धित है तथा उसमें सामाजिक जीवन के निम्न-स्तर का चित्रण हुआ है। यही दोनों बातें स्मालेट की प्रमुख देन हैं। समुद्र-यात्रा सम्बन्धी

अनेक उपन्यास बाद को लिखे गये तथा २०वीं शताब्दी में जोजफ कानरेड ने इस प्रकार के लेखन में विशेष यश प्राप्त किया। निम्न वर्ग के जीवन तथा क्रिया-कलापों का निरूपण आगे चलकर डिकेन्स तथा अन्य कई लेखकों ने किया। स्मालेट यथार्थवादी थे और उनकी शैली फील्डिंग की अपेक्षा कहीं अधिक व्यंग्यात्मक है। उनका दूसरा उपन्यास **पेरी ग्रीन पिकिल** (१७५१) भी सामुद्रिक जीवन से सम्बन्धित है। उनके तीसरे उपन्यास **हम्फ्री क्लींकर** (१७११) में पत्रों के माध्यम से एक परिवार की यात्रा का वर्णन है। उसमें भावुकता कम है तथा मुख्यतः यथार्थ वर्णन की पद्धति अपनायी गयी है।

लारेन्स स्टर्न (१७१३-६८) का प्रसिद्ध उपन्यास **ट्रीस्ट्रम शैन्डी** (१७६०-६७) अपने ढंग की अद्वितीय रचना है। इसमें लेखक ने भावुकता, करुणा तथा हास्य का चमत्कारपूर्ण सम्मिश्रण प्रस्तुत किया है तथा कई स्मरणीय पात्रों की सृष्टि भी की है। इन पात्रों में सबसे प्रसिद्ध ट्रीस्ट्रम शैन्डी तथा अंकिल टोबी हैं। इस उपन्यास का निर्माण बिल्कुल नये ढंग से किया गया है। कथा-वस्तु में घटनाओं की नियमित शृंखला नहीं मिलती, प्रत्युत स्फुट परिस्थितियों और घटनाओं को बिना किसी निश्चित क्रम के एकत्र कर दिया गया है। बीसवीं शताब्दी के कतिपय उपन्यासकारों ने जिनमें, जेम्स ज्वायस प्रमुख हैं, स्टर्न का रचना-विधान पुनः कार्यान्वित किया है। स्टर्न की दूसरी पुस्तक **सेन्टीमेन्टल जर्नी थ्रू फ्रांस एण्ड इटैली** (१७६८) में भी उनकी तीव्र भावना और अनुभूति अभिव्यक्ति हुई है।

यहाँ इस काल के इतिहासकारों और विचारकों के सम्बन्ध में भी लिख देना आवश्यक है। इनमें अग्रगण्य थे **डेविड ह्यूम** (१७११-७६) जिन्होंने लाक की परम्परा को आगे बढ़ाया और अपने आदर्शवादी चिन्तन से सारे यूरोप को प्रभावित किया। इन्होंने एक ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखा जिसका नाम था **हिस्ट्री आफ ग्रेट ब्रिटेन** (१७५४-६१)। **विलियम राबर्टसन** ने (१७५९) **दी हिस्ट्री आफ स्कॉटलैण्ड** लिखा। अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य **ऐडम स्मिथ** का सुविख्यात ग्रंथ **ऐन इन्क्वायरी इन्टू दी नेचर एण्ड काउजेज आफ दी वेल्थ आफ नेशन्स** १७७६ में लिखा गया। यह पुस्तक विचार-गाम्भीर्य तथा सुस्पष्ट शैली के लिए प्रख्यात है। इन लेखकों के अतिरिक्त १८वीं शताब्दी में पत्र-

लेखन का प्रचलन भी उल्लेखनीय है। लेडी मेरी बार्टले मॉन्टेगू, लॉर्ड चेस्टर-फील्ड, टॉमस ग्रे, वालपोल आदि ने पत्र-लेखन में विशेष सफलता प्राप्त की।

अंग्रेजी नाटक ने इन तीस वर्षों में संतोषजनक प्रगति नहीं की। भावना-प्रधान नाटकों के विरुद्ध प्रतिक्रिया जाग्रत होने लगी थी। अतः ऐसे नाटक लिखे गये जिनमें भावुकता पर व्यंग्य किया गया है। ऐसे नाटकों में **जार्ज कोलमैन** रचित **पाली हनीकुम्ब** (१७६०) और **दी क्लैंडस्टाइन मैरेज** (१७६६) तथा **गोल्डस्मिथ** रचित **दी गुड नेचर्ड मैन** (१७६८), **शी स्टूप्स टु कानकर'** (१७७३) ने सर्वाधिक सफलता प्राप्त की। इसके पूर्व हेनरी फील्डिंग ने अपने नाटकों में अतिशय भावुकता पर आक्षेप किया था।

रोमान्टिसिज्म के पूर्वाभास का काल १७७०-१७९८

१८वीं शताब्दी के अन्तिम तीस वर्षों में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हुईं तथा नवीन विचारों एवं आदर्शों का आविर्भाव हुआ। इसके पूर्व अनेक वर्षों तक इंग्लैंड आर्थिक सम्पन्नता तथा सामाजिक सुव्यवस्था के मार्ग पर अग्रसर होता आया था। न किसी प्रकार की दुविधा थी और न कोई व्यवधान था। सन् १७७६ में अमेरिकन उपनिवेश ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया और अंग्रेजी सत्ता से युद्ध करने के उपरान्त सन् १७८२ में उसने वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त की। सन् १७७९ में फ्रांस की राज्य-क्रान्ति का प्रारम्भ हुआ और स्वतंत्रता, समानता तथा बन्धुत्व का सिद्धान्त एक व्यापक आन्दोलन का आधार बना। इसी काल में गुलामी की प्रथा के विरुद्ध आवाज उठायी गयी तथा सामान्यतः राजनीति में उदार भावनाओं का उत्थान हुआ। दर्शन और साहित्यिक आलोचना से लोगों का ध्यान हटकर राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं पर केन्द्रित हुआ। अतः इस काल के गद्य लेखक नवीन अभिप्राय और नवीन आदर्शों से प्रेरित थे।

एडमंड बर्क (१७२९-९७) स्वभाव और शिक्षा से दार्शनिक थे, यद्यपि उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया और अपने भाषणों द्वारा अक्षय यश अर्जित किया। उनका निबन्ध 'फिलासाफिकल इन्क्वायरी इन्टु दी ओरिजिन आफ अवर आइडियाज़ आफ दी सब्लाइम एण्ड व्यूटिफुल' (१७५६) तीव्र अनुभूति

और गम्भीर चिन्तन के कारण अंग्रेजी में अद्वितीय है। राजनीतिक रचनाओं में प्रमुख हैं—आन अमेरिकन टैंक्सेशन, आन कानसीलिएशन विथ अमेरिका (१७७४), लेटर्स आन ए रेजीसाइड पोस (१७९५-७) इनके अतिरिक्त बर्क के अनेक भाषण और पत्र उपलब्ध हैं। उनकी शैली वक्रता के लिए अत्यन्त उपयुक्त तथा अनेक स्थलों पर तीव्र भावना से अनुप्रेरित हैं। पार्लिमेंट में बोलते समय बर्क को विशेष सफलता नहीं मिली, किन्तु उनके भाषणों के पढ़ने पर आवश्यक तथ्यों तथा दलीलों को पेश करने की उनकी अनुपम शक्ति का पता चलता है। अमेरिकन उपनिवेशों के प्रश्न पर बर्क के विचार अत्यन्त उदार थे। किन्तु फ्रांस की राज्य-क्रान्ति की उन्होंने कटु आलोचना की।

बर्क अपने जीवन के अन्तिम दिनों में अनुदार राजनीति के समर्थक हो गये थे किन्तु इन तीस वर्षों में बहुत से ऐसे अन्य लेखक हुए जिन्होंने क्रान्ति को अपने विचारों और लेखों द्वारा समर्थन प्रदान किया। टामपेन ने अमेरिकन विद्रोह को आवश्यक और उचित सिद्ध किया तथा राजनीतिक क्रान्ति का सिद्धान्त रूप से समर्थन किया। विलियम गाडविन ने क्रान्ति-दर्शन को और भी आगे बढ़ाया। वे पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में नियमन और अनुशासन की उपयोगिता को पूर्णरूपेण अस्वीकार करते थे तथा केवल तर्क को महत्त्व देते थे। गाडविन के इस नवीन दर्शन से आगे आनेवाले रोमान्टिक युग में कई कवि और लेखक गहराई तक प्रभावित हुए।

इस काल के यशस्वी इतिहास लेखक थे एडवर्ड गिबन (१७३७-९४) जिन्होंने दी डिक्लाइन एण्ड फाल आफ दी रोमन इम्पायर (१७६६-१७८८) नामक विशाल एवं जगत्-विख्यात इतिहास-ग्रंथ की रचना की। इसमें ईसाई धर्म के प्रचार और रोमन सत्ता के अधःपतन का विस्तृत वर्णन है। गिबन ने फ्रांसीसी इतिहासकारों का अनुकरण किया है तथा उनकी पुस्तक अंग्रेजी भाषा में प्रथम महान् इतिहास-ग्रंथ है। महत्त्वपूर्ण घटनाओं के वर्णन में लेखक ने अत्यन्त स्पष्ट और सजीव चित्र उपस्थित किये हैं। गिबन की गद्य शैली आकर्षक और निखरी हुई है। उनका आत्म-चरित भी पठनीय ग्रन्थ है।

कविता में संक्रान्ति और परिवर्तन के लक्षण अब साफ साफ दृष्टिगोचर

हो रहे थे। पुरानी क्लासिकी परम्परा का न तो एकाएक परित्याग हुआ और न उसके विरुद्ध खुला हुआ विद्रोह ही उठ खड़ा हुआ। किन्तु कवियों की दृष्टि नवीन हो चली और जीवन तथा प्रकृति को वे नये ढंग से देखने लगे। साथ ही साथ कविता का माध्यम भी बदलने लगा और शैली में ताजगी आने लगी। पिछले काल की भाँति अब भी व्यंग्य-काव्य रचा जा रहा था। व्यंग्य लिखनेवाले कवियों में **चार्ल्स चर्चिल** (१७३१-६४) सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण थे। नैतिक शिक्षा की दृष्टि से भी काव्य-रचना हो रही थी। इसी काल में **इरासमस डारविन** ने **बोटैनिक गार्डन** (१७८९-९१) नामक काव्य लिखा जो अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ। **बीयेटी** ने स्पेन्सेरीयन स्टेजा में सुन्दर प्रकृति-काव्य लिखा और **बाउल्स** ने सानेट का प्रचलन फिर से प्रारम्भ किया। बीयेटी और बाउल्स की गणना स्वच्छन्दतावाद के अग्रदूतों में की जाती है।

विलियम कूपर (१७३१-१८००) की कविता में क्लासिज्म से रोमांटि-सिज्म में परिवर्तन के लक्षण स्पष्ट रूप से प्रगट होने लगे। परिष्कृत अभिरुचि के इस कवि में पूर्ववर्ती काल के शैलीगत आग्रह विद्यमान हैं। हीरोइक कपलेट तथा ब्लैंक वर्स उन्होंने नियमानुसार और सफाई के साथ लिखने की चेष्टा की। स्वभाव से ये संयत जीवन के समर्थक थे और स्नेह और मैत्री की अपार क्षमता इनके चित्त की विशेषता थी। इतना होते हुए भी इनके मन में धर्म-भीरुता और अवसाद की गहरी छाप थी जो हमें रूसो की याद दिलाती है। ग्राम्य-जीवन के शान्त एवं सरल वातावरण का जितना अच्छा चित्रण इनकी कविता और इनके पत्रों में हुआ है वैसा अन्यत्र कम मिलता है। प्रकृति से इनको स्वाभाविक अनुराग था। रूसो की भाँति इन्होंने इसके लिए किसी सिद्धान्त का निरूपण नहीं किया। इनकी सर्वोत्कृष्ट रचना **दी टास्क** (१७८५), विभिन्न चित्तवृत्तियों का सफल निरूपण करती है। इनकी अन्य प्रसिद्ध कविताएँ **आन दी रिसीट आफ गाई मदर्स पिक्चर** और **टु मेरी तीव्र संवेदना** से अनुप्रेरित हैं।

जार्ज क्रैब (१७५४-१८३२) अनेक बातों में विलियम कूपर से भिन्न थे। क्लासिकी परम्परा से उनका सीधा घनिष्ठ सम्बन्ध था। पोप की भाँति उन्होंने हीरोइक कपलेट का प्रयोग किया तथा व्यंग्य का अंश उनकी कविता में प्रायः

सदैव विद्यमान रहता है। कूपर ने नगरों को बुरा बताकर गाँवों को सुख और शान्ति का केन्द्र घोषित किया था। ग्राम्य जीवन के प्राकृतिक वातावरण का उन्होंने आदर्श चित्र सामने रखा। क्रैब ने अपनी कविता **दी विलेज** (१७८३) में ग्राम्य जीवन की कठिनाइयों और कुरूपताओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया। गाँव के किसान और मजदूर कठिन परिश्रम करने पर भी किस प्रकार कष्टमय जीवन व्यतीत करते हैं, इसका सजीव चित्रण 'दी विलेज' में हुआ है। इस प्रकार यथार्थवादी क्रैब ने रूसो और कूपर के मत का खण्डन और ग्राम्य जीवन का नैराश्यपूर्ण एवं यथार्थ वर्णन प्रस्तुत किया। क्रैब उदार भावनाओं से प्रेरित थे तथा गाँवों के बारे में जो अवास्तविक कल्पना साहित्य में प्रचलित थी उसका इन्होंने अपने काव्य द्वारा खण्डन किया। इनकी अन्य रचनाएँ हैं—**पैरिश रजिस्टर** (१८०७), **'टेल्स इन वर्स'** (१८१२) और **टेल्स आफ़ दी हाल** (१८१९)।

रारबर्ट बर्न्स (१७५९-९६) की कविताएँ हृदयोद्गार के रूप में प्रगट हुईं। अतः रोमान्टिसिज्म का पूर्वाभास उनमें निश्चित रूप से मिलता है। बर्न्स स्काटलैण्ड के निवासी और साधारण किसान थे। यह जीवन्त कवि स्वातंत्र्य-प्रेम से अनुप्राणित था। किसी प्रकार का अनुचित दमन बर्न्स के लिए असह्य था, चाहे वह राजनीतिक और आर्थिक हो अथवा धार्मिक। मानवीय अधिकारों को उन्होंने सरल और सजीव शब्दों में घोषित किया। उनकी परिनिष्ठित अंग्रेजी में लिखी हुई कविताएँ आंशिक रूप में क्लासिकी परम्परा में हैं, किन्तु स्काटिश भाषा में लिखी हुई उनकी रचनाएँ उन्मुक्त मनोवृत्ति की द्योतक तथा प्रेषण में स्वच्छन्द हैं। बर्न्स ने गीत बैलड्स तथा स्काटलैण्ड के जन-जीवन को यथार्थ रूप में व्यक्त करनेवाली छोटी-छोटी कविताएँ लिखी हैं। स्वच्छन्दता-वाद की पूर्वपीठिका तैयार करनेवाले कवियों में बर्न्स का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

प्रतीकवादी एवं रहस्यवादी कवि **ब्लेक** (१७५७-१८२७) क्लासिकी परम्परा से बिल्कुल अलग थे। तर्क, विज्ञान, रूढ़िवाद को छोड़कर इस भविष्य द्रष्टा कवि ने आध्यात्मिक काव्य की रचना की। **सांग्स आफ़ इनोसेन्स** (१७-८९) में ईसा मसीह की कल्पना प्रतीक रूप में की गयी है तथा शैशव के सरल और निष्कपट भावों की अत्यन्त सफल अभिव्यक्ति हुई है। **सांग्स आफ़ एक्स-**

पॉरिएन्स (१७९४) भी प्रतीकात्मक काव्य है। इसमें वास्तविक जीवन के संघर्ष, विद्रोह और कलुष को कवि ने प्रभावोत्पादक रीति से व्यक्त किया है। ब्लेक की अन्य रचनाएँ हैं—**दी मॅरिज आफ हेवेन एण्ड हेल्** (१७९०), **दी फ्रेंच रीवोलूशन** (१७९१), **दी बुक आफ ओरीजेन्स** (१७९४), **दी बुक आफ लास** (१७९५), **जेरुसलम** (१८०४) और **मिल्टन** (१८०४)। इनमें अधिकांश रहस्य-भावना से प्रेरित हैं तथा प्रतीकवादी शैली में लिखी गयी हैं। ब्लेक का काव्य इतना नवीन और अप्रत्याशित था कि बहुत दिनों तक लोग उसका वास्तविक मूल्य न आँक सके और इस कवि को लोग अर्ध विक्षिप्त, स्वप्नद्रष्टा मात्र मानते रहे। किन्तु धीरे-धीरे ब्लेक की महत्ता स्वीकृत हुई और आज वे अंग्रेजी के मूर्धन्य कवियों में गिने जाते हैं।

इस काल में उपन्यास-लेखन में उतनी सफलता नहीं मिली जितनी डा० जानसन के युग के प्रधान उपन्यासकारों को मिली थी। तब भी कुछ नवीन लक्षण प्रगट हुए। **मिसबर्नी** के उपन्यास **एवेलीना** (१७७१) और **सिसीलिया** (१७८२) रिचार्डसन की भावुकता और स्मालेट के यथार्थवाद को मिलाकर लिखे गये हैं। **मिसेज़ रेडक्लीफ** ने अपने उपन्यासों में भय का रोमानी वातावरण निमित्त किया। इस प्रकार के उपन्यासों का श्रीगणेश १७६४ में **होरेस वालपोल** ने **दी कंसल आफ ओट्टेन्टो** लिखकर किया था। मध्ययुगीन, गोथिक, भय और आतंक से परिपूर्ण वातावरण प्रस्तुत करनेवाले इन उपन्यासों से स्वच्छन्दतावाद के आगमन में विशेष सहायता मिली। इन्हीं से मिलती जुलती **वेकफोर्ड** की **वाथेक** नामक कथा बायरन के काव्य में मिलनेवाली परिस्थितियों और घटनाओं की याद दिलाती है।

१८वीं शती के अंतिम ३० वर्षों में सबसे प्रसिद्ध नाटककार **रिचर्ड ब्रिन्स्ले शेरिडन** (१७५१-१८१६) थे। इनकी तीन रचनाएँ, **दी राइबल्स** (१७७५), **दी स्कूल फार स्कैंडल** (१७७७) और **दी क्रिटिक** अत्यन्त प्रसिद्ध एवम् रंगमंच पर अत्यन्त सफल हुई। गोल्डस्मिथ की भाँति शेरिडन भी १८ वीं शताब्दी के सेंटीमेंटल नाटक के विरोधी थे और उसी की प्रतिक्रिया में उन्होंने अपने यथार्थवादी सुखान्त नाटकों की रचना की। एक प्रकार से शेरिडन कांग्रीव की परंपरा में हैं, यद्यपि रेस्टोरेशन कालीन सुखान्त नाटकों की भाँति इनकी रचनाओं

में अश्लीलता नहीं है। इनके कथोपकथन अत्यन्त सफल हैं। इनकी शैली में चुभनेवाले वाक्यांशों और मुहावरों की प्रचुरता है और इनके नाटकों में कतिपय दृश्य अत्यन्त अभिनेय सिद्ध हुए। इस काल में कोई अन्य उच्च कोटि का नाटककार नहीं हुआ किन्तु मिसेज़ इन्चबल्ड और काट्जेब्यू के नाम उल्लेखनीय हैं।

अष्टम अध्याय

स्वच्छन्दतावाद का युग और उसका साहित्य

(१७९८-१८३२)

सन् १७९८ में वर्ड्सवर्थ और कोलरिज ने लिरिकल बैलेड्स नामक अपना काव्य-संग्रह प्रकाशित किया और तभी से औपचारिक रीति से अंग्रेजी स्वच्छन्दतावाद के पुनरुत्थान का युग प्रारम्भ हुआ। इस पुस्तक की महत्वपूर्ण भूमिका स्वच्छन्दतावाद के नवीन घोषणापत्र के रूप में स्वीकृत हुई। हम इस बात की ओर संकेत कर आये हैं कि सन् १७९८ के पूर्व प्रायः तीस वर्षों से क्लासिकी मत के विघटन की प्रक्रिया शुरू हो गयी थी और स्वच्छन्दतावाद की भूमिका तैयार हो रही थी। सन् १६६० के उपरान्त साहित्य के क्षेत्र में क्लासिज्म तथा निओ-क्लासिज्म मत सर्वमान्य हुए और उनका आधिपत्य लगभग सन् १७७० तक निर्विरोध स्वीकार किया गया। सन् १७७० या उसके कुछ पूर्व ही प्रतिक्रिया के चिह्न परिलक्षित होने लगे क्योंकि नियोक्लासिकी परम्परा रूढ़ियों से जकड़कर निर्जीव हो चली थी। शेक्सपियर, स्पेंसर और मिल्टन का प्रभाव जोर पकड़ने लगा तथा ओसियन काव्य प्रभृति लोक-साहित्य के प्राचीन अथवा तथाकथित प्राचीन ग्रन्थों की ओर लोग आधिकाधिक उन्मुख हुए। कविता का स्वर बदलने लगा 'यंग, ग्रे, कालिन्स इत्यादि की रचनाओं में अवसाद का नवीन लक्षण प्रगट हुआ। कूपर और क्रैब ने विभिन्न दृष्टियों से ग्राम्य जीवन और प्रकृति का निरीक्षण किया। बर्न्स की कविता में नवीनता है और वह मानवसत्ता और मानव सम्मान का समर्थन करती है। ब्लेक का आध्यात्मिक काव्य साहित्य के क्षेत्र में अभिनव सृष्टि थी। कविता की भाँति ही उपन्यास में भी नवीन प्रयोग किये गये। होरेस, वालपोल, तथा मिसेस रैडक्लिफ़ की कथाओं में नवीन वातावरण प्रस्तुत किया गया। कहने का अभिप्राय यह है कि सन् १७७० के बाद पद्य और गद्य साहित्य दोनों में ही परम्परा और रूढ़ि को छोड़कर ऐसे नवीन प्रयोग हो रहे थे जो साहित्य को स्वच्छन्दतावाद की दिशा में ले जानेवाले थे।

नवीन प्रवृत्ति को बाह्य प्रभावों से बल मिला

इस नवीन प्रवृत्ति को बाह्य प्रभावों से बल मिला। रूसो ने अपने विचारों द्वारा स्वच्छन्दतावाद के आगमन को सरल बना दिया। एक ओर तो उनकी अवसादपूर्ण कल्पना और दूसरी ओर उनके प्रकृति-प्रेम ने न केवल फ्रांस वरन् यूरोप के अनेक देशों में साहित्य को एक नयी दिशा में मोड़ा। सन् १७७९ में फ्रांस की राज्यक्रान्ति का प्रारम्भ हुआ। स्वतंत्रता, भ्रातृत्व तथा समानता का जो मन्त्र इसने यूरोप में फूँका उससे इंग्लैण्ड अछूता न बचा। अंग्रेज कवियों ने पहले तो इसका स्वागत किया, किन्तु बाद को वे सहम गये और अनुदार भावनाओं को उन्होंने फिर से ग्रहण किया। तब भी आगे चलकर हैजलिट, शेली, बायरन इत्यादि के स्वातंत्र्य-प्रेम की तह में फ्रान्सीसी राज्यक्रान्ति के आदर्शों को हमें मानना ही पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी स्वच्छन्दतावाद पर जर्मन अध्यात्म-दर्शन तथा सौन्दर्य-दर्शन का प्रभाव पड़ा। कांट और शेलिंग के विचार कोलरिज ने अपनाये और इस प्रकार काव्यात्मक कल्पना का नवीन सिद्धान्त प्रतिपादित किया। जर्मन-दर्शन का प्रभाव अन्य कवियों पर भी पड़ा।

स्वच्छन्दतावाद की परिभाषा अनेक विद्वानों ने अलग-अलग ढंग से की है। हम उसके विशेष उपकरणों का उल्लेख मात्र कर सकते हैं। यह तो निश्चित है कि अंग्रेजी स्वच्छन्दतावाद १८वीं शताब्दी के रूढ़िग्रस्त नियो-क्लासिकी परम्परा के विरोध में प्रगट हुआ। १८वीं शताब्दी में बौद्धिकता का अतिरेक होने के कारण कल्पना और भावना का दमन हुआ। कविता एक ढर्रे पर चलने लगी और अपनी स्वतंत्रता खो बैठी। स्वच्छन्दतावाद इन त्रुटियों के कारण ही आन्दोलन के रूप में प्रगट हुआ। कल्पना और भावना फिर उन्मुक्त होकर काव्य-सर्जन में सहायक बनीं। नियमों की सत्ता अस्वीकार की गयी तथा कवि की प्रतिभा और अभिरुचि को ही निर्णय का अधिकार मिला। छंद और शैली में भी रूढ़ियों को छोड़कर नवीन प्रयोग हुए। इस युग के कल्पना-प्रधान साहित्य में अनेक नवीन विशेषताएँ मिलती हैं जैसे, उत्कट प्रकृति प्रेम, रहस्यभावना, प्रतीकत्व, स्वातंत्र्य भावना, व्यक्तिवाद इत्यादि। ये सभी लक्षण महत्त्व रखते हैं, किन्तु इनमें से किसी एक को लेकर हम स्वच्छन्दतावाद की मूल प्रकृति को नहीं समझ सकते। स्वच्छन्दतावाद वस्तुतः १८वीं शताब्दी

की परम्परा के विरुद्ध प्रतिक्रिया तथा कल्पना एवं भावना के उन्मुक्त प्रतिफलन के रूप में ही समझा जा सकता है।

वर्ड्सवर्थ तथा कोलरिज

विलियम वर्ड्सवर्थ (१७७०-१८५०) की कविता में स्वच्छन्दतावाद की प्रायः सभी विशेषताएँ पुंजीभूत होकर विद्यमान हैं। २८ वर्ष की अवस्था तक इस कवि का दृष्टिकोण अस्थिर था तथा वह निर्धारित नहीं हो पाया था। अतः उसकी प्रारम्भिक रचनाएँ अधिक महत्त्व नहीं रखतीं। फ्रांस की राज्य-क्रान्ति ने पहले उसके मन को आशा और उत्साह से भर दिया किन्तु, उस विप्लव के समय प्रदर्शित स्वार्थ और क्रूरता ने उसके चित्त में घृणा उत्पन्न कर दी। लगभग इन्हीं वर्षों में, अर्थात् १७९२-९८ के बीच के काल में कुछ समय तक उसका मन विषादग्रस्त था। सेमुअल टेलर कोलरिज से उसका साहचर्य हुआ और धीरे-धीरे मन में दृढ़ता और प्रसन्नता आयी। दोनों मित्रों के सहयोग से सन् १७९८ में **लिरिकल बैलेड्स** नामक काव्यसंग्रह पहले पहल प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा संस्करण सन् १८०० में निकला। **लिरिकल बैलेड्स** में वर्ड्सवर्थ की कई प्रसिद्ध और सफल रचनाएँ संकलित हैं। कवि ने प्रकृति और मानव-प्राणी को एक नवीन दृष्टि से देखा और अपनी भावनाओं का प्रकाशन नवीन शैली में किया। उसका विश्वास था कि कविता लघुतम विषय और पदार्थ पर लिखी जा सकती है क्योंकि स्वभावतः वह सामान्य जीवन के निकट है। उसके लिए कृत्रिम भाषा का माध्यम आवश्यक नहीं क्योंकि जन-साधारण की भाषा में सुन्दर कविता लिखी जा सकती है। **लिरिकल बैलेड्स** की कविताएँ इन्हीं आधारभूत सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर लिखी गयी थीं तथा उनसे कवि के प्रकृति-प्रेम और जीवन-दर्शन का पता चलता है। सन् १८०५ में वर्ड्सवर्थ ने अपने **प्रील्यूड** नामक काव्य की रचना समाप्त की।

प्रील्यूड का विषय कवि का मानसिक और आध्यात्मिक विकास है। प्रकृति ने उसके मन को किस प्रकार प्रभावित किया, उसके मन की उलझनें किस प्रकार शान्त हुई, तथा मानव प्राणियों के प्रति उसके मन में सहानुभूति किस प्रकार जाग्रत हुई, इन सभी विषयों पर प्रकाश डाला गया है। सन् १८०७ में

कविताओं का एक और संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें कई महत्त्वपूर्ण ओड और सानेट सम्मिलित थे। सन् १८१४ में **एक्सकर्सन** नामक विस्तृत काव्य प्रकाशित हुआ जिसकी पृष्ठभूमि दार्शनिक है। तदुपरान्त सानेटों के दो संग्रह निकले **रीवरडइन** के सानेट १८२० में, तथा **एबलेजियस्टिकल** सानेट १८२२ में। इस महाकवि ने अपने दीर्घ जीवन-काल में प्रचुर काव्य-रचना की, यहाँ पर केवल उसकी प्रमुख काव्य रचनाओं का उल्लेख किया गया है।

वर्ड्सवर्थ का काव्य नैतिक और दार्शनिक आधार पर रचा गया है। उत्कट प्रकृति-प्रेम से वह प्रेरित है। कवि ने प्रकृति की विराट और सजीव सत्ता को अखिल संसृति में व्याप्त माना है। अपने इस रूप में प्रकृति मनुष्य को शान्ति प्रदान करती है और उसके सहारे हम संघर्ष और द्वन्द्व से ऊपर उठ सकते हैं। साथ ही साथ प्रकृति में ही नैतिकता का उत्स भी मिलता है। **लिरिकल बॅलेड्स** की भूमिका में वर्ड्सवर्थ ने काव्य-शैली को बोलचाल की भाषा के निकट लाने का प्रयास किया किन्तु उनकी कविता में सदैव इस आदर्श का निर्वाह नहीं हुआ है। मिल्टन की विशिष्ट शैली की छाप अनेक स्थलों पर दिखाई पड़ती है। वर्ड्सवर्थ रचित प्रभूत काव्य आकर्षण और वैशिष्ट्य में समान नहीं है। सर्वोत्कृष्ट रचनाएँ २८ वर्ष से लेकर ४० वर्ष की उम्र तक लिखी गयीं और इसके बाद कवि की प्रतिभा क्षीण होने लगी। कतिपय आलोचकों का मत है कि इस कवि की छोटी कविताएँ बड़ी कविताओं से अधिक सफल ह। सभी बातों को ध्यान में रखकर यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं हो सकता कि वर्ड्सवर्थ स्वच्छन्दतावाद आन्दोलन के प्रमुख नेता एवं महाकवि थे।

सेमुअल टेलर कोलरिज (१७७२-१८३४) वर्ड्सवर्थ के मित्र, सहयोगी तथा स्वच्छन्दतावाद के समर्थक कवि थे। कवि रूप में कोलरिज की उत्कृष्ट कविताएँ अत्यन्त अल्प हैं और उनकी संख्या लगभग ६-७ से अधिक नहीं हैं। **दी राइम आफ दी एनशेण्ट भेरिनर, कुबला खॉ, क्रिस्टावेल, यूथ एण्ड एज, दी ओड टू फ्रांस, डिजेक्शन**। 'दी राइम आफ दी एनसियेण्ट मेरिनर' अंग्रेजी भाषा की श्रेष्ठ मौलिक कविताओं में है। वर्णन की सुस्पष्ट संक्षिप्तता, कथात्मक प्रगति, सूक्ष्म विवरण तथा मध्यकालीन चमत्कारपूर्ण परिवेश में यह कविता अपना विशिष्ट स्थान रखती है। यह पाप जन्य ग्लानि और

पश्चात्ताप से मुक्ति विषयक एक दुःखान्त रचना है और सब जीवों के प्रति प्रेम रखना इसका नैतिक संदेश है।

कुबला खाँ, यद्यपि अंश रूप में ही लिखी गयी है तथापि, अंग्रेजी साहित्य में कदाचित् सर्वाधिक सूक्ष्म प्रभाववाली कविता है। इसमें रम्य वर्णन, अतुलनीय संगीतात्मकता, कल्पनात्मक सांकेतिकता, शब्द-चित्र तथा सशक्त काव्य-शैली का प्राचुर्य है। क्रिस्टावेल एक मध्ययुगीन ऐन्द्रजालिक कथा पर आधृत है जिसमें विलक्षण वातावरण की सृष्टि कर पाप तथा पुण्य की परस्पर-विरोधी शक्तियों का अनन्त संघर्ष दिखाया गया है। **डिजेक्शन, ऐन ओड**, कवि की करुण व्यथा की अभिव्यक्ति है। इसमें वह कल्पना की सर्जनात्मक शक्ति के क्षीण होने पर नैराश्य और असफलता का अनुभव करता है। इस कविता में यत्र-तत्र दुरूह आध्यात्मिकता आ गयी है। कतिपय दार्शनिक सिद्धान्तों की जितनी पूर्ण अभिव्यंजना इस कविता में हुई है उतनी कोलरिज की किसी अन्य कविता में नहीं। संक्षेप में, जिस प्रकार वर्ड्सवर्थ प्रकृतिवाद का प्रधान प्रतिनिधि कवि था, वैसे ही कोलरिज कल्पनाप्रवण स्वच्छन्दतावाद का।

समीक्षा के क्षेत्र में उसकी सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं, **बायोग्राफिया लिटरेरिया और लेक्चर्स आन शेक्सपियर**, जिनमें पहली कृति कदाचित् अंग्रेजी आलोचना की सबसे महान् पुस्तक है और दूसरी के आधार पर कोलरिज शेक्सपियर का प्रथम महान् समीक्षक माना जाता है। कोलरिज ही प्रथम व्यक्ति था जिसने काव्य की संश्लेषणात्मक और अलौकिक शक्ति को “कल्पना” की संज्ञा प्रदान की। उसके मतानुसार कल्पना अनेकता की पृष्ठभूमि में विद्यमान एकता का बोध कराती है। यह वह तत्त्व है जो पदार्थ और मन की पार्श्वभूमि में विद्यमान रहता है, वह प्रज्ञा है जो पदार्थ, मन और शक्ति को परिचालित करती हुई ईश्वरीय शक्ति से मिलाती है। कोलरिज ही प्रथम व्यक्ति था जिसने भाव-तरंग अर्थात् फैंसी और कल्पना अर्थात् इमैजिनेशन का भेद प्रस्तुत किया। निस्सन्देह अन्तर्दृष्टि की स्थिरता और विचार-गाम्भीर्य में यह सबसे महान् अंग्रेज आलोचक है।

वर्ड्सवर्थ, कोलरिज और **राबर्ट सदी** (१७७४-१८४३) को लेक पोयट्स कहते हैं क्योंकि इन लोगों ने जीवन के कुछ वर्ष लेक डिस्ट्रिक्ट नामक सुन्दर

प्रदेश में व्यतीत किये। इंग्लैंड का यह भू-भाग अपनी प्राकृतिक शोभा के लिए सुविख्यात है। सदी की प्रतिभा वर्ड्सवर्थ और कोलरिज के समान उच्च कोटि की नहीं थी। उसने विभिन्न देशों की पुरानी कथाओं के आधार पर कई महाकाव्य लिखे। **थलाबा** (१८०१), **मैडाक** (१८०५), **दी कर्स आफ केहामा** (१८१०), **डन राडेरिक** (१८१४)। इनके अतिरिक्त सदी ने कई बैलडों और मुक्तकों की रचना की। प्रचुर मात्रा में काव्य-रचना करने पर भी इस कवि को उच्चतम साहित्यिक महानता प्राप्त नहीं हुई क्योंकि इसके काव्य में सौष्ठव और वैशिष्ट्य की कमी है। सदी की गद्य रचना अधिक लोकप्रिय हुई विशेषकर **लाइफ आफ नेलसन** (१८१३)। उन्होंने **ब्राजील का इतिहास** और **लाइफ आफ वेसले** भी लिखा। इन ग्रंथों में सदी ने स्पष्ट एवं प्रवाह-युक्त गद्य शैली का प्रयोग किया है।

सर वाल्टर स्काट

सर वाल्टर स्काट (१७७१-१८३२) की काव्य कृतियाँ उपर्युक्त तीन कवियों की रचनाओं से अनेक बातों में भिन्न हैं। इनको स्काटलैण्ड के प्राचीन इतिहास से प्रेम था और उसी की घटनाओं को लेकर इन्होंने ओजपूर्ण रचनाएँ प्रस्तुत कीं। दक्षिणी स्काटलैण्ड के प्रचलित लोक-गीतों का इन्हें अच्छा ज्ञान था। अतः वैलड काव्य की विशेषताएँ भी इनकी रचनाओं में समाविष्ट हुई। इनकी निम्न लिखित रचनाएँ सन् १८०५-१८१३ के बीच में अत्यन्त लोकप्रिय थीं। **दी ले आफ दी लास्ट मिन्स्ट्रेल** (१८०५), **मारमियन** (१८०८), **दी लेडी आफ दी लेक** (१८१०), **राकबी** (१८१३)। सन् १८१३ के बाद सर वाल्टर स्काट उपन्यास-रचना में संलग्न हुए। उनके उपन्यास-लेखन के सम्बन्ध में हम आगे चलकर लिखेंगे।

अंग्रेजी स्वच्छन्दतावाद की दूसरी पीढ़ी के तीन प्रमुख कवि थे बायरन, शेली और कीट्स। पहली पीढ़ी के कवियों की अपेक्षा इनकी राजनीतिक चेतना अधिक तीव्र तथा सर्वतोमुखी थी। यह बात बायरन और शेली के सम्बन्ध में ही सत्य है क्योंकि कीट्स ने अपने को समकालीन राजनीति से तटस्थ रखा तथा कल्पना और सौन्दर्य के लोक में स्वच्छन्द विचरण किया। **लार्ड**

जार्ज गार्डन बायरन (१७८८-१८२४) अद्भुत व्यक्ति थे। सम्भ्रान्त कुलोत्पन्न इस कवि ने अपने युग की सामाजिक, धार्मिक और पारिवारिक मान्यताओं को चुनौती देकर क्रान्ति का सन्देश प्रसारित किया। कविता का उनका आदर्श एक साथ ही प्राचीन और नवीन था। उनका व्यंग्य काव्य पोप की और उनकी रचनाओं की सजीवता ड्राइडेन की याद दिलाती है, किन्तु स्वच्छन्द और अनियंत्रित स्वर उनकी नवीन एवं निजी विशेषता है। जीवन और साहित्य में लार्ड बायरन ने असीम ओज और शक्ति प्रदर्शित करके समस्त यूरोप में ख्याति प्राप्त की। इनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ तीन श्रेणियों में विभक्त की जा सकती हैं, वर्णनात्मक काव्य, नाटक तथा व्यंग्य काव्य। इन तीनों प्रकार की रचनाओं में उनको सफलता मिली। वर्णनात्मक कविताओं में **चाइल्ड हेराल्ड** (१८१२), नाटकों में **केन** तथा व्यंग्यात्मक रचनाओं में **डान जुआन** सर्वोत्कृष्ट माने जाते हैं।

सर्वप्रथम लार्ड बायरन की **आवर्स आफ़ आइडिलनेस** नामक कविता (१८०७) में प्रकाशित हुई। इसकी स्काटलैण्ड के पत्रों में बड़ी कड़ी आलोचना हुई और कवि ने क्रुद्ध होकर **इंगलिश वार्ड्स एण्ड स्काच रिव्यूअर्स** (१८०९) नामक व्यंग्य काव्य की रचना की जो पोप के **डनसीएड** के ढंग पर लिखा गया है। तदुपरान्त बायरन के वर्णनात्मक काव्य प्रकाशित हुए; **चाइल्ड हेराल्ड** (१८१२) **दी गीओर**, **दी ब्राइड आफ़ एवोडास**, **दी कोरसेयर** इत्यादि। **मैनफ्रेड** नामक नाटक काव्य १८१७ में तथा बायरन की इस कोटि की सर्वोत्कृष्ट रचना **केन** सन् १८२१ में प्रकाशित हुई। इन नाटकों में कवि ने प्राचीन कथाओं की नवीन व्याख्या प्रस्तुत की है जिससे उसकी अपनी मनोवृत्ति का पता चलता है। सन् १८१८ के बाद कवि की शैली तथा अभिव्यक्ति के ढंग में परिवर्तन आने लगा और सफल व्यंग्यात्मक रचनाएँ इन्हीं अन्तिम वर्षों में लिखी गयीं। जैसा हम कह चुके हैं, इन रचनाओं में **डान जुआन** सुविख्यात है।

बाल्यकाल से ही लार्ड बायरन का जीवन उच्छृंखल था तथा उनके मन में समाज के प्रति विद्रोह की भावना विद्यमान थी। उनके मन का विषाद भी उनके काव्य में प्रतिध्वनित हुआ है। अनैतिकता और विद्रोह के समर्थक इस कवि में अहंकार के साथ दलितों के प्रति सहानुभूति छिपी है। उनके जीवन का अन्त यूनान की स्वतंत्रता के लिए युद्ध में हुआ।

पसी बीशी शेली (१७९२-१८२२) का कल्पना-प्रवण काव्य बायरन के काव्य से भिन्न है। बायरन का दृष्टिकोण बौद्धिक और व्यंग्यात्मक था, शेली आदर्शवादी एवं भविष्यद्रष्टा कवि थे। इनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाओं में भावी स्वर्णिम युग का सन्देश मिलता है। **क्वीन मैब** (१८१३), **दी रिबोल्ट आफ इस्लाम** (१८१७) तथा **प्रमीथीयस अनबाउण्ड** (१८२०) में कवि भावी सुख और शान्ति की कल्पना करता है। **एलैस्टर** (१८१६) तथा कतिपय अन्य कविताओं में कवि अपने एकाकीपन तथा जीवन के कठोर अनुभव को अत्यन्त प्रभावोत्पादक ढंग से व्यक्त करता है। **प्रमीथीयस अनबाउण्ड** और **चेन्ची** नामक नाटक काव्यात्मक हैं तथा प्राचीन नाटकों की परिपाटी पर लिखे गये हैं। **एपीसाइकीडियन** प्लेटो से प्रभावित प्रेमकाव्य है तथा **एडोनिस** जान कीट्स की मृत्यु पर लिखा हुआ विषाद-काव्य है।

अल्पायु में ही शेली की मृत्यु हो गयी तथा पारिवारिक झंझटों से वे अनेक वर्षों तक उद्विग्न रहे। तब भी जीवन के उज्ज्वल आदर्श और भावी सुख-शान्ति में उनकी अमोघ आस्था थी। इसीलिए उनका काव्य इतना आकर्षक बन गया। कुछ विद्वान् उनके काव्य की अस्पष्टता के कारण उनको महाकवि मानने में संकोच करते हैं। इस बात में शैली ब्लेक के समक्ष हैं और जिस प्रकार ब्लेक की महत्ता अब स्वीकार होने लगी है उसी प्रकार शेली का यश भी अब प्रायः सर्वमान्य हो गया है। जैसी तीव्र अनुभूति, कल्पना की प्रखरता, तथा माधुर्य इस कवि की कृतियों में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। मानव और प्रकृति के प्रति शेली के मन में सहज प्रेम था तथा सौन्दर्य के प्रति उसका आकर्षण केवल ऐहिक मात्र नहीं था। शेली स्वच्छन्दतावाद के प्रमुख कवि हैं तथा उन्मुक्त कल्पना और भावना का अत्यन्त रोचक प्रकाशन इनकी रचनाओं में हुआ है। उनके काव्य में प्रवाह और शक्ति है तथा उनकी दृष्टि भावी युगों पर केन्द्रित है। क्रान्ति के समर्थक इस भविष्यद्रष्टा कवि ने अपनी कविता और अपनी भावना के प्रतीक रूप में 'वेस्ट विड' अर्थात् पश्चिमी प्रभंजन पर अपनी सुन्दर एवं सुविख्यात कविता लिखी है। प्रभंजन की भाँति वह अनियन्त्रित शक्ति द्वारा प्राचीन रूढ़ियों और बंधनों को विनष्ट करके भावी जीवन का संदेश देने के लिए उत्सुक था।

जान कीट्स (१७९५-१८२१) शेली के मित्र थे और दोनों की समाधि आसपास बनी हुई है। दोनों का ही निधन अल्पायु में हुआ, अतः उनकी प्रौढ़ वय की रचनाओं से संसार वंचित रहा। इस समानता के होते हुए भी कीट्स स्वभाव और काव्यादर्श की दृष्टि से शेली से भिन्न थे। उनका प्रयोजन विशुद्ध कविता तथा सौंदर्योपासना से था। अतएव अपने सामयिक प्रश्नों में उनकी अभिरुचि तनिक भी न थी। वर्तमान और भविष्य के प्रति निरपेक्ष होकर उन्होंने सौंदर्य की खोज प्राचीन यूनानी तथा मध्यकालीन जीवन और कला में की। शेली भविष्य का स्वप्न देखता था, किन्तु कीट्स की दृष्टि बीते हुए युगों पर पड़ी जहाँ से अपने काव्य के लिए सौंदर्य के अंश एकत्र किये। यूनानी कथाओं से सम्बन्धित उसके द्वारा तीन काव्य लिखे गये। **एंडिमियन १८१८, लेमिया और हाइपेरियन १८२०।** **एंडिमियन** एक यूनानी पुराकथा को लेकर लिखा हुआ विस्तृत काव्य है जिस पर स्पेंसर और शेक्सपियर का प्रभाव द्रष्टव्य है। नवयुवक कवि कीट्स ने इस रचना में सौंदर्य और माधुर्य का असीम समावेश किया है। अतः उनका अतिरेक हो गया है और कविता का सौष्ठव भी कहीं-कहीं नष्ट हो गया है। **क्वाटर्ली रिव्यू** में **एंडिमियन** की अत्यन्त कटु समीक्षा प्रकाशित हुई जिससे कीट्स के मन को आघात पहुँचा। अन्य दोनों कविताएँ **लेमिया** और **हाइपेरियन १८२०** में साथ ही साथ प्रकाशित हुई। कथानक और वर्णन की दृष्टि से **लेमिया** अत्यन्त सफल है। **हाइपेरियन** में टाइटन्स के पतन की कथा कही गयी है और उसकी शैली पर मिल्टन का प्रभाव है। मध्यकाल से सम्बन्ध रखनेवाली रचनाएँ **ईसाबेला, सेंट एग्नीस ईव, ला बेला डैमसैन्स मर्सी** इत्यादि अत्यन्त उपयुक्त एवं रोचक वातावरण का निर्माण करने में समर्थ हैं। कीट्स को सबसे अधिक सफलता अपने ओड्स में मिली। इनमें काव्य-कला का चरम उत्कर्ष और परिष्कार मिलता है।

सौन्दर्य-प्रेम और कला-कुशलता में कीट्स अपने समकालीन कवियों में अद्वितीय थे। जीवन, कला और प्रकृति में उन्होंने सौंदर्य को ढूँढ़ा और पाया। उनकी कविता स्वभावतः संयत और शान्त है। उससे शक्ति और गति का आभास नहीं मिलता, अपितु स्थिर सौन्दर्य को ही वह प्रस्तुत करती है। वाक्य-वाक्य और शब्द-शब्द में इस कवि ने सुन्दर और आकर्षक प्रभाव को समाविष्ट

किया है। उसकी कला सूक्ष्म और सुनिर्मित है। यदि कीट्स कुछ दिन तक और जीवित रहते तो अंग्रेजी साहित्य को अधिक समृद्ध बनाते। किन्तु जो रचनाएँ आज उपलब्ध हैं उनको ध्यान में रखते हुए २६ वर्ष की वय में इस संसार को छोड़नेवाले कवि कीट्स की सफलता पर आश्चर्य होता है।

अन्य कवियों की रचनाएँ

स्वच्छन्दतावाद के युग के अन्य कवियों का संक्षिप्त उल्लेखमात्र पर्याप्त होगा। **आयरिश कवि टामस मूर** (१७७१-१८५२) ने बायरन और सर वाल्टर स्काट की भाँति रोमानी कथाओं को छंदबद्ध किया। उसकी रचना **लाला रुख** विशेष लोकप्रिय हुई। **आयरिश मेलोडीज** में आयरलैण्ड निवासियों की आशा-आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति हुई है और अपने समय में इन कविताओं का प्रचलन विस्तृत रीति से हुआ। **सैम्युअल राजर्स** ने लार्ड बायरन का अनुकरण किया। उनके **इटली** नामक काव्य ने विशेष यश प्राप्त किया। इनके अतिरिक्त ले हंट, कैम्पबेल, लंडर आदि ने भी काव्य-रचना की।

स्वच्छन्दतावादी उपन्यासकार

होरेस वालपोल तथा मिसेस रैडक्लिफ के भय और आतंक से परिपूर्ण रोमानी उपन्यासों की परम्परा स्वच्छन्दतावाद के काल में जीवित रही। कई लेखकों ने इस प्रकार की रचना की। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं **मैथ्यू ग्रेगरी**, **लीबिस** इत्यादि। **जेन आस्टेन** (१७७५-१८१७) के उपन्यास एक दूसरी ही कोटि के हैं। उनमें क्लासिकी सौम्यता एवं सफाई है और उनका वातावरण कूपर और क्रैब की रचनाओं की याद दिलाता है। जेन आस्टेन हेम्पशायर के पादरी की पुत्री थीं और उनका सारा जीवन शान्त ग्राम्य वातावरण में व्यतीत हुआ था। उस समय के गाँवों में रहनेवाले समृद्ध उच्च मध्यम वर्ग के परिवारों के रहन-सहन का अपना निजी अनुभव था जिसको उन्होंने अपनी कथाओं का आधार बनाया है। उनके लिखे हुए प्रायः आधे दर्जन उपन्यास हैं :—**सेन्स एण्ड सेन्सीबिलिटी** (१८११), **प्राइड एण्ड प्रेज्यूडिस** (१८१३), **मैन्स फील्ड पार्क** (१८१४), **एम्मा** (१८१५) **नार्थंगर ऐबी** तथा **परसुएशन** (१८१८)। इन

उपन्यासों में जीवन का एक सीमित खण्ड मात्र चित्रित हुआ है। किन्तु अपनी लघु परिधि में वे जीवन का अत्यन्त सूक्ष्म और सफल निरूपण करते हैं। उपन्यास कला में जेन आस्टेन अत्यन्त प्रवीण थीं। वस्तु-विन्यास, चरित-चित्रण, कथोपकथन, वर्णन इत्यादि में उनको समान रूप से आश्चर्यजनक सफलता मिली है। इन सबों से संकलित प्रभाव ऐक्य उत्पन्न होता है जो प्रत्येक उपन्यास को एक सजीव अन्विति का रूप देता है। जेन आस्टेन के व्यंग और शैली में भी वैशिष्ट्य है। इस महिला उपन्यासकार की धवल कीर्ति दिन प्रतिदिन फैलती जा रही है और इनकी परिगणना अंग्रेजी के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासकारों में है। स्वच्छन्दतावाद के युग में लिखे जाने पर भी इनकी रचनाएँ रोमानी प्रभाव से सर्वथा मुक्त हैं। इसी काल में एक दूसरी महिला **मेरिया एजवर्थ** ने (१७६७-१८४९) सफल उपन्यास रचना की। इनकी कथाएँ आयरलैण्ड निवासियों के जीवन की अभिव्यक्ति करती हैं। इनके प्रसिद्ध उपन्यासों के नाम हैं—**बेलिन्डा** (१८०१), **टैल्स आफ फॉर्नेबिल लाइफ** (१८०१)।

सन् १८१४ में सर वाल्टर स्काट का पहला उपन्यास **वेवरली** प्रकाशित हुआ। तदुपरान्त क्रम से लगातार आजीवन उनके उपन्यास निकलते रहे। इन उपन्यासों की संख्या इतनी बढ़ी है कि यहाँ उनका नाम तथा उनके प्रकाशन की तिथि देना सम्भव नहीं। केवल यह लिख देना पर्याप्त होगा कि ये उपन्यास महारानी एलिजाबेथ के युग से लेकर १८वीं शताब्दी के अन्त तक के सम्पूर्ण काल से सम्बन्धित हैं और स्काट ने न केवल स्काटलैण्ड के इतिहास वरन् इंग्लैण्ड के इतिहास से भी सामग्री प्राप्त की। इसके अतिरिक्त **आइबेन हो**, **क्वेण्टिन डार्वर्ड** तथा **टेलिसमैन** में कथा मध्ययुगीन परिवेश में विकसित होती है। स्काट के पूर्व अंग्रेजी में ऐतिहासिक नाटकों का अभाव था और केवल ऐतिहासिक रोमानी कथाएँ उपलब्ध थीं। स्काट ने अपने गम्भीर ऐतिहासिक ज्ञान तथा देशप्रेम के सहारे कल्पना और यथार्थ को मिलाकर ऐतिहासिक नाटकों की परम्परा प्रारम्भ की। उनकी प्रखर कल्पना, तीव्र अनुभूति तथा सहानुभूति की क्षमता ने उनके उपन्यासों को अत्यन्त आकर्षक बना दिया है। जेन आस्टेन ने जीवन के लघु अंश मात्र को प्रस्तुत किया है किन्तु इसके विपरीत सर वाल्टर स्काट ने वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के विराट चित्र अंकित

किये हैं। उनके पात्र भी सभी स्तरों से लिये गये हैं। इस प्रकार उनकी कला सार्वभौम है। और फलतः उनके उपन्यासों का सारे यूरोप ने स्वागत किया। इन उपन्यासों का कलापक्ष कुछ त्रुटिपूर्ण भी है क्योंकि वे जल्दी में लिखे गये थे और स्वभावतः स्काट कला तथा निर्माण-पद्धति पर विशेष ध्यान नहीं देते थे। तब भी प्रभावोत्पादकता में ये उपन्यास बेजोड़ हैं और अब भी चाव से पढ़े जाते हैं।

यह आश्चर्य की बात है कि स्वच्छन्दतावाद के लगभग इन तीस वर्षों में अधिकांश दार्शनिक और राजनीतिक चिन्तन रोमानी प्रभाव से अछूता रहा। केवल कोलरिज ने जर्मन दार्शनिकों की पद्धति अपनायी तथा सहज ज्ञान और कल्पना पर बल दिया। अन्य विचारक तर्क एवम् जेरेमी बैन्थम द्वारा प्रवर्तित उपयोगितावाद के सिद्धान्त से प्रभावित थे। रेकार्डों ने उसी प्रभाव से प्रेरित होकर व्यापार से नियंत्रण हटाने की माँग की तथा माल्थस ने जनवृद्धि का अपना प्रसिद्ध सिद्धान्त प्रतिपादित किया। सिडनी स्मिथ तथा विलियम काब्रेट के लेखों और भाषणों में भी तर्क और बौद्धिकता का ही प्राधान्य है। साहित्यिक आलोचना की वह परिपाटी जिसका सूत्रपात स्काटलैण्ड की पत्रिकाओं में हुआ था सजीव बनी रही। **दी एडिनबरा रिव्यू**, **क्वाटर्लीरिव्यू**, **ब्लैक उड्स मैगैजिन** सभी नवीन लेखकों और विशेषतः नवीन कवियों के प्रति अत्यन्त असहिष्णु थे। अपनी कटु तथा पक्षपातपूर्ण समीक्षाओं से उन्होंने साहित्यिक समालोचना का स्वरूप ही विकृत कर दिया। किन्तु इसी काल में नवीन स्वच्छन्दतावादी आलोचना का आविर्भाव हुआ। कोलरिज ने अपने मौलिक चिन्तन द्वारा नवीन सिद्धान्तों की स्थापना की तथा हैज़लिट ने प्रभाववादी आलोचना की रीति अपनायी। चार्ल्स लैब तथा डीक्विंसी द्वारा लिखित समालोचनाएँ भी सुरुचिपूर्ण एवम् सौन्दर्यपरक हैं।

इस काल में गद्य का चरम उत्कर्ष निबन्धों में दिखाई पड़ता है। वैयक्तिक-साहित्यिक निबन्धों की परम्परा यहीं से प्रारम्भ होती है। इसके पूर्व निबन्धों में विषय की प्रधानता रहती थी, किन्तु अब विषय गौण हो गया और लेखक का प्रधान उद्देश्य आत्म-प्रकाशन हो गया। इन निबन्धकारों में निश्चय ही **चार्ल्स लैब** (१७७५-१८३४) सर्वश्रेष्ठ थे। प्रारम्भिक साहित्यिक जीवन में

इन्होंने प्राचीन नाट्य साहित्य के चुने हुए अंश संकलित और सम्पादित किये। निबन्ध-लेखन इनका बहुत पहले से होता रहा, किन्तु इनको वास्तविक सफलता १८२० और १८३० के बीच में मिली। **एसेज आफ़ इलिया** में संगृहीत निबन्ध इसी दशक में लिखे गये। चार्ल्स लैब के इन निबन्धों पर उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप है। उनके जीवन के दुःखद और सुखद अनुभव सर्वत्र व्यवत हुए हैं। हास्य और विपाद घुल मिलकर सामने आते हैं और शैलीगत चमत्कार से युक्त इन निबन्धों का आकर्षण और भी बढ़ जाता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण चार्ल्स लैब को अंग्रेजी निबन्धकारों का सम्राट् कहते हैं। लैब के मित्र **विलियम हैज़लिट** (१७७८-१८३०) भी पत्रकार, निबन्ध-लेखक और आलोचक थे किन्तु कई बातों में चार्ल्स लैब से वह भिन्न थे। लैब में राजनीतिक चेतना का अभाव था, किन्तु हैज़लिट आजीवन राजनीतिक क्रान्ति के समर्थक बने रहे। लैब का स्वभाव जितना ही कोमल था हैज़लिट का उतना ही तीव्र। आलोचक की हैसियत से हैज़लिट का स्थान लैब से ऊँचा है। इनके लेखों और भाषणों ने प्राचीन अंग्रेजी साहित्य पर प्रकाश डाला। हैज़लिट आलोचना के नियमों से बँधे हुए नहीं थे वरन् अपने मन पर पड़नेवाले प्रभाव को ही साहित्यिक परख का मान दण्ड मानते थे। इनके **दी राउण्ट टेबिल, टेबिलटाक** आदि में प्राप्य निबन्ध अत्यन्त वैशिष्ट्यपूर्ण हैं।

लेहंट (१७८४-१८५९) मुख्यतः पत्रकार थे, किन्तु उनके कुछ चुने हुए निबन्ध साहित्यिक महत्त्व रखते हैं। **डीक्विंसी** (१७८५-१८५९) अपनी विशद और दुरूह शैली के लिए स्मरण किये जाते हैं। जर्मन आध्यात्म-दर्शन तथा साहित्य का उन्हें अच्छा ज्ञान था। अतः पांडित्य के लक्षण भी उनके लेखों में मिलते हैं। उन्होंने **दी कन्फेशन आफ़ ऐन इंगलिश ओपियम ईटर** (१८२१) तथा कुछ अन्य लेखों में स्वप्न जगत् की सृष्टि की। कोलरिज की भाँति इनको भी अफीम खाने की बुरी आदत थी और कोलरिज के क्रिस्टाबेल और एनशेंट मेरिनर की भाँति ही स्वल्पल वातावरण निर्माण करने में डीक्विंसी को विशेष सफलता मिली है। **वाल्टर सैवेजलैण्डर** के जीवन और साहित्य में एकाकीपन का आभास मिलता है। उनकी रुचि अत्यन्त परिष्कृत थी तथा उनका संतुलित क्लासिकी गद्य अपनी सफाई में बेजोड़ है। उसके सौन्दर्य की परख सुशिक्षित

और सुरुचि सम्पन्न पाठक ही कर सकते हैं। दी इमेजिनरी कनवर्सेशन्स में प्राचीन और अर्वाचीन पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप के माध्यम द्वारा विचार व्यक्त किये गये हैं। इस ग्रन्थ का विशेष आकर्षण लेखक की शैली में ही मिलता है। स्वच्छन्दतावाद के युग में लैंडर के क्लासिकी लेख अपवाद स्वरूप थे। टामस लभ पीकाक (१७८५-१८६६) अपने युग के साहित्यिक प्रवाह से अलग खड़े होकर व्यंग्य और हास्यपूर्ण मनोवृत्ति से उसे देखते रहे। इनके निबंधों तथा कथाओं में स्वच्छन्दतावाद के प्रति अनास्था प्रकट हुई है।

नवम अध्याय

महारानी विक्टोरिया के युग का अंग्रेजी साहित्य

(१८३२-१८८०)

महारानी विक्टोरिया सन् १८३७ में सिंहासनारूढ़ हुईं तथा उनका दीर्घ राज्यकाल उनकी मृत्यु के साथ सन् १९०१ में समाप्त हुआ। चिन्तन और साहित्य की दृष्टि से नवीन युग का प्रारम्भ हम सन् १८३२ से मान सकते हैं। सन् १८३२ में सर वाल्टर स्काट की मृत्यु हुई तथा पार्लिमेंट का सुधार कानून भी उसी वर्ष पास हुआ। बायरन, शेली, कीट्स पहले ही दिवंगत हो चुके थे। कोलरिज अस्वस्थ होकर सन् १९३४ तक जीवित रहे, तथा वर्ड्सवर्थ के जीवन के अन्तिम वर्षों में उनके कवित्व का स्रोत सूखने लगा था। १८३२ से नवीन उदार प्रवृत्तियाँ प्रगट होने लगीं, पार्लिमेंट के चुनाव सम्बन्धी नियमों में और शिक्षा में सुधार तथा गुलामी प्रथा का अन्त हुआ। यही नवीन प्रवृत्तियाँ महारानी विक्टोरिया के शासन-काल में सन् १८८० तक बलवती रही और उसके बाद नवीन प्रभावाँ के आघात से विछिन्न होने लगीं। अतएव १८३२ से लगाकर १८८० तक के साहित्य में वैविध्य होने पर भी सामान्य एकरूपता भी मिलती है। विक्टोरियन युग के साहित्य से प्रधानतः इन्हीं लगभग ५० वर्षों के साहित्य का बोध होता है।

विरोधी शक्तियों का प्राबल्य

इस युग के साहित्य का विवेचन सरल नहीं है क्योंकि इसमें निरन्तर विरोधी शक्तियाँ काम करती रहीं। कभी-कभी इन विपरीत शक्तियों का सामंजस्य भी हुआ, अतः इस युग के साहित्य के विद्वान् विवेचकों ने सामंजस्य की बात कही है। इस प्रकार की संतुलित व्यवस्था का सबसे अच्छा उदाहरण टेनिसन की कविता में मिलता है।

ये विरोधी प्रवृत्तियाँ कौन-सी थीं, इसका जानना भी आवश्यक है। स्वच्छन्दतावाद का महत्त्व १८३२ के लगभग क्षीण होने लगा, किन्तु उसकी

विशेषताओं का नितान्त लोप नहीं हो गया। संपूर्ण विक्टोरियन युग में विभिन्न रूपों में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ प्रगट होती रहीं। ईसाई धर्म का जो रूप ट्रेक्टेरियन आन्दोलन तथा न्युमन और उनके सहयोगियों के विचारों में प्रकाशित हुआ उसका सम्बन्ध स्वच्छन्दतावाद से था। इसी प्रकार जिस उदारता और दलितों के प्रति सहानुभूति का प्रकाशन इस युग के पूर्वार्द्ध की कविता और उपन्यास में हुआ उसका भी स्रोत स्वच्छन्दतावादी भावनाओं में था। टेनिसन और मैथ्यू आरनल्ड तक की कविताओं में भी न्यूनाधिक मात्रा में स्वच्छन्दतावादी उपकरण उपस्थित हैं। इन प्रवृत्तियों के विरोध में तर्क, उपयोगितावाद, भौतिकवाद इत्यादि के नवीन प्रभाव सबल और सक्रिय हो उठे थे। इस सम्बन्ध में जेरेमी बेन्थम, कावेट, कामटे इत्यादि के मतों का उल्लेख किया जा सकता है। आगे चलकर डार्विन, हक्सले, टेन इत्यादि की वैज्ञानिक स्थापनाओं से भौतिकवाद एवं तर्कवाद को विशेष शक्ति मिली। यदि हम पचास वर्षों के इस पूरे युग पर एक विहंगम दृष्टि डालें तो यह पता चलता है कि उसके पूर्वार्द्ध में प्रजातान्त्रिक उदारता प्रगति कर रही थी और उत्तरार्द्ध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्राधान्य था। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विक्टोरियन युग में जिस साहित्य का सर्जन हुआ उसमें विविध तत्त्वों का मिश्रण और प्रचुर वैविध्य मिलता है।

जिन विरोधी प्रवृत्तियों का हमने उल्लेख किया है वे गद्यलेखन के क्षेत्र में स्पष्ट रूप से द्रष्टव्य हैं। कई प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण लेखकों ने अपने युग के भौतिकवादी एवम् यथार्थवादी आदर्श को अस्वीकार करते हुए मध्ययुग की उपलब्धियों की ओर संकेत किया तथा भविष्य में समाज में प्रगति कैसी हो, इसकी रूपरेखा प्रस्तुत की। दूसरी ओर ऐसे लेखक थे जो अपने युग-प्रवाह में बहे और जिनकी रचनाओं में इंग्लैण्ड की आर्थिक और व्यापारिक उन्नति एवम् वैज्ञानिक अभ्युत्थान का प्रकाशन हुआ। इन दोनों प्रकार के प्रमुख लेखकों के सम्बन्ध में कुछ लिखना आवश्यक है।

आदर्शवादी लेखक

आदर्शवादी भावुक लेखकों में अग्रगण्य थे टामस कार्लाइल (१७९५-१८८१)। उनका जन्म और उनकी शिक्षा दीक्षा स्काटलैण्ड में हुई थी तथा

जर्मन दर्शन और साहित्य के वे निष्णात पंडित थे। विशेषतः जर्मन आदर्शवादी चिन्तकों तथा गेटे के काव्य से वे प्रभावित हुए थे। उनकी प्रतिभा के दो पक्ष थे। एक ओर तो वे व्यंग्यपूर्ण दृष्टि से अपनी समसामयिक सामाजिक व्यवस्था को देखते थे और दूसरी ओर अपनी कल्पना द्वारा अनागत युगों का दर्शन करते थे। भविष्य-द्रष्टा होने के नाते उनके कथनों में विचित्र ओज आ गया है। उनकी शैली बहुत सुलझी हुई अथवा निखरी हुई नहीं है, किन्तु तेजस्विता से ओत-प्रोत है। इनका प्रथम महत्त्वपूर्ण ग्रंथ **सारटर रिसार्ट्स** (१८३३-४) जर्मन प्रभाव में लिखा गया है और इसमें वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन में बाह्य आकृति और आंतरिक यथार्थ के भेद को स्पष्ट किया गया है। इसके उपरान्त कार्लाइल ने कई ऐतिहासिक ग्रंथ लिखे। इनमें **फ्रेंच रिवोल्यूशन** (१८३७) **क्रामवेल्स लेटर्स एण्ड स्पीचेज** (१८४५), **फ्रेडरिक** (१८५८-६५) प्रमुख हैं। आगे चलकर कार्लाइल ने उन महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की जिनसे उनके गंभीर-चिंतन का पता चलता है। **हीरोज एंड हीरो वर्शिप** में उनके उस प्रसिद्ध सिद्धान्त का निरूपण हुआ है जिसके अनुसार मानव-स्वभाव में शक्ति सम्पन्न तथा नायकत्व के गुणों से विभूषित महज्जनों के प्रति श्रद्धा स्वाभाविक रीति से उत्पन्न होती है। नायक वही होते हैं जो जीवन्त होते हैं तथा जिनमें अन्य जनों की अपेक्षा शक्ति का संचार अधिक होता है। प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे ही व्यक्ति नेतृत्व करते हैं। **पास्ट एंड प्रजेन्ट** तथा कुछ अन्य रचनाओं में कार्लाइल ने अपने युग की राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं पर विचार प्रकट किये हैं। मध्ययुगीन व्यवस्था की तुलना में आधुनिक व्यवस्था कैसी प्रतीत होती है इसकी ओर उन्होंने बार-बार संकेत किया है। इन सभी ग्रंथों में कार्लाइल की आदर्शप्रियता की छाप दिखाई पड़ती है। अपने युग पर उनके विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा, यद्यपि उन्होंने प्रचलित भौतिकवाद तथा विक्टोरियन आर्थिक व्यवस्था की तीव्र आलोचना की।

जान रस्किन (१८१९-१९००) कार्लाइल के प्रशंसक और उनकी भाँति ही सामाजिक सुधार के उद्देश्य से प्रेरित थे। कला और जीवन में उन्होंने सौन्दर्य की खोज की तथा स्वार्थ और विद्रूपता के उन्मूलन के लिए अथक प्रयत्न किया। इनकी ओजस्वी वाणी और सफल लेखनी ने विक्टोरियन युग की

स्वार्थपरायणता तथा उसके अनैतिक दर्शन को प्रबल चुनौती दी । अपने साहित्यिक जीवन के प्रारम्भ में इनका ध्यान कला सम्बन्धी समस्याओं पर केन्द्रित हुआ । **माडर्न पेंटर्स** (१८४३-६०), **दी सेवेन लैंप्स आफ आर्कीटेक्चर** (१८४९), **दी स्टोन्स आफ वेनिस** (१८५१-३) में चित्रकारी तथा वास्तु-कला में उन्होंने मध्ययुगीन आदर्शों को नवजागरण युग के कला विषयक आदर्शों पर वरीयता प्रदान की । मध्ययुग की आस्था और आध्यात्मिक भावना को उन्होंने कला का प्राण बताया और केवल भौतिक तथा इन्द्रियपरक सौन्दर्य को अपेक्षाकृत तुच्छ ठहराया । कुछ वर्षों बाद रस्किन के वे ग्रंथ प्रकाशित हुए जिनमें उन्होंने नवीन आर्थिक व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया है । उपयोगितावादी विचारकों ने और परम्परागत अर्थशास्त्र ने जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक एवं कलात्मक उद्देश्यों की नितान्त अवहेलना करते हुए ऐसे सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था जिनमें उच्चतर भावनाओं के लिए कोई स्थान न था । रस्किन ने इस घोर व्यापारिकता और स्वार्थपरायणता की निन्दा की तथा उदार व्यावसायिक और आर्थिक व्यवस्था की माँग की । रस्किन प्रभावशाली वक्ता एवं अत्यन्त सफल गद्य लेखक थे । इनकी विस्तृत शैली में लिखा हुआ गद्य कभी-कभी अपने काव्यात्मक गुणों के कारण अत्यन्त चमत्कार-पूर्ण प्रतीत होता है । दूसरी कोटि के ग्रन्थों में **अनटू दिस लास्ट** (१८६२), **सेसेम एंड लिलीज** (१८६५) **मुनर्वा पुल वेरिस** (१८७२) विशेष उल्लेखनीय हैं ।

कार्लाइल और रस्किन की भाँति ही **मैथ्यू आरनल्ड** (१८२२-१८८८) ने भी अपने युग की स्वार्थपरता की कड़ी आलोचना की । सम्पत्ति संचय करने-वाली विक्टोरियन युग की समृद्ध अंग्रेज जाति सौन्दर्य, कला और नैतिकता की उपेक्षा करती थी । अतः आरनल्ड ने उसे बर्बर तथा ढोंगी कहकर उसकी भर्त्सना की । इस अराजकता में उन्होंने सुधार और व्यवस्था उत्पन्न करने के लिए परिष्कृत और सुसंस्कृत जीवन की आवश्यकता पर बल दिया । उनका आग्रह था कि जीवन में अधिकाधिक मात्रा में माधुर्य और प्रकाश का समावेश हो, तभी सुख और उन्नति की उपलब्धि हो सकती है । मैथ्यू आरनल्ड प्राचीन काव्य-परम्परा के समर्थक थे और अपने देश के साहित्य को उन्होंने क्लासिकी प्रतिमानों पर आँकने की चेष्टा की । यूनानी साहित्य, फ्रांसीसी साहित्य तथा

अठारहवीं शताब्दी का क्लासिकी साहित्य इन सबों को इन्होंने उत्तम एवं अनुकरणीय सिद्ध किया। साथ ही साथ अंग्रेजी साहित्य पर पड़नेवाले केल्टिक प्रभाव से उत्पन्न विशेषताओं की सुन्दर व्याख्या उन्होंने प्रस्तुत की। आरनल्ड अपने युग के महान आलोचक थे। उन्होंने साहित्य और जीवन को अभिन्न रूप से सम्बद्ध माना है और इनका प्रसिद्ध कथन है कि साहित्य जीवन की समीक्षा मात्र है। इनकी पुस्तकें या तो साहित्य से सम्बन्ध रखती हैं अथवा उनमें धार्मिक विषयों की चर्चा है। दोनों ही प्रकार की कृतियों से आरनल्ड की तीव्र संवेदना, विद्वत्ता एवं उदारता का पता चलता है। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—**आन ट्रांसलैटिंग होमर (१८६१)**, **दी स्टडी आफ केल्टिक लिटरेचर (१८६७)**, **सेन्ट पाल एण्ड प्रोटेस्टेंटिज्म (१८७०)**, **एसेज इन क्रिटिसिज्म (१८६५-१८८८)**, **कल्चर एण्ड एनारकी (१८६९)**, **लिटरेचर एण्ड डॉगमा (१८७३)**, **गाड एण्ड दी बाइबिल (१८७६)**। आरनल्ड की गद्य शैली अत्यन्त सुस्पष्ट एवं परिष्कृत है।

जैसा हम ऊपर बता आये हैं, कार्लाइल, रस्किन और आरनल्ड ने अपने युग की अतिशय बौद्धिकता एवं स्वार्थपरायणता का विरोध किया। इसी प्रकार उस धार्मिक आन्दोलन का प्रभाव जिसे आक्सफोर्ड मूवमेन्ट कहते हैं स्वच्छन्दतावाद के अनुकूल तथा तार्किकता और भौतिकवाद के प्रतिकूल था। इस आन्दोलन का प्रारम्भ आक्सफोर्ड के केबुल और पुसी ने किया। इन लोगों ने ईसाई धर्म को तर्क से हटाकर अनुभूति एवं रहस्यवाद की ओर मोड़ा। आगे चलकर **हेनरी न्यूमन (१८०१-९०)** इस सम्प्रदाय के प्रतिनिधि लेखक और विचारक के रूप में प्रसिद्ध हुए। इन्होंने तथा इनके साथियों ने रोमन कैथोलिक मत को अपनाया। इनके ग्रन्थ मुख्यतः धार्मिक विषयों पर लिखे गये हैं। विश्व-विद्यालय विषयक इनके भाषण और लेख भी मूलरूप से धार्मिक विश्वासों से ही प्रेरित हैं। न्यूमन प्राचीन साहित्य के पंडित थे तथा उनका गद्य साहित्य सरल एवं गम्भीर चिन्तन के फलस्वरूप वैशिष्ट्यपूर्ण है।

युग की प्रमुख प्रवृत्ति

अभी तक जिन लेखकों के बारे में हमने लिखा है वे विक्टोरियन युग की मूल प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते। हम उनको केवल अपवाद के रूप

में समझ सकते हैं। १८वीं शताब्दी से चली आनेवाली तर्कवादी परम्परा इस युग में पूर्णरूपेण विकसित हुई तथा नवीन दार्शनिक और वैज्ञानिक चिन्तन से इसे अपूर्व शक्ति मिली। युग की इस प्रमुख प्रवृत्ति का पता हमें दार्शनिकों और वैज्ञानिकों द्वारा विरचित ग्रन्थों से लगता है। उपयोगितावाद और कामटे के निश्चयवाद को इस युग में स्वीकृति मिली। **चार्ल्स डार्विन** (१८०९-८२) के विकासवाद ने मानव चिन्तन की पद्धति को एक नितान्त नवीन दिशा प्रदान की। **जान स्टुअर्ट मिल** (१८०६-७३) ने राजनीति अर्थशास्त्र एवं दर्शन की समस्याओं पर अभिनव चिन्तन किया एवं **हरवर्ट स्पेन्सर** (१८२०-१९००) ने निश्चयवाद के सिद्धान्तों की नवीन और सुस्पष्ट व्याख्या की। इतिहास लेखकों ने भी तर्कपूर्ण वैज्ञानिक शैली अपनाई। उन्होंने तथ्यों के निष्पक्ष अध्ययन द्वारा निष्कर्ष निकाले और उन्हें सुस्पष्ट शैली में प्रगट किया। **हेनरी बकल** (१८२१-६२) **लेकी** इत्यादि ने इतिहास लेखन का स्तुत्य कार्य किया। किन्तु इन सबसे कहीं अधिक महत्वपूर्ण लेखक थे **टामस बैबिंगटन मैकाले** (१८००-५९) जिनके निबन्ध और इतिहास ग्रन्थ आज भी रोचक प्रतीत होते हैं। मैकाले को ऐतिहासिक तथ्यों का अतुलनीय ज्ञान था और इन्होंने उन तथ्यों को स्पष्ट और सन्तुलित शैली में प्रेषित किया है। विचार एवं तर्क की सफाई के कारण एवं अपनी शैली की विशेषता द्वारा मैकाले अपने समकालीन तर्कवादी परम्परा से सम्बन्धित हैं, किन्तु उनके लेख उत्साह और शक्ति से परिपूर्ण हैं।

कथा साहित्य की उन्नति

महारानी विक्टोरिया के युग में अंग्रेजी कथा साहित्य में अप्रत्याशित उन्नति हुई। न केवल उपन्यास लेखकों की संख्या बहुत बढ़ गयी, वरन् उनमें से कुछ ने बहुसंख्यक रचनाएँ प्रकाशित कीं। उपन्यास लिखने और पढ़ने की प्रथा प्रचलित हो रही थी और इस युग की पत्र-पत्रिकाओं में क्रमिक रीति से उपन्यास प्रकाशित होते थे जिनको बाद में पुस्तक का रूप मिलता था। इन उपन्यास लेखकों में कई कारणों से **चार्ल्स डिकेन्स** (१८१२-७०) अग्रगण्य थे। अपने साहित्यिक जीवन के प्रारम्भ में उन्होंने **स्केच्ज़ बाई बाज** (१८३६) तथा **पिकविक पेपर्स** (१८३६-७) पाठकों को भेंट की। **पिकविक पेपर्स** अंग्रेजी में

हास्यरस की सर्वोत्कृष्ट कृतियों में है। इसमें क्रमबद्ध कथावस्तु का अभाव है, किन्तु पात्र-कल्पना और परिस्थितियों द्वारा लेखक ने असीम रोचकता उत्पन्न कर दी है। इसके बाद **आलिवर ट्रिस्ट** (१८३२) की रचना हुई जिसमें यथार्थ चित्रण के साथ करुणा का मिश्रण हुआ है। **निकोलस निकलबी** (१८३८-९) में यथार्थ और हास्य, दी **ओल्ड क्युरियासिटी शाप** (१८४१) में यथार्थ तथा करुण रस का मेल है। **बारनबी रज** (१८४१) ऐतिहासिक उपन्यास है जिसका वस्तु-विन्यास सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। **मार्टिन-चजलवित** (१८४४) डिकेंस की अमेरिका यात्रा के फलस्वरूप लिखा गया। १८४३ और ४८ के बीच में लेखक ने अपनी क्रिसमस सम्बन्धी कथाएँ लिखीं जिनमें **क्रिस्मस केराल** सबसे अधिक प्रसिद्ध हुई। **डाम्बी एंड सन्स** १८४८ में लिखा गया। डिकेंस की सबसे सफल रचना **डेविड कापरफील्ड** (१८५०) है जो लेखक के अपने निजी जीवन के अनुभवों पर आधारित है। इसके अतिरिक्त **ब्लीक हाउस** (१८५३), **हार्ड टाइम्स** (१८५०) **दी टेल आफ टू सिटीज** (१८५९), **ग्रेट एक्सपेक्टेशन्स** (१८६०) और **अवर मुचुअल फ्रेंड** (१८६०) चार्ल्स डिकेंस के अन्य उपन्यास हैं।

डिकेंस की बहुसंख्यक रचनाओं में यथार्थ, हास्य, करुणा तथा भावुकता का अपूर्व मिश्रण मिलता है। अपने युग की सामाजिक समस्याओं की ओर लेखक ने सफलतापूर्वक पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया। तत्कालीन जीवन में किस प्रकार अन्याय और क्रूरता निहित थी इसका पता डिकेंस के उपन्यासों से लगता है। इन रचनाओं के प्रकाशित होने के उपरान्त कई कुप्रथाओं के सुधारने की चेष्टा हुई। डिकेंस का स्वभाव सहानुभूतिपूर्ण एवं भावुक था। अतएव उसकी रचनाओं में विचित्र संवेदनशीलता आ गयी है। परिस्थितियों और पात्रों की कल्पना में डिकेंस को इतनी सफलता मिली कि उसके उपन्यासों के अनेक अंश बार-बार ध्यान में आते हैं। डिकेंस अंग्रेजी के महान उपन्यासकारों में हैं और उनकी रचनाओं का प्रभाव अंग्रेजी सांस्कृतिक परम्परा में आत्मसात् हो गया है। उनकी रचनाओं में एक अनुपम विशालता और उदारता है। मानवता का चित्रण विराट् धरातल पर किया गया है। अतः इन उपन्यासों को पढ़ने से जीवन की समग्रता की प्रतीति होती है।

चार्ल्स डिकेंस ने अपने उपन्यासों में सामान्य जनों की सामाजिक और

आर्थिक अवस्था का चित्रण किया किन्तु **विलियम मेकपीस थैकरे** (१८११-६३) का ध्यान मुख्यतः अभिजात वर्ग पर केन्द्रित हुआ और उसी के क्रिया-कलापों के आधार पर उन्होंने उपन्यास-रचना की। थैकरे १८ वीं शताब्दी और उसके साहित्य की ओर आकृष्ट हुए और उनकी रचनाओं में स्विफ्ट, फील्डिंग, एडिसन इत्यादि का प्रभाव स्पष्ट रूपेण प्रगट हुआ है। उनका व्यंग्यपूर्ण यथार्थवादी दृष्टिकोण इन्हीं पुराने लेखकों की याद दिलाता है। कल्पना की बहुलता तथा भावातिरेक को वे संशयभरी दृष्टि से देखते थे। अपने सामाजिक तथा ऐतिहासिक उपन्यासों में उन्होंने रचना-सौष्टव का अच्छा परिचय दिया है। शुरू में उन्होंने व्यंग्यात्मक लेख लिखे। इनमें से अधिकतर पंच नामक पत्र में प्रकाशित हुए और बाद में **बुक आफ स्नाव्स** नामक ग्रन्थ में संगृहीत किये गये। थैकरे के व्यंग्यात्मक लेखों के और भी कई संग्रह निकले। उनके प्रथम उपन्यास **दी लक आफ बॅरी लिन्डन** (१८४४) में एक उच्छृंखल पात्र अपने अनैतिक अनुभवों को उत्साह और गर्वपूर्वक प्रगट करता है। **वैनिटी फेयर** (१८४७-४८) थैकरे की महान कृति है। इसमें उच्च मध्यम वर्ग के सामाजिक जीवन तथा उसमें छिपी हुई बुराइयों का अत्यन्त सजीव निरूपण हुआ है। बेकी शार्प की चरित्र-कल्पना अत्यन्त सफलतापूर्वक हुई है। अतः अनेक पाठक उससे प्रभावित होते हैं। थैकरे के अन्य सामाजिक उपन्यास **पेन्डेनिस** (१८५२) और **न्यूकम्स** (१८५३) हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों के लिखने में लेखक को विशेष सफलता मिली है। **हेनरी एसमान्ड** जिसमें महारानी एन के राजत्व काल की घटनाओं का उपयोग किया गया है, अंग्रेजी के सर्वोत्कृष्ट ऐतिहासिक उपन्यासों में गिना जाता है। थैकरे के सामाजिक उपन्यासों के कथावस्तु-निर्माण में जो ढीलापन मिलता है उसका इसमें नितान्त अभाव है। अतः निर्माण-पद्धति की दृष्टि से यह लेखक की सर्वाधिक सफल कृति है। डिकेन्स और थैकरे समकालीन लेखक थे तथा किसी अंश में एक दूसरे के पूरक भी थे। डिकेन्स की उदार भावुकता के स्थान पर थैकरे में व्यंग्य और यथार्थ निरूपण की प्रवृत्ति अधिक प्रमुख थी, और जैसा हम कह आये हैं, डिकेन्स को साधारण जीवन का वास्तविक ज्ञान था किन्तु थैकरे ने उच्च वर्ग के जीवन को ही अपने उपन्यासों में अंकित किया है।

डिकेन्स और थैकरे के अतिरिक्त ऐतिहासिक और राजनीतिक उपन्यासों के दो अन्य लेखक भी उल्लेखनीय हैं। **दी लास्ट डेज आफ पाम्पेई** (१८३४) के लेखक **एडवर्ड बुलवरलिटन** (१८०३-७३) बायरन और स्काट से प्रभावित थे। उनके कई उपन्यासों के नायक अपने अनियंत्रित और विलासितापूर्ण जीवन से बायरन एवं उनके काव्य के कतिपय नायकों की याद दिलाते हैं। **बेन्जामिन डिजरेली** (१८०४-८१) के **विवियन ग्रे** (१८२६-२७) नामक उपन्यास में भी एक उच्छृंखल पात्र की जीवन-कथा वर्णित है। डिजरेली के अन्य उपन्यास **कनिंग्सबाइ** (१८४४), **सिविल** (१८४५), **टैन्क्रेड** (१८४७) राजनीति विषयक हैं और उन पर लेखक के जीवन तथा उसके निजी अनुभवों की छाप है। **ब्रान्टी** बहनों **सारलेट ब्रान्टे** (१८१६-५५), **एमली ब्रान्टे** (१८१८-४८) की रचनाओं में स्वच्छन्दतावाद पुनः जाग्रत हो उठा है। **सारलेट ब्रान्टे** के प्रसिद्ध उपन्यास **जेन आयर** (१८४७) तथा यदा-कदा उनकी अन्य रचनाओं में भी जीवन के यथार्थ निरूपण और सामाजिक समस्याओं के प्रति व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण के साथ-साथ तीव्र अनुभूति और प्रबल भावनाओं का सम्मिश्रण मिलता है। **एमली ब्रान्टे** की सुविख्यात कीर्ति **उर्दरिंग हाइट्स** (१८४७) में स्वच्छन्दतावादी उपकरण और भी प्रमुख होकर विद्यमान हैं। दुख-द्वन्द्व तथा तीव्र भावना की अभिव्यक्ति आंचलिक पृष्ठभूमि में अत्यन्त सफलता पूर्वक हुई है।

मिसेज गैस्केल (१८१०-६५) को सामाजिक जीवन तथा उसकी आपत्तिजनक प्रथाओं के चित्रण में विशेष सफलता मिली है। **डिकेन्स** ने **आलिबर ट्विस्ट** में यथार्थ निरूपण की जिस पद्धति का सूत्रपात किया था उसे इस लेखिका ने आगे बढ़ाया। **मैन्चेस्टर** के श्रमिक और दलित वर्ग के निवासियों के जीवन का इन्हें विस्तृत ज्ञान था, अतः साधिकार इन्होंने उसका निरूपण किया। इनमें सहानुभूति की कमी न थी इसलिए इनके उपन्यास और भी प्रभावपूर्ण बन गये हैं। इनके उपन्यासों, **मेरी बारटन** (१८४८), **नार्थ एण्ड साउथ** (१८५५) और **रूथ** (१८५३) में सूक्ष्म निरीक्षण, यथार्थ चित्रण एवं दलितों के प्रति संवेदना के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं।

चार्ल्स किंग्सले (१८१९-७५) धर्मोपदेशक और समाज-सुधारक थे। उनके उपन्यास **ईस्ट** (१८४८) तथा **ऐल्टन लाक** (१८५०) इसी सुधारवादी

प्रयोजन से प्रेरित हैं। उनको हैपेशिया (१८५३) और वेस्टवर्ड हो (१८५५) नामक उपन्यासों में अधिक सफलता मिली। चार्ल्स रीड के ऐतिहासिक उपन्यास **बी कल्वायस्टर एण्ड दी हार्थ** (१८६७) में नवजागरण काल का अत्यन्त सुन्दर चित्रण हुआ है। उनके अन्य उपन्यास **इट इज नेवर टू लेट टु मेंड** (१८५३), **हार्डकैश** इत्यादि यथार्थवादी शैली में लिखे गये हैं। **विल्की कालिन्स** (१८२४-८९) ने अपने उपन्यासों में संशय और भय का वातावरण उत्पन्न किया है। इनके कथानक अत्यन्त जटिल होते हैं। उनमें वर्तमान युग के जासूसी उपन्यासों का पूर्वाभास मिलता है।

एन्थनी ट्रोलोप (१८१५-८८) अपने युग के उपन्यास लेखकों में जीवन के यथार्थ निरूपण में सबसे अधिक सफल सिद्ध हुए। उनकी रचनाएँ कभी-कभी जेन आस्टेन की याद दिलाती हैं। ग्राम्य-जीवन के अत्यन्त सफल और सुस्पष्ट चित्र ट्रोलोप के उपन्यासों में मिलते हैं। अपनी कल्पना और भावना को अलग रखकर इस लेखक ने परिस्थितियों और पात्रों का यथा-तथ्य निरूपण किया है; तब भी रोचकता की कमी कभी नहीं खटकती। इनके सफल उपन्यास **दी वार्डन** (१८५५), **बारचेस्टर टावर्स** (१८५७) और **दी लास्ट क्रोनिकल आफ बारसेट** (१८६७) अपने समय में अत्यन्त लोकप्रिय थे, यद्यपि उनके पढ़नेवालों की संख्या आज अत्यन्त अल्प है। **लैवेन्गो** (१८५१) और **रोमानी राई** (१८५७) के लेखक **जार्ज बारो** (१८०३-८१) भी यथार्थवादी थे, यद्यपि उनकी रचनाओं में स्वच्छन्दतावादी विशेषताएँ भी परिलक्षित हुई हैं। **जार्ज ईलियट** अर्थात् **मेरी ऐन इवन्स** (१८१९-८०) ने अंग्रेजी उपन्यास में कतिपय नवीन विशेषताओं का समावेश किया। उनका मानसिक विकास नैतिक एवं धार्मिक वातावरण में हुआ था और अंग्रेजी ग्रामीण जीवन का उन्हें अच्छा ज्ञान था। इन सभी बातों से उनकी रचनाएँ प्रभावित हुईं। इन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि इस लेखिका ने अपने उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक तथ्यों का उपयोग किया। पात्रों की आशाओं, आकांक्षाओं तथा संकल्पों-विकल्पों का सुन्दर प्रकाशन हुआ है। **जार्ज ईलियट** की पहली रचना **सोन्स आफ क्लेरिकल लाइफ** (१८५७) ग्राम्य जीवन के सुन्दर चित्र प्रस्तुत करती है। **एडमबीड** (१८५९) में एक नवयुवती को केन्द्र बनाकर

एक विषम सामाजिक समस्या पेश की गयी है। लेखिका के अन्य उपन्यास **दी मिल आन दी फ्लास** (१८६०), **साइलस मारनर** (१८६१), **फेलिस्क होल्ट और मिडिल मार्च** (१८७२) भी वस्तु-विन्यास, पात्र-कल्पना, वातावरण एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की दृष्टि से सफल तथा अत्यन्त रोचक हैं। उनका ऐतिहासिक उपन्यास **रैमोला** (१८६३) उतना सफल नहीं हुआ है।

जार्ज ईलियट की भाँति **जार्ज मेरिडिथ** (१८२८-१९०९) ने भी अपने उपन्यासों में जीवन की गम्भीर समस्याओं की ओर ध्यान दिया। मनोविज्ञान, दार्शनिकता, एवम् सूक्ष्म व्यंग्य के कारण मेरिडिथ के उपन्यास सर्वसाधारण के लिए बोधगम्य नहीं हैं। अतएव उनकी लोकप्रियता दिन प्रतिदिन घटती जा रही है। मेरिडिथ जीवन की विषमता और कुरूपता की ओर उन्मुख हुए और उनका उद्घाटन ही उनके उपन्यासों का अंतिम ध्येय है। अतः हास्य और व्यंग्य उनके लिए अत्यन्त उपयोगी साधन हैं। अपने सर्वप्रथम तीन उपन्यासों में लेखक ने जीवन में भावना की उपादेयता को विषय बनाकर नवयुवकों की शिक्षा और विकास की समस्या पर प्रकाश डाला है। इन उपन्यासों के नाम हैं—**दी आरडियल आफ रिचर्ड फेबरेल** (१८५९), **इवान हेरिंगटन** (१८६०), और **हैरी रिचमंड** (१८७०) **विक्टोरिया** (१८६६) ऐतिहासिक उपन्यास है तथा **विचैम्पस केरियर** (१८७६) राजनीतिक उपन्यास है। **रोडा फ्लेमिंग** (१८६५), **डायाना आफ दी क्रासवेज** (१८८५) और **दी इगोइस्ट** (१८७७) में नारी-स्वातंत्र्य की समस्या को अत्यन्त सहृदयतापूर्वक व्यक्त किया गया है। **दी इगोइस्ट** उनकी सबसे सफल कृति है। मेरिडिथ की शैली अत्यन्त परिष्कृत और सशक्त है।

सैमुअल बटलर (१८३५-१९०२) के दोनों उपन्यास **एरीवान** (१८७२) और **दी वे आफ आल फ्लेश** (१९०३) अपने तीखे व्यंग्य के लिए प्रसिद्ध हैं। लेखक ने इन कृतियों में धर्म, समाज और राजनीति में प्रचलित अव्यवस्था की कटु आलोचना की है।

टेनिसन, ब्राउनिंग आदि कवि

विक्टोरियन युग में गद्य का विशेष महत्त्व था और उसी में अंग्रेज जाति का तत्कालीन विश्वास तथा जीवन-दर्शन प्रकट हुआ। अपेक्षाकृत कम महत्त्व

रखने पर भी कविता वैशिष्ट्यहीन न थी। स्वच्छन्दतावादी प्रभाव पूर्णरूपेण लुप्त नहीं हुआ था, किन्तु साथ-ही-साथ प्रायः सभी कवियों ने अपनी रचनाओं में क्लासिकी संयम तथा कलात्मक सौंदर्य को समाविष्ट करने का प्रयत्न किया। यह दोहरा प्रभाव टेनिसन की कविता में सर्वाधिक सुस्पष्ट हुआ है, किन्तु आर्नोल्ड, क्लफ़ तथा प्रीरैफेलाइट आंदोलन के कवियों में भी भावना के उद्वेग के साथ कलात्मक सौष्टव मिला हुआ दिखाई देता है।

अल्फ्रेड टेनिसन (१८०९-९२) ने लगभग ६० वर्षों तक काव्य-रचना की। ये अपने युग के प्रतिनिधि कवि थे। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इन्होंने अंग्रेजी काव्य को कलात्मक सौंदर्य प्रदान किया। स्वच्छन्दतावादी युग के कवि प्रायः भावना के प्रवाह में बह जाते थे और उनकी कला कभी-कभी विकृत हो जाती थी। कलापक्ष की ओर समुचित ध्यान देने के लिए उन्हें अवसर ही नहीं मिलता था। टेनिसन ने कलापक्ष को ही सर्वोपरि माना और आजीवन काव्यात्मक शैली को संवारते और निखारते रहे। इन्होंने अंग्रेजी काव्य में निहित माधुर्य को पाठकों के मनोरंजन के लिए उपलब्ध किया। इनकी दूसरी विशेषता यह थी कि इनका युग इनकी रचनाओं में मुखरित हो उठा। महारानी विक्टोरिया के युग का जीवन-दर्शन तथा उसके नवीन प्रतिमान टेनिसन की अनेक रचनाओं में आधारभूत तत्त्व बनकर विद्यमान हैं। **लावसले हाल** (१८४२), **दी प्रिंसेज** (१८४७), **इन मेमोरियम** (१८५०), **माड** (१८५५) आदि सभी कृतियों के सम्बन्ध में यह बात सत्य है। **इन मेमोरियम** की गणना अंग्रेजी के सर्वप्रसिद्ध अवसाद-काव्यों में होती है। इसमें विक्टोरियन युग में नवीन वैज्ञानिक ज्ञान के सम्पर्क से आस्था का विघटन किस प्रकार हो रहा था, इसका विस्तृत और सफल निरूपण हुआ है। टेनिसन ने कई नाटक भी लिखे जो पठनीय अवश्य हैं, किन्तु अभिनय के योग्य नहीं सिद्ध हुए। अपने अंतिम काव्य **इडिल्स आफ दी किंग** (१८५९-८५) में कवि ने मार्टी डी आर्थर की प्राचीन कथाओं को पद्यबद्ध किया है। पात्र और घटनाएँ पुरानी हैं, किन्तु इस काव्य पर टेनिसन के समकालीन जीवन की छाप मिलती है। टेनिसन महाकवि थे, इसको आज कुछ लोग मानने में संकोच करते हैं, यद्यपि अपने युग में उनका यश अत्यन्त विस्तृत और सुदृढ़ प्रतीत होता था। इतना तो निश्चित

है कि कला की जो प्रौढ़ता टेनिसन की रचनाओं में मिलती है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

राबर्ट ब्राउनिंग (१८१२-१८८९) की ख्याति प्रायः उतनी ही विस्तृत थी जितनी टेनिसन की। उनका विचार और भाव-पक्ष अत्यन्त सबल था। कला-पक्ष की उन्होंने सामान्यतः उपेक्षा ही की। दार्शनिक कवि के नाते ब्राउनिंग ने मन में उठनेवाले विचारों का विश्लेषण किया एवम् मानव जीवन में क्रिया को प्रेरित करनेवाले उद्देश्यों का उन्होंने उद्घाटन किया। अतएव इस महाकवि की रचना में एक सूक्ष्म दार्शनिक प्रभाव सदैव निहित रहता है जिसे सामान्य पाठक कठिनाई से ग्रहण कर पाता है। यही कारण है कि ब्राउनिंग की कविता दुरूह प्रतीत होती है। वैसे भी वे अपनी काव्यशैली को सरल और परिष्कृत बनाने में तनिक भी सचेष्ट न थे। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता है कि जान वृक्षकर उन्होंने उसे कुगढ़ और अस्पष्ट बना दिया है। उनकी **सार डैली** (१८४०) नामक कविता अनेक स्थलों पर पाठकों को अपनी दुरूहता और अस्पष्टता से चकित कर देती है। किन्तु यह मानना पड़ेगा कि कुछ ऐसे प्रगीत मुक्तक भी हैं जिनमें ब्राउनिंग की अभिव्यंजना अत्यन्त स्पष्ट एवम् माधुर्यपूर्ण हुई है। इससे यह सिद्ध होता है कि दुरूहता कवि की लापरवाही के कारण है, कलात्मक शक्ति की कमी के कारण नहीं।

ब्राउनिंग ने करीब आधे दर्जन नाटक लिखे हैं जो पठनीय हैं। इनकी अन्य रचनाओं में भी नाट्य तत्त्व की प्रधानता है। किसी एक पात्र के मुख से उन्होंने न केवल घटनाओं का वर्णन कराया है, वरन् विचारों और उद्देश्यों का विश्लेषणात्मक प्रकाशन भी। यही कार्य अनेक पात्रों के पारस्परिक कथोपकथन से भी सम्पन्न होता है। इनका प्रथम काव्य **पालीन** (१८३३) उतना सफल नहीं हुआ जितना इनका दूसरा काव्य **पारासेल्सस्** (१८३५)। नाटकों की रचना के उपरान्त इनके कई संग्रह प्रकाशित हुए :—**ड्रैमेटिक लिरिक्स** (१८४२), **ड्रैमेटिक रोमांसेज एंड लिरिक्स** (१८४५), **मेन एंड वीमेन** (१८५५) **ड्रैमेटिक पर्सोनी** (१८६४) **ड्रैमेटिक इडिल्स** (१८७९-८०)। इनकी अमर कृति **दी रिंग एंड दी बुक** (१८६८-९) में एक स्त्री की हत्या पर अनेक पात्र अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं। **पीपापासेज** (१८४१) में पीपा के गीत से

विभिन्न पात्रों के मन में उत्पन्न होनेवाली प्रतिक्रिया का प्रकाशन हुआ है। ब्राउनिंग की प्रतिभा अत्यन्त सजीव थी, इनकी मनोवृत्ति आशापूर्ण थी तथा अपने प्रिय दार्शनिक सिद्धान्तों में इनकी आस्था सुदृढ़ थी। इनका काव्य इनकी इस चित्तवृत्ति का द्योतक है।

श्रीमती ऐलिजाबेथ बैरेट ब्राउनिंग (१८०६-६१) और राबर्ट ब्राउनिंग का विवाह सन् १८४६ में हुआ। कवयित्री की सबसे सफल रचना **दी सानेट्स फ्राम दी पोर्चुगीज** उस समय लिखी गयी थी जब कुमारी ऐलिजाबेथ बैरेट और ब्राउनिंग का प्रणय-सम्बन्ध परिपक्व हो रहा था, अतः वह कोमल भावनाओं तथा तीव्र अनभूति से परिपूर्ण है। इसके पूर्व लिखी हुई कविताओं में बायरन और शेली का प्रभाव दिखाई पड़ता है। **अरोरा ले** (१८५७) पारिवारिक जीवन को विषय बनाकर लिखा हुआ एक विस्तृत काव्य है। ब्लैक वर्स में लिखे हुए इस महाकाव्य के सभी अंश समान रूप से सफल नहीं हुए हैं, किन्तु ऐसे अनेक स्थल हैं जहाँ सम्यक् आकर्षण मिलता है। **आर्थर ह्यू क्लफ** (१८१९-६१) अपने नैतिक दृष्टिकोण तथा प्रकृति-प्रेम द्वारा **वर्ड्सवर्थ** की याद दिलाते हैं। उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना **दी बोथी आफ टोवर ना बुओलिच** में आक्सफोर्ड के निकटवर्ती प्राकृतिक दृश्यों तथा प्रकृति द्वारा मन पर पड़नेवाले स्वस्थ प्रभाव का वर्णन है।

आर्थर ह्यू क्लफ के मित्र मैथ्यू आर्नोल्ड भी आक्सफोर्ड के निकटस्थ प्राकृतिक शोभा के प्रेमी थे। उनके प्रसिद्ध अवसाद काव्य **थिरिसिस** और **स्कालर जिप्सी** में उस प्राकृतिक वातावरण का सुन्दर चित्रण हुआ है। **थिरिसिस** की रचना क्लफ की मृत्यु पर हुई थी। आर्नोल्ड गम्भीर विचारक थे और उनके चिन्तन के प्रमाण उनकी प्रायः सभी कृतियों में मिलते हैं। उनकी काव्य-शैली सुस्पष्ट, संयत, तथा अनावश्यक अलंकरण से मुक्त है। शैलीगत इन क्लासिकी विशेषताओं के साथ-साथ कई रोमानी प्रभाव भी परिलक्षित हुए हैं। उत्कट प्रकृति-प्रेम, निराशा, अवसाद का स्वर, वर्तमान के प्रति उचाट की भावना आदि विशेषताएँ कभी **वर्ड्सवर्थ** और कभी बायरन का स्मरण दिलाती हैं।

जार्ज मेरेडिथ की कविताओं में विभिन्न प्रकार के प्रभाव एकत्र मिलते हैं। इनकी रचनाएँ कभी-कभी ब्राउनिंग की रचनाओं की भांति बोझिल और अस्पष्ट प्रतीत होती हैं। इनकी नीतिपरक एवं विचार-प्रवण कृतियाँ इनको

वर्ड्सवर्थ के समकक्ष रखती हैं। वर्ड्सवर्थ की भाँति ही इनका प्रकृति-प्रेम भी उत्कट था। अपने युग के बुद्धिवाद को इन्होंने ग्रहण किया था। कामटे के निश्चयवाद एवं डारविन के विकासवाद की छाप इनकी गद्य और पद्य रचनाओं में अनेक स्थलों पर मिलती है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं :—ओड्स इन कन्ट्री-व्यूशन टू दी सांग आफ फ्रेंच हिस्ट्री (१८९८), पोयम्स ऐंड लिरिक्स आफ दी ज्वाय आफ अर्थ (१८८३), लव इन वैली इत्यादि। कावेट्रीपैट मोर (१८२३-९६) अपने सुन्दर मुक्तक काव्य के लिए एवं विलियम एडवर्ड फिट्ज़जरल्ड (१८०९-८३) उमर खैयाम की रूबाइयों के सफल अनुवाद के लिए प्रसिद्ध हैं। रूबाइयों का नैराश्यपूर्ण स्वर और भी स्पष्ट और गम्भीर होकर जेम्स टामसन के दी सिटी आफ दी ड्रेडफुल नाइट (१८७४) में प्रगट हुआ।

प्रौरैफेलाइट भ्रातृ-मंडल की स्थापना

१८५० के आसपास प्रौरैफेलाइट भ्रातृमंडल की स्थापना हुई जिसके सदस्य कतिपय समान विचारवाले साहित्यिक एवं चित्रकार थे। सौन्दर्योपासना ही इस नवीन समुदाय का प्रधान धर्म था। इनके विश्वासों के फलस्वरूप एक नवीन अभियान प्रारम्भ हुआ जिसके प्रतिनिधि कवि रासेटी, मारिस और स्विनबर्न थे। इन लोगों ने नवजागरण काल की चित्रकला की अपेक्षा मध्ययुगीन काव्य और कला को वरीयता दी। राफेल के पूर्व की चित्रकला में सरल अभिव्यक्ति के साथ सौन्दर्य एवं रहस्य-भावना का भी चित्रण मिलता था। इन्हीं उपकरणों को लेकर प्रौरैफेलाइट भ्रातृमंडल के सदस्यों ने चित्रकला और काव्य को विकसित किया। काव्य और चित्रकला को उन्होंने एक दूसरे के निकट लाने का प्रयत्न किया और डी० जी० रासेटी एवं विलियम मारिस न केवल कवि, वरन् चित्रकार भी थे। प्रौरैफेलाइट कवि कीट्स के सौंदर्य-प्रेम से प्रभावित थे और उसके मध्ययुग सम्बन्धी काव्य से उन्होंने प्रेरणा प्राप्त की।

डी० जी० रासेटी (१८२८-८२) चित्रकारी और काव्य-रचना में समान रूप से सफल सिद्ध हुए। उनके काव्य में सुन्दर दृश्य-विधान की अवतारणा हुई है। उनकी प्रथम कविता जो अल्प वय में लिखी गयी थी, दी ब्लेसेड डेमोजेल, प्रौरैफेलाइट मत की सभी विशेषताओं से समन्वित है। धार्मिकता एवं

ऐहिक आकर्षण साथ-साथ मिलते हैं और इसी प्रकार चित्रमयता और रहस्य-भावना का भी सम्मिश्रण हुआ है। डी० जी० रासेटी के सानेट और बैलड काव्य में भी यही विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। इस मौलिक कलाकार ने ऐन्द्रियिक आकर्षण को ही अपनी रचना का प्रमुख आधार बनाया। इसलिए उसकी कटु आलोचना भी हुई। वंश-परम्परा से उसमें इटालियन रक्त प्रवाहित था, अतः ध्वनि-माधुर्य एवं शब्द-चित्रों से उसे विशेष प्रेम था। उसके बैलड काव्य में मध्ययुग के गेय मौखिक काव्य का अनुकरण हुआ है।

डी० जी० रासेटी की बहिन **क्रिश्चियाना रासेटी** (१८३०-९०) उच्च कोटि की कवयित्री थीं। उनकी धार्मिक आस्था अपने भाई की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ थी और उनकी काव्यशैली भी अपेक्षाकृत कहीं अधिक सरल है। आध्यात्मिक भावना से ओतप्रोत उनकी कतिपय रचनाएँ सत्रहवीं शती के आध्यात्मवादी कवियों का स्मरण दिलाती हैं। उनकी शिशु विषयक कविता **गाबलिन मार्केट** अत्यन्त सफल कृति है।

विलियम मारिस (१८३४-९६) के समाजवादी विचार तथा उनकी सुखद भविष्य की कल्पना उनके गद्य लेखों में प्रगट हुई है। **न्यूज फ्राम नो ह्वेवर** में ऐसी आदर्श सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है जिसमें कवि का मन रमता है। मारिस कला प्रेमी थे और चित्रकला एवं गृहस्थी की सजावट के सामान नियोजित करने में उनकी विशेष अभिरुचि थी। कथाकार की हैसियत से उनका सीधा सम्बन्ध मध्ययुग से है। चासर को वे अपना गुरु मानते थे और उनके प्रसिद्ध कथा-काव्य **दी लाइफ एंड डेथ आफ जेसन** (१८६७) **दी अर्थली पैराडाइज** (१८६८-७०) उच्च स्तर के वर्णनात्मक गुणों से समन्वित हैं। उनमें नाद और रूप रंग की व्यवस्था हमें स्पेन्सर की याद दिलाती है। कवि की अन्य कथाएँ स्कैन्डिनेविया की पुरा कथाओं, 'सागाज' पर आधृत हैं। इस प्रकार की महत्त्वपूर्ण रचना है **सीगर्ड दी वाल सुँगर** (१८७६)। इसके अतिरिक्त मारिस ने कुछ प्राचीन कथाओं का छन्दबद्ध अनुवाद भी किया। उनके मुक्तक जो **दी डिफेन्स आफ गिनिवीयर एण्ड अदर पोयम्स** (१८५८) और **पोयम्स बाई दी वे** (१८९१) में संगृहीत हैं, मौलिक आकर्षण रखते हैं। मारिस की लम्बी कथाएँ अतिशय विस्तार के कारण कतिपय

स्थलों पर नीरस होने लगती हैं किन्तु उनके मुक्तकों की रोचकता सदैव बनी रहती है ।

एलगरनान चार्ल्सस्विन बर्न (१८३७-१९००) अपने काव्य की अतिशय संगीतमयता के लिए प्रसिद्ध हैं । रासेटी अथवा मारिस की भाँति इन्होंने शब्दों द्वारा चित्र नहीं खींचे हैं । इनकी कविताएँ पढ़ते समय लय के प्रवाह में सब कुछ बह जाता है । गम्भीर विचार और कथा-वस्तु की सम्यक् नियोजना आदि की खोज विफल सिद्ध होती है । केवल स्वच्छन्दतावादी प्रेरणा तथा स्वर एवं व्यंजनों के समुचित सम्मिश्रण के साथ प्रवहमान लय और ध्वनि से आनन्द की प्राप्ति होती है । स्विन बर्न पर शेली और कतिपय फ्रांसीसी कवियों का प्रभाव पड़ा था और शेली की भाँति ही ये प्रेम के पुजारी थे । इनका दृष्टिकोण नितान्त ऐहिक था । **एटलान्टा इन कैलिडान** (१८६५) नामक नाटक में प्रगीतात्मक अंश सबसे सफल हैं । **पोयम्स एंड ब्रैलड्स** (१८६६) के कई खण्डों में कवि की उत्कृष्ट रचनाएँ संगृहीत हैं । स्विनबर्न ने ब्लेक, शेक्सपियर तथा उनके समकालीन अन्य नाटककारों पर सफल आलोचनाएँ भी लिखी हैं ।

दशम अध्याय

आधुनिक अंग्रेजी साहित्य

अंग्रेजी साहित्य के अन्तर्गत सन् १८३२ ई० तक रोमांटिक प्रणाली का आधिपत्य था और उसके उपरान्त ५० वर्षों तक तर्क और कल्पना, बौद्धिकता और भावना की विरोधी शक्तियाँ साथ-साथ अपना कार्य करती रहीं। इन विरोधी शक्तियों का समन्वय भी होता रहा और कम से कम कुछ वर्षों के लिए अंग्रेजी साहित्य के क्षेत्र में एक संतुलित व्यवस्था की स्थापना हो सकी। टेनिसन की कविता में सामंजस्य की झलक दिखाई पड़ती है। परिस्थिति में निरन्तर परिवर्तन होता रहा और सन् १८८० के लगभग नवीन विचारधारा के प्रबल आघात के कारण महारानी विक्टोरिया के राज्यकाल का यह संतुलन विनष्ट होने लगा। वैज्ञानिक विचार तथा जड़ दर्शन के सिद्धान्त तत्कालीन जीवन को प्रबल वेग से आप्लावित कर रहे थे। अतः उनका साहित्य पर प्रबल प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। आस्था और विश्वास के स्थान पर तर्क और अनुसंधान को महत्त्व मिला और अंग्रेज जाति के जीवन-दर्शन ने एक नवीन दिशा और शक्ति प्राप्त की। अंग्रेज बाह्य प्रभावों को ग्रहण करने में इसके पूर्व संकोच करते थे, किन्तु इस नवीन युग में फ्रांसीसी यथार्थवाद का अनुकरण करने में अंग्रेजी उपन्यासकारों ने तनिक भी संकोच नहीं किया। इसी भाँति अंग्रेजी कविता पर फ्रान्सीसी पारनेसियन, तथा प्रतीकवादी कविता का और अंग्रेजी नाटकों पर इब्सेन के यथार्थवादी नाटकों का प्रभाव विशेष रूप से पड़ा। फलतः अब अंग्रेजी साहित्य में सार्वभौमता की नवीन विशेषता का आविर्भाव हुआ। अमरीकी कवियों और कहानीलेखकों के प्रभाव से भी इसी प्रवृत्ति को बल मिला। २०वीं शताब्दी में यह विशेषता और भी स्पष्ट तथा बलवती हो गयी है। इसी सम्बन्ध में नवीन साहित्य में वैयक्तिकता की प्रबल चेष्टा का उल्लेख भी समीचीन होगा। पूर्ववर्ती काल में साहित्यिक आन्दोलनों का रूप निर्धारित करना अत्यन्त सरल

था, किन्तु आज स्थिति इतनी जटिल हो गयी है कि लेखकों और कवियों को विभिन्न समुदायों में बाँटना आसान नहीं है। अतएव उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं का अध्ययन ही अधिक वांछनीय है। जीवन इतना परिवर्तनशील और साहित्यिक विकासक्रम इतना तीव्र हो गया है कि प्रगति की परिधि और दिशा को स्पष्ट रूप से ग्रहण करना कठिन प्रतीत होता है। अतः ज्ञान की उत्कण्ठा और परिस्थिति की अनिश्चितता एक साथ ही उपस्थित होकर असंतोष उत्पन्न करती हैं। पिछले चालीस वर्षों के भीतर दो महासमर हुए जिन्होंने यूरोपीय जीवन को तह तक हिलाकर दीर्घकालीन विश्वासों का विध्वंस कर दिया। जीवन और साहित्य के मूल्य अनिश्चित हो गये तथा प्रत्येक महासमर के बाद निराशा और शोक ने यूरोप के प्रायः सभी देशों में जनता के जीवन को मलिन और विषाक्त बना दिया। दोनों ही महायुद्धों का गहरा प्रभाव अंग्रेजी साहित्य पर पड़ा और उनके फलस्वरूप जिन विशेषताओं का प्रादुर्भाव हुआ उनका उल्लेख यथास्थान किया जायगा। सामाजिक जीवन में भी क्रान्ति के चिह्न दिखाई पड़ते हैं। अंग्रेज स्त्रियों को चुनाव में मत देने का अधिकार मिल गया और जीवन के प्रत्येक विभाग में वे पुरुषों की बराबरी करने लगीं। महासमर के बाद अमरीकी स्त्रियों के समान ही अंग्रेज स्त्रियों ने भी श्रृंगार और आमोद-प्रमोद के ढंग सीख लिये। जीवन में सुविधा के नवीन साधन उपलब्ध हो गये और उसमें नयी रंगीनी आ गयी। इन सभी बातों का प्रभाव साहित्य पर पड़ा। अतः सन् १८८० से आज तक का साहित्य पूर्ववर्ती युगों के साहित्य से बहुत कुछ भिन्न है।

अंग्रेजी उपन्यास का अभूतपूर्व विकास

१९वीं शताब्दी में अंग्रेजी उपन्यास का अभूतपूर्व विकास हुआ। जेन आस्टेन, वाल्टर स्काट, डिकेन्स, थैकरे, ट्रोलोप, जार्ज ईलियट, ब्रांटीज़ प्रभृति उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं से अंग्रेजी कथा-साहित्य के भण्डार को भरा-पूरा बनाया। सन् १८८० तक विविध प्रकार के उपन्यास लिखे जा रहे थे और अनेक विशिष्ट प्रतिभा के लेखक कथा-साहित्य की रोचकता तथा उसके विस्तार की वृद्धि अप्रत्याशित रूप से कर रहे थे। अमरीकी कथाकार हेनरी

जेम्स के विश्लेषणात्मक उपन्यास अत्यन्त कलात्मक ढंग से मानसिक चेष्टाओं के यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने में सफल हुए। उनकी निर्माण-कला तथा वस्तु-विन्यास एकदम नये ढंग के थे। अतः उन्होंने कला की दृष्टि से नवीन आदर्श उपस्थित किया। मेरेडिथ तथा टामस हार्डी (१८४०-१९२८) दोनों ही सामयिक यांत्रिक जीवन-दर्शन से प्रभावित थे, किन्तु दोनों के उपन्यासों में विभिन्न प्रकार के वातावरण का निर्माण हुआ है। मेरेडिथ आशावादी थे। उन्होंने अपनी कथाओं में नववयस्कों की आशाओं और आकांक्षाओं का भावना-प्रधान चित्रण किया है। कहीं-कहीं उनका सौन्दर्य-प्रेम इतना उत्कट हो गया है कि उनके वर्णनों में काव्य का आनन्द आने लगता है। टामस हार्डी के अधिकांश उपन्यास दुःखान्त तथा घोर निराशा की भावना पर आधारित हैं। उनमें प्रबल शक्तियों का शिकार बनकर मनुष्य निश्चित रूप से ध्वंस की ओर अग्रसर होता दिखाई पड़ता है। लेखक के बहुसंख्यक उपन्यासों में **दी रिटर्न आफ दी नेटिव** (१८७८), **दी मेयर आफ कैंस्टरब्रिज** (१८८५), **टेस** (१८९१) तथा **जूड दी आक्सूयोर** (१८९६) सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचनाएँ हैं। इन महान उपन्यासों का कथानक डारचेस्टर अर्थात् वेसेक्स के अंचल में विकसित होता है और उनमें प्राकृतिक पृष्ठभूमि सजीव होकर क्रिया में उतना ही महत्त्वपूर्ण भाग लेती है जितना मानव पात्र। हार्डी ने प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण किया था और अनेक स्थलों पर तत्सम्बन्धी विस्तृत तथा आकर्षक वर्णन मिलते हैं। यह महत्त्वपूर्ण बात है कि कथा की दुःखद घटनाओं और परिस्थितियों की जिम्मेदारी कम से कम आंशिक रूप में उस प्राकृतिक वातावरण पर है। कथा के प्रमुख पात्र नियति तथा अन्य अदृश्य शक्तियों के शिकार बनते हैं। उनका दुःखद अन्त निश्चित रहता है, किन्तु वे यथाशक्ति संघर्ष करते हैं। हार्डी की रचनाओं में निराशावाद, नाटकीय व्यंग्य एवं काव्यात्मक वैशिष्ट्य का बेजोड़ मिश्रण उपलब्ध है। इसी काल में **राबर्ट लुई स्टिवेन्सन** ने अपने रोमान्ती उपन्यासों द्वारा प्रचुर ख्याति अर्जित की। कहानी कहने की सफाई और रोचकता तथा भाषा-शैली की दृष्टि से स्टिवेन्सन की रचनाओं का विशेष महत्त्व है। इनकी प्रसिद्ध रचनाओं के नाम हैं, **ट्रेजर आइलैण्ड** (१८८३), **किडनैप** (१८८६), **दी मास्टर आफ बेल्लेन ट्रे** (१८८९) और **कैट्रियोना** (१८९३)।

जार्ज गिंसिंग (१८५७-१९०३) कई बातों में डिकेन्स के अनुयायी थे। उनके उपन्यासों में लन्दन नगर के जीवन का अत्यन्त यथार्थ चित्रण हुआ है। फ्रांस के प्रकृतिवादी आन्दोलन का जितना गहरा प्रभाव गिंसिंग पर पड़ा था उतना १९वीं शताब्दी के किसी अन्य अंग्रेजी उपन्यासकार पर नहीं। टामस हार्डी की भाँति यह भी निराशावादी थे किन्तु इनकी रचनाओं में उस काव्यमयता का अभाव है जो हार्डी के उपन्यासों में सहज ही सुलभ है। इनके उपन्यास **दी अनक्रास्ट** (१८८४), **दी नियर वर्ल्ड** (१८८९) **आड बीमेन** (१८९३) इत्यादि अपने युग में लोकप्रिय थे, किन्तु आज उनका प्रचलन अल्प है।

१९वीं शती के अन्तिम दशक और वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में **किर्पलिंग** (१८६५-१९३६) की कहानियों और उपन्यासों का सबसे अधिक प्रचलन था क्योंकि इनमें नवीनता का चमत्कार था। उनकी पुस्तकें **सोलजर्स थी** (१८८८), **दी जंगल बुक** (१८९४-९५), **किम** (१९०१), **स्टाकी एण्ड को** (१८९९) भारतवर्ष और इंग्लैण्ड में चाव से पढ़ी जाती थीं। बालकों के लिए जितना सुन्दर साहित्य किर्पलिंग ने लिखा उतना किसी दूसरे लेखक ने नहीं। स्टिवेन्सन की भाँति किर्पलिंग कहानी कहने में अत्यन्त कुशल थे, अतः उनकी रचनाओं द्वारा लोगों का मनोविनोद हुआ। इसके अतिरिक्त इन उपन्यासों की पूर्वीय पृष्ठभूमि अंग्रेज पाठकों के लिए एक नयी चीज थी। किर्पलिंग की शैली भी कथानक के अनुकूल ही नवीन आकर्षण से परिपूर्ण थी। प्रकाशन के ढंग में अपूर्व शक्ति तथा बाइबिल के वाक्यों की सादगी का आश्चर्यजनक मिश्रण मिलता था तथा अप्रचलित शब्दों के संयत प्रयोग से नवीन चमत्कार का आविर्भाव हुआ। किर्पलिंग ने ब्रिटिश साम्राज्य की गरिमा और श्वेत जातियों की महान जिम्मेदारी को मानकर ही अपने साहित्य का निर्माण किया, अतः उसमें संकीर्णता आ गयी है, तथापि नवीन उपकरण प्रस्तुत करने के कारण उसका स्वागत हुआ।

जान गाल्सवर्थी (१८६७-१९३३) ने अपने प्रारम्भिक उपन्यासों की रचना उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में की, किन्तु उनके महत्वपूर्ण उपन्यास वर्तमान शती में ही लिखे गये। उन्होंने अभिजात वर्ग के सामाजिक और वैयक्तिक जीवन का अत्यन्त सजीव चित्रण किया है। अंग्रेज जाति में जो

रूढ़िवादिता एवं स्वार्थपरायणता विक्टोरियन युग में आ गयी थी उसकी अत्यन्त प्रभावपूर्ण आलोचना उन्होंने अपने उपन्यासों में प्रस्तुत की। इनकी सौंदर्य-भावना उत्कट तथा कलात्मक अभिरुचि अत्यन्त उच्च कोटि की थी। फ्रांसीसी और रूसी उपन्यासकारों ने इनको नवीन आदर्श प्रदान किये थे। इनके उपन्यासों में यथार्थवाद के साथ प्रतीकात्मक शैली का आकर्षण योग मिलता है। परिष्कृत गद्यशैली के गाल्सवर्दी अत्यन्त सफल लेखक हैं। इनके प्रसिद्ध उपन्यासों के नाम हैं—**दी आइलैंड फैरिसीज** (१९०४), **दी कंट्री हाउस** (१९०७), **फ्रंटनिटी** (१९०९), **दी डार्क प्लावर** (१९१३), **दी फ्री लैंड्स** (१९१५)। किन्तु लेखक की सबसे प्रसिद्ध कृतियाँ **दी फार साइट सागा** एवं **ए माडर्न कामेडी** हैं जिनमें एक मध्यम-उच्चवर्गीय अंग्रेज परिवार का क्रमबद्ध इतिहास महारानी विक्टोरिया के युग से लेकर प्रथम महासमर के बाद के काल तक वर्णित है। विक्टोरियन समाज में परिवर्तन के सूत्रपात तथा उसके बाद आनेवाले काल में द्रुतवेग से होनेवाले परिवर्तन का इन छः उपन्यासों के संग्रह में अत्यन्त सुस्पष्ट वर्णन मिलता है। इसी सामाजिक विघटन का चित्रण **एच० जी० वेल्स** (१८६६-१९४६) ने अपनी अमर कृति **टोनोबंगे** (१९०९) में किया है। आधुनिक उद्योगीकरण के फलस्वरूप हुआ सामंतशाही का अंत किस प्रकार हुआ, और वर्तमान व्यापारिक सभ्यता के दोषों का ज्ञान इस उपन्यास से सरलतापूर्वक हो जाता है। वेल्स का दृष्टिकोण आधुनिक है और दलितों के प्रति सदा उनके मन में सहानुभूति मिलती है। उनका व्यंग्य गाल्सवर्दी की अपेक्षा अधिक तीक्ष्ण तथा स्पष्ट है और उनकी शैली अपेक्षाकृत अपरिष्कृत है। उन्नीसवीं शती में वेल्स ने कई ऐसे उपन्यास लिखे जिनका सम्बन्ध विज्ञान की नयी खोजों से था। तदुपरान्त उन्होंने सामाजिक आलोचना के अभिप्राय से कई यथार्थवादी उपन्यास लिखे जिनमें उनके व्यक्तिगत अनुभव निबद्ध हैं। ऐसे उपन्यासों में **किप्स** (१९०५), **एन बेरोनिका** (१९०९), **लभ एन्ड मि० लेविशम** (१९००), **हिस्ट्री आफ़ मि० पोली** (१९१०) अधिक प्रसिद्ध हैं। एच० जी० वेल्स के कुछ अन्य उपन्यासों में भावी युगों में मानव जीवन सम्बन्धी होनेवाले विकास का कल्पित चित्र दिया गया है। उनका अंतिम महान् उपन्यास **दी वर्ल्ड आफ़ विलियम विलिसोल्ड** (१९२६) उपन्यास के रूप में असफल है और उसे राजनीतिक

और सामाजिक विषयों पर एक अत्यन्त विस्तृत निबंध मानना ही अधिक समीचीन है।

इस काल के तीसरे यशस्वी उपन्यास-लेखक **आर्नोल्ड बेनेट** (१८६७-१९३१) के प्रसिद्ध ग्रन्थ **दी ओल्ड वाइव्स टेल** (१९०८) का विषय भी विक्टोरियन तथा उत्तर विक्टोरियन काल का सामाजिक विघटन है। अतएव यह कृति टोनोवंगे तथा फारसाइट सागा से विषय की दृष्टि से समानता रखती है। शैली और कलागत आदर्श की दृष्टि से आर्नोल्ड बेनेट वैशिष्ट्य रखते हैं। यथार्थवाद अथवा प्रकृतिवाद उनकी रचनाओं में अपने विशुद्ध रूप में प्रकट हुआ है। इनके उपन्यास आंचलिक हैं। **फाइव टाउन्स** नामक जनपद, जो मिट्टी के बर्तनों के बनाने का केन्द्र है, आर्नोल्ड बेनेट की कहानियों का स्थल है। उनके आंचलिक उपन्यासों में सबसे प्रसिद्ध हैं **अन्ना आफ दी फाइव टाउन्स** (१९०२) **क्लेहैगर्स** (१९१०), **हिल्डा लेसवेज** (१९२१) और **दीज ट्वेन** (१९१६)।

गाल्सवर्दी, वेल्स तथा बेनेट के प्रमुख उपन्यासों का विशेष आकर्षण सामाजिक चित्रण एवं आलोचना के कारण है। उनके समकालीन उपन्यासकार **जोजफ कानराड** (१८५६-१९२४) उनसे भिन्न थे। ये पोलैण्ड के निवासी थे, किन्तु अंग्रेजी व्यापारिक वेड़े में काम करते हुए इन्होंने अंग्रेजी साहित्य की स्तुत्य सेवा की। इन्होंने सामुद्रिक जीवन एवं साहसपूर्ण कार्यों से सम्बन्धित बहुसंख्यक उपन्यास लिखे जिनमें प्रमुख हैं—**आलमेयर्स फाली** (१८९५), **दी नौगर आफ दी नारसीस** (१८९८), **यूथ** (१९०२), **टाइफून** (१९०३), **नास्ट्रोमो**, **लार्ड जिम** (१९०६) और **ऐरो आफ गोल्ड** (१९१९)। कथावर्णन में कानराड और स्टिवेन्सन की समानता है, किन्तु कानराड ने रचना-विधान में **हेनरी जेम्स** के सिद्धान्तों को ग्रहण किया अतः उनके उपन्यास अत्यन्त सुनिर्मित हैं। उनकी गद्य शैली में किप्लिंग की गद्य शैली की भाँति नवीन आकर्षण मिलता है। पात्रों की मानसिक अवस्थाओं के निरूपण में कानराड अत्यन्त कुशल थे। **जार्ज मूर** (१८५२-१९३३) आयरलैण्ड के निवासी थे, किन्तु उनकी शिक्षा-दीक्षा फ्रांस में हुई थी। अपने उपन्यासों में इन्होंने जोला और मुपासा का अनुकरण किया। इनके उपन्यासों में **इस्थरवाटर्स** (१८९४), **हेल्वायज एन्ड एवेलाड** (१९२१) सबसे प्रसिद्ध हैं।

तीन मुख्य प्रवृत्तियाँ

प्रथम और द्वितीय महायुद्ध के बीचवाले वर्षों में अंग्रेजी उपन्यास के क्षेत्र में साधारणतः तीन मुख्य प्रवृत्तियाँ लक्षित हुई। सबसे अधिक प्राधान्य था मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का, जिनके कथानक की चेष्टा अन्तर्मुखी थी। ऐसे उपन्यासों के प्रचलन का प्रारम्भ डोरोथी रिचर्डसन ने किया, किन्तु उनसे कहीं अधिक ख्याति वर्जिनिया उल्फ (१८८२-१९४१) को प्राप्त हुई। उनके आधे दर्जन से अधिक उपन्यासों, दी वायेज आउट (१९१५), नाइट एन्ड डे (१९१९), जैकोब्स रूम (१९२३), मिसेज डैलोवे (१९२५), टु दी लाइट हाउस (१९२७), ओरलैण्डो (१९२८), दी वेक्स (१९३१), दी इयर्स (१९३७) में मन के आन्तरिक व्यापारों का चमत्कारपूर्ण चित्रण हुआ है। कथानक में घटनाओं तथा बाह्य क्रिया-कलापों का केवल गौण महत्त्व रह जाता है। मनोविज्ञान की नवीन खोजों के कारण ही इस प्रकार की उपन्यास-रचना सम्भव हो सकी। वर्जिनिया उल्फ ने मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति को ग्रहण करने पर भी अपनी रचनाओं में शालीनता का यथासम्भव निर्वाह किया है और उनकी शैली अत्यन्त परिष्कृत एवं प्रभावपूर्ण है। जेम्स ज्वायस (१८८२-१९४१) ने अपने प्रथम उपन्यास युलिसीज (१९२२) में २४ घण्टे के अन्तर्गत मन में उठनेवाले भावों और विचारों का विस्तृत वर्णन किया है। कामवासना को इस उपन्यास में इतना महत्त्व दिया गया है कि प्रकाशित होने पर लोगों ने अश्लीलता के कारण इसकी बड़ी कड़ी आलोचना की। १७ वर्ष चुप रहने के उपरान्त ज्वायस ने सन् १९३९ ई० में फिनिगन्स वेक नामक दूसरा उपन्यास प्रकाशित किया जो मनोवैज्ञानिक निरूपण और शैली की दृष्टि से कहीं अधिक जटिल है।

दूसरी कोटि के उपन्यासों में विचारों की प्रधानता रहती है, यद्यपि मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का नितान्त अभाव नहीं रहता। डी० एच० लारेंस और आल्डस हक्सले इस प्रकार के उपन्यासों के सर्वोत्कृष्ट लेखक हैं। डी० एच० लारेंस (१८८५-१९३०) ने अपने प्रथम सफल उपन्यास सन्स ऐंड लवर्स (१९१३) से लगाकर अपने अंतिम उपन्यासों कंगारू (१९२३), लेडी चैंटर्लीज लवर (१९२८) तक एक ही मुख्य विचार का प्रतिपादन किया है। उनका विश्वास है कि आधुनिक सभ्यता ने मानव जीवन को कृत्रिम बनाकर प्राकृतिक

आवेगों का दमन किया है। इसीलिए आज का वैयक्तिक और सामाजिक जीवन अनिश्चित और नीरस बन गया है। इस परिस्थिति को सुधारने का केवल यही एक मार्ग है कि लोग अपनी वासनाओं और स्वाभाविक प्रवृत्तियों को अनियंत्रित रहने दें। डी० एच० लारेंस ने इस बात पर विशेष जोर दिया है कि काम-वासना का स्वाभाविक मार्जन उपभोग से होता है, दमन से नहीं। यौन-सम्बन्ध के बारे में लारेंस ने इतने खुले ढंग से अपने विचार व्यक्त किये हैं कि उनके उपन्यास अश्लील प्रतीत होते हैं। तब भी इस लेखक के सजीव विचार तथा उनकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति से पाठक अनायास ही आकृष्ट हो जाते हैं। **आल्डस हक्सले (१८९४)** शुरू में लारेंस से प्रभावित थे, किन्तु कुछ दिनों के बाद इन्होंने अपनी स्वतंत्र विचार-पद्धति अपनायी। अपने सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास **प्वाइंट काउण्टर प्वाइंट (१९२८)** में इन्होंने अपनी समकालीन सामाजिक व्यवस्था की आलोचना नवीन शैली में प्रस्तुत की। विचार और निर्माण-पद्धति की दृष्टि से यह ग्रन्थ नितान्त मौलिक है। हक्सले के सभी उपन्यासों में नवीन चिन्तन के आधार पर कथानक का विकास हुआ है। इनका प्रथम उपन्यास **क्रोम एलो १९२१** में प्रकाशित हुआ और तदुपरान्त इन्होंने **ऐंटिक हे (१९२३)**, **दोज बरेन लीज (१९२५)**, **ब्रेव न्यू वर्ल्ड (१९३२)**, **एण्ड्स एंड मीन्स (१९३७)** आदि कई रोचक और विचारोत्तेजक उपन्यास लिखे हैं।

इन दो श्रेणियों के अतिरिक्त तीसरी कोटि उन उपन्यासकारों की है जिन्होंने परम्परासे अपना सम्बन्ध-विच्छेद न करके जीवन के रोचक चित्र प्रस्तुत करना ही अपना ध्येय बनाया है। यद्यपि इनकी कृतियों में विचार मिलते हैं और मनोविज्ञान का पुट भी मौजूद रहता है तथापि उनका प्रथम उद्देश्य कथा कहते हुए समाज का रूप सामने प्रस्तुत करना ही है। ऐसे लेखकों में **समरसेट माम, इ० एम० फ़ास्टर तथा जे० बी० प्रीस्टले** अधिक विख्यात हैं। **समरसेट माम (१८७४)** ने अपना पहला उपन्यास १९वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में लिखा था। उसके बाद अनेक वर्षों तक वे नाट्य-रचना में संलग्न थे। अन्त में उन्होंने फिर उपन्यास-रचना का कार्य हाथ में लिया और उनकी बहुसंख्यक रचनाओं में **'आफ ह्यूमन बांडेज (१९१५)**, **केक्स एंड एल (१९३०)** तथा

दी रेजर्स एज ने विस्तृत ख्याति प्राप्त की। माम लघु कहानियों के भी अत्यन्त सफल लेखक हैं। ई० एम० फास्टर (१८७९) के द्वारा लिखित उपन्यासों के नाम हैं—**ह्वेयर ऐंजिल्स फ्रीयर टु ट्रेड** (१९०५), **दी लॉगेस्ट जर्नी** (१९०७), **ए रूम विथ ए व्यू** (१९०८), **हावर्ड्स एण्ड** (१९१०), **दी सेलेशियल आम-निबस** (१९११), **ए पैसेज टु इंडिया** (१९२४)। इन रचनाओं से लेखक की कलात्मक सुरचि तथा उदार मनोवृत्ति का सुन्दर परिचय मिलता है। **दी गुड कम्पैनियन्स** के लेखक **जे० बी० प्रीस्टले** (१८९४) भी इसी श्रेणी के लेखक हैं। इनके उपन्यासों में साधारण जनों की आशा-आकांक्षाओं तथा उनके दृष्टिकोण का अच्छा प्रकाशन हुआ है।

सन् १९३९ में द्वितीय महासमर प्रारम्भ हुआ और इसके फलस्वरूप लेखकों ने युद्ध की समस्याओं तथा युद्धकालीन जीवनपर आधारित रचनाएँ कीं। **एलिजाबेथ बोवेन** का **हीट आफ़ दी डे** नामक उपन्यास इस कोटि का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है, यद्यपि इसकी रचना युद्ध समाप्त होने के बाद हुई। **एलिजाबेथ बोवेन** अत्यन्त समर्थ लेखिका हैं। इन्होंने कई सुन्दर उपन्यास युद्ध के पूर्व लिखे थे और अब भी सफलतापूर्वक साहित्य-निर्माण में संलग्न हैं। इनकी कला पर वैसे तो इनके विस्तृत अध्ययन की छाप अनायास ही दिखाई पड़ती है, तब भी इन पर विशेष प्रभाव **हेनरी जेम्स** की रचनाओं का पड़ा है। नाद और मौन्दर्य व्यक्त करने की इनमें अपूर्व क्षमता है और इनकी शैली सुसंस्कृत और परिमार्जित है। **आल्डस हक्सले**, **एवेलिन वा** इत्यादि के युद्धकाल तथा उसके बाद के काल में भी कई उपन्यास प्रकाशित हुए हैं जिनमें व्यंग्यात्मक परिपाटी का ही प्रयोग हुआ है, यद्यपि **आल्डस हक्सले** के नवीन उपन्यासों में विचार-पद्धति बदल गयी है तथा कला अधिक सूक्ष्म हो गयी है। ई० बी० **कांपटन-बरनेट** महोदया सन् १९११ से ही उपन्यास लिखती आ रही हैं, किन्तु इनकी विशेष ख्याति १९२९ के बाद इनके पारिवारिक उपन्यासों के कारण हुई। इनकी रचनाओं में कथोपकथन का विशिष्ट सौन्दर्य मिलता है। **हेनरी ग्रीन** की प्रतिभा व्यक्तित्व-प्रधान है और उपन्यासों का आकर्षण खासकर उनमें निर्मित सुन्दर वातावरण के कारण है। कैथोलिक उपन्यासकार **ग्राहम ग्रीन** की रचनाएँ आज सर्वाधिक प्रचलित तथा लोकप्रिय हैं। इसका मुख्य कारण यह

है कि वे उलझनों में न पड़कर सीधे सादे ढंग से कहानी कहना चाहते हैं। यही प्रवृत्ति कैरी, ज्वायस हाटले इत्यादि के उपन्यासों में दिखाई पड़ती है। सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि आज का अंग्रेजी उपन्यास दुरूह मानसिक चित्रण और चरित्र-विश्लेषण से हटकर सरल और स्पष्ट वस्तु-विन्यास की ओर अधिकाधिक झुक रहा है। इसका अर्थ यह है कि हेनरी जेम्स, वर्जिनिया उल्फ तथा जेम्स ज्वायस के आदर्शों का परित्याग करके अंग्रेजी उपन्यास स्टिवेंसन और किप्लिंग की परिपाटी को फिर से अपना रहा है।

सन् १८८० ई० तक अंग्रेजी कविता में उस परम्परा का अन्त हो चुका था जिसकी स्थापना सन् १८३० के लगभग रोमांटिक आन्दोलन समाप्त होने पर हुई थी। टेनिसन, ब्राउनिंग, रासेटी, स्विनवर्न, मैथ्यू आर्नल्ड इत्यादि विकटोरिया-कालीन प्रमुख कवि अभी जीवित थे, किन्तु उनके सर्वोत्तम काव्य का रचनाकाल बीत चुका था। नवीन युग में कवियों का अभाव नहीं था, किन्तु इन बहुसंख्यक काव्य-निर्माताओं में कोई भी टेनिसन अथवा ब्राउनिंग की तुलना में खड़ा होने योग्य न था। राष्ट्रीय साहित्यिक प्रतिभा का उपयोग अब कविता की अपेक्षा उपन्यास और नाटक लिखने में अधिक हो रहा था और सभी उल्लेखनीय कवि कविता के अतिरिक्त नाटक अथवा उपन्यास भी लिखते थे। मेरिडिथ और हार्डी यशस्वी उपन्यासकार थे, किन्तु दोनों ने पर्याप्त मात्रा में काव्य-रचना भी की। मेरिडिथ की कविताओं में कहीं प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति सहज आकर्षण और कहीं गम्भीर चिन्तन के प्रमाण मिलते हैं। टामस हार्डी समय-समय पर सुन्दर मुक्तक लिखते रहे और सन् १९०४-०८ के बीच में उन्होंने नेपोलियन के युद्धों के विषय में एक विराट् नाट्य-काव्य *दी डाइनैस्ट्स* रचा जो अभिनय के लिए अयोग्य होने पर भी कवित्व की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विराट् काव्यों का प्रचलन चल पड़ा और *डाउटी* (१८४३-१९२६) तथा अन्य कवियों ने लंबे कथा-काव्यों की रचना वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में की। प्रथम महायुद्ध के समाप्त होने के कई वर्ष बाद *राबर्ट ब्रिज* (१८५४-१९३०) ने अपनी लम्बी दार्शनिक कविता *दी टेस्टामेन्ट आफ् व्युटी* प्रकाशित करके विशेष यश प्राप्त किया। इस कविता का छंद-विन्यास एकदम नवीन है और जटिल होते हुए भी इसमें सौन्दर्य और तर्क के प्रभाव का सुन्दर निरूपण मिलता है। १९वीं

शताब्दी के अन्तिम दशक में सबसे अधिक चकित करनेवाली कविता रडयार्ड किपलिंग की थी क्योंकि इसके विषय, शैली, लय, भाषा सभी अपरिचित थे। अतः अपनी नवीनता से इसने पाठकों को लुब्ध कर लिया। **शापशायर लैंड** के रचयिता **ए० ई० हाउसमन्** (१८५९-१९३६) लैटिन के प्रख्यात विद्वान् थे। अतः साधारण विषयों पर लिखी उनकी कविता में एक निखरी हुई सादगी मिलती है। विशुद्ध सौन्दर्यवादी कवियों में **आस्कर वाइल्ड** (१८५४-१९००) का नाम सर्वप्रथम उल्लेखनीय है यद्यपि उनका महत्त्व कविता की अपेक्षा नाटकों के क्षेत्र में अधिक स्वीकार किया गया। **डाउसन** (१८६७-१९००) के काव्य में सौन्दर्य-प्रेम की पृष्ठभूमि में घोर निराशा झलकती है। धार्मिक कवियों में **फ्रांसिस टाम्पसन** तथा **एलिस मेनेल** ने सबसे अधिक यश प्राप्त किया। **टाम्पसन** (१८५९-१९०७) रहस्यवादी थे और उनकी प्रमुख कविताओं में सौन्दर्य-प्रेम, रहस्यभावना तथा धार्मिक आस्था का अभूतपूर्व मिश्रण विद्यमान है। १९१४-१८वाले युद्ध के पूर्व के वर्षों में **जार्जियन कवियों** का एक प्रसिद्ध समुदाय था जिसके सदस्य अनेक प्रतिभा-सम्पन्न नवयुवक कवि थे। इस दल के नेता थे **रूपर्ट ब्रुक** (१८८७-१९१५) जिन्होंने अपने अल्प जीवन में अत्यन्त सुन्दर काव्य लिखा जो देशप्रेम और यौवन की मस्ती से ओतप्रोत है। एक दूसरे उल्लेखनीय जार्जियन कवि **वाल्टर डीला मेयर** (१८७३) थे। इनकी कविता में अलौकिक सौन्दर्य और सहज अनुभूति की रोचक अभिव्यक्ति हुई है। **डब्लू० एच० डेविस** (१८७१) की कविताएँ अपने प्रभाव और अपनी सादगी के लिए बेजोड़ हैं। जार्जियन दल के बहुत से कवियों ने प्रथम महायुद्ध में भाग लिया और युद्ध के अनुभवों ने उनकी कविता के स्वर को बहुत कुछ बदल दिया। प्रथम युद्ध के पूर्व ही **आयरलैण्ड** में नवीन साहित्यिक जाग्रति प्रारम्भ हो गयी थी और **ए० ई०** तथा **डब्लू० बी० एट्स** (१८६५-१९३९) प्रभृति कवि कल्पना और माधुर्य से परिपूर्ण सुन्दर कविताएँ लिखने में समर्थ हुए। एट्स प्रथम महासमर के बाद भी जीवित रहे, यद्यपि बाद में उनके काव्य का स्वरूप कुछ बदल गया।

कविता में युद्ध की प्रतिक्रिया

प्रथम महायुद्ध समाप्त होने पर अंग्रेजी कविता में जो प्रतिक्रिया सर्वप्रथम परिलक्षित हुई, वह थी युद्ध के प्रति घृणा और शान्ति के प्रति आकर्षण। जिन

कवियों ने युद्ध में भाग लिया था और ध्वंस तथा यातना के दृश्य देखे थे उनके मन में उचाट पैदा हो गया था और उन्होंने हिंसा तथा विनाश को समाप्त करके संसार में स्थायी सुख-शान्ति स्थापित करने का आग्रह अपनी कविता में व्यक्त किया है। ओवेन, सिसून, ब्लंडेन प्रभृति कवियों की रचनाएँ उस मानसिक अवस्था से प्रेरित हैं जिससे राष्ट्रसंघ की उत्पत्ति हुई थी। इन सैनिक कवियों के अतिरिक्त तत्कालीन काव्य-क्षेत्र में वे कवि थे जो युद्ध के पूर्व ही प्रसिद्ध हो चुके थे। टामस हार्डी के नवीन छोटे मुक्तकों में सौन्दर्य-भावना तथा निराशा का वही पुराना योग प्रस्तुत है। डब्लू० बी० एट्स की कविता विकासक्रम में अपनी अन्तिम अवस्था प्राप्त कर चुकी थी जिसमें कवि की वाणी गम्भीर हो जाती है। **लारेंस विनियन** (१८६९-१९४३) ने युद्धोत्तर काल में अपने प्रसिद्ध ओड्स की रचना की जिनमें नवीन विषयों पर परम्परागत शैली में सुन्दर भावों का प्रकाशन हुआ है। **जार्जियन** कवियों में भी कुछ सक्रिय थे। **वाल्टर डी ला मेयर** ने इस काल में बच्चों के लिए बड़ी ही सुन्दर कविताएँ लिखीं। उनकी अन्य कविताएँ पुरानी परिपाटी का निर्वाह करती हैं। **जान मेसफील्ड** (१८७८) ने चासर की प्राचीन शैली में कथा-काव्य का निर्माण किया है और **रिनर्ड दी फाक्स** (१९१९) नाम की उनकी कविता कुछ दिन के लिए अत्यन्त लोकप्रिय हुई। इन पुरानी पद्धति के कवियों से अधिक महत्त्वपूर्ण थे ऐसे काव्य-रचयिता जो नवीनता का आवाहन कर रहे थे। इस सम्बन्ध में दो प्रभाव उल्लेखनीय हैं। १९१८ में **राबर्ट ब्रिजेज** ने **जिरड मैन्ली हापकिन्स** (१८४४-८९) की कविताओं का संग्रह सर्वप्रथम प्रकाशित करवाया, यद्यपि हापकिंस का रचना-काल १९वीं शताब्दी में था। ये कविताएँ एकदम नयी थीं, क्योंकि हापकिंस ने अपने दार्शनिक और धार्मिक विचारों के प्रकाशन के लिए परम्परागत छन्दों का परित्याग करके एक नवीन तथा अद्भुत माध्यम का उपयोग किया है। उसकी लय बोलचाल की भाषा से मिलती जुलती है, क्योंकि हापकिंस की धारणा थी कि प्रचलित छन्दों में बँधी कविता कृत्रिम हो जाती है। अतः इन नवीन कविताओं के प्रकाशन से काव्य-निर्माण का नवीन आदर्श सामने आया जिसको १७वीं शताब्दी के आध्यात्मिक कवि **डान** की कविताओं के प्रचलन से समर्थन मिला। १९१२ में **डान** की कविताओं का एक विश्वसनीय संस्करण निकला और उसके

उपरान्त अंग्रेजी के अनेक आधुनिक कवि उससे प्रभावित हुए। साथ ही कुछ ऐसे कवि थे जो नवीन काव्यात्मक प्रयोगों में तत्परतापूर्वक संलग्न थे। इन लोगों में प्रमुख थे एडिथ सिटवेल, आसबर्ट सिटवेल इत्यादि। इस समुदाय पर अमेरिकी इमैजिस्ट, फ्रांसीसी प्रतीकवादियों, वाल्ट व्हिटमैन इत्यादि का प्रभाव साथ-साथ पड़ रहा था। इन वर्षों में अंग्रेजी कविता को नयी दिशा में ले जानेवालों में इजरा पाउण्ड (१८८५) तथा ह्याल्मे विशेष उल्लेखनीय हैं।

सन् १९२२ में **ईलियट (१८८८)** का प्रसिद्ध काव्य **दी वेस्ट लैंड** प्रकाशित हुआ जिसने अंग्रेजी कविता के क्षेत्र में क्रान्ति उत्पन्न कर दी। ईलियट अपने युग की नवीन परिस्थिति और काव्य के अन्तर्गत होनेवाले प्रयोगों से पूर्णरूपेण प्रभावित थे। उनकी प्रतिभा अत्यन्त सशक्त तथा उनकी उद्भावनाएँ एकदम नवीन थीं। फलतः **दी वेस्ट लैंड** में अद्भुत विशेषता मिलती है। इस काव्य में युद्धोत्तर काल का नैराश्य मुखरित हो उठा है। चारों ओर विनाश के दृश्य दिखाई देते हैं—ऊसर भूमि, पत्थरों के ढेर और टूटी हुई इमारतें। इस उजड़े संसार में मनुष्य भावी आशा और नव-निर्माण की खोज करता है, किन्तु सफलता के कोई चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं होते। १९२२ के पूर्व इलियट की कविता **दी लव सांग आफ जान एल्फ्रेड प्रुफ्राक** सन् १९१७ में प्रकाशित हो चुकी थी और **दी पोयम्स** नामक संग्रह सन् १९२० में निकला। इन दोनों रचनाओं का विषय और वातावरण **दी वेस्ट लैंड** के अनुरूप है। **दी हालोमैन (१९२५)** में आधुनिक जीवन की निःसार कृत्रिमता और मानव व्यक्तित्व के थोथेपन का निरूपण है। **दी फोर क्वारटेट्स (१९३६-४२)** में गम्भीर चिन्तन की प्रधानता है। ईलियट का काव्य, १९२२ के पहले का और बाद का भी, अत्यन्त जटिल और अस्पष्ट है। कवि की व्यक्तिगत भावनाओं का अनियमित तथा असंबद्ध प्रकाशन पाठक के लिए अर्थ ग्रहण करना अत्यन्त दुष्कर बना देता है। अनेक प्राचीन ग्रन्थों, सिद्धान्तों एवं स्थलों इत्यादि का जिक्र निरन्तर मिलता है जिसके कारण अर्थ से अवगत होना और भी कठिन हो जाता है। छन्द के प्राचीन नियमों और सिद्धान्तों की अवहेलना की गयी है और काव्य रचना आद्योपान्त आन्तरिक लय के आधार पर ही हुई है। १९२२ के पश्चात् ईलियट ने कई काव्य नाटकों तथा अनेक अन्य कविताओं की रचना की। एक

दो अपेक्षाकृत सरल हैं। अतः कुछ दिनों तक यह आशा होने लगी थी कि टी० एस० ईलियट का काव्य सरलता की ओर विकसित हो रहा है, किन्तु दुरुहता अब भी बनी हुई है। फलतः टी० एस० ईलियट की कविता का भाव पूर्णरूपेण ग्रहण करना सरल कार्य नहीं। इसके लिए कवि के जीवन-दर्शन और काव्य-दर्शन से परिचित होना अपेक्षित है।

नयी पीढ़ी के कवि

सन् १९२९ और १९३९ के बीच के वर्षों में कविता में अनेक नवीन प्रवृत्तियों का प्रादुर्भाव हुआ। यह मंदी और बेकारी का काल था। अतः कवियों का मन सहानुभूति से द्रवित हुआ। मार्क्स के दर्शन का प्रभाव सारे यूरोप में फैल रहा था, अतः अंग्रेज कवियों ने भी सामयिक परिस्थिति से विशेष रूप से प्रेरित होकर इसे अपनाया। इसके अतिरिक्त नवीन मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का भी प्रभाव पड़ा और कविता उससे अछूती न रही। इन दस वर्षों के मूल्यांकन के लिए इन तीन तथ्यों—मंदी, मार्क्सवाद और मनोविज्ञान—का ध्यान रखना अनिवार्य है। १९२९ के उपरान्त नयी पीढ़ी के कवि अपनी रचनाओं से यश प्राप्त करने लगे। सबसे प्रमुख कवि **सिसिल डे लिविस, आउडेन, स्पेंडर तथा मैकनिस** थे। इनमें प्रथम तीन साम्यवादी विचारों से स्पष्टरूपेण प्रभावित थे और चौथे में दलितों के प्रति स्वाभाविक सहानुभूति विद्यमान थी। इन चारों पर टी० एस० ईलियट का प्रभाव पड़ा था। किन्तु इन लोगों ने ईलियट की शैली को ग्रहण किया था, उनके परम्परावादी दर्शन को नहीं। डे लिविस की कविता मार्क्सवादी विचारों से क्रमशः अधिकाधिक प्रभावित हुई और स्पेन के युद्ध में फ्रांको की विजय ने कवि के मन में प्रचलित आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था के प्रति घोर विरोध उत्पन्न कर दिया। आउडेन की स्पेन सम्बन्धी कविता अत्यन्त प्रख्यात हुई। उसमें अद्भुत शक्ति और व्यंग्य का समावेश हुआ है। आउडेन में अपने साथियों की अपेक्षा अधिक नवीनता है। इनके काव्य पर मार्क्स और फ्रायड का सम्मिलित प्रभाव पड़ा है तथा इनकी शैली नवीनता तथा व्यंग्य से परिपूर्ण है। स्पेंडर के मन में वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के प्रति क्रोध कम, किन्तु दलितों के प्रति दया अधिक है।

मैकनीस व्यक्तिवादी कवि हैं और उनकी भाषा संयत तथा शैली परिष्कृत है। कवित्व की दृष्टि से यह अन्य कवियों से अधिक महत्त्व रखते हैं। इन सुविख्यात कवियों के अतिरिक्त अतियथार्थवादियों का एक दल था जिनमें **हरबर्ट रीड, एडविन म्योर, डाइलन टामस** इत्यादि की गणना की जा सकती है। हरबर्ट रीड और म्योर ने काव्य को एक प्रकार का स्वप्न मानकर नये ढंग की कविता प्रचलित की। डाइलन टामस प्रतीकों के प्रेमी थे। उनकी कविता में अपरिचित रूपकों, प्रतीकों, अलंकारों इत्यादि का प्रचुर प्रयोग हुआ है। द्वितीय महासमर के प्रारम्भ के पहले ही अंग्रेजी कविता का क्षेत्र तेजी से विस्तृत हो रहा था और उस पर नवीन विज्ञान का प्रभाव पड़ रहा था। इससे उसमें नवीनता और रोचकता का प्रादुर्भाव हुआ।

नवीनतम अंग्रेजी कविता बहुत कुछ बदल गयी है। आउडेन अब अमेरिका में निवास करते हैं और अंग्रेजी काव्यधारा से उनका सीधा सम्बन्ध नहीं रह गया है। अब दह आलोचक और अध्यापक की हैसियत से हमारे सामने आते हैं। डे लेविस, स्पेन्डर तथा मैकनीस की सामाजिक और समाजवादी भावनाएँ युद्ध के प्रभाव से बहुत अंशों में बदल गयी हैं। सामाजिक चेतना का स्थान अब वैयक्तिक भावना ने ले लिया है और वे कविता में अपनी निजी आशाओं, आकांक्षाओं तथा कल्पना की अभिव्यक्ति में ही सन्तोष का अनुभव करते हैं। इसके बिल्कुल विपरीत एडिथ सिट्जेल की नवीन कविता में सामाजिक चेतना विद्यमान है। इनकी पूर्वकालीन कविता में चमत्कार, प्रयोगवादिता तथा व्यक्तिगत वैशिष्ट्य लक्षित हुए थे किन्तु अब इस कवयित्री की भावना सार्वभौम हो गयी है और इनकी रचनाएँ सामाजिक परिवर्तन से प्रभावित हुई हैं। एडविन म्योर ने प्राचीन कथानकों के आधार पर मनोवैज्ञानिक चित्रण उपस्थित किये हैं। वह स्वप्नों तथा अवचेतन मन के कवि हैं। **कैम्पबेल** नामक दक्षिण अफ्रीकी कवि ने व्यंग्य तथा शक्ति से परिपूर्ण कविताएँ लिखी हैं जिनमें अधिकांश का सम्बन्ध उनके देश से है। **एलेक्स कंफर्ट** और **रायफुलर** मार्क्सवाद से प्रभावित प्रगतिवादी कवि हैं। युद्धकाल में अनेक भावुक अंग्रेज दूर देशों में निवास करने के लिए बाध्य हुए और अपने नवीन वातावरण से प्रभावित होकर उन्होंने सुन्दर रचनाएँ कीं। ऐसे कवियों में सबसे अग्रगण्य हैं **लारेंस ड्यूरैल**,

बनार्ड स्पेंसर और हेरेंस लिटर जिन्होंने भूमध्य सागर के तट पर स्थित देशों के प्राकृतिक सौन्दर्य को अपने काव्य में अंकित किया है। युद्ध के सम्बन्ध में कविता लिखनेवाले अनेक कवि हुए हैं, किन्तु उनकी रचनाओं का विशेष महत्त्व नहीं है क्योंकि द्वितीय महासमर इतना भयंकर था और उसकी गति इतनी तीव्र थी कि सुन्दर काव्य-निर्माण के लिए अवसर ही नहीं मिला। अंग्रेजी में आज बहुसंख्यक उदीयमान कवि काव्य-रचना कर रहे हैं, किन्तु उनकी कृतियों का समुचित मूल्यांकन भविष्य में ही हो सकेगा।

नाटकों के नवोत्थान का युग

सन् १८९० के आसपास अंग्रेजी नाटकों के नवोत्थान का युग प्रारम्भ हुआ। प्रायः दो सौ वर्षों तक इंग्लैण्ड में नाट्य साहित्य गौण और तिरस्कृत बना हुआ था। उपन्यासों के बढ़ते प्रचलन ने नाटकों के विकास को भारी धक्का पहुँचाया और रंगशाला की दुर्व्यवस्था से भी उसकी लोकप्रियता कम हुई। फल यह हुआ कि १९वीं शताब्दी में लिखे अनेक नाटक काव्य की दृष्टि से उत्तम, किन्तु अभिनेयता की दृष्टि से अनुपयुक्त सिद्ध हुए। वर्डस्वर्थ से लेकर स्विनबर्न तक प्रायः सभी प्रमुख कवियों ने नाटकों की रचना की, किन्तु वे सभी पढ़ने के लिए ही लिखे गये थे, रंगमंच पर सफल होने की सम्भावना नहीं रखते थे। उन्नीसवीं शती का अन्तिम दशक प्रारम्भ होते-होते अनायास नाट्य साहित्य में नवीन जाग्रति के लक्षण दिखाई देने लगे। यद्यपि नवीन नाटक रचयिताओं पर कुछ न कुछ प्रभाव फ्रांसीसी नाटककार ड्यूमा का अवश्य पड़ा था, तब भी उनमें मौलिकता की मात्रा पर्याप्त अंश में विद्यमान थी। लायर्स (१८९७) और सेन्ट्स एण्ड सिनर्स (१८८४) के लेखक जोन्स तथा दी सेकण्ड मिसेज टानक्वैरेरी (१८९३), दी आइरिश (१९१०) के लेखक पिनेरो (१८५५-१९३४) ने अपनी रचनाओं में चिन्तन तथा यथार्थ चित्रण की परिपाटी को अपनाया। जीवन के वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कतिपय नवीन विचारों और आदर्शों का प्रतिपादन किया। आस्करवाइल्ड में अधिक उच्च कोटि की कृतित्वशक्ति थी और उन्होंने १७वीं शताब्दीके सुखान्त नाटकों की शैली पर समाज के उच्च स्तरों के जीवन का निरूपण अपने सफल नाटकों

में किया है। इनकी रचनाओं में भाषा का परिष्कृत रूप, कथोपकथन की विशेषता तथा उच्च सामाजिक जीवन की मनोविनोदी चेष्टाओं की अभिव्यक्ति, ये सभी इथरीज और कांग्रीव की याद दिलाते हैं। वाइल्ड के नाटक **लेडी विन्डरमियर्स फ्रैन** (१८९२), **ए उमन आफ नो इम्पारटेन्स** (१८९३), **दो इम्पारटेन्स आफ बीइंग अनैस्ट** (१८९५) अपने समय के पाठकों और दर्शकों के लिए विशेष मनोरंजक सिद्ध हुए और आज भी चमत्कारपूर्ण लगते हैं। जिस समय नवजागरण के ये लक्षण स्वतः प्रकट हो रहे थे उसी समय नार्वे के सुप्रसिद्ध विचारक तथा नाटक-प्रणेता इब्सन का प्रभाव अंग्रेजी नाट्य साहित्य में प्रविष्ट हुआ। एडमण्ड गास, विलियम आर्चर, बरनार्ड शा आदि ने अनुवाद और आलोचना द्वारा अंग्रेज पाठकों को इब्सन की विशेषताओं से अवगत कराया, फलतः यथार्थवादी समस्या-नाटकों का प्रचलन प्रारम्भ हुआ जिनको रंगशाला के नवीन सुधारों से भी बहुत बल मिला। सन् १९०४ में **ग्रैनविल बारकर** ने 'कोर्ट थिएटर' स्थापित करके नवीन नाटकों के अभिनय के लिए समुचित व्यवस्था उपलब्ध की और स्वयं सफलतापूर्वक उनका निर्देशन करते रहे। समरसेट माम के प्रारम्भिक नाटकों तथा हैनकिन आदि के नाटकों का अभिनय सफलतापूर्वक हुआ, किन्तु जनता का ध्यान पहले-पहले बरनार्ड शा के नाटकों ने ही भली प्रकार आकृष्ट किया। आदि से अन्त तक समस्या नाटकों के इस नवीन आन्दोलन को बरनार्ड शा की सफलताओं से ही सबसे अधिक यश प्राप्त हुआ और सब प्रकार से वही अपने सहयोगियों के अगुआ थे।

शा का जन्म आयरलैंड में हुआ था। उन्होंने मरण पर्यन्त अपने व्यंग्य और हास्य द्वारा इंग्लैण्ड निवासियों में प्रचलित भ्रम तथा निराधार विश्वासों के निवारण के लिए बहुसंख्यक नाटकों की रचना की। उनकी रचनाएँ बौद्धिकता पर आधारित हैं और यथार्थ निरूपण की पद्धति को ही उन्होंने अंगीकार किया है। नाटकों में कथानक नाम मात्र को मिलता है, किन्तु कथोपकथन की विशेषता के कारण रोचकता में कमी नहीं आती। दो चार पात्र विभिन्न दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हुए कथोपकथन द्वारा वास्तविकता तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। इस भाँति शा ने एक नवीन जीवन-दर्शन अपने देशवासियों के समक्ष उपस्थित किया और प्रत्येक प्रश्न का एक नवीन पक्ष उद्घाटित कर चमत्कार

उत्पन्न कर दिया। इनका व्यंग तीखा है और हास्य विस्तृत ढंग से नाटकों में आद्योपान्त मिलता है। अपने बाद के नाटकों में शा ने व्यंग के अतिरिक्त सूक्ष्म विचारों तथा भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति की है और कुछ नाटकों में इब्सन के अतिरिक्त चेखव का प्रभाव भी लक्षित हुआ है। विचारों की प्रौढ़ता, कथोपकथन की सफलता, व्यंग और हास्य के सार्थक उपयोग इत्यादि गुणों के कारण शा की गणना अंग्रेजी के उच्चतम श्रेणी के नाटककारों में होती है। शा के कुछ नाटकों के नाम निम्नलिखित हैं—**आम्स एण्ड दी मैन, सीज़र एण्ड क्लीओपैट्रा, जान बुल्स अदर आइलेड (१९०४), फ़नीज़ फ़र्स्ट प्ले (१९११) मैन ऐंड सुपरमैन, सेन्ट जोन (१९२४)** इत्यादि। समस्या नाटकों के दूसरे सफल लेखक थे **गाल्सवर्दी**। (१८६७-१९३३)। इनके नाटकों में संयत विचारों का महत्त्व अधिक तथा व्यंग्य का अंश शा की अपेक्षा न्यून है। इन्होंने **जस्टिस, लायलटोड स्ट्राइफ़, दी सिलवर बाक्स** इत्यादि सुन्दर नाटकों द्वारा अक्षय ख्याति अर्जित की। गाल्सवर्दीने सामयिक प्रश्नों पर समुचित प्रकाश डाला है और किसी एक समस्या के अनेक पक्षों के निरूपण में अत्यन्त सफल हुए हैं। आधुनिक जीवन में निहित द्वन्द्व, विरोध, अन्याय आदि का सुन्दर चित्रण इनके नाटकों में मिलता है। इनकी भाषा बड़ी साफ और नाट्य निर्माण-कला प्रशंसनीय है। **जेम्स बेरी** भी शा और गाल्सवर्दी के समसामयिक नाटककार थे किन्तु उनके नाटकों में कल्पना और भावना का अधिक समावेश हुआ है। अतः उनको प्रचलित आन्दोलन से अलग मानना ही अधिक उपयुक्त है।

इसी काल में आयरलैण्ड में भी नाटकों का प्रचलन निश्चित रूप से बढ़ने लगा। डबलिन में एबी थियेटर की स्थापना हुई जिसने आयरलैण्ड की राष्ट्रीय रंगशाला का रूप ग्रहण किया। प्रारम्भ से ही इस नवीन कलात्मक आन्दोलन को डब्ल्यू० बी० एट्स का बहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। नाटकों के अभिनय की व्यवस्था के साथ उनकी रचना भी होने लगी। एट्स ने स्वयं आठ दस नाटकों की रचना की जो आकार में लघु किन्तु कवित्व से ओतप्रोत हैं। आयरलैण्ड के प्राचीन इतिहास और जनजीवन को लेकर ही इन नवीन नाटकों की रचना हो रही थी और उनमें देशभक्ति और अदम्य उत्साह के चिह्न स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते थे। एट्स के नाटक पद्य और गद्य दोनों में लिखे गये

थे। किन्तु सभी काव्यात्मक तथा कल्पना-प्रवण थे। आयरलैण्ड के एक अन्य यशस्वी नाट्य-प्रणेता **जे० एम० सिंग** (१८७१-१९०९) थे जिनका अल्पायु में ही देहावसान हो गया। अपने छोटे से जीवन में उन्होंने पाँच छः सुन्दर नाटकों की रचना की जिनके आधार पर उनका यश अमर हो गया। आरान द्वीप के किसानों और मछुओं के जीवन से ही उन्होंने सामग्री प्राप्त की है और उसमें छिपी हुई शोक और हास्य की क्षमता को उन्होंने मानों वाणी प्रदान कर दी है। इनकी शैली प्राचीन स्थानीय भाषा तथा साधु भाषा के मिश्रण द्वारा निर्मित हुई है और उसमें नैसर्गिक कवित्व तथा लय का समावेश हुआ है। लेडी ग्रेगरी ने अनेक छोटे-छोटे नाटकों की रचना की। इनमें भी आयरलैण्ड के निवासियों और उनके विश्वासों तथा उनकी आकांक्षाओं की ही अभिव्यक्ति हुई है। प्रथम महासमर के आसपास और उसके उपरान्त लिखनेवाले आयरलैण्ड के सबसे प्रसिद्ध नाट्य रचयिता शान ओकासी महोदय हैं। इनके नवीनतम नाटकों में अभिव्यंजनावाद के नवीन साहित्यिक उपकरणों का बड़ा सुन्दर उपयोग हुआ है। शान ओकासी पर अमेरिकी तथा यूरोपीय नाटककारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है और उनकी कला राष्ट्रीय की अपेक्षा अन्तर्राष्ट्रीय ही अधिक कही जा सकती है। आयरलैण्ड के कुछ अन्य लेखकों ने भी अभी हाल में ऐसे ही नाटक लिखे हैं जिनमें अनेक देशों से प्राप्त किये हुए प्रभाव, संकलित हो गये हैं।

वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ से प्रथम महायुद्ध के शुरू होने तक यद्यपि यथार्थवादी नाटकों का ही प्राधान्य था तब भी छन्दों में लिखे काव्य-नाटकों का एकदम अभाव न था। **स्टिफन फिलिप** महोदय का 'पावलो एण्ड फ्रांसिसका' नामक छन्दोबद्ध नाटक रंगमंच पर अत्यन्त सफल सिद्ध हुआ और तभी से ऐसे नाटकों का क्रम अविच्छिन्न रूप से चला आया है। **लासेल्स एवर क्रांवी** के नाटकों में निर्माण-सौष्ठव के साथ विचार-गाम्भीर्य का मेल मिलता है। **गाडेन बाटमली** के नाटकों में प्राचीन ग्रीस की सौन्दर्य-भावना और दार्शनिकता मानों फिर से जाग उठी है। इन्होंने अनेक नाटकों की रचना की है और काव्य नाटकों की परम्परा को जीवित रखने में इनका कार्य श्लाघनीय है। **जान मेसफील्ड** का पहला नाटक तो गद्य में लिखा गया, किन्तु उसके बाद उन्होंने

प्राचीन रोमानी कथाओं को लेकर कई काव्य-नाटकों का प्रणयन किया। इस कोटि के नाटकों में सबसे अधिक महत्त्व जान ड्रिकवाटर के नाटकों को दिया जाता है। ऐतिहासिक महापुरुषों के जीवन वृत्तान्तों के आधार पर रचित जान ड्रिकवाटर के छन्दोबद्ध नाटकों को रंगशाला में प्रभूत सफलता मिली है और पाठकों ने उनका समुचित स्वागत किया है। दोनों महायुद्धों के बीच के युग में सबसे प्रसिद्ध काव्य-नाटक टी० एस० ईलियट द्वारा प्रस्तुत किये गये। ईलियट महोदय के काव्य की सभी विशेषताएँ उनके नाटकों में विद्यमान हैं, अतः अभिनय की अपेक्षा वे अध्ययन के अधिक उपयुक्त हैं। उनका नाटक 'दी काकटेल पार्टी' अभिनेयता की दृष्टि से अधिक सफल है। आउडेन और इशरउड के नाटक काव्य-प्रधान होने के अतिरिक्त नवीन मनोविज्ञान और अभिव्यंजनावानावादाद से प्रभावित हैं। आउडेन के अन्य सहयोगियों ने भी काव्य-नाटक लिखे हैं। सम्भावना यह है कि अंग्रेजी में काव्य-नाटकों की परम्परा भविष्य में और भी बलवती होती जायगी। सिनेमा की प्रतिद्वन्द्विता से बचने के लिए नाट्य साहित्य के लिए यही एक रास्ता खुला हुआ है।

काव्य-नाटकों के अतिरिक्त दोनों महायुद्धों के बीच के काल में सबसे अधिक प्रचलन उन यथार्थवादी नाटकों का था जिनका निर्माण समाज के उच्च वर्ग के दैनिक जीवन के चित्रण के प्रयोजन से किया गया था। उच्च वर्ग के आमोद-प्रमोद तथा शृंगारिकता का इनमें यथार्थ अंकन मिलता है। इस समुदायके अग्रगण्य लेखक हैं समरसेट माम, नोबेल कावर्ड और फ्रेडरिक लान्सडेल। अंग्रेजी साहित्य में सन् १९६० के बाद जिस प्रकार के सुखान्त नाटकों का प्रचुर प्रचार हुआ था, उन्हीं से मिलते-जुलते ये यथार्थवादी नाटक कुछ दिनों के लिए फिर अत्यन्त लोकप्रिय हो गये। प्रथम महायुद्ध के बाद वर्षों में यूरोपीय महाद्वीप से अनेक बाह्य प्रभावों का अंग्रेजी नाट्य साहित्य में आगमन हुआ जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण था मनोवैज्ञानिक तथा अभिव्यंजनावानावादी प्रभाव। जर्मनी और फ्रांस में लिखे गये नाटकों का अनुवाद हुआ और विभिन्न स्थानों पर उनका अभिनय भी किया गया। इन्हीं नवीन आदर्शों पर कुछ नाटक अंग्रेजी में भी लिखे गये। इस सम्बन्ध में सी० के० मुनरो की कृतियाँ उल्लेखनीय हैं। सिनेमा की बढ़ती हुई प्रतियोगिता के कारण नाट्य साहित्य को अब प्रबल

आघात पहुँच रहा था। फिर भी विविध प्रकार के नाटक लिखे गये तथा रंगशालाओं को नवीन साधनों द्वारा समृद्ध बनाया गया।

गद्य साहित्य की अभूतपूर्व उन्नति

आधुनिक काल में अंग्रेजी गद्य साहित्य में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है और उसके सम्बन्ध में संक्षेप में लिखना अत्यन्त कठिन कार्य है। १९ वीं शती के अन्तिम दो दशकों में डारविन और हक्सले के वैज्ञानिक लेख अत्यन्त चाव से पढ़े जाते थे। मैथ्यू आर्नल्ड के विद्वत्तापूर्ण निबन्ध नयी सूझ, मौलिक भावना तथा गम्भीर विचार के लिए सम्मान्य थे। **वाल्टर पेटर** ने गद्य शैली में सौन्दर्य तथा सफाई का नवीन समावेश करके गद्य-लेखन के स्तर को एकदम ऊँचा उठा दिया और यही बात आस्करवाइल्ड के सम्बन्ध में भी सत्य है। २० वीं शताब्दी में गद्य साहित्य का विस्तार और भी अधिक बढ़ गया है। पहले २५ वर्षों में निबन्ध-लेखन का विशेष प्रचलन था। चार्ल्स लैंब, हैज़लिट तथा स्टिवेंसन के निबन्धों से प्रेरणा प्राप्त करके अनेक सफल निबन्ध-लेखकों ने अपनी कृतियों द्वारा पाठकों का मनोरंजन किया। पत्रकारता के क्षेत्र में कुछ नवीन विकास हुआ जिससे निबन्ध-लेखकों को प्रोत्साहन मिला। इसके पूर्व पत्र-पत्रिकाओं में टिप्पणियाँ बिना लेखक के हस्ताक्षर के प्रकाशित होती थीं। किन्तु बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से लेखकों के नाम के साथ उनके प्रकाशन की प्रथा चली। ये टिप्पणियाँ अनेक अर्थों में निबन्ध कही जा सकती हैं। उदाहरणार्थ **टाइम्स** का द्वितीय सम्पादकीय सदा एक सुन्दर लघुनिबन्ध के रूप में लिखा जाता है। चार्ल्स लैंब की परम्परा के सबसे बड़े प्रवर्तक **ई० बी० ल्यूक्स** ने बहुसंख्यक निबन्धों के अतिरिक्त लैंब का जीवनवृत्तान्त लिखकर अंग्रेजी साहित्य की बहुत बड़ी सेवा की। **मैक्स बीयर बोम** के निबन्धों की तुलना १८ वीं शताब्दी के निबन्धों से की जा सकती है। उनमें सादगी, सफाई, तथा व्यंग्य का मेल रहता है। **राबर्ट लिन्ड** पर हैज़लिट और स्टिवेंसन के निबन्धों का प्रभाव पड़ा है और उन्होंने विविध विषयों पर अत्यन्त सुन्दर निबन्ध बड़ी संख्या में लिखे हैं। **जी० के० चेस्टरटन** की भाषा का एक विशेष स्वरूप है और उनके कथनों में पग-पग पर विरोधाभास का प्रयोग किया गया है। उनके साथी **हिलेयर बेलाक**

के निबन्धों में अधिक सफाई और सादगी रहती है। बेलाक और मिलनी ने प्रकृति के बाह्य सौन्दर्य और ग्राम्य जीवन के सुन्दर चित्रों के आधार पर निबन्ध-रचना की है। प्रथम महासमर के उपरान्त प्रकाशित होनेवाले लिटेन स्ट्राची के लेख और जीवन-चरित विशेष महत्व रखते हैं। लेखक ने अपनी विशिष्ट शैली में प्राचीन जीवन कथाओं को एक नये ढंग से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। आल्ड्स हक्सले, जेरोम के जेरोम इत्यादि निबन्धकार भी उल्लेखनीय हैं। फिलिप गोडडाला तथा ए० जी० गार्डिनर ने महापुरुषों के छोटे-छोटे जीवन वृत्तान्त उनके चरित्र-विश्लेषण के साथ लिखकर पाठकों का ध्यान अपनी ओर बहुत पहले आकृष्ट किया था। इधर हाल में जीवन चरित्र, आत्म-कथा, संस्मरण, यात्रा वृत्तान्त आदि लिखने का प्रचलन अधिक बढ़ गया है। साहित्यिक आलोचना के अनेक ग्रन्थ आधुनिक काल में विद्वानों द्वारा लिखे गये हैं, किन्तु उनकी संख्या इतनी अधिक है कि उन सबका उल्लेख सम्भव नहीं। दो-चार विद्वानों का नाम ही यहाँ दिया जा सकता है। १९ वीं शताब्दी के अन्त में मैथ्यू आर्नल्ड, पेटर, सेंट्सबरी, साइमांड, एडमंड गास आदि सुविख्यात विद्वान और अध्यापक आलोचनात्मक निबन्ध और ग्रंथ लिख रहे थे। वर्तमान शताब्दी के विद्वानों में राले, ग्रियर्सन, क्विलरकूच, एलरडाइसनिकल बाबरा, लार्ड-डेविड सेसिल आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कवियों तथा लेखकों ने भी आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखे हैं। मौलिक साहित्यिक चिन्तन तथा नवीन प्रतिमानों की स्थापना करने में सर्वाधिक सफलता आई० ए० रिचर्ड्स और टी० एस० ईलियट को मिली है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आज के अंग्रेजी गद्य साहित्य में सर्वतोमुखी वृद्धि हुई है और वह अत्यन्त विस्तृत और समृद्ध बन गया है।

उपसंहार

पिछले अध्यायों में हमने अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी साहित्य का विकासक्रम इंगित किया है। इस विवेचन से कतिपय सामान्य विशेषताएँ देखने में आती हैं। अंग्रेजी भाषा प्रारम्भ में संश्लेषणात्मक थी। शब्दों की संख्या सीमित थी किन्तु उपसर्गों, प्रत्ययों और विभक्तियों की सहायता से भाषा की सम्यक् प्रेषणीयता बनी हुई थी। धीरे-धीरे भाषा में विश्लेषण की प्रवृत्ति अधिकाधिक परिलक्षित हुई और फलतः आधुनिक अंग्रेजी भाषा में अनेक प्रत्ययों और विभक्तियों के लुप्त हो जाने के कारण सम्बन्ध सूचक शब्दों द्वारा अर्थ निश्चित होता है। आज की अंग्रेजी के वाक्य में प्रत्येक शब्द का स्थान महत्त्व रखता है क्योंकि अर्थ-बोध में उससे सहायता मिलती है। अंग्रेजी भाषा की एक दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह अनेक प्रभावों को आत्मसात् करके विकसित हुई है। उसकी ग्राहिका शक्ति असीम है। लैटिन और ग्रीक के अतिरिक्त फ्रेंच, इटैलियन और स्पैनिश शब्दों और मुहावरों ने भाषा की मूल धारा में बहुत पहले ही प्रवेश किया था। १८ वीं शताब्दी के उपरान्त संसार के प्रायः सभी सम्य देशों से कुछ न कुछ शब्द अंग्रेजी भाषा ने ग्रहण किये हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान की प्रगति ने अंग्रेजी शब्द-भाण्डार को अत्यन्त समृद्ध बना दिया है। फलतः आधुनिक अंग्रेजी भाषा की शब्दावली अत्यन्त विस्तृत एवं सम्पन्न है और भाषा में भाव और विचार-प्रकाशन की अनुपम क्षमता है। यदि हम राजनीतिक एवं व्यापारिक कारणों को कुछ देर के लिए भुला भी दें, तब भी इसमें सन्देह नहीं कि अपने विशेष गुणों के कारण अंग्रेजी भाषा सर्वमान्य और सर्वग्राह्य बनने योग्य है।

यही बात अंग्रेजी साहित्य के लिए भी सत्य है। अपने विस्तार और आकर्षण के कारण अंग्रेजी साहित्य विश्व वाङ्मय में अत्यन्त उच्च स्थान रखता है। न केवल अंग्रेज जाति की कल्पना और महत्वाकांक्षा उसमें निबद्ध है अपितु उसकी कलात्मक प्रवृत्ति का सबसे सुन्दर प्रकाशन भी उसमें हुआ है। शेक्स-

पियर, मिल्टन तथा अनेक प्राचीन और नवीन कवियों ने अंग्रेजी काव्य के गौरव की वृद्धि की है। इसी भाँति अंग्रेजी का गद्य साहित्य भी विविधता और उत्तम गुणों से परिपूर्ण है। अनेक विधाओं और काव्य रूपों से समन्वित अंग्रेजी साहित्य अपने विस्तार में अद्वितीय है। यह सतत विकासशील रहा है। विभिन्न युगों में अनेक प्रकार के प्रभावों को संचित और आत्मसात् करके इसने शक्ति प्राप्त की है और प्रगति के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर होता रहा है। थोड़े में हम कह सकते हैं कि अंग्रेजी साहित्य अत्यन्त जीवन्त है।

पिछले प्रायः सौ वर्षों में अंग्रेजी और हिन्दी का अत्यन्त निकट सम्बन्ध रहा है। हिन्दी गद्य ने धीरे-धीरे अंग्रेजी गद्य का आदर्श अपनाया है। हिन्दी का वाक्य-विन्यास आज कम-से-कम अंशतः अंग्रेजी के वाक्य विन्यास का अनुसरण करता है। यह कहना कठिन है कि आधुनिक हिन्दी गद्य पर संस्कृत गद्य का अधिक प्रभाव पड़ा है अथवा अंग्रेजी गद्य का। कविता के क्षेत्र में भी अंग्रेजी की देन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान युग के हिन्दी कवियों ने अंग्रेजी से नवीन काव्य रूप प्राप्त किये हैं और अभिव्यंजना की नवीन शैली भी ग्रहण की है। अनेक स्थलों पर हिन्दी कवियों की रचना पर अंग्रेजी काव्य की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती है। भारत के स्वतंत्र होने पर भी अंग्रेजी का महत्त्व बना हुआ है और भविष्य में बना रहेगा। विदेशी भाषाओं में अंग्रेजी हमारे सबसे अधिक निकट है और हम अनेक प्रकार से उसके ऋणी हैं। अतएव अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी साहित्य का ज्ञान हिन्दी पाठकों के लिए रुचिकर एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

अनुक्रमणिका

अ

अभिनेत्री १०३
अमेरिकी भाषा ४५
अर्ल आफ क्लैरण्डन १००
अर्ल आफ सरे ६७
अल्फ्रेड टेनिसन १५०
अवस्ता ४

आ

आइजक वैरी १००
आइसलैण्ड ६, ८, २०
आउडेन १६९
आक्ट्रो डिकिटयो २
'आक्टोमिलेविक' ६०
आक्सफोर्ड २८, ३७, ६५, ८६
आक्सफोर्ड मूवमेंट १४३
आगस्टन युग १०७, १०८, ११२
आधुनिक अग्रेजी ३१, ३२
आध्यात्मिक १२२
आनोल्ड वेनेट १४३
आयरलैण्ड ७, ८, १७२, १७३
आयोनिक ४, ५
आरकेडिया ७४, ८८
आरण्यक ३
आरबुथ नाट ११२

आरमीडियन शाखा ४

आरमुलम ५६
आर्क बिशप ८४
आर्केडियन ४

आर्य ३
आल्फ्रेड १२
आलोचक १२९
आल्फ्रेड दि ग्रेट ५४
आस्ट्रेलिया ४५

इ

'इंक हार्न टर्म्स' ३६
इकलाग ७२
इजियन सागर ४
इटली ५, ६, ७, ४१, ६४
इटालिक शाखा ५
इट्रस्कन ५
इथरिज १०४, ११३
इन्टरल्यूड ६८
इलियड १०९
इलीयानार २६
इवलिन ४१

ई

ईरानी २, ४
ईरानी शाखा ३, ४

ईलियट ३४, ३७, ६५, १४९,
१५७, १६८, १७७

ई० वी० ल्यूकस १७६
ईस्ट एंग्लिया १२

उ

उडाल ६८

उत्तर सागर २०

उपनिवेश ११९

उपनिषद् ३

उपन्यास ११६, १५७

उपसर्ग १८

उमर खैयाम १५३

ऊ

ऊष्म वर्ग २

ए

एंग्लिया १२

एंग्ली १२

एकेडेमी ४१

एच० जी० वेल्स १०६

एजवर्ट १२

एटिक ५

एडमन्ड बर्क ११९

एडमन्ड स्पेंसर ७१

एडवर्ड २३

एडवर्ड यंग ११५

एडवान्समेन्ट आफ लर्निङ्ग ८३

एडेला २५

एड्रियाटिक सागर ५

एथेंस ५

'एनिड' ६२

एबट २४

एब्राहम काउले १०१

एरिओ पेजिटिकी ८६

एलबेनियन शाखा ५

एलिजाबेथ ६८, ७०, ८३

एलेक्जेण्डर पोप १०८

एलेक्स कंफर्ट १७०

एल्ब ११

एल्म ११

एवोलिक ४

एशिया १

एशिया माइनर ४

एस्ट्राफेल एण्ड स्टेला ७१, ७२

एसेक्स ११

ऐ

ऐंग्लिकन १००

ऐंगिल्स ११

ऐंग्लो सैक्सन ५९

ऐंग्ला लैण्ड १२

ऐडम स्मिथ ११८

ऐलिजाबेथ बैरेट् ब्राउनिंग १५२

ऐश्चम ३४

ओ

ओलिवर गोल्ड स्मिथ ११४,

१२४

ओल्ड इंग्लिश १३, ५४

औ

औषधि ४६

क

कनाडा ४६

‘कल्पना’ १२९

कांस्टेबुल ८७

काकेशस ४

कामेडी ६८

कार्डिनल रिशलो ४१

कार्नाबाल ९

कानिश् भाषाएँ ७

कार्ल वर्नर २, ३, ८

कार्ल हेरोल्ड २३

काव्यादर्श ६५

किंग अल्फ्रेड २१

किने उल्फ ५३

कीट्स १३०, १३३अ, १३९

कीलाक्षर

कुवला खाँ १२९

कुदिस्तान ४

कुस्तुन्तुनिया ६४

कृष्ण सागर ४

केंट १२

केंटुम वर्ग २, ८

केन १३१

केल्ट ११, १२

केल्टिक ७, ९, १०, १४, १९, ५५

कैटुम ३

कैक्सटन ३२, ६५

कैक्स डमन ५३

कैथोलिक ६६, ८७, १४३

कैन्टरबरी टेल्स ५८, ६०, ६१

कैम्पवेल ४२, १७०

कैम्ब्रिज ६५, ९१

कोली सीबर ११३

कोवर डेल ६६

क्रामवेल ९३

क्रिसमस २३

क्रिस्टोफर माल्लो ७३, ७७, ७९

क्रीमिया ५

क्रैनमर ६६

क्रैब १२५

ग

गद्य (साहित्य) ६३, ६५, ७०

८६, १०१, १७५

गाइल्स फ्लेचर ८८

गाथ ६

गार ब्रुडक ६९

गृहयुद्ध ९३, ९८

गेटे १४१

गेविन डगलस ६२

गैमर गर्टन्स निड्ल ६९

गैरिक ११३

गैलिक ७, ९

गैस्केल १४७

गोथिक २, ६, १२३

गोवर ६५

ग्राहम ग्रीन १६४

ग्रिम-सिद्धांत ३

ग्रीक २, ४, ७, ३३, ३७

ग्रीस ४, ५, ६४

ग्रे १२५

घ

‘घर्षण ऊष्म’ २

घोषणा पत्र १०७

च

चार्ल्स किंग्सले १४७

चार्ल्स चर्चिल १२१

चार्ल्स प्रथम ८६, ८९, ९१

चासर ३८, ५१, ५७, ६१, ६५,

६७, ७१, ९१, १५४, १६७

चिलिंग वर्थ ८३

चीक ३४, ३७, ६५

चेकोस्लोवाकिया ६

चेमी चेज ६२

चैपमेन १०९

ज

जर्मनी ११, १२

जान २५

जान ओल्डहम १०२

जान कोलेट ६५

जान गोवर ५८

जान गाल्सवर्दी १५९, १६०

जान डान ८८

जान डायर ११५

जान ड्रिंक वाटर १७५

जान फोर्ड ९८

जान बनियन ९१

जान मिल्टन ८९

जान रस्किन १४१, १४२

जान लिडगेट ६१, ६५

जान लिली ७३, ७४, ७६

जान वेब्स्टर ९६, ९७

जान सेल्डेन ८४

जान स्केल्टन ६१

जान स्टुअर्ट मिल १४४

जार्ज कैंब १२१, १२२, १२५, १३४

जार्ज चैपमैन ९६

जार्ज फरकुहर १०५

जार्ज बारो १४८

जार्ज मेरिडिथ १४९

जार्ज विदर ८८

जार्ज सेन्डी ८४

जार्ज हर्वर्ट

जिरड मैन्ली हापकिन्स १६७

जीरो काल १९

जुलीयस सीजर १०

जूट ११, १३, १४, २०

जेन आस्टेन १३४

जे. एम. सिंग १७४

जेम्स ८४, ८६, ८८, ८९

जेम्स ज्वायस १६२

जेम्स टामसन ११४, ११५

जेम्स वेरी १७३

जेम्स शर्ले ९८

जेरेमी कोलियर १०६

जेरेमी टेलर ८५

जैकाब ग्रिम २

जोजेफ कानराड १६१

जोसेफ एडिसन ११

ज्योफ्रे आफ् मन्मथ ५५

ज्योफ्रे चासर ५९

ट

टामस ३७

टामस कारपेट ८४

टामस कार्लाइल १४०, १४१, १४२

टामस किड ७७, ७९

टामस केरू ९०

टामस कैम्पियन ७३

टामस जोन्स ११७

टामस डेकर ९६

टामस नैश ७४

टामस लभ पीकाक १३८

टामस फुल्लर

टामस वाडले ८६

टामस वैंविंग्टन मेकाले १४४

टामस मिडल्टन ९५

टामस मूर १३४

टामस मे ८५

टामस लाज ७४

टामस लिनेकर ६५

टामस वायट ६७

टामस शेरिडन ४२

टामस सैकविली ६८

टोवीयस स्मालेट ११७

टामस हाब्स ८५

टामस हाक्लीव ६१

टामस हार्डी १५८, १५९

टामस हेउड ९६

टीबाल्ट १०९

टेम्बरलेन ७७

टेम्स ११, ३१, ७५

टाइन १०

टाटेल ६८

टाइ वुलस ९०

ट्रायल्स एन्ड क्रेसीडे ६०

टचूटन ९, १०, ११, १२, १३, १५,

५१

टचूटानिक ३, ४, ६, ७, ६४

टचूटानिक शाखा ६

ड

डच भाषा ७

डबलिन १७३

डा० जानसन ३८, ४०, ४१, ११३,

११७

डान क्विक जोट १०२

डान जुआन १३१

डारविन १४०, १४४, १५३

डिकेन्स ११८, १४४, १५७
 डा० एच० लारेंस १६२, १६३
 डेकर ९५
 डेकार्ट ९९
 'डेकासिलेविक' ६०
 डेन २१
 डेनमार्क ११, २०
 डेनिश ६, २०
 डेनला २२
 डेन्स २०
 डेवर ५२
 डेविड ह्यूम ११८
 डैनियल ८४, ८७
 डैनियल डेफो ११०
 डोरिक ४
 डोरोथी रिचर्डसन १६२
 ड्यूक २३, २५
 ड्राइडेन ३६, ४०, ४१, १०१,
 १०२, १०७, १०८, १३१
 ड्रेटन ८७

त

तोखारीय ८

थ

थियोक्रिटस ७२

द

दक्षिणी अफ्रीका ४६
 दरबारी कवि १०२
 दान्ते ५९

'दी पल' ५७
 दी रेजर्स एज १०६
 दी शेफर्ड्स कैलेंडर ७०, ७२
 दी हेस पेरिडीज ८९
 दुःखान्त नाटक १०४
 दैनन्दिनी १००
 द्वितीय काल १९

घ

धातुयुग ९
 ध्वनि परिवर्तन २१

न

नव क्लासिकी ३९, ४२
 नवजागरण ३३, ३४, ३८, ६४,
 ६५, ७०, ७२
 नवीन युग १३९
 नाक्स ६६
 नाटक ६२, ६८, १३१, १७१
 नाटककार ९५, ९७, १०२
 नाट्यगृह ७५, १०२
 नाट्य साहित्य ७५, १०० १३७
 नारमण्डी २०, २३, २४, २५
 नार्थम्ब्रिया १२, ५२
 नार्मन २३, २४, २५, २९, ३०, ३४
 नार्वे २०
 नार्वेजियन ६
 नार्स भाषा ७, २१, २२
 निबन्ध ११९, १७६, १७७
 नियो क्लासिकी १०७, १२५

नोलेस ८४

न्यूटन ९९

‘न्यूटेस्टामेन्ट’ ५७

प

पङ्गुआ ६५

पाणिनि ३

पद्य ७०

पर्सि वीशी शेली १३०, १३२, १३९

पहलवी ४

पादरी २४, २६, ३०, ३३, ६५,

६६, ६८, १०६

पामेला ११७

पाषाण काल ९

पिक्ट ११

‘पियर्स प्लाउमैन’ ५७, ५८

पील ७६

पुर्तगाल ५

पेट्रार्क ५९, ६०, ६७

पैराडाइज लास्ट ९३, ९४

पैस्टन लेटर्स ६३

पोली सिवर १०९

पोलैण्ड १६१

प्यूरिटन ८७, ९९

प्रथम काल १९

प्राकृत ३

प्रौरैफेलाइट भ्रातृ मण्डल १५३

प्रिल्यूड १२७

प्रोटेस्टेन्ट ३४, ५७, ६५, ६६, ६८

फ

फरारा ६५

फारसी ४

फास्टस ७६

फिनियर फलेचर ८८

फिलिप २५

फिलिय मैसिन्जर ९७

फुलइन्फ्लेक्शन्स १३

फेयरी क्वीन ७२

फ्रांस ५, ७, २३, २७

फ्रांसिस टामसन १६६

फ्रांसीसी २४, ९६, ९९

फ्रीजियन ७, ११

फ्रीजिया ४

फ्रेंच भाषा २३, २४, ३५

फलारेंस ६५

ब

बरनार्ड शा १७२, १७३

बर्न १५५

बलोची ४

बलोरिया ६

बाइबिल ४, ७, ५३, ५६, ६६, ८३,

९९, १११, १५९

बायरन १३०, १३४, १३९

बाल्टिक ५

बाल्टिक सागर २०

बाल्टो स्लेविक शाखा ५

‘बास्क’ ९

विशप २४
विशप गिलबर्ट बरनेट १००

‘बीउल्फ’ ५२

बीड ५४

बीयन ७२

बुकानन ६६

बुद्धिवाद ९९

बेकन ८३, ९९

बेन जानसन ३६, ८९, ९४, १०३

बैलड ६२, १२२

बोकैकियो ५९, ६०

बोगाजकुई ८

बोमेन्ट ९६, १०३

ब्लैक १२२, १२५, १३२

ब्लैक डेथ २७

ब्लैक वर्स ६७, ७६, १०३

ब्राह्मण ३

ब्रिटानिक ९

ब्रिटिश चैनल २३

ब्रिटेन ७, ९

भ

भारोपीय १, ७

म

मठ २४

मध्यम वर्ग २७

मरे ४२

मर्सिया १२

महाकवि शेक्सपियर ७७

महारानी विक्टोरिया १३९, १५६

महासमर ४५, ११६

मार्डन इंग्लिश १३

मारवेल ८८

मारिस १५३, १५४

मार्क ६

मालो ७६, ७९

मार्स्टन ९५

मिडिल इंग्लिश (मध्यम अंग्रेजी)

१३, २८, २९, ३१, ३८, ५१, ५५

मिडिल सेक्स ११

मिकेल ड्रेडन ७३

मिरेकल (नाटक) ६८

मिल्टन ६८, ८६, ९२, ९९,

११५, १३३

मुक्तक १०२, १३०

मुद्रणालय ३२

मुल्कास्टर ३४

मेरिना ९०

मेरिया एजवर्थ १३५

मैक्स वीयर बोम १७६

मैथ्यू प्रायर १०८

मोना १६

मोरेलिटी (नाटक) ६८

य

यार्क शायर २२

यूक्रेनियन ६

यूटोपिया ७३

यूनान १३१
 यूफ्यूज ७३
 यूफ्यूड्जम ७४, ७६
 यूरोप १, ५, ७, ३३, ११६
 र

राजकवि ९५
 राजनीति ११९
 राफेल १५३, १५४
 राबर्ट ग्रीन ७४, ७६
 राय फुलर १७०
 राबर्ट वर्म १२२
 राबर्ट ब्राउनिंग १५१, १५२
 राबर्ट ब्रिजेज १६५
 राबर्ट सदी १२९, १३०
 राबर्ट हेनरीसन ६२
 राबर्ट हेरिक ८९
 राबिन्सन क्रूसो १११
 रायल सोसाइटी ८४, ९९
 रासकामन ४१
 रासेटी १५३
 रिचर्ड क्रेशा ९०
 रिचर्ड मुल्कास्टर ३५
 रिचर्ड लवलेश ९१
 रिचर्ड सील १११, ११३
 रिफारमेशन ६५
 रिलिजियो मेडिसी ८५
 'रिव्यू' १११
 रीटारिक ४२

रूमानिया ५
 रूस १, ६, २०
 रूसो १०७, १२६
 रैडक्लिफ १३४
 रेकार्डो १३६
 रेस्टोरेशन १०१
 रोजालिन्ड ७४
 रोमन ५, १०, ११, १२, ८०
 रोमान्स ५५, ५९, ६७, ७२, ७४
 रोमान्स भाषा ५, ६
 रोमानी ७१, ७६, १३४, १५८

ल

लन्दन ३२
 'लक्स लेवर्स लास्ट' ३८
 लाउथ ४२
 लाक ९९, ११८
 लास्ट इन्फ्लेक्शन्स १३
 लिंकन शायर २२
 लिन्डसे ६६
 लूथर ७
 लेक पोयट्स १३९
 लेटिक ६
 लेट्विया ६
 लिथुयेनिया १, ६
 लिрикल बैलड्स १०७, १२७
 लेयमन ५६
 लेवेल्ड इन्फ्लेक्शन्स १३
 लेह्ट १३७

लैटिन २, ३, ५, १०, १४, २५,
२७, २८, ३३, ३५, ६६

लैटियम ५

लो जर्मन ७

लो फ्रान्कोनियन ७

व

वर्गवाद ८७

वर्ड्सवर्थ १२५, १२७, १३९

वाइकिंग २१

वाइकिंग युग २०

वाइक्लिफ ५७

वाल्टर पेटर १७६

विलियम २३, २५

विलियम कांग्रीव १०४, १०५,
११३, १२३

विलियम कावेट १३६

विलियम कालिन्स ११५, १२५

विलियम कूपर १२१, १२५, १३४

विलियम ग्रासिन ६५

विलियम टिन्डेल ६५, ६६

विलियम डनबर ६२

विलियम प्राइन ८६

विलियम ब्राउन ८८

विलियम मेकपीस थैकरे १४६,
१४७, १५७

विलियम ह्वैजलिट १३७

विक्लिफ ३४

विड्सिथ ४२

विल्सन ३४, ३६, ६५

वीफ २९

वेद ३

वेन्जामिन डिजरेली १४७

वेल्स ७, ९, १०, १२

वेसेक्स ११, २३, १५८

वैयाकरण ४२

व्यंग्य १०१, १३१

व्याकरण २८, २९, ३३, ३८

श

‘शतम्-वर्ग’ २

शाहनामा ४

शेक्सपियर ३८, ३९, ६०, ६६,

६७, ७३, ८७, ९४, १३२

शेक्सपियर के अन्तिम नाटक ८०

शेरिडन १२३

स

संस्कृत १, २, ३

समर सेट माम १६३, १६४

सर जान सर्किल ९१

सर टामस ब्राउन ८५

सर फिलिप सिटनी ७२, ७३

सर वाल्टर राले ८४

सर वाल्टर स्काट १३०, १३४,
१३९, १४७

ससेक्स ११, १२

साइरिल टूर्नो ९७

‘सागाज’ १५४

सानेट ६७, ७३, ९२

सामान्त २४

साम्यवादी १६९

साल्वे नदी १०

सिंधु नदी ८

सी. के. मुनरो १७५

सेटॉयर १०१

सेन्ट्स एवरलास्टिंग रेस्ट ८५

सेमिटिक ४

सेमुअल टेलर कोलरिज १२८, १३७

सेमुअल डेनियल ७२, ७३

सेमुअल पर्चास ८४

सेमुअल पीप्स १००

सेमुअल बटलर १०१, १४९

सेमुअल रिचर्डसन ११७

सैक्सन ७, ११, १२, १३, २१,

३०, ६६

सैक्सन सप्त मण्डल १२

सैक्सोनी १२

‘सौ वर्ष का युद्ध’ २७

स्काट ११

स्काटलैण्ड ७, ९, १२, ६१, ६२,

१२२, १४०

स्केलटन ६७

स्कैन्डिनेविया ६

स्टीफेन हाज ६७

स्टुअर्ट वंश ९९

स्टेट्यूट आफ प्लीडिंग २७

‘स्ट्रांग’ २९

स्ट्रेट फोर्ड औन एवान ७८

स्थेलेरेड २३

स्पेन ५, ६, ७, ३७

स्पेन्सर ३७, ६५, ७०, ७२, ८७,

८८, ९१, ११५, १३३, १४४

स्मालेट १२३

स्लेविक ६

स्लैंग ४७

स्विफ्ट ४०, ४१, ११२, १४६

स्वीट १३

स्वच्छन्दतावाद १०८, १२३, १२५

स्वेडिश ६

ह

हत्ती ८

हन्ड्रेड ३

हम्बर ११, ३१

हाई जर्मन ७

हाब्स ८३, ९९

हार्टन ९२

‘हार्थ’ ५६

हेवलक ५६

हालिनशेड ६६

हालैण्ड ७

हिल्टन ५७

हिन्नू ९३

हेनरी २५, २६, ५५, ५७, ६२,

६६, ६७

हेनरी ग्रीन १६४

हेनरी न्यूमन १४३

हेनरी फील्डिंग ११७

हेलेनिक शाखा ४

हेस्टिंग्स २३, २४, २५, २९

हैमलेट ९७

होमर ९६, १०९

होरेस ९०, ९३

होरेस वालपोल १३४
